

॥ वार्षिक पारितोषिक वितरण समारंभ ॥



वार्षिक पारितोषिक वितरण समारंभ प्रमुख पाठ्यप्या सो.अपर्णा रामतीर्थकर मनोगत व्यक्त करताना



कार्यक्रमाचे प्रास्ताविक व स्वागत करताना महाविद्यालयाचे प्राचार्य डॉ.आर.जी.शेजवळ



जिमखाना विभाग प्रमुख प्रा.विकास जाधव क्रीडा अहवाल सादर करताना



वार्षिक पारितोषिक वितरण समारंभात कार्यध्यक्ष डॉ.एम.टी.शोरत प्रास्ताविक करताना

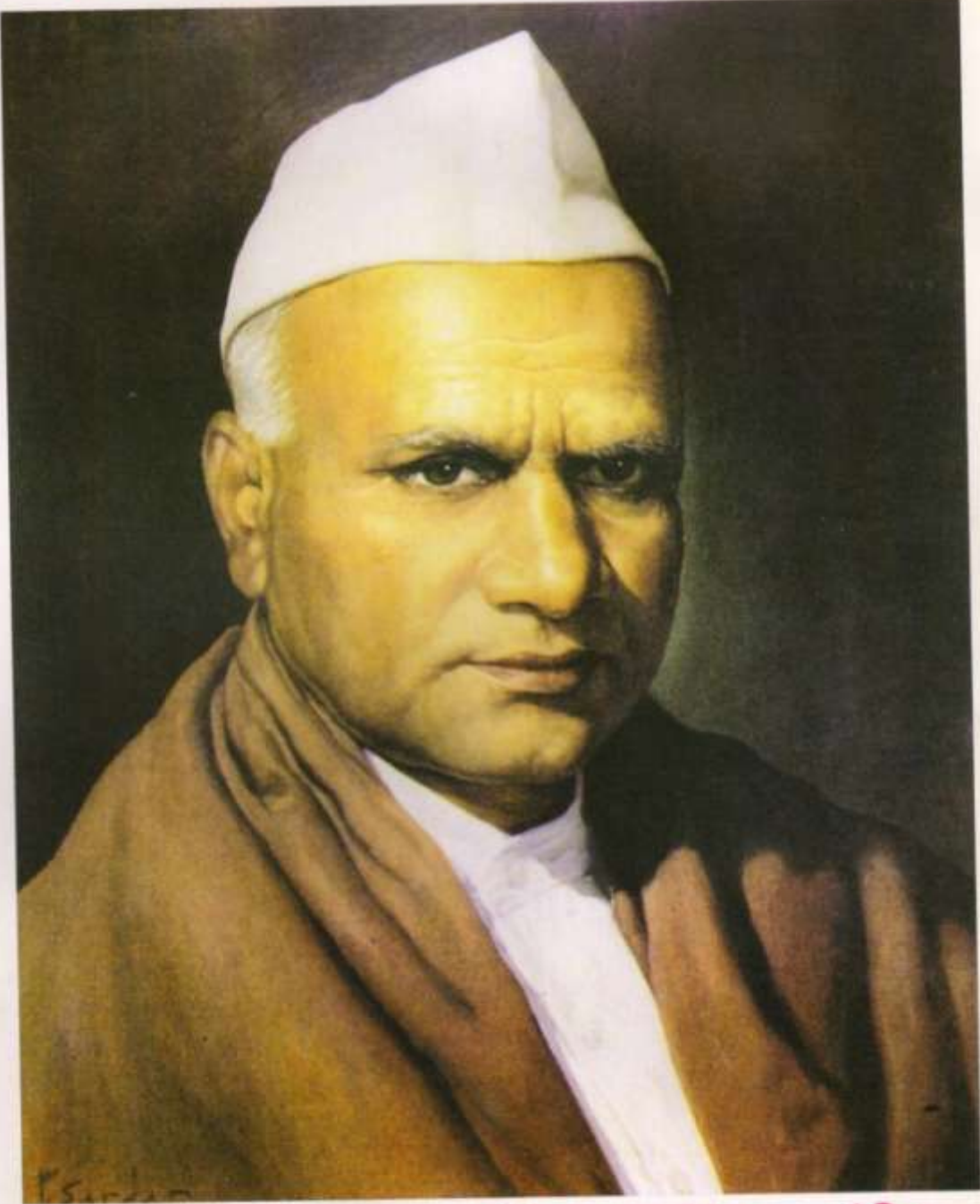


प्रमुख पाठ्यप्या सो. अॅड.अपर्णा रामतीर्थकर गुणवंत विद्यार्थ्यांचा सत्कार करताना



वार्षिक पारितोषिक वितरण समारंभ विद्यार्थी व प्राध्यापकवृंद

॥ ज्ञान, विज्ञान आणि सुसंस्कार यांसाठी शिक्षण प्रसार ॥



शिक्षण महर्षी **डॉ.बापूजी साकुंखे**

संकल्पक संस्थापक 'श्री स्वामी विवेकानंद शिक्षण संस्था', कोल्हापूर

जन्म-९ जून १९१९

महानिर्वाण - ८ ऑगस्ट १९८७



शिक्षण महर्षी डॉ.वापूजी साळुंखे

श्री स्वामी विवेकानंद शिक्षण संस्था,
कोल्हापूर, संचलित

लाल बहादूर शास्त्री महाविद्यालय, सातारा

बहादुरीय

वार्षिक नियतकालिक २०१२-२०१३

• संपादक मंडळ •

अध्यक्ष - प्राचार्य डॉ.राजेंद्र शेजवळ

प्रमुख संपादक - प्रा.डॉ.आर.जी.पाटील

• विभागीय संपादक मंडळ •

| वरिष्ठ महाविद्यालय | | कनिष्ठ महाविद्यालय | |
|-------------------------------------|---------|--------------------------|-------------------|
| प्रा.बाळासाहेब जगताप | मराठी | प्रा.चंद्रकांत पाटील | प्रमुख ज्यु.विभाग |
| प्रा.जयवंत जाधव | हिंदी | प्रा.श्रीमती पी.एन.हरनोळ | मराठी |
| प्रा.प्रशांत लोहार | इंग्रजी | प्रा.रशीद देसाई | हिंदी |
| प्रा.श्रीमती डॉ.सुहासिनी राजेभोंसले | संस्कृत | प्रा.पाटील एस.यू. | इंग्रजी |
| प्रा.कु.प्रतिभा चिकमठ | अहवाल | प्रा.सौ.एम.ए.भोरे | संस्कृत |
| प्रा.शेखर मोहिते | फोटो | प्रा.सौ.आय.पी.पवार | अहवाल |
| प्रा.डॉ.महेश गायकवाड | वितरण | प्रा.सौ.एस.वाय.पाटणे | अहवाल |
| | | श्री.सदानंद देशमुख | प्रशासकीय सहाय्यक |
| | | श्री.आर.जी.दामले | वितरण |

मुद्रक-प्रिंट ओम ऑफसेट, सातारा • संगणक-टाईप इनोव्हेटर्स, सातारा

संस्थेची प्रार्थना



हरे राम हरे राम राम हरे हरे ।
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण हरे हरे ॥



राम, कृष्ण, रहीम, ख्रिस्त, बुध्द, झरतुष्ट्र ।
महावीर मानव संत मानव्याचे दीपस्तंभ
लीन दीन होऊन त्यांचे वंदूया चरण ॥

सत्य, शील, प्रामाणिकता,
त्याग पिळवणुकीस आळा ।
मानव्याचे अधिष्ठान
ईशतत्त्व दर्शन ।

यांचे ज्ञान नि विज्ञान हाच सुसंस्कार ।
विवेकाच्या आनंदाचा लाभ शिक्षणात ॥

शिक्षणमहर्षी प.पू.डॉ.वापूजी साळुंखे

अग्ने नय सुपथा राये अस्मान्
विश्वानि देव वयुनानि विद्वान् ।
युयोध्यस्मद्भुहुराणमेनो
भूयिष्ठां ते नमः उक्तिं विधेम ॥

ईशावास्योपनिषद्

| २०१२-२०१३ | बहादुरीय

॥ संस्था माता ॥



मा.श्रीमती सुशीलादेवी साकुंखे
कार्याध्यक्षा, श्री स्वामी विवेकानंद शिक्षण संस्था, कोल्हापूर

श्री स्वामी विवेकानंद शिक्षण संस्था, कोल्हापूर संघटित
लाल बहादूर शास्त्री महाविद्यालय, सातारा

॥ संपादक मंडळ ॥



बसलेले : श्रीमती डॉ. सुहासिनी राजेभोसले, सी.एम.ए. भोरे, प्रा. चंद्रकांत पाटील डॉ. आर.जी. पाटील (प्रमुख संपादक), प्राचार्य डॉ. राजेंद्र शेजवळ, प्रा. जे.आर. जाधव, प्रा. बी.एस. जगताप, प्रा. शेखर मोहिते उभे : श्री. आर.जी. दामले, प्रा. एस.यु. पाटील, श्री. सदानंद देशमुख, प्रा. महेश गायकवाड, प्रा. विजय लोहार, प्रा. कु.प्रतिभा चिकमठ, प्रा. श्रीमती हर्नोळ, श्री. वास्के व श्री. माने

॥ जयजवान जय किसान व्याख्यानमाला ॥



कर्नल यशवंतराव पाटणकर



शेतीतज्ञ शहाजीराव काकडे

॥ अभिन्नदनीय वाटचाल ॥



आविष्कार २०१२-१३ या शैक्षणिक वर्षांमध्ये दहिबडी महाविद्यालय दहिबडी येथे जिल्हास्तरीय स्पर्धेमध्ये पारितोषिक विजेत्या विद्यार्थ्यांसमवेत मार्गदर्शक प्राध्यापक व प्राचार्य



श्री. अचिनाश कदम
श्री स्वामी विवेकानंद शिक्षण संस्थेच्या व्यवस्थापक मंडळाचा सदस्य म्हणून निवड



बापूजी साळुंखे राज्यस्तरीय वक्तृत्व निबंध, चित्रकला स्पर्धा २०१३ डॉ. अशाक करांडे, व मा. कर्नल रमेश बंड चक्षीस देताना

श्री स्वामी विवेकानंद शिक्षण संस्था, कोल्हापूर संचालित
लाल बहादूर शास्त्री महाविद्यालय, सातारा

| २०१२-२०१३ | बहादुरीय



॥ संस्था पदाधिकारी ॥
श्री स्वामी विवेकानंद शिक्षण संस्था, कोल्हापूर

संस्था अध्यक्ष
मा.ना.आर.आर.पाटील (आबा)
गृहमंत्री, महाराष्ट्र राज्य



उपाध्यक्ष
मा. खासदार कलाप्पाणा आवाडे



उपाध्यक्ष
मा. श्री. रघुनाथ शेठे

श्री स्वामी विवेकानंद शिक्षण संस्था, कोल्हापूर संघलित
लाल बहादूर शास्त्री महाविद्यालय, सातारा

बहादुरीय | २०१२-२०१३ |

॥ संस्था पदाधिकारी ॥
श्री स्वामी विवेकानंद शिक्षण संस्था, कोल्हापूर



कार्याध्यक्ष
मा.प्राचार्य अण्णयकुमार साङ्खुले



सेक्रेटरी
मा.प्राचार्या सौ.शुभांगी गावडे



सहसचिव-प्रशासन
मा.प्राचार्य डॉ.अशोक करांडे



सहसचिव-अर्थ
मा.श्री.पुंडलिक चव्हाण

श्री स्वामी विवेकानंद शिक्षण संस्था, कोल्हापूर मंचालीन
लाल बहादूर शास्त्री महाविद्यालय, सातारा

कुलगुरु



शिवाजी विद्यापीठाचे दूरे कुलगुरु
मा.डॉ.एन.जे.पवार

प्राचार्य



महाविद्यालयाचे कृतिशील प्राचार्य | मा.डॉ.राजेंद्र शेजवळ

श्री स्वामी विवेकानंद शिक्षण संस्था, बडोदरादूर संघालगत
लाल बहादूर शास्त्री महाविद्यालय, सातारा

॥ विवेकानंद जयंती सप्ताह ॥



मा. श्री. एन. के. डुके मार्गदर्शन करताना



मा. प्राचार्य आर. आर. चव्हाण मार्गदर्शन करताना



प्राचार्य सुहास साळुंखे मार्गदर्शन करताना



डॉ. शरद साळुंखे 'पत्रातून भेटणारे बापूजी'
परिसंवादात आपले विचार व्यक्त करताना



डॉ. आर. जी. पाटील 'पत्रातून भेटणारे बापूजी'
या परिसंवादात बोलताना



प्राचार्य पी. व्ही. शेठ 'पत्रातून भेटणारे बापूजी'
परिसंवादात अध्यक्षीय भाषण करताना

॥ आमचे गुणवंत विद्यार्थी : महाविद्यालयाचे प्रतिनिधी ॥



संजीवनी जाधव बी.कॉम.भाग २
विद्यार्थी प्रतिनिधी



कु. इशानित मुलाणी बी.ए.भाग ३
वर्ग प्रतिनिधी



कु. आश्विनी साठे बी.ए.भाग २
वर्ग प्रतिनिधी



वैभव जाधव बी.ए.भाग १
वर्ग प्रतिनिधी



वर्षा नलवडे बी.एस्सी.भाग ३
वर्ग प्रतिनिधी



तुषार शेलार बी.एस्सी.भाग २
वर्ग प्रतिनिधी



स्वप्निल देशमुख बी.एस्सी.भाग १
वर्ग प्रतिनिधी



मीनाक्षी पवार बी.कॉम.भाग १
वर्ग प्रतिनिधी



संजीवनी जाधव बी.कॉम.भाग २
वर्ग प्रतिनिधी



भद्रा मांजरकार बी.कॉम.भाग १
वर्ग प्रतिनिधी



शीतल जाधव बी.कॉम.भाग ३
प्राचार्य नियुक्त
विद्यार्थिनी प्रतिनिधी



प्रणाली कोटावडे प्राचार्य नियुक्त
विद्यार्थिनी प्रतिनिधी



निलेश फोसले बी.एस्सी.भाग ३
क्रोडा प्रतिनिधी



सुमीत गायकवाडे बी.ए.भाग २
सांस्कृतिक प्रतिनिधी



सायली पवार बी.कॉम.भाग २
राष्ट्रीय सेवा योजना प्रतिनिधी



संग्राम देशमुख बी.कॉम.भाग २
राष्ट्रीय छात्र सेना प्रतिनिधी

श्री स्वामी विवेकानंद शिक्षण संस्था, कोल्हापूर संघलित
लाल बहादूर शास्त्री महाविद्यालय, सातारा

॥ जिमखाना विभाग ॥



सातारा झोनल बुद्धिबळ संघाने
जनरल चॅम्पियनशीप मिल्डवल्याबद्दल
मा.वनमंत्री पतंगरावजी कदम अभिनंदन करताना



शिवाजी विद्यापीठ कुस्ती संघात भीमा सूळ याची
निवड झाल्याबद्दल अभिनंदन करताना
प्राचार्य डॉ.आर.व्ही.शेजवळ व उपप्राचार्य डॉ.आर.जी.पाटील



सातारा झोनल कबड्डी स्पर्धेत प्रथम क्रमांक मिळविणारा
महाविद्यालयाचा संघ त्यांच्या सोबत
महाविद्यालयाचे प्राचार्य डॉ.आर.व्ही.शेजवळ



जिमखाना विभागामार्फत टेबल टेनिस सराव शिबीर
महाविद्यालयात सुरु करताना महाविद्यालयाचे
प्राचार्य डॉ.आर.व्ही.शेजवळ



इंटर झोनल मलखांब स्पर्धेत जनरल चॅम्पियनशीप
मिळविलेला विजयी संघासमवेत
महाविद्यालयाचे प्राचार्य डॉ.आर.व्ही.शेजवळ



मुंबई येथे झालेल्या राज्यस्तरीय पॉवर लिफ्टिंग स्पर्धेत महाविद्यालयाचा
गोल्ड मेडल विजेता पंकज माने समवेत मा.प्राचार्य डॉ.आर.व्ही.शेजवळ

श्री स्वामी विवेकानंद शिक्षण संस्था, कोल्हापूर

२१३०, ई वॉर्ड, ताराबाई पार्क, कोल्हापूर. फोन : (०२३१) २६५४६५३, १६५२७२०

विश्वस्त मंडळ २००९-२०१२

| | | |
|--|-------|--------------|
| ■ मा.प्राचार्य अभयकुमार साळुंखे | | कार्याध्यक्ष |
| ■ मा.प्राचार्या सौ.शुभांगी मुरलीधर गावडे | | सेक्रेटरी |
| ■ मा.पुंडलिक शामराव चव्हाण | | सहसचिव अर्थ |
| ■ मा.रा.कृ.कणबरकर | | सदस्य |

व्यवस्थापक मंडळ

| | | |
|---|-------|------------------|
| ■ मा.नामदार आर.आर.पाटील (आबा) | | अध्यक्ष |
| ■ मा.माजी.खा कलाप्पाण्णा बाबूराव आवाडे | | उपाध्यक्ष |
| ■ मा.रघुनाथ मनोहर शेते | | उपाध्यक्ष |
| ■ मा.प्राचार्य अभयकुमार गोविंदराव साळुंखे | | कार्याध्यक्ष |
| ■ मा.श्रीमती सुशीलादेवी गोविंदराव साळुंखे | | कार्याध्यक्ष |
| ■ मा.प्राचार्या सौ.शुभांगी मुरलीधर गावडे | | सेक्रेटरी |
| ■ मा.अशोक आबा करांडे | | सहसचिव (प्रशासन) |
| ■ मा.पुंडलिक शामराव चव्हाण | | सहसचिव (अर्थ) |
| ■ मा.संपतराव रामचंद्र जेधे | | सदस्य |
| ■ मा.रवींद्र रामचंद्र चव्हाण | | सदस्य |
| ■ मा.रामचंद्र यशवंत पाटील | | सदस्य |
| ■ मा.अविनाश दिनकर पाटील | | सदस्य |
| ■ मा.प्राचार्य डॉ.राजेंद्र विश्वनाथ शेजवळ | | सदस्य |
| ■ मा.प्राचार्य डॉ.युवराज अंबादास भोसले | | सदस्य |
| ■ मा.सिताराम महारु गवळी | | सदस्य |
| ■ मा.रघुनाथ दत्तात्रय पाटील | | सदस्य |
| ■ मा.भूपाल शंकर कुंभार | | सदस्य |
| ■ मा.प्राचार्य डॉ.हिंदूराव बाबूराव पाटील | | सदस्य |
| ■ मा.अशोक विठोबा रायुगडे | | सदस्य |
| ■ मा.चंद्रकांत जयराम कालेकर | | सदस्य |
| ■ मा.अविनाश नामदेव कदम | | सदस्य |

ब
ह
उ
री
य

श्री स्वामी विवेकानंद शिक्षण संस्था, कोल्हापूर



शिक्षण महर्षी डॉ. बापूजी साबुंबे

श्री स्वामी विवेकानंद शिक्षण संस्था, कोल्हापूर

२१३०, ई वॉर्ड, ताराबाई पार्क, कोल्हापूर. फोन : (०२३१) २६५४६५३, १६५२७२०

आजीव सेवक मंडळ

| | | |
|---|-------|-----------|
| ■ मा. प्राचार्य डॉ. राजेंद्र विश्वनाथ शेजवळ | | अध्यक्ष |
| ■ मा. पुंडलिक शामराव चव्हाण | | सेक्रेटरी |
| ■ मा. प्राचार्या सौ. शुभांगी मुरलीधर गावडे | | सदस्य |
| ■ मा. प्राचार्य डॉ. अशोक आबा करांडे | | सदस्य |
| ■ मा. अजित शंकर देसाई | | सदस्य |
| ■ मा. कृष्णा जनार्दन ढवळे | | सदस्य |
| ■ मा. रघुनाथ दत्तात्रय पाटील | | सदस्य |
| ■ मा. भूपाल शंकर कुंभार | | सदस्य |
| ■ मा. महादेव निवृत्ती गरुड | | सदस्य |
| ■ मा. दिलीप शामराव संकपाळ | | सदस्य |
| ■ मा. कृष्णात पांडुरंग भिसे | | सदस्य |
| ■ मा. मारुती कृष्णा कुंभार | | सदस्य |
| ■ मा. ज्ञानेश्वर विठ्ठलराव पाटील | | सदस्य |
| ■ मा. डॉ. युवराज अंबादास भोसले | | सदस्य |
| ■ मा. अरुण बहिर्जी सुळगेकर | | सदस्य |
| ■ मा. अधिकराव पांडुरंग पाटील | | सदस्य |
| ■ मा. सिताराम महारु गवळी | | सदस्य |
| ■ मा. भाऊसाहेब नानासाहेब सांगळे | | सदस्य |
| ■ मा. गोरखनाथ रावसाहेब पवार | | सदस्य |

२०१३

ब
हा
र
ड
ी
य

४



श्री स्वामी विवेकानंद शिक्षण संस्था, कोल्हापूर

लाल बहादूर शास्त्री महाविद्यालय, सातारा

स्थानिक व्यवस्थापन समिती

- | | | |
|---|-------|----------------------|
| ■ मा. प्राचार्य अभयकुमार साळुंखे | | कार्याध्यक्ष |
| ■ मा. प्राचार्या सौ. शुभांगी मुरलीधर गावडे | | सचिव |
| ■ मा. प्राचार्य डॉ. राजेंद्र विश्वनाथ शेजवळ | | पदसिद्ध सचिव |
| ■ मा. आमदार शिवेंद्रसिंहराजे भोसले | | स्थानिक प्रतिनिधी |
| ■ मा. प्राचार्य पी. यु. शेट | | स्थानिक प्रतिनिधी |
| ■ मा. डी. आर. जाधव | | स्थानिक प्रतिनिधी |
| ■ मा. प्रा. डॉ. डी. आर. भुटीयानी | | प्राध्यापक प्रतिनिधी |
| ■ मा. प्रा. एस. ए. मोहिते | | प्राध्यापक प्रतिनिधी |
| ■ मा. प्रा. एम. बी. रासकर | | प्राध्यापक प्रतिनिधी |
| ■ मा. एन्. बी. पाटील | | शिक्षकेतर प्रतिनिधी |

ब
हा
दु
री
य

प्रकटन

भारत सरकारच्या १९५६ प्रेस अॅण्ड रजिस्ट्रेशन ऑफ बुक्सच्या
कायद्यातील ८ व्या नियमाप्रमाणे 'बहादुरीय' चे अधिकृत प्रकटीकरण

| | | |
|--------------------|---|---|
| प्रकटन स्थळ | : | लाल बहादूर शास्त्री महाविद्यालय, सातारा. |
| प्रकटन काळ | : | वार्षिक |
| मुद्रकाचे नांव | : | संदेश शहा |
| राष्ट्रीयत्व | : | भारतीय |
| पत्ता | : | प्रिंट ओम ऑफसेट, सातारा |
| प्रकाशकाचे नांव | : | प्राचार्य डॉ.राजेंद्र शेजवळ |
| पत्ता | : | लाल बहादूर शास्त्री महाविद्यालय, सातारा. |
| राष्ट्रीयत्व | : | भारतीय |
| संपादकाचे नाव | : | प्रा.डॉ.आर.जी.पाटील |
| राष्ट्रीयत्व | : | भारतीय |
| पत्ता | : | लाल बहादूर शास्त्री महाविद्यालय, सातारा |
| मुखपृष्ठ संकल्पना | : | प्रा.डॉ.आर.जी.पाटील, प्रा.डॉ.महेश गायकवाड व प्रा.बाळासाहेब जगताप |
| संगणकीय अक्षररचना | : | श्री.प्रशांत गुजर |
| राष्ट्रीयत्व | : | भारतीय |
| पत्ता | : | टार्ईप इनोव्हेटर्स, १९५, सदाशिव पेठ, सातारा. |
| नियतकालिकाची मालकी | : | मा.प्राचार्य, लाल बहादूर शास्त्री महाविद्यालय, सातारा |

मी डॉ.राजेंद्र शेजवळ, प्राचार्य, लाल बहादूर शास्त्री महाविद्यालय, सातारा जाहीर करतो की,
सोबत दिलेली माहिती माझे माहिती प्रमाणे व समजुतीनुसार पूर्णपणे खरी आहे.

प्राचार्य डॉ.राजेंद्र शेजवळ
प्रकाशक

या अंकात व्यक्त झालेल्या मतप्रवाहाशी संपादक मंडळ सहमत असेलच असे नाही. शिवाय या
अंकातील साहित्य कृतींच्या स्वतंत्रतेची अन्य जबाबदारी संबंधित लेखकांची / लेखिकांची आहे.

लाल बहादूर शास्त्री महाविद्यालय, सातारा.

२०१३
ब
हा
द
ुर
ी
य

प्राचार्यांचे मनोगत

सर्व हितचिंतक, शिक्षणप्रेमी, साहित्यिक, रसिक विद्यार्थी मित्रहो !

सन २०१२-१३ या शैक्षणिक वर्षाचा 'बहादुरीय' हा वार्षिक नियतकालिकाचा अंक आपल्या हाती देताना मला मनस्वी आनंद होत आहे. हा अंक म्हणजे लाल बहादूर शास्त्री महाविद्यालयाचे जे विद्यार्थी व गुरुदेव कार्यकर्ते बहादूर आहेत, लाल आहेत, शुरवीर आहेत, लेखक आहेत, साहित्यिक आहेत, खेळाडू आहेत, सामाजिक कार्यकर्ते आहेत अशा विद्यार्थी व गुरुदेव कार्यकर्त्यांच्या कौतुक सोहळ्याचा अंक आहे. प्राचार्य म्हणून आपणासमोर या सा-यांचे कौतुक करताना आणि शब्दरूपात मन मोकळे करताना वेगळेच आत्मिक समाधान होत आहे.

'ज्ञान, विज्ञान आणि सुसंस्कार यांसाठी शिक्षण प्रसार' या ध्येयाने प्रेरित होवून शिक्षणमहर्षी डॉ. बापूजी साळुंखे यांनी १९५४ मध्ये शैक्षणिक क्रांतीची मशाल हाती घेवून, श्री स्वामी विवेकानंद शिक्षण संस्थेची स्थापना केली. महाराष्ट्रासह कर्नाटक राज्यात ज्ञानाच्या प्रकाशाने अज्ञानाचा अंधकार दूर केला. बहुजनांच्या हाती ज्ञानाची गंगोत्री दिली. ज्ञान, विज्ञान आणि सुसंस्काररूपी विचाराने मूल्यवर्धीत शिक्षण व समाजनिर्मितीचे स्वप्न पाहिले. डॉ. बापूजींच्या ज्ञान गंगोत्रीतून १९६७ साली उगम पावलेली एक ज्ञानशाखा म्हणजेच लाल बहादूर शास्त्री महाविद्यालय होय.

लाल बहादूर शास्त्री महाविद्यालय म्हणजे शिक्षणाची वैभवशाली परंपरा जोपासणारे महाविद्यालय. या वर्षातच आमचे महाविद्यालय नॅक पुनर्मुल्यांकनाला सामोरे गेले आणि विशेष आनंदाची बाब म्हणजे २.८६ अशी श्रेणी प्राप्त केली. आजच्या स्पर्धेच्या युगात हे यश प्राध्यापक, आजी-माजी विद्यार्थी, प्रशासकीय कर्मचारी, समाज यांच्या समन्वय, सहकार्य, प्रोत्साहन आणि कष्ट यामुळेच मिळाले. नॅकच्या पार्श्वभूमीवर महाविद्यालयात अध्ययन-अध्यापन, मूल्यमापन, सामाजिक संस्थाशी संबंध, संशोधन विकास, भौतिक व मूलभूत सुविधा, क्रीडांगण आदींमध्ये आमुलाग बदल झालेले आहेत. प्रत्येक विभागाचे स्वतंत्र कक्ष उभारून त्यामध्ये संगणक, इंटरनेट व इतर सुविधा उपलब्ध करून विभागांचे अंतर्बाह्य स्वरूप बदलून टाकले आहे. भौतिक सुविधेबरोबरच प्रत्येक विभागाच्या गुणात्मक बदलासाठी विभागवार बैठका घेवून व वर्षभरासाठी त्यांच्या उपक्रमांचे नियोजन करून दिले व तशी अंमलबजावणी करवून घेतली.

नियमित अभ्यासक्रमाबरोबरच कला, वाणिज्य व विज्ञान शाखांमधून १६ व्यावसायिक कोर्सेस सुरु केलेले आहेत. यु.जी.सी.मान्यताप्राप्त कोर्सेसमध्ये कॉमर्स विभाग-Income Tax समाजशास्त्र विभाग-Human Rights, वनस्पतीशास्त्र विभाग-Biodiversity And Its Conservation हे कोर्सेस सुरु आहेत. या कोर्सेसना यु.जी.सी. कडून २२.५ लाख अनुदान मिळाले. तसेच शिवाजी विद्यापीठ व महाविद्यालयाचे-Beauty Parfur And Personality Development, Rural Journalism, Travel & Tourism, Industrial Quality Control Microbiology, Environmental Awarness, Yoga Education and Health, Fashion Designing, Mehandi, Mushroom Cultivation, Spoken English, E-banking कोर्स सुरु केले असून यामुळे विद्यार्थ्यांना करिअरची चांगलीच संधी प्राप्त झालेली आहे.

महाविद्यालयाच्या अंतरंग बदलाबरोबरच बाह्यांग बदलणेही गरजेचे असते. विद्यापीठ अनुदान आयोगाचे इमारत दुरुस्तीसाठी सात लाख रुपये अनुदान मिळाले. प्राध्यापक, माजी-विद्यार्थी, सामाजिक संस्था व समाजातील दानशूर व्यक्तींनी महाविद्यालय माझे आहे ही भावना ठेवून पुस्तके, LCD, संगणक आदी वस्तुंची भेट देऊन महाविद्यालयाच्या गुणात्मक वाढीसाठी मदत केली. मिळालेल्या देणगीतूनच नवीन जिमखाना, प्रयोगशाळा नुतनीकरण, ऑफीस-ग्रंथालयामध्ये संगणकीकरण, CC-

TV कॅमेरे, Rain Water Harvesting, रंगरंगोटी, क्रीडांगण, पार्कींग इत्यादी सोयी सुविधा उपलब्ध करता आल्या.

प्राध्यापक व विद्यार्थ्यांच्या संशोधन वृत्तीस प्रेरणा व दिशा देणे हे आद्यकर्तव्य मानले. सर्वच प्राध्यापकांनी संशोधन प्रकल्पासाठी प्रस्ताव दाखल केलेले आहेत. १० प्राध्यापकांच्या संशोधन प्रकल्पास युजीसी कडून १९ लाखाचे अनुदान प्राप्त झाले आहे. या वर्षी महाविद्यालयातील ४ प्राध्यापकांनी Ph.D. साठी रजिस्ट्रेशन केले आहे तर दोन प्राध्यापकांना टिचर फिलोशिप म्हणून यू.जी.सी. ची मान्यता मिळाली आहे. शिवाजी विद्यापीठाच्या जिल्हास्तरीय आविष्कार संशोधन स्पर्धेमध्ये महाविद्यालयास जनरल चॅम्पियनशिप मिळाली. पाच विद्यार्थ्यांच्या संशोधन पोस्टर्स व मॉडेलसना बक्षिसे मिळाली तसेच विद्यापीठ स्तरावरील स्पर्धेतही एका विद्यार्थ्याने प्रथम क्रमांकाचे यश मिळवित राज्यस्तरीय स्पर्धेपर्यंत भरारी घेतली. Chemistry व Zoology विषयात M.Phil. व Ph.D. चे वर्ग सुरू करण्याबाबत शिवाजी विद्यापीठाच्या कमिटीने महाविद्यालयास संशोधन प्रयोगशाळेस मान्यता दिली आहे. M.A. हिंदी - इंग्रजी, M.Sc. (Analytical Chemistry), B.Sc. (Computer Science) या विषयांचे प्रस्ताव दाखल केलेले आहेत. हिंदी व वनस्पतीशास्त्र विभागाची राष्ट्रीय स्तरावरील कार्यशाळा युजीसीच्या अनुदानातून संपन्न झाल्या.

महाविद्यालयास विद्यापीठाची अग्रणी महाविद्यालय म्हणून मान्यता असून या योजने अंतर्गत १३ महाविद्यालयात विद्यार्थी केंद्रीत व संशोधनास चालना देणारे उपक्रम राबवून घेतले. विद्यार्थी, पालक व समाजाची गरज ओळखून महाविद्यालयात, SET-NET मार्गदर्शन केंद्र, स्पर्धा परीक्षा मार्गदर्शन केंद्र, पोलीस भरतीपूर्व मार्गदर्शन केंद्र सुरू आहे. प्लेसमेंट सेल मार्फत वर्षभरात ६ कॅम्पस इंटरव्ह्यू घेण्यात आल्या यामध्ये ७६ विद्यार्थ्यांची विविध कंपनी, बँकांमध्ये निवड झाली ही बाब कौतुकास्पद अशी आहे.

ज्या विद्यार्थ्यांना नियमित शिक्षण घेता येत नाही अशा विद्यार्थ्यांना बहिस्थ विद्यार्थी म्हणून महाविद्यालयात प्रवेश दिला जातो विद्यापीठाच्या दूर शिक्षण विभागात २०४७ विद्यार्थी, यशवंतराव चव्हाण महाराष्ट्र मुक्त विद्यापीठात १८१० विद्यार्थी तसेच नियमित ज्युनिअर १७३८, सिनिअर १८२१ विद्यार्थी असे एकूण ७६१६ विद्यार्थी महाविद्यालयात शिक्षण घेत आहेत सिनिअर, ज्युनिअर महाविद्यालयाचे निकाल विद्यापीठ व बोर्डाच्या निकालापेक्षा अधिक आहेत.

राष्ट्रीय सेवा योजना, राष्ट्रीय छात्र सेना, युवक महोत्सव, सांस्कृतिक विभाग, IQAC समिती, प्राध्यापक प्रबोधिनी, विद्यार्थीनी विकास मंडळ, संशोधन समिती, भिक्तीपत्रिका समिती आदी महाविद्यालयांतर्गत विविध समित्यांनी आपल्या विभागाचे कामकाज यशस्वीपणे पार पडले. संस्था स्तरावरील शिक्षणमहर्षी डॉ. बापूजी साळुंखे राज्यस्तरीय वक्तृत्व, निबंध व चित्रकला स्पर्धांचे नियोजन तसेच संस्थेच्या सातारा विभागीय बैठकीचे नियोजन यशस्वीपणे पार पडले. महाविद्यालयामध्ये सिनिअर विभागामध्ये विभागवार माजी विद्यार्थी मेळावे तसेच ज्युनिअर विभागामध्ये विद्यार्थी-पालक मेळावे घेण्यात आले त्यास उत्स्फूर्त प्रतिसाद मिळाला.

महाविद्यालयाच्या 'बहादुरीय' नियतकालिकास शिवाजी विद्यापीठाचा तृतीय क्रमांक मिळाला. तसेच तीन उगवत्या साहित्यिकांना वैयक्तिक पारितोषिके मिळाली, हे संपादक मंडळाचे यश आहे. विद्यापीठीय जिल्हास्तरीय युवा महोत्सवामध्ये महाविद्यालयास लघुनाटिका व मुकनाटकामध्ये तृतीय क्रमांक मिळाला तसेच या विद्यार्थ्यांची मध्यवर्ती युवा महोत्सवासाठी निवड झाली.

क्रीडा विभागाने यावर्षी खेळामध्ये दैदिप्यमान व उल्लेखनीय यश प्राप्त करित महाविद्यालयाच्या लौकीकात मानाचा शिरपेच खोवला. ज्युनिअर विभागाच्या रुदल कदम याने दक्षिण कोरिया मध्ये

आंतरराष्ट्रीय स्तरावर झालेल्या 'टग-ऑफ-वॉर' या खेळामध्ये सहभागी होत भारताचे प्रतिनिधीत्व केले. आंतरराष्ट्रीय स्तरावरील या खेळात यश महाविद्यालयास अभिमानास्पद आहे. ज्युनिअर विभागातर्फे महाविद्यालयास धनुर्विद्या या खेळात कलकत्ता येथे झालेल्या राष्ट्रीय स्तरावरील स्पर्धेत सुवर्णपदक मिळाले. ज्युनिअर विभागात ४ खेळाडूंनी नॅशनल, ४ खेळाडूंनी राज्यस्तरीय, व २६ खेळाडूंनी विभागीय व जिल्हा स्तरावर यश मिळविले. सिनिअर विभागात मल्लखांबामध्ये महाविद्यालयास राष्ट्रीय स्तरावर रौप्य पदक मिळाले, तसेच रायफल शुटींगमध्ये राष्ट्रीय स्तरावर यश मिळाले. सिनिअर विभागात १० विद्यार्थ्यांनी आंतरविद्यापीठ, ०९ विद्यार्थ्यांनी विद्यापीठीय, ३० विद्यार्थ्यांनी विभागीय स्तरावर यश मिळविले.

वर्षभरात महाविद्यालयात वनमंत्री ना. पतंगराव कदम, कुलगुरु मा.डॉ.एन्.जे.पवार, मा.स्वा.श्रीनिवास पाटील, मा.आ.विलासराव पाटील-उंडाळकर, समाजसेविका अॅड. अपर्णा रामतिर्यकर आदी मान्यवरांनी सदिच्छा भेटी देऊन प्रोत्साहित केले. ज्युनिअर शास्त्र शाखेमार्फत सर्व विद्यार्थ्यांसाठी वर्षभर CET कोचिंग व कॅश कोर्सद्वारे अभिनव बहादुरीय पॅटर्न सुरु केला आहे. महाविद्यालयातील ग्रंथालयात ६६ नियतकालिके व १६ वर्तमानपत्रे येतात. ग्रंथालयात प्राध्यापक व विद्यार्थ्यांसाठी INFLIBNET सुविधा उपलब्ध असून यावर्षी २१०० ई जर्नल्स व ५१ हजार ई-बुक्सचा वापर इंटरनेटवर झालेला आहे.

महाविद्यालयाच्या शैक्षणिक व सामाजिक प्रगतीत संस्थेचे अध्यक्ष मा. आर. आर. (आबा) पाटील, कार्याध्यक्ष मा. प्राचार्य अभयकुमार साळुंखे, सचिव प्राचार्या सौ. शुभांगी गावडे, यांचा वाटा महत्त्वाचा आहे. त्यांच्या प्रेरणास्फूर्तीतूनच हे महाविद्यालय प्रगती पथावर जात आहे. संस्थेचे सहसचिव (प्रशासन) प्राचार्य डॉ. अशोक कराडे व सहसचिव (अर्थ) प्राचार्य पी. एस्. चव्हाण यांचे वेळोवेळी मोलाचे सहकार्य लाभत असते.

महाविद्यालयाच्या विकासासाठी मा. खासदार श्रीमंत छत्रपती उदयनराजे भोसले, आमदार छत्रपती शिवेंद्रसिंहराजे भोसले, स्थानिक व्यवस्थापन समितीचे सर्व सदस्य, नगराध्यक्ष, सर्व नगरसेवक, पोलीस, आजी-माजी विद्यार्थी, पालक तसेच महाविद्यालयावर प्रेम करणारे अनेक मान्यवरांचे व हितचिंतकांचे सहकार्य, मार्गदर्शन व प्रोत्साहन लाभत असते. सर्वांच्या सहकार्यामुळेच महाविद्यालयाने यथोचित यश मिळविले आहे.

अनेक गोष्टींची पूर्तता झालेली आहे. परंतु ही पूर्तता म्हणजे पूर्णत्व नव्हे याची जाणीव ठेऊन येणाऱ्या वर्षासाठी अनेक संकल्प सोबत आहेत. अजूनही खूप मोठी गुणात्मक उंची गाठायची आहे. नव्या इमारतीचे स्वप्न डोळ्यासमोर आहे. सर्व सहकाऱ्यांना सोबत घेऊन त्या दिशेने वाटचाल करीत आहे.

वर्षाअखेरीस प्रसिध्द होणारा हा 'बहादुरीय' अंक म्हणजे वर्षभराच्या कष्टांची आणि परीश्रमांची परिपूर्ती करणारा पूर्णत्वाचा आनंद देणारा आविष्कार असतो. विद्यार्थ्यांच्यातील नवनविन उन्मेष्टांना आणि त्यांच्यातील सृजनशक्तीला वाव देणारा हा अंक म्हणजे उद्याच्या संपन्न आणि समर्थ भारताचेच दर्शन आहे.

या अंकाचे संपादक प्रा.डॉ.आर.जी.पाटील आणि त्यांचे सहकारी संपादक मंडळ यांनी अत्यंत परिश्रमपूर्वक, चिकाटीने तसेच चोखंदळपणे संपूर्ण अंक सिध्द केला आहे. यातील कथा, कविता, वैचारिक लेख आणि चित्रे ही विद्यार्थ्यांच्या भावविश्राला आपल्या समोर साकार करतात. असा सुंदर अंक आपल्या हातात देताना मला मनापासून आनंद होत आहे. आपणही प्रसन्न मनाने याचा स्वीकार करून स्वागत आणि कौतूक कराल हीच अपेक्षा. धन्यवाद !

प्राचार्य डॉ.राजेंद्र शेजवळ
लाल बहादूर शास्त्री महाविद्यालय, सातारा

वृत्तपट्टकीय

विद्यार्थ्यांच्या कर्तृत्वाच्या, २०१२-१३ या वर्षात घेतलेल्या अष्टपैलू व उंच भराऱ्यांचा व त्यांच्या लेखणीतून बाहेर आलेल्या आविष्कारांचा लेखाजोखा तसेच महाविद्यालयाने विद्यार्थ्यांच्या सर्वांगीण विकासासाठी व समाजासाठी राबवलेल्या उपक्रमांचे प्रतिबिंब म्हणजे 'बहादुरीय'. असा हा शिक्षणमहर्षी डॉ.बापूजी साळुंखे यांच्या "ज्ञान विज्ञान आणि सुसंस्कार यांसाठी शिक्षण प्रसार" या उदात्त ध्येयाचा पदोपदी ठसा असणारा बहादुरीयचा हा अंक आपल्या हाती सुपूर्त करताना होणारा आनंद काही वेगळाच.

दलितमित्र, शिक्षणमहर्षी डॉ.बापूजी साळुंखे यांच्या ध्येयवादातून स्थापन झालेली श्री.स्वामी विवेकानंद शिक्षण संस्था आपल्या ३७७ शाखांमधून आजही प.पू.बापूजींचा ज्ञानदानाचा पवित्र वारसा त्यांचे सुपुत्र मा.प्राचार्य अभयकुमार साळुंखे व नात मा.प्राचार्या सौ.शुभांगीताई गावडे आपल्या सर्व सहकार्यांना सोबत घेऊन चालवित आहेत व त्यांना मा.प्राचार्य डॉ.अशोक करांडे व प्राचार्य पी.एस्.चव्हाण महत्वाची साथ देत आहेत.

ऐतिहासिक सातारा शहराच्या केंद्रस्थानी आणि सातारकरांच्या हृदयात विराजमान झालेले लाल बहादूर शास्त्री महाविद्यालय म्हणजे बापूजींच्या ध्येयवादातून साकारलेला आणि तशीच वाटचाल करणारा एक ज्ञानयज्ञच.

बापूजींची प्रेरणा घेऊन या कॉलेजचे प्राचार्य डॉ.आर.व्ही.शेजवळ सातत्याने प्राध्यापकांमधील व विद्यार्थ्यांमधील चांगुलपणाला आवाहन करीत, सामान्य विद्यार्थ्यांला असामान्य झेप घेण्यासाठी आणि पैशाअभावी शिक्षणापासून कोणीही वंचित राहणार नाही तसेच प्राध्यापकांनी ज्ञानाची पातळी वाढवावी यासाठी सातत्याने घडपडत असतात व त्यांना तेवढ्याच श्रद्धेने आणि निष्ठेने विद्यार्थी व आमचा सृजनशील प्राध्यापक वर्ग साथ देत असतो. महाविद्यालयामध्ये अल्पावधित संगणकीय सुविधा, इंटरनेट सेवा, आधुनिक प्रयोगशाळा, संशोधन सुविधा, संदर्भग्रंथांची उपलब्धता, करीयर कोर्सेस व इमारतीचे नूतनीकरण करून येणाऱ्या नविन शैक्षणिक आव्हानाला सामोरे जाण्याची प्रगल्भता प्राचार्यांनी दाखवून दिली.

या महाविद्यालयाच्या प्राध्यापकांनी विविध विषयावरील मेजर-मायनर शोध प्रकल्प यु.जी.सी.च्या सहाय्याने घेतले असून विविध विषयांवर राष्ट्रीय व आंतरराष्ट्रीय कार्यशाळांमधून व जर्नल्समधून आपले शोधनिबंध सादर केले आहेत. तसेच राष्ट्रीय व आंतरराष्ट्रीय कार्यशाळांचे आयोजन करून महाविद्यालयाचा संशोधनामध्ये स्वतःचा ठसा निर्माण केला आहे. तसेच 'अग्रणी महाविद्यालय' या योजनेअंतर्गत विद्यार्थ्यांसाठी वेगवेगळे शैक्षणिक उपक्रम राबवले.

विद्यार्थ्यांसाठी पारंपरिक शिक्षणाबरोबरच विविध कोर्सेसचे आयोजनही वेगवेगळ्या विभागामार्फत करण्यात आले.

प्राध्यापकांनी ज्ञानाची व संशोधनाची देवाणघेवाण व्हावी या उद्देशाने इतर संस्था, व महाविद्यालयाशी MOU सुद्धा केले आहेत. याचा उपयोग महाविद्यालयाची नवी शैक्षणिक व संशोधन दिशा ठरविण्यासाठी झाला. तसेच आपले ज्ञान अपडेट करण्यासाठी 'प्राध्यापक प्रबोधिनी' मार्फत वेगवेगळी व्याख्याने आयोजित केली गेली.

महाविद्यालयाच्या निकालाची उत्तुंग परंपरा यावर्षीही चालू असून सर्व शाखांचे व सर्व वर्गाचे निकाल विद्यापीठाच्या निकालाबरोबर किंवा त्यापेक्षा जास्तच आहेत.

यावर्षी 'NAAC' पुनर्मुल्यांकन समितीने महाविद्यालयाचे २.८६ असे पुनर्मुल्यांकन करून महाविद्यालयाच्या चढत्या आलेखावर शिक्कामोर्तब केला.

महाविद्यालयामध्ये आर्ट्स, कॉमर्स विभागासाठी संगणक व इंटरनेटसह स्वतंत्र विभागाची नव्याने व्यवस्था करण्यात आली. त्याचबरोबर सर्वच प्रयोगशाळांचे नुतनीकरण करण्यात आले. सर्वच विभागामध्ये स्वतंत्र असे आपल्या विभागाचे 'विभागीय ग्रंथालय' हे आणखी एक वैशिष्ट्य. स्वतंत्र विभाग व सुसज्ज प्रयोगशाळेचा सर्व विद्यार्थी पुरेपूर लाभ घेत असून त्यांच्या अभ्यासाबरोबरच छोट्या-छोट्या संशोधन प्रकल्पासाठी या गोष्टींचा खूपच लाभ होत आहे.

एक लाखाच्या दरम्यान ग्रंथसंख्या असलेले या महाविद्यालयाचे समृद्ध ग्रंथालय आपल्या संगणक, इंटरनेट, बुकबँक योजना, नियतकालिके, नोकरीविषयक जाहिराती, स्पर्धा परीक्षेची कात्रणे, विद्यार्थी विद्यार्थिनींसाठी असलेली अभ्यासिका, विद्यार्थ्यांना अभ्यासासाठी प्रवृत्त करते. प्राध्यापकांसाठी INFLIBNET द्वारे २१०० e journals व ५१००० e books उपलब्ध असल्याने त्यांच्या ज्ञानलालसेला व संशोधनवृत्तीला सातत्याने उत्तेजना मिळते.

यावर्षी 'जिमखाना विभागाने उल्लेखनीय कामगिरी केली. आमचे विद्यार्थी मल्लखांब, शुटींग, ज्युदो, कुस्ती व कबड्डी या क्रीडा स्पर्धांमध्ये विद्यापीठ पातळी बरोबरच राष्ट्रीय स्तरावर चमकले.

एन्.सी.सी. व एन्.एस्.एस्. विभागाने महाविद्यालयाची गौरवशाली परंपरा यावर्षीही चालू ठेवली. विद्यार्थी व्यक्तीमत्त्व विकास, राष्ट्रीय एकात्मता, सामाजिक बांधिलकी, स्वयंशिस्त व सामाजिक शिस्त या अनुषंगाने अनेक उपक्रम राबवले. एन्.एस्.एस्. मार्फत श्रमसंस्कार शिबीर, जागतिक एड्स दिन, रक्तदान शिबीर, अजिंक्यतारा स्वच्छता यासारखे उपक्रम राबवले तर एन्.सी.सी. मार्फत आर्मी अटॅचमेंट कॅम्प, राष्ट्रीय एकात्मता शिबीर व वार्षिक प्रशिक्षण शिबीर व "अजिंक्यतारा स्वच्छता मोहीम" या उपक्रमामध्ये विद्यार्थ्यांनी भाग घेतला.

महाविद्यालयाचा 'प्लेसमेंट सेल' व 'स्पर्धा परीक्षा मार्गदर्शन केंद्र' हे विद्यार्थ्यांना नोकरी संदर्भात मार्गदर्शन करण्याबरोबरच नोकऱ्या मिळवून देण्यातही अग्रेसर आहे. या वर्षी व्यक्तीमत्त्व विकास, उद्योजकता व मुलाखत तंत्र या विषयावर तज्ज्ञ व्यक्तींची व्याख्याने तसेच वेगवेगळ्या कंपन्यांचे "कॅम्पस इंटरव्ह्यू" चे आयोजन या विभागातर्फे करण्यात आले. त्यामुळे एकूण ७६ विद्यार्थ्यांची वेगवेगळ्या कंपन्यात नोकरीसाठी निवड झाली.

पारंपरिक शिक्षणाबरोबरच वेगवेगळ्या अडचणी व जबाबदाऱ्यांमुळे ज्यांना शिक्षण घेता येत नाही त्यांना हे महाविद्यालय यशवंतराव चव्हाण मुक्त विद्यापीठ व शिवाजी विद्यापीठाच्या दूरशिक्षण केंद्रामार्फत शिक्षणाची सुविधा उपलब्ध करून देते. यावर्षी ३८५७ एवढे विद्यार्थी याचा लाभ घेत आहेत.

विद्यार्थ्यांनी सांस्कृतिक विभाग, युवा महोत्सव विभाग व वक्तृत्व व निबंध स्पर्धा विभागातर्फे राबविण्यात आलेल्या उपक्रमामधून आपल्या वाङ्मयीन व इतर कलागुणांची चमक दाखविली. या अंकासाठी संशोधन, वाङ्मयीन व कलेचे अंश असलेल्या विद्यार्थ्यांनी हा अंक दर्जेदार होण्यासाठी मराठी, हिंदी, इंग्रजी व संस्कृत भाषेतून लिखाण केले. विद्यार्थ्यांच्या कल्पकतेचे व लिखाणाचे

करावे तेवढे कौतुक थोडेच ! यावर्षी विद्यार्थी संसदेच्या प्रतिनिधींनी सूचना करून महाविद्यालयाच्या शिस्तीमध्ये, भौतिक व शैक्षणिक सुधार होण्यासाठी मौलीक मदत केली. तेही कौतुकास पात्र आहेत. एकूण मा.प्राचार्य डॉ.आर.व्ही.शेजवळ, प्राध्यापक वर्ग, कार्यालयीन कर्मचारी यांनी २०१२-१३ या वर्षासाठी ठरवलेले ध्येय पूर्ण झाले. सर्वांचे अभिनंदन.

हा अंक वेळेत पूर्ण करण्यासाठी योगदान देणाऱ्या सर्वांचा मी ऋणी आहे. मा.प्राचार्य डॉ.आर.व्ही.शेजवळ यांची प्रेरणा व दिलेले स्वातंत्र्य तसेच प्रा.डॉ.श्रीमती सुहासिनी राजेभोंसले, प्रा.जे.आर.जाधव, प्रा.बी.एस्.जगताप, प्रा.कु.प्रतिभा चिकमठ, प्रा.शेखर मोहिते, प्रा.डॉ.महेश गायकवाड, प्रा.चंद्रकांत पाटील, प्रा.एस्.यु.पाटील, प्रा.रशीद देसाई, प्रा.सौ.इंदुमती पवार, प्रा.सौ.एस्.वाय.पाटणे, प्रा.श्रीमती पी.एन.हरनोळ, श्री.नंदू देशमुख यांनी दाखविलेल्या कल्पकतेबद्दल व सहकार्याबद्दल मनःपूर्वक आभार. याशिवाय सर्व विभागप्रमुख, प्राध्यापक, विद्यार्थी प्रतिनिधी विद्यार्थी संसद सचिव कु.संजीवनी जाधव, सर्व कार्यालयीन कर्मचारी यांनी केलेल्या बहुमोल सहकार्याबद्दल हार्दिक आभार.

वास्तवाला भिडणारे 'बहादुरीय' चे मुखपृष्ठ वैशिष्ट्यपूर्ण करण्याचा प्रयत्न आम्ही केला आहे. ज्या दोन भीषण समस्यांमुळे आज महाराष्ट्र खऱ्या अर्थाने 'होरपळत' आहे त्या म्हणजे दुष्काळ आणि स्त्रियांवरील अत्याचार. निसर्गाचा कोप आणि नियोजनशून्य पाणीवापर यापुढे हताश झालेला 'बळीराजा' आणि माणुसकीला काळीमा फासणाऱ्या नराधमंमुळे आक्रोश करणारी एखादी 'निर्भया' हे वास्तव आहे पण भविष्य नक्कीच नाही. आजची युवापीढी आणि उद्याचे नेतृत्वच याचे उत्तर शोधणार आहे. म्हणूनच पाठीमागील पृष्ठावर कायद्याचे राज्य आणि स्त्रीशक्तीची मशाल आहे ! तर दुष्काळावर मात करणारा पाण्याच्या थेंबाचे स्वागत करणारा सृजनाचा अंकुर ही आहे !

'हे असे असले तरी हे असे असणार नाही
दिवस अमुचा येत आहे तो घरी बसणार नाही'

हाच आशावाद पुढील वाटचालीची, उगवत्या पीढीची ताकद आहे. या सुंदर मुखपृष्ठाला साकार करण्यासाठी महाविद्यालयाचे माजी विद्यार्थी सागर गायकवाड यांनी विशेष परिश्रम घेतले आहेत.

हा अंक प्रत्यक्ष साकार करण्यासाठी टाईप इनोव्हेटर्सचे श्री.प्रशांत गुजर व प्रिंट ओम ऑफसेटचे श्री.संदेश शहा यांनी कल्पकतेने व आस्थेने प्रयत्न केले त्याबद्दल हार्दिक आभार !

पुढील वर्षाच्या योजनांमध्ये रसायनशास्त्र, इंग्रजी व हिंदी या विषयाचे M.Sc. / M.A. कोर्सेस, राष्ट्रीय कार्यशाळा, नवीन संशोधन प्रकल्प, करीअर कोर्सेससह आमचे महाविद्यालय शैक्षणिक क्षेत्रात आणखी नवी झेप घेईल. ही शुभेच्छा !

शेवटी नव्या युगातील अभंगाची आठवण येते आणि म्हणावसं वाटतं-

'ज्ञान हाच श्वास, ज्ञान हाच ध्यास । ज्ञानार्जनी त्रास सदा घ्यावा ॥

जीवनाला अर्थ ज्ञानानेच यावा । त्याविणा वाटावा जन्म खोटा ॥'

धन्यवाद !

प्रा.डॉ.आर.जी.पाटील
प्रमुख संपादक 'बहादुरीय'

LAL BHADUR SHASTRI COLLEGE, SATARA

SENIOR COLLEGE STAFF 2012-2013

CHEMISTRY

1. Prin. Dr. R. V. Shejwal.
2. Dr.M. T.Thorat
3. Prof. Dr. C.P. Mane
4. Prof. D.V. Rupnwar
5. Prof. Ms. G.A. Kadam
6. Prof. Ms. S.G. Yadav
7. Prof. Ms. A.V. Ghorpade

ENGLISH

1. Prof.D.G. Salunkhe
2. Prof. P.P Lohar
3. Prof. M.S. Jadhav
4. Prof. M.R. Ohol
5. Prof. Ms. S.V. Thakar

MARATHI

1. Prof. B.S. Jagtap
2. Prof. Kasture A.N.

SANSKRIT

1. Prof.Dr.Smt. S.S. Rajebhonsale
2. Prof. Ms. M.S.Rajebhonsale

HINDI

1. Prof.J.R. Jadhav
2. Dr. B.D. Sagare

GEOGRAPHY

1. Prof.M.B. Raskar
2. Prof.B.B. Bagal
3. Prof. V.M. Bansode

HISTORY

1. Prof. P.C. Chikmath
2. Prof.D.S. Jadhav

SOCIOLOGY

1. Prof.Dr.Smt.S.K. Mane

PSYCHOLOGY

- 1 Prof.S.M. Mestry

ECONOMICS

- 1 Prof.I. B. Ahire
- 2 Prof. S.P.Kudale
- 3 Prof. R.P. Madane

PHYSICAL DIRECTOR

- 1 Shri V.A. Jadhav

POLITICAL SCIENCE

- 1 Prof.R.R. Gaikwad
- 2 Prof. G.B. Gaikwad

COMMERCE

- 1 Prof. Dr. D.R. Bhutiyani
- 2 Prof. B.S. Waske
- 3 Prof. S.D.Borate
- 4 Prof.Sou A.V.Horekari

STATISTICS

- 1 Prof. D.P.Wattamwar
- 2 Prof.T.B. Adsul

BOTANY

- 1 Prof. P. S. Jadhav
- 2 Prof.S.A. Mohite
- 3 Prof. R.R. Sabale
- 4 Prof. Ms. P.M.Jadhav
- 5 Prof. Ms. A.A. Kirdat

ZOOLOGY

- 1 Prof.Dr.R.G. Patil
- 2 Dr.V.B. Supugade
- 3 Prof.R.R. Ohol
- 4 Prof. Ms. M.P. Gujar
- 5 Prof. Ms. S.V. Yadav
- 6 Prof. Ms. V.J. Suryawanshi

MATHEMATICS

- 1 Prof. Dr. S. M. Pawar
- 2 Prof. Smt. N.P. Desai

PHYSICS

- 1 Prof.Dr. A.E.Korade
- 2 Prof.Dr.S.R. Jadhav

MICROBIOLOGY

- 1 Prof. V.S. Patil
- 2 Prof. N.A. Kadam
- 3 Prof. V.B. Bhosale

ASSISTANT LIBRARIAN

- 1 Mr. R.G. Damale

ENVIRONMENT

- 1 Prof. Ms. S.V. Yadav
- 2 Prof. A.V. Bhosale

M.LAW

- 1 Prof. S.S.Ghadge

२०१३

ब
ह
उ
स
ी
य

१३

LAL BHADUR SHASTRI COLLEGE, SATARA

JUNIOR COLLEGE STAFF 2012-2013

ENGLISH

- 1 Shri. S.U. Patil
- 2 Shri. R.A. Patil
- 3 Shri .S.N. Patil

HISTORY

- 1 Shri. G.G. Nimbekar

ECONOMICS

- 1 Shri. R.D.Yadav
- 2 Shri. L.G. Badane

MARATHI

- 1 Smt.P.N. Harnol
- 2 Shri Sou I.P. Pawar
- 3 Shri. A.G. Pawar
- 4 Sou. J.P Inamdar (P.T.)

HINDI

- 1 Shri.R.M. Desai

SANSKRIT

- 1 Smt. M.A. Bhore

GEOGRAPHY

- 1 Shri B.S.Koli
- 2 Shri R.A. Lokare.(P.T.)

SOCIOLOGY

- 1 Shri. U.H.Kambale

POLITICAL SCIENCE

- 1 Sou. G.S. Salunkhe

COMMERCE

- 1 Shri. V.S. Vahagaonkar
- 2 Shri. A.N. Kulkarni
- 3 Shri. A.B.Khurd

PHYSICAL EDUCATION

- 1 Shri. V.V. Bhoi

PHYSICS

- 1 Shri. N.M. Karbhari
- 2 Shri. S.B. Patil
- 3 Dr. M.N. Gaikwad
- 4 Sou. A.A. Thorat
- 5 Smt. V.G. Patil

CHEMISTRY

- 1 Smt. S. K. Nimbalkar.
- 2 Shri. M.D. Somjal
- 3 Shri. S.A. Musale
- 4 Shri V.S. Shinde
- 5 Shri. S.A. Jadhav
- 6 Shri. K.J. Inamdar

BIOLOGY

- 1 Sou.S.Y. Patne
- 2 Sou. M.S. Patil
- 3 Smt. J.S. Shinde
- 4 Smt. R.D. Pise
- 5 Shri S.S. Patil

ENVIRONMENT EDUCATION

- 1 Shri. P.D.Koli

MATHMATICS

- 1 Smt.M.R. Mane
- 2 Shri. Attarkar S. L.

VOCATIONAL + 2 STAGE

- 1 Shri B.L. Surve (Ele)
- 2 Shri S.S. Chavan
- 3 Mrs. M.A. Kadam
- 4 Mrs. Mrs. P.Y. Kaware

ELECTRONICS

- 1 Miss. S.S. Salunkhe
- 2 Miss. M.S. Salunkhe

MARATHI/HISTORY

- 1 Shri. C.A.Patil

२०१३

ब
ह
र
द
स
ी
य

१४

LAL BHADUR SHASTRI COLLEGE, SATARA

NON TEACHING STAFF 2012-2013

REGISTRAR

1 Shri Deshmukh S.V.

SUPRITENDENT

1 Shri Patil N.B.

HEAD CLERK

1 Shri Kadam M.B.

SENIOR CLERK

1 Shri Pawar S.D.

2 Shri.Kadam D.E.

JUNIOR CLERK

1 Shri Mane S.B

2 Shri Kagwade A.B

3 Shri Ithape G.S.

4 Shri Patil S.D.

LABORATORY ASSISTANTS

1 Shri Dhamal A.N.

2 Shri Kadam A.N.

3 Shri Barge T.V.

LIBRARY CLERK

1 Shri Kumbhar H.J.

LIBRARY ATTENDENT

1 Shri.Belambe S.B.

2 Shri.Patil M.A.

3 Shri.Sutar M.A.

4 Shri Mane P.K.

5 Shri Mahadik P.B.

6 Shri Sabale P.A.

7 Shri.Gaikwad V.J.

8 Shri Mane M.B.

LABORATORY ATTENDENT

1 Shri Shinde G.B.

2 Shri Chavan S.S.

3 Shri.Waske B.S.

4 Shri Shinde D.A.

5 Shri.Pawar R.V.

6 Shri Mane S.M.

7 Shri Biraje A.B.

8 Smt.Thite S.N.

9 Shri Shinde S.S.

10 Shri Khawale S.J.

11 Shri Jadhav R.P.

12 Shri Kulkarni V.H.

13 Shri Desai S.S.

PEONS

1 Shri Ubale P.H

2 Shri Pawar P.J.

3 Smt.Dighe A.S.

4 Shri Kedar V.R.

5 Shri Lad D.A.

6 Shri Kamble P.V.

7 Shri Gade R.R.

8 Shri Kadam N.J.(MCVC)

9 Shri Sapkal V.R. (Cont.Bas)

10 Shri Kumbhar S.B. (Cont.Bas)

२०१३

ब
ह
ा
र
ु
सी
य

१५

श्रीमती

- १) कै.सौ.अरुणा भरत सगरे
प्रा.डॉ.बी.डी.सगरे यांच्या पत्नी
- २) कै.सौ.नीता विवेक गायकवाड
प्रा.आर.आर.गायकवाड यांची स्नुषा
- ३) कै.प्रकाश पोपटराव पाटील
प्रा.एस्.यू.पाटील यांचे मेहुणे
- ४) मा.आमदार शंकरराव जगताप
संस्था हितचिंतक
- ५) मा.आमदार मदनराव पिसाळ
संस्था हितचिंतक
- ६) कै.रामकिसन ठमाजी केदार
श्री.केदार आर.व्ही. यांचे वडील
- ७) कै.श्रीमती कलाबाई शंकर पवार
श्रीमती आर.व्ही.पवार यांच्या सासुबाई
- ८) कै.हीराबाई आप्पासो सुतार
श्री.महादेव आप्पा सुतार यांच्या मातोश्री
- ९) कै.मोहनराव तातोबा पाटील
श्री.माणिक आनंदराव पाटील यांचे चुलते
- १०) कै.वनिता शिवाजी माने
श्री.एस्.एम.माने यांच्या पत्नी
- ११) कै.श्रीमती तारुबाई नामदेव ढमाल
श्री.आप्पासो नामदेव ढमाल यांच्या मातोश्री
- १२) कै.अंजुबाई जगन्नाथ खवळे
श्री.संजय जगन्नाथ खवळे यांच्या मातोश्री
- १३) कै.रामचंद्र गेणू सपकाळ
श्री.वैभव रामचंद्र सपकाळ यांचे वडील
- १४) कै.श्रीमती हौसाबाई ज्ञानदेव पवार
श्री.संग्राम पवार यांच्या मातोश्री
- १५) कै.हणमंत सखाराम कुलकर्णी
श्री.विवेक हणमंत कुलकर्णी यांचे वडील



॥ सिनिअर जिमखाना विभाग : महाविद्यालयाची शान ॥



प्रदपिकेश आनंदकले
आखिल भारतीय आंतर विद्यापीठ
महाराष्ट्र स्पर्धेसाठी निवड



प्रणीत सुतार
आखिल भारतीय आंतर विद्यापीठ
आर्चरी स्पर्धेसाठी निवड



अपौरव म्हांगडे
आखिल भारतीय आंतर विद्यापीठ
आर्चरी स्पर्धेसाठी निवड



कुणाल तावरे
आखिल भारतीय आंतर विद्यापीठ
आर्चरी स्पर्धेसाठी निवड



विक्रम शिंदे
आखिल भारतीय आंतर विद्यापीठ
कबड्डी स्पर्धेसाठी निवड



गणेश वाधव
आखिल भारतीय आंतर विद्यापीठ
कबड्डी स्पर्धेसाठी निवड



अभिनीत सांकुले
आखिल भारतीय आंतर विद्यापीठ
व्हूदो स्पर्धेसाठी निवड



भौवा मुळ
आखिल भारतीय आंतर विद्यापीठ
कुस्ती स्पर्धेसाठी निवड



पंकज माने
राज्यस्तरीय पॉवर लिफ्टिंग
स्पर्धेत गोल्ड मेडल



आकाश बेंद्रे
इंटर झोनल शुटींग
स्पर्धेत ब्रॉन्ज मेडल



नागेश शेलार
झोनल कुस्ती स्पर्धेत
प्रथम क्रमांक



महेश ढाणे
झोनल स्विमिंग स्पर्धेत
द्वितीय क्रमांक



नम्रता यादव
झोनल गोड्रा फेक स्पर्धेत
द्वितीय क्रमांक



समीर सावळे
शिवाजी विद्यापीठाच्या कबड्डी
स्पर्धेसाठी सराव शिबिरात निवड



हणमंत खताळ
झोनल कुस्ती स्पर्धेत
द्वितीय क्रमांक



नूनी शिंदे
इंटर झोनल आर्चरी स्पर्धेत
सुवर्णपदक विजेती



सुरज पवार
झोनल बुद्धिबळ स्पर्धेत
महाविद्यालयास जनरल
चॅम्पियनशीप प्रथम क्रमांक



निलेश भोसले
झोनल बुद्धिबळ स्पर्धेत
महाविद्यालयास जनरल
चॅम्पियनशीप प्रथम क्रमांक



आदित्य चिकणे
झोनल बुद्धिबळ स्पर्धेत
महाविद्यालयास जनरल
चॅम्पियनशीप प्रथम क्रमांक



शाहेरुख शेण्ण
झोनल बुद्धिबळ स्पर्धेत
महाविद्यालयास जनरल
चॅम्पियनशीप प्रथम क्रमांक

श्री स्वामी विवेकानंद शिक्षण संस्था, कोणहापुर संचालित
लाल बहादूर शास्त्री महाविद्यालय, सातारा



॥ राष्ट्रीय सेवा योजना : नियमित उपक्रम ॥



किल्ले अजिंक्यतारा येथे एक दिवसीय कॅम्पमध्ये सहभागी राष्ट्रीय सेवा योजनेतील स्वयंसेवक व प्राध्यापक



८ ऑगस्ट रोजी रक्तदान शिबिरात सहभागी स्वयंसेवक, मा.प्राचार्य व डॉ.सुरेश जगदाळे



राखी पौर्णिमेनिमित्त सीमेवगील जवानांना राख्या पाठविताना मा.प्राचार्य डॉ.शेजवळ, प्रकल्प अधिकारी व राष्ट्रीय सेवा योजनेतील स्वयंसेवक



५ सप्टेंबर रोजी प्राध्यापकांना पुण्यगुच्छ देऊन कृतज्ञता व्यक्त करताना स्वयंसेवक



महाविद्यालयात राष्ट्रीय सेवा योजना विभागाचे उद्घाटन करताना मा.राजेंद्र चोरगे, ज्यासपीठावर प्राचार्य डॉ.राजेंद्र शेजवळ व प्रकल्पअधिकारी प्रा.पी.एस. जाधव



'लोकसंख्या दिन' साजरा करताना स्वयंसेवक, प्राध्यापक व प्रकल्प अधिकारी

| २०१२-२०१३ | बहादुरीय



॥ राष्ट्रीय सेवा योजना

विशेष श्रमसंस्कार शिबीर ॥



साबळेवाडी येथील विशेष श्रमसंस्कार शिबीराचे उद्घाटन करताना कृषी सभापती किाण साबळे-पाटील वानूस प्राचार्य डॉ. रामेंद्र शेजवळ



मौजे साबळेवाडी येथे पशुचिकित्सा शिबीरात जनावरांची आरोग्य तपासणी करताना



साबळेवाडी येथील विशेष श्रमसंस्कार शिबीरात वनराई बंधारा बांधताना शिबिरार्थी



साबळेवाडी येथील श्रमसंस्कार शिबीरात वृक्षारोपण करताना स्वयंसेवक



साबळेवाडी येथील विशेष श्रमसंस्कार शिबिरात आयोजित हळदी-कुंकू समारंभाच्यावेळी उपस्थित महिला व विद्यार्थिनी



साबळेवाडी येथील विशेष श्रमसंस्कार शिबीरातील आरोग्य शिबीरात आयोजित विद्यार्थ्यांची आरोग्य तपासणी करताना वैद्यकीय पथक

श्री स्वाामी विवेकानंद शिक्षण संस्था, कोल्हापूर संचलित
लाल बहादूर शास्त्री महाविद्यालय, सातारा



॥ विद्यार्थी प्रतिभेचा आविष्कार भित्तिपत्रिका - प्रकाशन सोहळा ॥

चनस्पतीशास्त्र भित्तिपत्रिका
प्राचार्य डॉ. राजेंद्र शेजवळ एकात्मिक कीड
प्रवस्थापनाविषयी माहिती संगताना



'शब्दशिल्प' भित्तिपत्रिका प्रकाशन प्रसंगी
प्रमुख पाहणे डॉ. गजानन भोसले विद्यार्थ्यांसमवेत



हिंदी विभाग भित्तिपत्रिका प्रकाशन समारंभ प्रसंगी
मा. ना. पलंगरावजी कटम, प्राचार्य डॉ. शेजवळ, प्रा. जयवंत जाधव



शिक्षक दिन : प्रबंधपाल श्री. कुंभार, रजिस्ट्रार श्री. देशमुख
व कार्यालयीन अधीक्षक श्री. एन. बी. पाटील यांच्या हस्ते
भित्तिपत्रिकेचे उद्घाटन



इतिहास विभाग ५ ऑगस्ट क्रांतिदिनानिमित्त इतिहास विभागातर्फे
'पानीपत युद्ध' चा विषयावर भित्तिपत्रिका प्रकाशित



मराठी विभाग - 'मायबोली' भित्तिपत्रिकेचे उद्घाटन मराठी विभागाचे माजी विद्यार्थी
सुप्रसिद्ध अधिनेते मा. सयाजी शिंदे यांच्या शुभहस्ते संपन्न
सोबत-माजी प्राचार्य पुनमोलम शेट व प्राचार्य डॉ. राजेंद्र शेजवळ



सातारा जिल्ह्यातील दुष्काळी प्रदेश : या विषयावरील भित्तिपत्रिका उद्घाटन
भृगोल विभाग डॉ. सी. शैलजा माने, प्रा. बी. बी. बागल व विद्यार्थी

बी स्यामी विवेकानंद शिक्षण संस्था, कोल्हापूर संघालित
लाल बहादूर शास्त्री महाविद्यालय, सातारा

साहित्यसंस्कार



“भारतीय संस्कार आणि भाव यांचा अफाट सागर भारतीय जनजीवनात साहित्याच्या रूपाने उखळत आहे. मराठी साहित्य या विशाल सागराचा महत्त्वपूर्ण अंश आहे. हे आम्ही विसरता कामा नये. साहित्याचा समाज जीवनासाठी आरशासारखा उपयोग होतो. कारण साहित्यात सर्वसाधारण लोकांच्या सांस्कृतिक, आर्थिक आणि सामाजिक प्रवृत्तींचे प्रतिबिंब सापडते.

साहित्य कोणत्याही रंगाचे असले, तरी चालेल, पण आजूबाजूच्या परिस्थितीचा डोळसपणे अभ्यास करून, समाजाच्या सर्व थरात निर्माण झालेल्या अस्वस्थतेची जाणीव असणारे समाजचिंतन त्यात असले पाहिजे.’

-यशवंतराव चव्हाण



विभागीय संपादक

प्रा. बाळासाहेब जगताप

अनुक्रमणिका

गद्य विभाग

| | | | |
|---|------------------------------|-----------------------|----|
| १) महाराष्ट्राचे भाष्यविधाते यशवंतराव चव्हाण | अमोल अशोक फाळके | तृतीय वर्ष, कला | १९ |
| २) आमचे आधारस्तंभ मा.प्राचार्य अभयकुमार साळुंखे | संदेश वायदंडे | द्वितीय वर्ष, कला | २२ |
| ३) नॅनोटेक्नॉलॉजी (Nanotechnology) | कु.प्रणाली दत्तात्रय कोठावळे | तृतीय वर्ष, विज्ञान | २५ |
| ४) रक्षाबंधनाचे महत्त्व | साहेबराव बबन वरक | द्वितीय वर्ष, कला | २८ |
| ५) महाविद्यालयाचे माजी विद्यार्थी चित्रपट अभिनेते सयाजी शिंदे यांची मुलाखत | कु.श्वेता शिवाजी साबळे | तृतीय वर्ष, कला | ३१ |
| ६) जमाव : एक मानसशस्त्रीय विश्लेषण | कु.रेश्मा गोवर्धन व्हटकर | द्वितीय वर्ष, कला | ३४ |
| ७) शेतकऱ्यांच्या प्रगतीला गती : सेंद्रीय शेती | कु.प्रतीक्षा जाधव | तृतीय वर्ष, विज्ञान | ३७ |
| ८) यशाच्या तीन पायऱ्या | तुषार अभिमन्यू घाडगे | तृतीय वर्ष, वाणिज्य | ३९ |
| ९) गणितज्ञांचा गौरव : श्रीनिवास रामानुजन | कु.निलिमा शिवाजी पाटील | द्वितीय वर्ष, विज्ञान | ४२ |
| १०) विजयाताई पाटील - शिक्षणक्षेत्रातील नंदादीप | शरदचंद्र रामचंद्र चव्हाण | माजी विद्यार्थी | ४५ |
| ११) दुष्काळ भागातील दुरावस्था | कु.निलम सीताराम दळवी | तृतीय वर्ष, विज्ञान | ४७ |

पद्य विभाग

| | | | |
|--------------------------|------------------------|-----------------------|----|
| १) लाल | राहूल दत्तात्रय चव्हाण | तृतीय वर्ष, कला | २१ |
| २) दुष्काळाच्या झळा | संजय रमेश वायदंडे | द्वितीय वर्ष, कला | २४ |
| ३) कष्टाचे कण | ज्ञानेश्वर राजू आवटे | तृतीय वर्ष, वाणिज्य | ३० |
| ४) वैकुंठाला निघाला तुका | संदीप सूर्यकांत फाळके | तृतीय वर्ष, कला | ३६ |
| ५) धनाचा धनगर, | किरणरत्न जानकर | प्रथम वर्ष, कला | ४१ |
| ६) आयुष्याची डायरी | नीरज ज्ञानेश्वर कणसे | प्रथम वर्ष, वाणिज्य | ४४ |
| ७) बळीराजाचा तुरुंगवास | संभाजी विश्वास पाटील | तृतीय वर्ष, कला | ४४ |
| ८) पहिलं प्रेम | वैभव जाधव | तृतीय वर्ष, कला | ४६ |
| ९) अभिमान | कु.सायली मोहन पवार | द्वितीय वर्ष, वाणिज्य | ४८ |

व्यक्तिचित्रण



महाराष्ट्राचे भाग्यविधाते यशवंतराव चव्हाण

अमोल अशोक फाळके / तृतीय वर्ष, कला

ब्रिटिश पत्रकारांनी नेहमठ्या नंतर कोण; या प्रश्नाचे उत्तर म्हणून यशवंतरावांचे नाव पुढे केले होते. याचा कारण वाचन व्यासंगाने परिपक्व झालेले यशवंतरावांचे व्यक्तिमत्व हेच आहे. दुसऱ्या महायुद्धानंतर त्यांनी या विषयावरचे सगळे ग्रंथ जमवले. जगातील बहुसंख्य क्रांतींवांचा तुलनात्मक अभ्यास केला. इझ्रायल विरुद्धकोश विकट घेतले. नाटक व संगीतात रस घेतला.

महाराष्ट्राचे शिल्पकार यशवंतराव चव्हाण यांची जन्म शताब्दी साऱ्या महाराष्ट्र राज्यात मोठ्या दिमाखात साजरी झाली. सहाद्री पुत्र, राष्ट्रपुरुष, द्रष्टानेता महाराष्ट्राचा अभिमान अशा विशेषणांच्या राशीत गौरव केला. मराठी माणूस इतिहास वेडा आहे. म्हणूनच यशवंतरावांचा इतिहास त्यांचे जीवनचरित्र पाहणे आमच्या पिढीला गरजेचे आहे.

शंभर वर्षांपूर्वी सांगली जिल्ह्यातील देवराष्ट्र या छोट्या खेड्यात मामाच्या घरी जन्मलेला एक सामान्य घराण्यातील मुलगा. विळा-कोयता-नांगर ही त्याची हत्यारे. वसाहत काळाची लढाई खेळण्याचा तो अखेरचा टप्पा होता. कराडच्या म्युनिसिपालिटीच्या मराठी शाळेत शिकणाऱ्या या मुलाचा दाखला अलीकडे अनिल पाटील या उत्साही ग्रंथपालाने शोधला. थोर पुरुषांचे थोरपण जणू काय गुरुच्या आशीर्वादानेच मिळाले असे भारताचा अपवाद यगळता कोणत्याही देशात मानले जात नाही. ग्रंथ हेच गुरु म्हणण्यातदेखील श्रेष्ठत्वगंडच असतो. त्यापेक्षा इंग्रजीत ग्रंथांना खरे मित्र म्हणतात कधीच दगा न देणारे मित्र. गुरु मात्र शिष्याचा अंगठा कापण्याची शक्यता आजही असते. जातीवर्णाच्या चौकटी ओलांडून या मुलाचा प्रवास ग्रंथ मित्रांनीच हिमालयाच्या उंचीकडे नेला हेच खरे. आज प्रसार माध्यमांनी वाचन व ज्ञानच उद्ध्वस्त केले आहे. अशा काळात यशवंतरावांना ग्रंथांनी कसे रचले आणि त्यांनी ग्रंथांच्या वाचनामधूनच महाराष्ट्र कसा 'रचला' हे पाहणे जास्त उद्बोधक आहे.

स्मरणगाथेत गुरफटणाऱ्याला चिकित्सा करता येत नाही. हायस्कूलमधील नादारीत फी माफीसाठी प्रतिष्ठित श्रीमंताचे शिफारसपत्र

२०१३

ब
हा
दु
री
य

१९

मागायला गेलेल्या यशवंतरावांना इनामदाराची गुरं राखायचा सल्ला मिळतो. त्याच यशवंतरावांनी संयुक्त महाराष्ट्राचा मुख्यमंत्री होताच १२०० च्या आतील उत्पन्नाच्या यादीतील सर्व जाती धर्मातील मुलांसाठी शिक्षणाची फी माफी योजना आणली. तेव्हा अर्थमंत्री व अर्थतज्ञ त्यांना विरोध करतात. त्यावेळी मुख्यमंत्रीपद सोडणे; पण ही योजना सोडणार नाही. ही भूमिका घेण्याची ताकद त्यांना दिली कुणी ? तुरुंगाच्या शाळेत त्यांनी वाचलेल्या इंग्रजी ग्रंथांनी ती अधिक प्रमाणात दिली होती. त्यात रशियातील मॅग्झिम गोर्कीची आई, बर्नाड शॉची नाटके, विल्यम शेक्सपिअरचा ज्युलियस सीझर, सॉमरसेट मॉमचे रायटर्स नोटबुक, रॉयचा साम्यवाद, कार्ल मार्क्स-लेनिन नेहरू व गांधी यांचे विचार होते. छत्रपती शिवरायांपासून टिळकांपर्यंतच्या थोर नेत्यांचे आदर्श होते.

रोमन साम्राज्याचा शूर सेनानी ज्युलियस सीझरच्या खुनानंतर त्याचा जिवलग मित्र अँटनी स्मशानभूमीत सीझरचे अखेरचे इच्छापत्र वाचून दाखवतो. आपले आयुष्य व संपत्ती देशाला अर्पण करणारा सीझर महत्त्वाकांक्षा हुकूमशहा कधीच बनला नसता. बंडखोरांनी स्वार्थी राजकारणात त्याचा बळी घेतला. हे जनतेला अँटनी पटवून देतो. इथे महत्त्वाचे साम्य यशवंतरावांच्या हस्ताक्षरातील इच्छापत्रात आढळते. आयुष्यभराची कमाई तीस लाख आहे. त्यातून कै. वेणुताईच्या नावे ग्रंथालय व सभागृह बांधावे आपली अन्य इस्टेट कुठेही नाही, असे सांगणारा गावगल्लीतला नेता तरी आज सापडेल का ?

महाराष्ट्र राज्य स्थापनेच्या प्रसंगी केलेल्या भाषणात नेपोलियनचा संदर्भ त्यांनी दिला आहे. नेपोलियन उपरोधाने म्हणे की, ब्रिटिशांचा पराभव कधी झाला हे त्यांना कधी कळलेच नाही. कारण त्यांना पराभव म्हणजे काय हेच माहीत नव्हते. चारित्र्याचा सुगंध वाऱ्याच्या उलट वाहतो, कुठल्याही फुलाचा नव्हे. त्यामुळेच त्यांचे नैतिक वजन टिकले आणि भ्रष्टाचाराचे प्रमाणही आजच्या तुलनेत तेव्हा

फार फार कमी होते. त्यांच्या संग्रहात नेपोलियनची पत्रे, चरित्र यांच्या जोडीला अमेरिकेतील भ्रष्टाचार 'स्पर्थतून विकास', मॉॅटगॉरीचे 'नेतृत्वाची पायवाट' असे हजारो इंग्रजी ग्रंथ विकत घेतल्याचे पुरावे आहेत. १९४६ नंतर कृष्णाकाठ सोडून ते सागरतीरी मुंबईला गेले. भूमीहीन पट्टेवाल्याचा पोर कुठल्याही 'भांडवलाचे' बळ नसता विधान सभेचा सचिव झाला. केवळ दीडशे रुपये खर्चून निवडणूक जिंकणारा हा स्वातंत्र्यसैनिक कार्यकर्ता होता. जगात 'सांस्कृतिक भांडवल' सर्वात श्रेष्ठ मानले जाते. हे कमविण्यासाठी त्यांनी इंग्रजीत बोलायचे ठरवले. त्यासाठी आर्थिक ओढाटाण असताना त्यांनी खरेदी केलेली पुस्तके पाहून आज आपण थक्क होतो. अगदी रहस्यकथा-कादंबऱ्यापासून जगभरातील नोबेल पुरस्कार विजेत्यांचे ग्रंथ त्यांनी जमवले. ते 'कृष्णाकाठ' या आत्मचरित्रात आपल्या वाचन व्यासंगाचा आलेख काढताना म्हणतात की, विविध क्षेत्रातील जड ग्रंथ वाचण्याची सवय त्यांना अल्पवयात लागली. त्यांनी पं.नेहरू, म.गांधी, राधाकृष्णन, श्रीनिवास अय्यंगार वगैरे नामवंतांची भाषणे ऐकली. त्यांच्यासारखे आपणाला इंग्रजी बोलता येणार नाही. सबब अनुकरणात न अडकता स्वतःची इंग्रजी बोलण्याची 'देशी शैली' घडवली. हा देशीवादाचा अग्रदूत महाराष्ट्राला अजून ओळखता आलेला नाही. यशवंतरावांची भाषणे, लेख, पत्रे आणि आचार विचारातील देशीवादी व्रतस्थपणा नव्या कसोट्यावर तपासला पाहिजे.

ब्रिटिश पत्रकारांनी नेहरूंच्या नंतर कोण; या प्रश्नाचे उत्तर म्हणून यशवंतरावांचे नाव पुढे केले होते. याला कारण वाचन व्यासंगाने परिपक्व झालेले यशवंतरावांचे व्यक्तिमत्त्व हेच आहे. दुसऱ्या महायुद्धानंतर त्यांनी या विषयावरचे सगळे ग्रंथ जमवले. जगातील बहुसंख्य क्रांत्यांचा तुलनात्मक अभ्यास केला. डझनभर विश्वकोश विकत घेतले. नाटक व संगीतात रस घेतला. 'क्वाएट ब्लोज डॉन', 'टीन इम', वन हंड्रेड ईयर्स ऑफ सालिट्युड 'समग्र

बरट्रांड रस्सेल', गालब्रेथचे अर्थशास्त्रावरील गंभीर ग्रंथ त्यांनी वाचले. सर्वोत्तम संसदपटू ही भारत पातळीवरची मान्यता एका खेड्यातील मुलाला मिळावी ही लोकशाहीचीच किमया होती. राम मनोहर लोहिया, बॅ.नाथ पै, अशोक सेन, वाजपेयी, इंद्रजित गुप्ता अशा उच्च श्रेणीतील दिग्गजांना नामोहरम करणे हे येरागबाळ्याचे काम नव्हते. त्यांचे शिवाजी विद्यापीठाच्या स्थापनेप्रसंगीचे 'अमृतकुंभ' व अर्थशास्त्रज्ञांच्या परिषदेत केलेले बँकांच्या धोरणावरील भाषण यांची तुलना जिज्ञासूंनी करावी. पहिले ललितरम्य पण विचारपरिपूर्ण चिंतन आहे. दुसऱ्याची परिभाषा अर्थशास्त्रीय विकासाची आहे. हे सहज साध्य नाही. तपस्ये सर्व साध्यते !

यशवंतरावांच्या तुलनात्मक संवादी कल्पनाशक्तीत वेणुताईचा वाटा या मुद्द्याची चर्चा

आजवर कुणी फारशी केलेली नाही. बडोद्याच्या दरबारी मानकऱ्यांपैकी मोरे यांच्या ह्या कऱ्याचे वाचनही यशवंतरावांच्या वाचनाला पूरक होते. तसे संस्कार त्यांच्यावर झाले होते. याचे पुरावे यशवंतरावांनी विदेशातून त्यांना लिहिलेल्या पत्रात सापडतात.

एका पत्रात त्यांनी लिहिले आहे. जगाच्या पाठीवर राजकारणात मॅकियाव्हेलीचे अनेक वंशज हे त्या वेड्याला कसे कळणार ? भारतात जसा चाणक्य तसा 'द प्रिन्स' ग्रंथ रचणारा मॅकियाव्हेली इटलीत होता. धन्य तो राष्ट्रपुरुष आणि धन्य वेणुताई. यशवंतराव चव्हाण यांच्या चरित्राचा अभ्यास केल्यानंतर शेवटी मला एकच म्हणावे वाटते.

स्वर्गीय यशवंतराव चव्हाण यांचा राजकीय वारसा सध्याचे राजकारणी जपणार का ? कुठे यशवंतराव चव्हाण अन् कुठे आजचे भ्रष्ट राजकारणी...

लाल

राहूल दत्तात्रय चव्हाण
तृतीय वर्ष, कला



लाल आम्ही सातान्याचे लक्ष्य अमुचे महासत्तेच्या वाटेवर बळकट झाली ज्ञानाची शिदोरी हाती अमुच्या विज्ञानाची ज्योत दूर दृष्टिने आम्ही बनवितो सृष्टी रमतो आम्ही विद्येच्या प्रांगणात शान राखतो सुसंस्कारांची आणि स्त्री-दाक्षिण्याची मनात जागतो बापूर्जींचा विचार हार नसते अमुच्या जगण्यात विजय पताका घेतली हातात द्या आम्हांस तुमची साथ ललाटी नांदतो भाग्यसूर्य 'यशवंत' असे अमुचा वारसा सातान्याचे भूषण आम्ही तारे इथले अर्जिक्य राजेशाहीत जपतो आम्ही सामाजिक ऐक्य.

२०२३

ब
ह
ड
सी
य

२९

व्यक्तिचित्रण



आमचे आधारस्तंभ मा.प्राचार्य अभयकुमार साळुंखे

संदेश वायदंडे / द्वितीय वर्ष, कला

बापूजींनी बालवयातच साहेबांवर संस्कार केले. त्यातून अभयकुमार साहेबांची जडण-घडण झाली. बालवयातच विविध खेळात व सांस्कृतिक कार्यक्रमात ते सहभागी होत. महाविद्यालयातील शिक्षण घेताना विद्यार्थी संसद सचिव म्हणूनही त्यांनी प्रभावी कामगिरी केली. राष्ट्रीय नेता योजनेत सहभागी होऊन श्रमसंस्काराचे धडे गिरवले. बापूजींनी शिकतीचे पाठ कुटुंबाला दिले.

शिक्षणमहर्षी डॉ.बापूजी साळुंखे यांच्या पदस्पर्शाने पुनीत झालेली "ज्ञान, विज्ञान आणि सुसंस्कार यांसाठी शिक्षण प्रसार" या ध्येयांनी कृष्णा-कोयनेच्या संगमावर मुरलीधराच्या मंदिरात उगम पावलेली "श्री स्वामी विवेकानंद शिक्षण संस्था" रूपी ज्ञानगंगा आज पाच दशकानंतरही निरंतर झोपडपट्टी, डोंगरकपारी व महाराष्ट्राच्या कानाकोपऱ्यातून विद्यार्थ्यांना ज्ञानामृताचे दान करीत आहे. या ज्ञानामृताची संधी ज्याला ज्याला मिळाली असा प्रत्येकजण सुसंस्कारी, स्वावलंबी, सत्यशील, प्रामाणिक विचारांनी घडला. विविध क्षेत्रात गगनभरारी घेत संचारला, हे पाहून आम्ही बापूजींचे पाईक आहोत याचा सार्थ अभिमान वाटतो. बापूजींच्या तत्वज्ञानाचा व विचारांचा वसा घेऊन त्यांचे सुपुत्र व संस्थेचे कार्याध्यक्ष मा.प्राचार्य अभयकुमारजी साळुंखे (साहेब) बापूजींनी लावलेल्या वृक्षाचे रूपांतर वटवृक्षात करून संस्थेची शान व मान उंचावण्याचे कार्य प्रभावीपणे करीत आहेत ही बाब देखील कौतुकास्पद व आदर्शवत अशी आहे.

मा.अभयकुमारजी साहेबांची आजपर्यंतची यशस्वी वाटचाल पाहता उत्तम प्रशासक, आदर्श मार्गदर्शक, प्रभावी नेतृत्व, दैदीप्यमान कर्तृत्व, मनमोहक वक्तृत्व, कलाप्रेमी आदी स्वभाव वैशिष्ट्ये पाहता मला अभयकुमारजी साहेबामध्ये बापूजींचे रूप पहायला मिळाले. शिक्षण हे सामाजिक बदलांचे माध्यम असून त्याने समाजामध्ये विधायक परिवर्तन घडविले पाहिजे. त्यासाठी सुसंस्कारी समाज निर्मितीचे स्वप्न बापूजींनी पाहिले होते. विद्यार्थ्यांचा सर्वांगीण विकास व्हावा या उद्देशाने बापूजी आयुष्यभर दुसऱ्याचे जीवन प्रकाशमान करण्यासाठी चंदनासारखे झिजले

2023

ब
हा
दु
री
य

२२

व त्यांनी बहुजनांच्या घरी शिक्षण पोहचविले. हे करीत असताना त्यांचे आपल्या कुटुंबाकडे दुर्लक्ष झाले. जेव्हा ते सकाळी लवकर उठून जात त्यावेळी मुले झोपलेली असत. सायंकाळी इतक्या उशीरा घरी येत की त्याहीवेळी मुले वाट पाहून थकून झोपी जात, अशा या महामानवाच्या पोटी १७ जानेवारी १९४६ रोजी बेळगाव प्रांती 'ओसूर' या गावी एक पुत्ररत्न जन्मले. ते म्हणजे आजचे विद्यार्थिप्रिय प्राचार्य व संस्थेचे कार्याध्यक्ष आमचे आधारस्तंभ मा.श्री.अभयकुमारजी साळुंखे (साहेब)....

बापूजींनी बालवयातच साहेबांवर संस्कार केले. त्यातून अभयकुमार साहेबांची जडण-घडण झाली. बालवयातच विविध खेळात व सांस्कृतिक कार्यक्रमात ते सहभागी होत. महाविद्यालयातील शिक्षण घेताना विद्यार्थी संसद सचिव म्हणूनही त्यांनी प्रभावी कामगिरी केली. राष्ट्रीय सेवा योजनेत सहभागी होऊन श्रमसंस्काराचे घडे गिरवले. बापूजींनी शिस्तीचे पाठ कुटुंबाला दिले तसेच विविध संस्कार केंद्रातील विद्यार्थी, गुरुदेव कार्यकर्ते आपल्या अमृतवाणीने तर कधी शिस्तीच्या आधारे घडविले. बापूजी आपल्या मुलांना एकत्रित अभ्यासला बसवित. त्यात गीतेचे पाठ व संस्कृत श्लोक म्हणून घेण्याचे काम अभयकुमारसाहेबांकडून करून घेत.

१९७२ साली एम.ए.झाल्यानंतर संस्थेत मराठीचे प्राध्यापक म्हणून सेवेस प्रारंभ केला. वडिलांच्या मोठेपणाचा फायदा न घेता त्यांनी संस्था जिथे बदली करेल त्याठिकाणी सेवा केली. जत, मिरज, उस्मानाबाद, कोल्हापूर, तळमावले, तुळजापूर याठिकाणी त्यांनी आपल्या कामाचा ठसा उमटवला. संस्थेच्या नियमाप्रमाणे इतर सर्वसामान्याप्रमाणेच गुणवत्तेनुसार त्यांची प्राचार्यपदी निवड झाली. तुळजापूर, तळमावले, कोल्हापूर या ठिकाणी प्राचार्य म्हणून आपल्या कर्तृत्वाचा ठसा उमटवला. बापूजींची प्रकृती साथ देत नव्हती. संस्थेलाही नवीन नेतृत्वाची गरज होती. त्यातून अभयकुमार साहेबांची १९८५

साली संस्थेच्या सचिव पदी निवड झाली. सचिवपदाची धुरा २१ वर्षे सांभाळल्यानंतर आता कार्याध्यक्ष पदाची धुरा यशस्वीपणे पाहत आहेत.

वय वाढेल तशी माणसं निवृत्त होण्याचा प्रयत्न करतात. माणसांची सेवानिवृत्तीची प्रवृत्ती वाढते. परंतु अभयकुमारांचे मात्र वय वाढेल तशी त्यांच्यातील काम करण्याची प्रवृत्ती वाढू लागली. संस्थेची वाढती ओझी, जबाबदारी ते समर्थपणे पेलतात. त्यांच्या परिवक्वतेचा अनुभव समाजाला मिळतो आहे. फळाच्या परिपक्वतेची गोडी जशी अवीट असते, तसे त्यांचे परिपक्वतेचे अनुभव अवीट व सर्वाना मार्गदर्शक असेच आहेत. त्यांची काम करण्याची पध्दत वेगळी आहे. संस्थेत अनेकवेळा कठोरप्रसंग उभे ठाकतात त्यावेळी अभयकुमार साहेब क्षणातच योग्य तो निर्णय घेतात. समाजाची, संस्थेची नाडी त्यांनी ओळखलेली आहे. बापूजी नंतर अभयकुमारच संस्थेच्या सर्व शाखांचे नेमके अवलोकन करणारे आहेत, संस्थेसाठी ते ऊर्जेचा प्रचंड मोठा स्रोत आहेत.

“संस्थेतील सर्व लेकरांना आपली मुले मानून इतरांच्या मुलांना मोठं करण्याचा बापूजींचा वारसा अभयकुमार साहेबांनी जपला आहे. म्हणूनच शाळा व महाविद्यालये बाह्यरंगापेक्षा अंतरंग नटली पाहिजेत असा त्यांचा आग्रह असतो. प्रत्येक गुरुदेव कार्यकर्त्याने विद्यार्थ्यांमधील परमेश्वराला ओळखावं, विद्यार्थ्यांची गुणवत्ता वाढवावी, त्यातून समाज, शाळा व सर्वांचीच प्रगती व्हावी. शाळा या केवळ विद्यालये न राहता मानवतेची, ज्ञानसंपन्न सुसंस्कारी विद्यार्थ्यांची ज्ञानमंदिरे व्हावीत असे अभयकुमारांना नेहमी वाटते. माणसावर संस्कार झाल्यानंतर त्यास दैवत्व प्राप्त होते, ही जाणीव विद्यार्थ्यांत निर्माण व्हावी आणि त्यासाठी शिक्षणाला नैतिकतेचे अधिष्ठान मिळून सुसंस्कारी नागरिक तयार व्हावेत. त्यातून चांगल्या आदर्श समाजाची निर्मिती व्हावी हे बापूजींचे स्वप्न होते. या स्वप्नाची परिपूर्ती व्हावी हा उद्देश डोळ्यासमोर ठेवून कार्याध्यक्ष मा.प्राचार्य अभयकुमारजी साळुंखे साहेब काम करत आहेत.

२०१३

ब
ह
ड
री
य

२३

अभयकुमारांच्या मनाचा प्रांजळपणा महत्वाचा आहे. नवीन पिढीच्या बदलत्या अपेक्षा व भावना सहजप्रवृत्तीने स्वीकारून संस्था बळकटीसाठी आज ते अहोरात्र झटत आहेत. पदोपदी, संकटसमयी बापूजींची उणीव व आठवण प्रकर्षाने होते. त्यांचा वक्तशीरपणा उल्लेखनीय आहे. ६५ व्या वर्षी देखील ते वक्तशीरपणा जपतात. वेळेत कामे करावीत. दिलेल्या वेळा पाळाव्यात यासाठी त्यांचा आग्रह असतो. संस्थेतील विविध कार्यक्रमांना ते ठरल्या वेळेपूर्वी हजर असतात. अभयकुमारांचे आणखी एक वैशिष्ट्य म्हणजे ते शब्द देणार नाहीत पण दिलेला शब्द पाळल्याशिवाय राहणार नाहीत.

कर्तृत्व, नेतृत्व व वक्तृत्व असा त्रिवेणी संगम त्यांच्या व्यक्तिमत्वात आढळतो. आपली सुमधुर वाणी, चेहऱ्यावरील सुहास्य, रसाळ व अभ्यासपूर्ण व्याख्यानातून ते सातत्याने विद्यार्थी व गुरुदेव कार्यकर्त्यांना मार्गदर्शन करीत असतात. एका दिव्याने अनेक दिवे लावावेत त्याप्रमाणे आपल्या कृतीतून, शक्तीतून आदर्श निर्माण करण्याचं सामर्थ्य ही त्यांची खासीयत आहे. नदी जशी समुद्राला मिळताना मोठी होत असते, तशी बापूजींनी स्थापलेली ज्ञानगंगा

विद्यार्थ्यांपर्यंत कशी विस्तृत होईल हेच ध्येय डोळ्यांसमोर ठेवून अतिशय नियोजनबद्ध रितीने कार्यक्रमाची आखणी ते करीत असतात.

संस्थेच्या विकासाबाबत तसेच महाविद्यालयांच्या विकासाबाबत प्राचार्य अभयकुमार साहेब अत्यंत जागरूक असतात. महाविद्यालयाची गुणात्मक वाढ झाल्यास तिथे शिक्षण घेणारे विद्यार्थीही सुसंस्कृत व ज्ञानसंपन्न होऊन बाहेर पडतील अशी त्यांची धारणा आहे. काही वेळा संस्थात्मक पातळीवर काही कठोर निर्णय ते घेतात. परंतु त्यात संस्थेचा विकास व वाढ हेच सूत्र असते. त्यातून कोणाचेही नुकसान करण्याचा विचारही त्यांच्या मनात नसतो.

घराण्याचा वारसा सांगणारे व त्यावर ऐषोआरामात जगणारे पुष्कळजण असतात. मात्र तो वारसा जपणारे खूप दुर्मिळ असतात. त्याचे उत्तम उदाहरण म्हणजे आपल्या संस्थेचे कर्तव्यनिष्ठ, विद्यार्थीप्रिय कार्याध्यक्ष मा.प्राचार्य अभयकुमारजी साळुंखे (साहेब) हे दुसऱ्या प्रकारातील एक सद्दय व्यक्तिमत्त्व आहेत.

दुष्काळाच्या झळा

संजय रमेश वायदंडे

द्वितीय वर्ष, कला



दुष्काळ दुष्काळ दुष्काळ

काय सांगू दुष्काळाचं गाणं ?

हरवलं जगण्याचं बळ

मोकळी झाली रानं

नदीच्या पात्रात काय शोषायचे

मृगजळाचं वहाणं

गोठ्यात नाही राहिलं

गायी गुरांचं खिल्लार

ओस पडलं सारं

हरलो दुष्काळ, हा कसला जुगार ?

रिकामा झाला सारा संसार

शुकशुकाट सारा

झाडाच्या फांदीला नाही उरलं पान

पाखरांना नाही कुठेच थारा

हंबरडा फोडतं क्षणोक्षणी रान

वाऱ्याबरोबर खेळ मांडतो पालापाचोळा

हुंदक्याला नाही उरली साथ आता

आटले पाणी वांझोटा झाला डोळा

पावला पावलाला सोसायच्या,

फक्त दुष्काळाच्या झळा.

2013

ब
ह
ड
सी
य

२४



नॅनोटेक्नॉलॉजी (Nanotechnology)

कु.प्रणाली दत्तात्रय कोठावळे / तृतीय वर्ष, विज्ञान

आज प्रदूषण, पर्यावरणाचा न्हास, आण्विक अस्त्र अशा अनेक गोष्टींमुळे दिनांशाध्या उंबरठ्यावर उभे आहे अन्ने वाटणारे जग एखादे वेळेस स्वर्गातून सुंदर होईल. अशा प्रकारचा स्वकारात्मक आशावाद वाळूगूनच जगभरातले संशोधक आज तन, मन आणि वेगवेगळ्या कंपन्या धन ओतून हिरिरीने हे तंत्रज्ञान विकसीत करत आहेत. त्यामुळे नॅनोक्रांतीची पसट द्यायला फार वाट पाहली लागेल असे नाही !

आजकालच विज्ञान, तंत्रज्ञान अथवा आर्थिक विषयासंदर्भात कोणताही अहवाल अथवा पुस्तक वाचनात आले तर आपणास एक शब्द प्रकर्षने सारखा सारखा दिसतो. तो म्हणजे 'नॅनो' होय. 'नॅनो' हा शब्द 'नॅनोटेक्नॉलॉजी' (नॅनोतंत्रज्ञान) अथवा नॅनोसायन्स (नॅनोविज्ञान) यामुळेच रुढ झाला आहे. विसाव्या शतकाचे वैशिष्ट्य म्हणजे विज्ञान व तंत्रज्ञान याचा वाढता प्रभाव होय, तर एकविसाव्या शतकाचे वैशिष्ट्य म्हणजे सर्वकष विज्ञान व तंत्रज्ञान हे होय.

माणसाने अतिप्राचीन काळापासून तंत्रज्ञानामध्ये अनेक प्रकारचे शोध लावले. तंत्रज्ञानाच्या शोधाच्या पाठीमागची भूमिका म्हणजे अधिकाधिक सुखकर आयुष्य कसे जगता येईल ही होय. ज्या त्या युगामध्ये जे जे काही मिळायचे ते वापरून विविध वस्तू बनविण्याचे तंत्रज्ञान मानवाने शोधले. अश्मयुगापेक्षा लोहयुगात तंत्रज्ञानाचा वापर बराच वाढला. अठराव्या शतकात झालेल्या औद्योगिक क्रांती नंतर तंत्रज्ञानाने माणसाच्या जीवनात प्रवेश केला. विसाव्या शतकाच्या सुरुवातीला रासायनिक युग पृथ्वीवर अवतरले. माणूस या युगामध्ये अमोनिया, कृत्रिम धागे, प्लास्टिक, रबर असे नवीन पदार्थ वापरू लागला. १९६० नंतर सिलिकॉन युग आले. या कालावधीमध्ये सेमीकंडक्टर मटेरीअल्स वापरून रेडिओ, टी.व्ही. व इतर इलेक्ट्रॉनिक वस्तू (उपकरणे) बनवू लागला. कालांतराने 'मायक्रोटेक्नॉलॉजी' नावाचे नवीन तंत्रज्ञान निघाले. आणि हळूहळू वस्तूंचा आकार व किमतीही कमी होऊ लागल्या. त्यामुळे सामान्यांपर्यंत या वस्तू पोहोचल्या. आज मोबाईल, कॉम्प्युटरसारख्या गोष्टी याच तंत्रज्ञानामुळे घराघरात/झोपडपट्टीपर्यंत

२०२३

ब
ह
र
ु
री
य

२५

पोहोचल्या. आज मायक्रोटेक्नॉलॉजी पूर्ण भरता असली तरी तिच्या मर्यादाही आता लक्षात आल्या आहेत. तंत्रज्ञानाच्या या पुढच्या प्रगतीला ही मायक्रोटेक्नॉलॉजी अपुरी पडणार हे आता सगळ्यांना कळून चुकलेलं आहे. भौतिक शास्त्रांच्या काही नियमांमुळे मायक्रोटेक्नॉलॉजीचा वापर करून कॉम्प्युटरसारख्या इलेक्ट्रॉनिक वस्तुचा आकार लहान करणे आणि त्याची क्षमता वाढवणे आता शक्य नाही त्यामुळे मायक्रोटेक्नॉलॉजीचा प्रभाव फार फार तर अजून १२-१३ वर्षे म्हणजे २०२५ पर्यंतच राहिल. यानंतर मात्र नवे तंत्रज्ञान वापरावेच लागेल ते म्हणजे नॅनोटेक्नॉलॉजी हे असेल.

नॅनोटेक्नॉलॉजी म्हणजे अतिसूक्ष्म पदार्थ किंवा यंत्र बनविण्याचे तंत्रज्ञान होय. आता अतिसूक्ष्म म्हणजे किती सूक्ष्म ? तर आपल्या रक्तातील पेशींपेक्षाही सूक्ष्म होय. असे लहान पदार्थ किंवा अशी यंत्रे बनवणे या गोष्टी व्यवहारात कशा वापरता येतील याचा विचार करणे म्हणजे नॅनोटेक्नॉलॉजी आणि अशा अतिसूक्ष्म वस्तूंचा अभ्यास करणे, त्या कोणते नियम पाळतात हे शोधणे म्हणजे नॅनोसायन्स ! आज आपण जी यंत्रे तयार करतो त्यासाठी आपणास लोखंड, सिमेंट, लाकूड, धातू अशा अनेक गोष्टी लागतात. पण नॅनो यंत्र किंवा नॅनो पदार्थ बनवताना आपल्याला या मोठ्या गोष्टी हाताळून चालणार नाही, तर त्यांच्या अणुरेणूशी खेळावं लागेल. योग्य ते अणुरेणू अतिशय नाजूकपणे हाताळून व ते कलात्मकरीत्या जुळवून आपल्याला पाहिजे ते पदार्थ किंवा यंत्र तयार करणे ही या मागची कल्पना आहे.

'नॅनो' म्हणजे लहान किंवा सूक्ष्म असा अर्थ होतो. हा ग्रीक शब्द आहे. आता लहान म्हणजे किती लहान ? १ भागिले १ वर ९ शून्य (१/१०००००००००) इतके मीटर किंवा एक मीटरचा एक अब्जांवा भाग. मीटरचा शंभरावा भाग म्हणजे एक सेंटीमीटर. आपल्या बोटाची जाडी एक सेंटीमीटर असते. एक रुपयाच्या नाण्याची जाडी एक मिलीमीटर

असते. एक मिलीमीटरचा हजारवा भाग म्हणजे एक मायक्रोमीटर आणि एक मायक्रोमीटरचा एक हजारवा भाग म्हणजे एक नॅनोमीटर होय. या सर्वांवरून एक नॅनोमीटर म्हणजे किती सूक्ष्म याचा अंदाज येईल. अणूंच्या भाषेत बोलायचे झाले तर हायड्रोजनचे दहा अणू एकापुढे एक असे ठेवले तर त्यांची लांबी एक नॅनोमीटर होते.

सर्व पदार्थ अणूंचे बनलेले असतात. यामध्ये अब्जावधी अणू असतात. आपण जर पदार्थ कापत कापत बारीक करत आणले तर त्यामधील अणूंची संख्या कमी होत जाईल. असे बारीक करता करता ज्यावेळी एखाद्या पदार्थात १०० ते १०,००० एवढेच अणू राहतात त्यावेळी त्या पदार्थाला नॅनो पदार्थ असे म्हणतात. हा एक प्रकार झाला. असे अनेक प्रकारचे नॅनो पदार्थ आहेत. गेल्या वीस वर्षात संशोधकांनी अनेक वेगवेगळ्या पदार्थांचे नॅनो पार्टिकल्स, नॅनो ट्युब्स, नॅनो फिल्म्स बनवून त्यांचा अभ्यास केला आहे. या सर्व अभ्यासावरून एक विलक्षण गोष्ट लक्षात आली ती म्हणजे या नॅनोपदार्थांचे गुणधर्म त्यांच्या मापावर अवलंबून असतात. पदार्थ तोच पण सूक्ष्म भाग घेतला तर त्याचे गुणधर्म चक्क वेगळे असतात. यावरच सर्व नॅनोटेक्नॉलॉजी आणि नॅनोसायन्स अवलंबून आहे.

एखाद्या पदार्थाचा आकार नॅनो मापाचा केला तर त्याचे गुणधर्म का बदलतात ? हे तसे नवीन नाही. आपण नेहमीच्या व्यवहारामध्येही आकार लहान केल्यामुळे होणारे बदल पाहतो. साधं खडीसाखरेचं उदाहरण घ्या. खडीसाखरेचा मोठा खडा पाण्यात लवकर विरघळत नाही पण तीच आपली नेहमीची साखर त्यामानाने लवकर विरघळते आणि पिठीसाखर तर नेहमीच्या साखरेपेक्षाही अधिक लवकर विरघळते. याचाच दुसरा अर्थ असा की, आकार लहान केल्यामुळे साखरेचा पाण्यात विरघळण्याचा वेग वाढला. म्हणजेच आकार लहान केल्यामुळे पदार्थाचे काही गुणधर्म बदलले. साखरेचा आकार लहान केल्यामुळे पदार्थाचे

काही गुणधर्म बदलले. साखरेचा आकार लहान केल्यामुळे ती लवकर विरघळली हे खरे पण तिचा रंग व चव तशीच राहिली. खडीसाखर, पिठीसाखर किंवा नेहमीच्या साखरेला विरघळ्यासाठी लागणारा वेळ हा त्यांच्या पाण्याच्या सान्निध्यात येणाऱ्या पृष्ठभागावर अवलंबून असतो. म्हणून त्यांचे बाकीचे कोणतेही गुणधर्म बदलत नाहीत. याऐवजी जर आपण ही पिठीसाखर कुटून कुटून त्यातल्या प्रत्येक साखरेच्या कणाचा आकार १० नॅनोमीटर इतका लहान केला (नॅनोटेक्नॉलॉजीच्या भाषेत याला 'बॉल मिलिंग' म्हणतात) तर मात्र तिचे गुणधर्म बदलतात. तिचा रंग निळा होईल किंवा तिची चव खारट होईल. अशा या साखरेला आपण नॅनो साखर म्हणू शकू.

आपल्या नेहमीच्या लोखंडामध्ये चुंबकीय गुणधर्म असतात पण नॅनोलोखंडात ते असतीलच असे नाही. याउलट एखाद्या पदार्थात नसलेले चुंबकीय गुणधर्म नॅनोस्तरावर येऊही शकतात. तांब्याच्या तारेतून विद्युत प्रवाह वाहू शकतो. पण नॅनोतांब्यातून विद्युत प्रवाह वाहिलेच असे नाही. नेहमीचे अॅल्युमिनियम हे निरुपद्रवी असते पण भविष्यात रॉकेटचे इंधन म्हणूनही नॅनोअॅल्युमिनियम वापरता येईल. कोणत्याही पदार्थाचे गुणधर्म बदलणं किंवा आपल्याला हवे ते गुणधर्म त्या पदार्थात निर्माण करणं म्हणजे नॅनोटेक्नॉलॉजी !

आज पर्यावरणाचा न्हास, ऊर्जेचे संकट, वेगवेगळ्या प्रकारचा निर्माण होणारा कचरा व त्याच्या विल्हेवाटीचा प्रश्न, अनेक असाध्य रोग असे अनेक प्रश्न मानवांसमोर आहेत. अशा प्रकारचे सर्व प्रश्न

सोडवण्याची क्षमता नॅनोटेक्नॉलॉजीमध्ये असल्यामुळे आज नॅनोटेक्नॉलॉजी वर जगभर संशोधन सुरू झाले आहे. नॅनोटेक्नॉलॉजीचे संभाव्य फायदे लक्षात आल्यामुळे आणि मायक्रोटेक्नॉलॉजीच्या मर्यादांमुळे गेली दोन दशके हे नॅनो तंत्रज्ञान विकसित करण्याचे प्रयत्न सगळेच देश करत आहेत. अमेरिका, फ्रान्स, जर्मनी, जपान यासारखे प्रगत देश तर नॅनोटेक्नॉलॉजी मध्ये प्रचंड प्रमाणावर गुंतवणूक करत आहेतच. पण चीन, भारत, कोरिया यासारखे आशियाई देशही मागे नाहीत. भारत सरकारने सुद्धा नॅनोटेक्नॉलॉजी वरच्या संशोधनात अफाट गुंतवणूक केली आहे. या तंत्रज्ञानामध्ये आज पहिला टप्पा पार पडला आहे. यातील पुढचे टप्पे पार पाडण्यात संशोधकांना हळूहळू यश येईल. यासाठी किती वेळ लागेल याचे भाकीत आज करता येणार नाही. नॅनोटेक्नॉलॉजीमुळे अन्न, वस्त्र, निवारा या मानवाच्या भौतिक गरजा पूर्ण होण्यास मदत होईल असे चित्र तरी दिसते. तसेच वैद्यकीय क्षेत्रात, शेतीच्या क्षेत्रात देखील या तंत्रज्ञानाचा चांगला उपयोग होईल.

आज प्रदूषण, पर्यावरणाचा न्हास, आण्विक अस्त्र अशा अनेक गोष्टींमुळे विनाशाच्या उंबरठ्यावर उभे आहे असे वाटणारे जग एखादे वेळेस स्वर्गाहून सुंदर होईल. अशा प्रकारचा सकारात्मक आशावाद बाळगूनच जगभरातले संशोधक आज तन, मन आणि वेगवेगळ्या कंपन्या धन ओतून हिरिरीने हे तंत्रज्ञान विकसीत करत आहेत. त्यामुळे नॅनोक्रांतीची पहाट व्हायला फार वाट पाहावी लागेल असे नाही !

२०१३

ब
ह
उ
सी
य

२७



रक्षाबंधनाचे महत्त्व

साहेबराव बबन वरक / द्वितीय वर्ष, कला

शाळेत जाणारी लहान बहीण हसण्या विनम्रदळण्यात केव्हा मोठी होते कळतच नाही. गम तिला आपल्या आईकडून घेऊन कोण सोडणार ? तिचा भाऊ तिला 'बाईगाईय बनून जातो. तिच्या आवडीनिवडीची काळजी घेतो. तिला संकटात आधार देतो.

हिंदू संस्कृतीनुसार श्रावण पौर्णिमेला रक्षाबंधनाचा सण साजरा केला जातो. तसेच उत्तर भारतात हा सण राखी म्हणून प्रसिध्द आहे. या दिवशी बहीण आपल्या भावाच्या उजव्या हातात राखी बांधून दीर्घ आयुष्य लाभो म्हणून प्रार्थना करते. पुरातन काळात, जेव्हा स्त्री स्वतःला असुरक्षित समजत असे, तेव्हा ती अशा व्यक्तीस राखी बांधून भाऊ मानते, जो तिचे रक्षण करू शकेल.

रक्षाबंधनच्या सणाप्रमाणे दक्षिण भारतात कार्तिक महिन्यात कार्तिकेस सण असतो. या दिवशी बहीण आपल्या भावास जेवण देऊन त्याच्या दीर्घ आयुष्यासाठी प्रार्थना करते व भाऊ तिचे रक्षण करण्याचे वचन देतो. रक्षाबंधन हे आपल्या व इतरांच्या जीवनामध्ये पवित्रता व मांगल्य निर्माण करण्याचे बंधन आहे.

इंद्राच्या राणीने इंद्राच्या मनगटावर एक धागा बांधला होता. ज्याच्या सामर्थ्यानं इंद्राने राक्षसांचा पराभव केला. तेव्हापासून त्याची स्मृती म्हणून मनगटावर राखी बांधण्याची पध्दत आहे. तसेच ऐतिहासिक काळात चित्तोडच्या राणी कर्मवतीने हूमाँयू बादशहाला राखी पाठवली व हूमाँयू बादशहानेही आपल्या या बहिणीचे परकीय आक्रमणापासून संरक्षण केले.

राखी बांधण्याचा अर्थ आपण त्या भक्तीच्या प्रेमरुपी बंधनात स्वतःला वाहून घेऊन तिच्या रक्षणाची जबाबदारी स्विकारतो. राखी बंधनाच्या या सणातून मित्र, स्नेह व परस्पर प्रेम वृद्धीगत करण्याची प्रथा अस्तित्वात आली.

राजपूत स्त्रिया आपल्या शत्रूच्या हातात राखी बांधून पुढे होणारा भयंकर धोका टाळीत असत व एक प्रकारे राखीचा उपयोग अहिंसेसाठी

2023

ब
हा
डु
री
य

२८

करीत असत. राखी पौर्णिमेच्या बऱ्याच अख्यायिका आहेत, परंतु त्या माहीत करुन घेण्यापेक्षा आपण येथे फक्त सणाच्या हेतूला, उद्देशालाच महत्त्व देणार आहोत. आपल्या संस्कृतीत स्त्रीला देवी मानली आहे. अशी ही देवतुल्य स्त्री भावाला राखी बांधण्यापूर्वी त्याच्या कपाळावर टिळा लावते. हा टिळा फक्त मस्तकाच्या आदराचा नसून भावाच्या मस्तकातील सद्दिचार व सदबुध्दी जागृत राहण्यासाठीची पूजा आहे. सामान्य माणूस डोळ्यांनी जे पाहू शकत नाही ते सर्व विकार, भोग, लोभ, मत्सर, वासना, द्वेष, राग इत्यादीकडे भावाने आपल्या तिसऱ्या डोळ्यांनी पहावे, या हेतूने बहीण भावाला टिळा लावते. त्रिलोचन बनविते. इतका त्या टिळ्याचा खोल अर्थ आहे.

हल्लीच्या काळात लहानपणी गाजर, केळावरुन ते बिस्कीट व दुधावरुन तसेच अगदी आईच्या बाजूला कोण झोपणार यावरुन भांडणारे ताई-दादा आता परस्परांना ई-पत्र फोन किंवा चॅटद्वारे भेटतात व राखी पौर्णिमेचा सण एकत्र साजरा करतात.

राखीचा धागा हा देखील नुसताच सुताचा दोरा नसून ते एक शील, स्नेह, पवित्रेचे रक्षण करणारे, सतत संयमी ठेवणारे पुरुषार्थाचे पवित्र बंधन आहे. या एवढ्याशा धाग्याने कित्येक मने जुळून येतात. त्यांना भावनांचा ओलावा मिळतो. मन प्रफुल्लीत होते. एकमेकांना जोडणारा असा हा सण कोणत्याही धर्मात संस्कृतीत नाही. सामाजिक ऐक्याची भावना जागृत ठेवण्यासाठी अशा प्रकारचे सण खरोखर महत्त्वाचे ठरतात. रक्ताच्या नात्याव्यतिरिक्त आपल्या मनाप्रमाणे नाती जोडण्यास ह्या सणामुळे समाजास वाव मिळतो. ज्या समाजात अशा प्रकारची एकरूपता, ऐक्य असते असा समाज सामर्थ्यवान बनतो. हा राखी पौर्णिमेचा संदेश आहे.

द्रौपदीने मानलेल्या भावाला बांधलेली जरतारी शेल्याची चिंधी, गरीब बहीणीने भावाच्या हातात बांधलेला धागा किंवा शाळकरी ताईने तयार केलेली राखी, राजपूत रमणीने बाजूच्या राजाला पाठविलेले

राखीचे ताट, श्रीमंत बहिणीने भावाला बांधलेली सोन्याची किंवा चांदीची राखी किंवा आज इंटरनेटच्या माध्यमातून बहिणीने भावाला पाठवलेली इ-शुभेच्छापत्र रूपी राखी काय, या सर्वांमागे भावना एकच आहे. ती म्हणजे भावाबहिणीचे परस्परांवरील प्रेम.

स्त्री कितीही मोठी, मिळवती झाली, तरी तिच्या रक्षणाची जबाबदारी भावाची आहे हेच ती यातून त्याला सूचवू इच्छिते. यात तिचा दुबळेपणा नसून भावाच्या कर्तृत्वावरचा विश्वास दिसून येतो. रक्ताचे नाते असणारे भाऊ बहीण असो किंवा मानलेले असो, पण या नात्यामागची भावना पवित्र व खरी आहे. यात कुठेही फसवणूक नाही. त्या नात्याप्रती कृतज्ञता व्यक्त करण्याचा दिवस म्हणजे राखी पौर्णिमा, त्यामुळेच तर भाऊ नसणारी स्त्री चंद्राला आपला भाऊ मानते व त्याला ओवाळते. अन प्रत्येक आई आपल्या मुलाला चंद्रमामा म्हणून चांदोबाची ओळख करुन देते.

असा हा दिवस अगदी लहानग्यापासून ते वृद्धापर्यंत सर्वच जण आनंदाने साजरा करतात. हल्ली तर घरात एकच मुलगा/मुलगी असताना ह्या राखीच्या निमित्ताने दोन परिवार एकमेकांच्या आणखी जवळ येतात. आजही उत्तर भारतात नोकर मालकाला राखी बांधतात व गरीब लोक धनवंताना ! यामागेही श्रेष्ठ व ज्येष्ठ लोकांची रक्षणाची जबाबदारी आहे हे सूचित होते.

घराच्या गच्चीत रुसून बसलेल्या आपल्या लहान बहिणीची समजूत घालण्यासाठी सर्वात आधी जात असेल तर तो तिचा भाऊ ! शाळेतून आपल्या मोठ्या ताईला आणण्यासाठी जाणाऱ्या भावाचा कोमल हात तिला संरक्षण देतो. अशा हा बहीण भावाचा रक्षाबंधनाचा सण त्यांच्या जीवनात रेशमी धाग्याला प्रेमाचा रंग देऊन जातो.

भावाच्या झालेल्या चुका स्वतःवर ओढवून घेणारी ताई, आई-बाबाकडून मिळणारा "प्रसाद"

२०२३

ब
ह
इ
सी
य

२९

भावासाठी वाचविते, तर ताईचे आभार मानण्यासाठी लहान भाऊ तिला आवडणारी वस्तू भेट देतो.

शाळेच्या मुख्याध्यापिका पहिल्या इयत्तेत झोपलेल्या लहानग्याला घेऊन जायला सांगताच, तेव्हा त्याची ताई शांत निजलेल्या आपल्या भावाला हळूहळू आपल्या वर्गात घेऊन जाते. आणि त्याला मांडीवर झोपवून फळ्यावरील लिहिलेले आपल्या वहीत उतरवून घेत असते. लहान ऋतू रडतच आपल्या मोठ्या भावाच्या वर्गात गेली व तिला चिडवणाऱ्या तिच्या वर्गातील मुलांची नावे सांगायला लागली. तिचे डोळे पुसत मधल्या सुट्टीत त्यांना चांगला मार देऊ असे सांगताच छोट्या ताईचे रडणे एकदम बंद झाले. ती पुन्हा हसत खेळत आपल्या वर्गात जाऊन बसली. तिच्या मते मोठ्या भावाने दिलेले आश्वासन म्हणजे काम फत्ते. शाळेत जाणारी लहान बहीण हसण्या खिदळण्यात केव्हा मोठी होते कळतच नाही. मग तिला

आपल्या बाईकवर घेऊन कोण सोडणार ? तिचा भाऊ तिचा 'बॉडीगार्ड' बनून जातो. तिच्या आवडीनिवडीची काळजी घेतो. तिला संकटात आधार देतो.

ताईचे लग्न होऊन तिला निरोप देण्याचा क्षण येतो, तेव्हा तिचा भाऊ पाहुण्यांच्या सरबराईत मग्न असतो. ताईविरहाने धाय मोकलून रडत असताना भावाला लहानपण आठवून देऊन तोही अश्रुभरल्या डोळ्यांनी बहिणीला भाऊ व बहिणीचे नाते रेशमी धाग्यासारखे नाजूक असते. रक्षाबंधन या सणाला बहिण भावाच्या हातावर राखी बांधते व भाऊ तिला प्रेमाची भेटवस्तू देतो. एवढेच नाही तर तिच्या संरक्षणासाठी खंबीर आहे, याची ग्वाहीही देतो.

आपल्या देशात प्रेम, आपुलकी अजूनही कायम असल्यामुळे रक्षाबंधनाचे महत्त्व आजही कायम आहे.

कष्टाचे कण

ऊसही उगे मातीत
कडुलिंबही उगे मातीत
माती देई जीवन
ज्याच्या टायी जयसे गुण
तया देई तयसेची रूप
जया अंगी जैसे गुण तया तयसेची रूप ॥

गरव नको करू मानसा या नश्वर देहाचा
सूर्याच्या तेजात चमके रूप तुझे
वाऱ्याच्या झोक्यात उडे राख तुझी
एकरूप होणार तू मातीच्या कणाकणांत
जया अंगी जैसे गुण तया तयसेची रूप ॥

भुलू नको तू खोट्या चकाकींना
निर्घार कर देहाचा
ढग जमव तू कष्टानेच
पाऊस येईल तुझ्या यशाचा
जया अंगी जैसे गुण तया तयसेची रूप ॥

मनात तुझ्या भडकूदे वणवा
बोलण्यात तुझ्या दिसूदे साखर
डोळ्यात तुझ्या दिसूदे स्वप्न
चाहूल आहे स्वप्न पूर्तीची
हरू नकोस तू हिंमत आता
उंबरठ्यावर उभे आहे यश तुझे
जया अंगी जैसे गुण तया तयसेची रूप ॥

उदय होईल तुझ्या सूर्याचा
प्रकाश पसरेल तुझ्या व्यक्तिमत्वाचा
अंधार मिटेल तुझ्या दारिद्र्याचा
होईल पूर्ती उद्विष्टांची
वाहतील झरे मायबापांचे
जया अंगी जैसे गुण तया तयसेची रूप ॥

ज्ञानेश्वर राजू आवटे
तृतीय वर्ष, वाणिज्य

मुलाखत



महाविद्यालयाचे माजी विद्यार्थी चित्रपट अभिनेते सयाजी शिंदे यांची मुलाखत

कु.शेता शिवाजी साबळे / तृतीय वर्ष, कला

गुरुडपक्षी आपल्या लहान पिलांना उंच आकाशात घेऊन जातो आणि ठराविक उंचीवरून तो त्यांना सोडून देतो. पुढ्या प्रवासा त्या पिलाला स्वतःलाच करावा लागेल किंवा जमीनीवर कोसळून जाई गमवावा लागेल" हिव शिकवण मला माझ्या जवळच्या माणसांनी दिली. 'कोणतीही योजना भान ठेवून आम्हाला व वेभान होवून राबवावी.' माझ्या आयुष्याच्या गणिताचे हे सूत्र आहे.

प्रश्न : महाविद्यालयाच्या मराठी विभागात आपण आलात. तुम्हाला काय वाटतं ?

सयाजी शिंदे : मी याच महाविद्यालयाचा विद्यार्थी असल्याने आज मराठी विभागात आल्याने त्याकाळातील माझे सर्व मित्र-मैत्रीणी माझ्या सोबत असल्याचे वाटते. याच विभागातील प्राध्यापकांनी मला मार्गदर्शन केले. त्याच मार्गदर्शनाच्या शिदोरीवर आज मी जगतो आहे. जीवनातला आनंद घेतो आहे आणि त्याचबरोबर नावलौकीकही मिळवितो आहे. याचे सर्व श्रेय हे महाविद्यालय आणि मराठी विभागास जाते.

प्रश्न : तुमच्यातील कलाकार घडविण्यासाठी महाविद्यालयाचा सहभाग किती ?

सयाजी शिंदे : खरं तर याच महाविद्यालयाच्या रंगमंचावर माझ्यातील कलाकार घडला. प्रत्येक माणूस हा उपजत कलाकारच असतो. त्याच्या कलेला संधी मिळणे गरजेचे असते. याच महाविद्यालयाने स्नेहसंमेलनाच्या माध्यमातून मला संधी दिली. ही माझ्या आयुष्यातील पहिली संधी होती आणि याच संधीने माझ्या आयुष्याचे सोने केले, हे मी आयुष्यभर विसरू शकत नाही. तसेच राष्ट्रीय सेवा योजना, सांस्कृतिक विभागाचे विविध कार्यक्रमातून मला घडण्याची संधी मिळाली, म्हणून मी संबंधित प्राध्यापकांचे या क्षणी ऋणही मानतो.

2023

ब
ह
ड
सी
य

39

प्रश्न : आपली घरची परिस्थिती पहिल्यापासूनच चांगली होती का ?

सयाजी शिंदे: अजिबात नाही; मी येळेकामठी ता.सातारा या अतिशय छोट्या गावतला आहे, की ज्याला आपण खेड संबोधतो. त्यावेळी तेथे कसल्याही सुविधा नव्हत्या. परंतु आई आणि गाव हा कसाही असो, तो सुंदरच वाटतो. घरची परिस्थिती अतिशय गरिबीची होती. माझ्या आयुष्यामध्ये माझ्या अंगावर पहिली पॅट जी आली, ती माझी नव्हतीच....भावाची होती. भावाची पॅट घालून मी शिक्षण घेतले. माझ्या गरिबीशी आणि एकूणच परिस्थितीशी मी प्रामाणिक राहिलो. याच परिस्थितीने मला जीवनाची एक नवी वाट दिली, ज्या वाटेने आज माझ्या आयुष्याची एक सुंदर पहाट उजाडली.

प्रश्न : आज आपण आमच्या 'मायबोली' या भिती पत्रिकेचे उद्घाटन केलेत याविषयी आम्हाला नेमके काय सांगाल ?

सयाजी शिंदे: भिती पत्रिका हा मराठी विभागाचा एक अतिशय महत्त्वाचा उपक्रम असतो. किंबहुना उद्याचे लेखक, कवी होण्याची ही एक वाट असते. आमच्या काळातही हे उपक्रम चालायचे. त्यातून आमचे काही मित्र लेखन करायचे. त्यातील काही पुढे आले. कोण कवी झाला, कोण पत्रकार झाला. मी स्वतःही एक कलाकार म्हणून पुढे आलो. विभागाच्या या कार्यक्रमातून विभागातील प्रत्येक सदस्याच्या सुप्त कलेला ओळखता येते. कधी काळी आम्ही लिहित होतो. आज माझ्या हस्ते या भिती पत्रिकेचे उद्घाटन होते आहे याचा मला मनापासून आनंद होतो. अभिमानही वाटतो. तुम्हा सर्वांना शुभेच्छा ! खूप मोठे व्हा ! भिती पत्रिकेनंतर पुस्तकरूपाने समाजासमोर याल हीच अपेक्षा.

प्रश्न : अभिनयाचे लहानपणापासूनच आकर्षण होते काय ?

सयाजी शिंदे: गावाकडे जत्रा असायच्या. गाव खेडं असल्यानं तमाशा, नंदीबैल, डोंबारी, माकडवाले, वासुदेव, पोतराज, कधीतरी कीर्तनही या सान्या गोष्टी अधूनमधून दिसत असायच्या. हळूहळू याचे आकर्षण वाढत गेले. काही दिवसानंतर शाहूपुरीतील झेड.पी.कॉलनीत राहायला आलो. लोकरंगमंचाशी संबंध आला. अभिनयसाधना हे पुस्तक वाचल्याने झपाटूनच गेलो. मी गावात जेव्हा पहिल्यांदा नाटकात काम केलं आणि घरी आलो तेव्हा माझ्या आईने माझी एष्ट काढली. आजही शुर्टिंग संपवून घरी येतो तेव्हा प्रत्येक वेळेला या क्षणाची आठवण होते. हळूहळू या आवडीने अभिनयाचा लळाच लावला.

प्रश्न : कला आत्मसात करण्यासाठी आपली नेमकी काय साधना असते ?

सयाजी शिंदे: अभ्यास.....! माझ्या मते कोणत्याही क्षेत्रात तुम्हाला जर यशाचे शिखर गाठायचे असेल तर कठोर परिश्रम करण्याशिवाय कोणताही दुसरा पर्याय उरतच नाही. कोणतेही काम करत असलो तरीही मेंदूतील विचाराचे चक्र सुरुच असले पाहिजे. सुनील कुलकर्णी मला जे शिकवायचे त्याचा मी सतत सराव करीत रहायचो. भैरोबाच्या डोंगरावर भैरोबाच्या साक्षीने माझा सराव चालायचा. भैरोबा हाच माझा प्रेक्षक होता याच भैरोबाच्या डोंगरावर मी घडलो, असे म्हटले तरी वावगे ठरणार नाही.

प्रश्न : तुमचे सुरुवातीचे दिवस कसे होते ?

सयाजी शिंदे: महाविद्यालयीन शिक्षण घेत असतानाच कण्हेर पाटबंधारे विभागाच्या कृष्णानगर कार्यालयात

वॉचमन म्हणून काम करीत होतो. पुढे भावाबरोबर लोखंडाला टॅप मारायचे कामही केलं. मुंबईला गेल्यावर शिक्षक म्हणून एका शाळेत नोकरी केली. पुढे बॅकेत लागलो. दरम्यान गजानन जहागिरदार यांच्या 'अभिनय कसा करावा', भरतमुनीच्या 'नाट्यशास्त्र' व के.नारायण काळेच्या पुस्तकांनी अभिनयाबद्दलचा जबरदस्त आत्मविश्वास दिला. हेच बळ पंखात घेऊन मुंबईला गेलो. तेथे 'झुलवा' नाटक मिळालं. याच झुलवानं माझं कलेचं विश्व फुलवलं.

प्रश्न : आज आपण परभाषिक चित्रपट करताना भाषेची अडचण येते का ?

सयाजी शिंदे: अलिकडे मी दाक्षिणात्य चित्रपट करतो आहे. सुरुवातीला निश्चितपणे अडचण निर्माण झाली. अवघडल्यासारखेही झाले. अभ्यासाने अडचणींवर मात करता येते हे मला माझ्या मराठी भाषेच्या प्राध्यापकांनी शिकविले होते. त्यामुळे मनापासून अभ्यास केला. जवळपास मी सहा भाषांमधील चित्रपटात काम केले आहे. आज मला भाषेची अडचण वाटत नाही. दुभाषी मदतीला असतोच त्यामुळे समजून घेवूनच पुढे जात असतो. प्रत्येक गोष्ट आत्मसात करतो ! कोणतीही गोष्ट प्रेझेंट करताना भाषा हा अडसर ठरत नाही.

प्रश्न : आज इतर भाषेच्या तुलनेत मराठी चित्रपट मागे का पडतात ?

सयाजी शिंदे: मराठी माणूस आणि त्याची मराठी चित्रपटाविषयीची उदासीनता हेच याचे एकमेव कारण आहे. महाराष्ट्रात भाषेबद्दल आकर्षण नाही. दक्षिणेतील लोकांना त्यांच्या चित्रपटातील भाषेबद्दल प्रचंड आकर्षण आहे. आपले फक्त पुतना मावशीचे प्रेम आहे. कमीत कमी मराठी भाषेत ते दर्जेदार चित्रपट येतात, ते चित्रपट चित्रपटगृहात जावून पाहिले पाहिजेत. त्यांचे कौतुक केले पाहिजे.

प्रश्न : आज आपण यशाच्या शिखरावर आहात ! याविषयी काय वाटतं ?

सयाजी शिंदे: मी गरीब कुटुंबातला आहे. मला पैशाचा फार हव्यास नाही. पैसे मोजण्यात फार समाधान वाटत नाही. माणसं मोजण्यातच मी आनंदी असतो. माझा माणसांचा गोतावळा ही फार मोठी श्रीमंती आहे. पहिल्यापासून मला मनानं श्रीमंत असणारी खूप माणसं मिळाली. कवी प्रमोद कोपर्डे यांनी सांगितले होते की, "सयाजी, गरुडपक्षी आपल्या लहान पिलांना उंच आकाशात घेवून जातो आणि ठराविक उंचीवरून तो त्यांना सोडून देतो. पुढचा प्रवास त्या पिलाला स्वतःलाच करावा लागेल किंवा जमीनीवर कोसळून जीव गमवावा लागेल" हिच शिकवण मला माझ्या जवळच्या माणसांनी दिली. 'कोणतीही योजना भान ठेवून आखावी व बेभान होवून राबवावी.' माझ्या आयुष्याच्या गणिताचे हे सूत्र आहे.

प्रश्न : आता शेवटचा प्रश्न ? तुम्ही अभिमानाने काय सांगू शकता ?

सयाजी शिंदे: मी स्वामी विवेकानंद शिक्षण संस्थेच्या लाल बहादूर शास्त्री महाविद्यालयातून घडलो. याच महाविद्यालयातील माझ्यासारख्या, तुमच्यासारख्या अनेकांनी यशाचं एक उत्तुंग शिखर जन्माला घालावं.

आपण महाविद्यालयाच्या मराठी विभागात आलात मनमोकळेपणाने जुन्या आठवणींना उजाळा दिलात त्याबद्दल मनःपूर्वक आभार !

आपण महाविद्यालयाच्या मराठी विभागात आलात मनमोकळेपणाने जुन्या आठवणींना उजाळा दिलात त्याबद्दल मनःपूर्वक आभार !

आपण महाविद्यालयाच्या मराठी विभागात आलात मनमोकळेपणाने जुन्या आठवणींना उजाळा दिलात त्याबद्दल मनःपूर्वक आभार !

आपण महाविद्यालयाच्या मराठी विभागात आलात मनमोकळेपणाने जुन्या आठवणींना उजाळा दिलात त्याबद्दल मनःपूर्वक आभार !

२०१३

ब
ह
ड
सी
य

३३



जमाव : एक मानसशस्त्रीय विश्लेषण

कु.रेश्मा गोवर्धन व्हटकर / द्वितीय वर्ष, कला

सर्वांनीच एकमेकांशी कलौख्याचे संबंध ठेवले, व्यक्तिमत्त्वाचा योग्य पध्दतीने विकास केला, विवेकनिष्ठ विचारांची कास धरली, इतरांच्या अवस्थेचा विचार केला व संयम राखून वर्तन केले तर सर्वच व्यक्तिकडून समायोजित वर्तन निर्माण होण्यास मदत होईल.

संध्या समाजात कुठे ना कुठे दंगल, जाळपोळ निरनिराळ्या कारणांनी होताना दिसते. त्यामुळे समाजात असूनसुध्दा प्रत्येक व्यक्ति अस्वस्थ, तणावग्रस्त व असुरक्षित आहे. समाजात असे वर्तन का घडते याचे विश्लेषण खालीलप्रमाणे करता येईल.

'ब्राऊन' यांनी जमावाचे दोन प्रमुख वर्ग केले आहेत. १) कृतिप्रवृत्त जमाव २) निष्क्रीय जमाव.

कृतिप्रवृत्त जमावाचे पुनः चार प्रकार पडतात. १) आक्रमक २) भयभीत ३) हस्तगत करणारा ४) भावनाप्रदर्शक.

विशिष्ट समाजावर हल्ला करण्यास प्रवृत्त झालेला जमाव, मारामारीसाठी निघालेला जमाव, जाळपोळीस निघालेली झुंड ही आक्रमक जमावाची उदाहरणे होत.

'किंबल यंग' यांनी केलेली जमावाची व्याख्या कृतिप्रवृत्त जमाव आणि निष्क्रीय जमाव या दोन्ही प्रकारांना लागू पडणारी आहे. "एखाद्या मर्यादित परिसरामध्ये जमलेला, संख्येने बराचसा मोठा, एकाच विषयाकडे अवधान केंद्रित झालेला व त्याच विषयाला अनुलक्षून प्रतिक्रिया करीत असणारा समुदाय म्हणजे जमाव होय." जमावातील सर्व जणांना त्या लक्षवेधी गोष्टीत सारखाच रस असतो, ती गोष्ट किंवा घटना सर्वांनाच महत्त्वाची वाटते. व एकाच भूमिकेवरून व समान दृष्टिकोणातून सर्वजण तिच्याकडे पाहत असतात. म्हणजेच जमावातील सर्व व्यक्तित्वांची मूल्ये एकच बनलेली असतात.

'मार्टिन' च्या मते झुंडीचे वैशिष्ट्य तिच्या मनोवृत्तीत असते. त्या विशिष्ट मनोवृत्तीमुळे झुंडीचे वर्तनही काही वेगळ्याच प्रकारे होत असते. ती विशिष्ट मनोवृत्ती कोणत्याही समुदायात निर्माण झाली की तो समुदाय साधा समुदाय न राहता 'झुंड' या सदरात मोडतो.

'झुंड' रूप जमावाची विशिष्ट मनोवृत्ती कोणती व ती उत्पन्न झाली असता जमावाचे वर्तन कसे होते. याचे वर्णन 'ल बाँ' यांनी पुढीलप्रमाणे केले आहे.

झुंडीत सामील झालेली माणसे कोणी का असेनात व त्यांच्यात राहणीमान, व्यवसाय, चारित्र्यगुण, बुद्धिमत्ता इ. बाबतीत कितीही साधर्म्य असो किंवा वेगळेपणा असो, एकदा का त्यांचे झुंडीमध्ये रूपांतर झाले की एरवी त्यांनी जसा विचार केला असता, किंवा ते जसे वागले असते, त्यापेक्षा अगदी भिन्न प्रकारे त्यांचे विचार व वर्तन होऊ लागते. एरवी ज्या सहज प्रवृत्तींना त्यांनी काबूत ठेवलेले असते, त्यांच्या आहारी माणसे जातात. त्यांच्या वर्तनावर एरवी जो जबाबदारीच्या जाणीवेचा अंकुश असतो, तो अजिबात नाहीसा होतो. आपण काय करीत आहोत याची जाणीव त्यांना राहत नाही. झुंडीतील मनुष्य संस्कृतीच्या कित्येक पायऱ्यांवरून खाली घसरतो. त्यांच्यात असंस्कृत माणसाची हिंसक वृत्ती, क्रूरता आणि अमर्याद उत्साह यांचा अविष्कार दिसतो.

'मॅकडूगल' च्या मते झुंडीमधील माणसांचे बौद्धिक व्यापार मंदावतात. त्यांच्या भावना प्रकर्षाने उद्दीपित होतात. व तो असंस्कृत स्वरूपातील सहजप्रवृत्तीच्या आहारी जातो. तसेच झुंडीमध्ये अहंभाव, द्वेष, हटवादी वृत्ती व असहिष्णुता हे गुण दिसून येतात.

जमावाची मानसिक लक्षणे तसेच वर्तनाबाबतची लक्षणे पुढीलप्रमाणे सांगता येतील.

१) समानधर्मता :-

जमावातील लोक त्या वेळेपुरते समानधर्मी झालेले असतात. सर्वांचेच लक्ष एकाच विषयांवर केंद्रित

झालेले असते. सर्वांच्या विचारातही सारखेपणा आलेला असतो. भावनांच्या बाबतीतही सर्वजण समान पातळीवर असतात. सर्वांना विशिष्ट गोष्टीत व घटनेत रस वाटतो.

२) भावनाप्रकर्ष :-

भावना कोणतीही असो ती पराकोटीस गेलेली आढळते. उदा.संतापलेला जमाव इतका भडकतो की वाट्टेल ते करावयास तो मागेपुढे पाहत नाही.

३) वेजवाबदारपणा :-

सर्वच जण असे वागत आहेत, मग मी वागलो तर काय बिघडले ? असा विचार जमावातील माणसे करतात. या जनसंदर्भात आपल्याला कोणी ओळखीत नाही. अशी अनामिकत्वाची भावनाही त्यांच्या मनात असते, शिवाय सर्वच जण असे वागत आहेत तेव्हा कोण कोणाला शिक्षा करणार ? असाही विचार त्यांच्या मनात असतो.

४) सर्व शक्तिमत्त्वाचा भ्रम :-

जमावाला आपण चांगले किंवा वाईट करायला समर्थ आहोत, आपल्याला कोणी रोखू किंवा हरवू शकणार नाही असे वाटत असते. आपणच सर्वशक्तिमान आहोत असे त्यांना वाटते.

५) आत्यंतिक सूचनशक्ती :-

जमावातील लोक कोणत्याही अफवेवर चटकन विश्वास ठेवतात. विशेषतः ज्या भावनेच्या आहारी ते गेलेले असतात तिला पोषक असणाऱ्या अफवा तर अतिशय वेगाने पसरतात. अफवांचा खरेखोटेपणा तपासून पाहण्याच्या मनःस्थितीत जमाव नसतो. झुंडीचे नेतृत्व स्वतःकडे घेणारी व्यक्ति जसे सांगेल तसे लोक करू लागतात.

६) विवेक बुद्धीचा अभाव :-

जमावाची भावनिक पातळी उंचावलेली असल्यामुळे बौद्धिक पातळी खालावते. कारण भावना आणि विचारशक्ती यांचे अगदी वावडे जरी नसेल, तरी त्यांच्या संबंध व्यस्त प्रमाणात

२०१३

ब
हा
डु
सी
य

३५

असतो. तसेच चिकित्सक बुध्दी व प्रगल्भ विचारशीलता असलेल्या व्यक्ती सहसा झुंडीत सामील होत नसतात.

७) आप-परभाव वृत्ती :-

यामध्ये आपले व दुसऱ्याचे असा दुजाभाव केला जातो. अशा व्यक्ती स्वतःच्या वस्तू सुरक्षित ठेवतात व दुसऱ्याच्या वस्तुंची मोडतोड करतात.

८) स्व-केंद्रित वृत्ती :-

सध्याच्या धावपळीच्या जीवनामध्ये प्रत्येक व्यक्ती स्व-केंद्रित झालेली पहावयास मिळते. (काही अपवाद वगळून) मी व माझे यापलीकडे अशा लोकांचे जीवन असत नाही. आपल्या आजूबाजूला काय घडते आहे. जे घडते आहे ते चांगले आहे का वाईट, याचा विचार केला जात नसल्याने विघातक वृत्तीच्या लोकांवर जो सामाजिक दबाव असावयास पाहिजे तो सध्या दिसत नाही.

९) एकाकीपणा :-

आधुनिक धावपळीच्या किंवा तांत्रिक युगात व्यक्ती समाजात राहत असून सुध्दा ती एकाकी, अलग पडलेली व अस्वस्थ असल्याचे दिसते. एकाकीपणा कोणत्याही व्यक्तिला फायदेशीर नसतो. लहान मूल आपल्याकडे इतरांचे लक्ष वेधून घेण्यासाठी काही वर्तन प्रकार करते, त्याचप्रमाणे

□

□

समाजातील काही व्यक्ती किंवा गट इतरांचे लक्ष वेधून घेण्यासाठी किंवा इतरांना त्यांची जाणीव व्हावी म्हणून काहीवेळा अशाप्रकारचे वर्तन प्रकार करताना पहावयास मिळतात.

१०) परिणामाचा अभाव :-

आपण जे करतो त्याचे परिणाम काय होतील ? कसे होतील ? नुकसान कोणाचे होईल ? शेवटी सरकार नुकसान भरपाई म्हणून जे पैसे देते ते सरकार कोटून आणते ? याचा विचार व्यक्ती करीत नाही किंवा इतकी संवेदनाशीलता व्यक्तिमध्ये असत नाही. शेवटी हे नुकसान आपल्याच पैशाद्वारे (कररूपाने दिलेल्या) भरून काढले जाते. त्यामुळे एकप्रकारे आपणच आपले नुकसान करत आहोत, आपल्या अशा वर्तनामुळे निश्चितच आपल्या विकासावर परिणाम होतो. हे व्यक्तित्ना न समजल्याने व्यक्ती विध्वंसक वर्तन करताना आढळतात.

सारांश सर्वांनीच एकमेकांशी सलोख्याचे संबंध ठेवले, व्यक्तिमत्त्वाचा योग्य पध्दतीने विकास केला, विवेकनिष्ठ विचारांची कास धरली, इतरांच्या अवस्थेचा विचार केला व संयम राखून वर्तन केले तर सर्वच व्यक्तिकडून समायोजित वर्तन निर्माण होण्यास मदत होईल.

□

□

वैकुंठाला निघाला तुका

कॉलेजचा निरोप घेताना डोळ्यात साठले पाणी
आठवली इंद्रायणी गुरुजनांची वाणी
देशभक्तीची गाणी
ज्ञानाचे वाहिले झरे
आज ते दिवस
निघाली निघाली घरटे सोडून पाखरे
किलबिलाट सारा,
आठवतो पाऊला पाऊला वाटेवर
शोधाय निघालो आम्ही भविष्याचा सूर

कॉलेजचा निरोप घेताना, परतुनी पहावे वाटते मागे
काय शोधायचे आता सारेच गुंतलेले धागे
गुरुजनांनी अभ्यासाचा लावला लळा
भाकरीचा चोहीकडेच दुष्काळ
तरीही स्वप्नांचा फुलवला मळा
म्हणुनी, निरोप घेताना फुटेनात आज शब्द
झालो मी मुका
कुणा कुणाला इथेच ठेवुनी
भाकरी शोधात वैकुंठाला निघाला तुका
संदीप सूर्यकांत फाळके
तृतीय वर्ष, कला



शेतकऱ्यांच्या प्रगतीला गती : सेंद्रीय शेती

कु.प्रतीक्षा जाधव / तृतीय वर्ष, विज्ञान

सर्व व्याप व खर्च करूनही द्राक्षे युरोप, गल्फला निर्यात होणार की भारतीय बाजारपेठेत जाणार, की शेवटी बेदाणा करणार या संभ्रमात शेतकरी अडकलेला असतोच. काहीही पिकवा, शेवटी त्या उत्पादनाची विक्री कोणातरी दलालाचे हाती. त्यामुळे शेतकऱ्यांची अवस्था अधिकाधिक बिकट होत आहे.

द्राक्ष बागायती म्हटले की वेगवेगळ्या पध्दतीने द्राक्षांचे मांडव आणि वियांची, विनवियांची, काळी, गुलाबी, लांबट, गोल अशा वेगवेगळ्या जातींची द्राक्ष लागवड डोळ्यासमोर येते. महाराष्ट्रात आणि विशेषतः सांगली जिल्ह्यामध्ये द्राक्ष बागांचा पसारा बावीस हजार एकरांच्या घरात गेला आहे. द्राक्ष पिकामध्ये रासायनिक खतांचा, सूक्ष्म घटकांचा (लोह, जस्त, मॅग्नेशियम इ.) तसेच रासायनिक औषधांचा, बुरशीनाशकांचा वापर प्रचंड प्रमाणात होत आहे. 'द्राक्षवृत्त' सारखे द्राक्षबागायतदार संघाचे मुखपत्र ऑक्टोबर छाटणीपासून ९० दिवसात ३६ ते ४० वेगवेगळ्या औषधांचे फवारे सुचवित आहे. द्राक्षावरील वैज्ञानिकांनी घेतलेल्या अनेक परिसंवादातून व द्राक्षातील तज्ञांच्या मार्गदर्शनातून या पिकाभोवती एक गूढतेचे व प्रचंड खर्चाचे वलय कायमचे दिसत आहे.

हे सर्व व्याप व खर्च करूनही द्राक्षे युरोप, गल्फला निर्यात होणार की भारतीय बाजारपेठेत जाणार, की शेवटी बेदाणा करणार या संभ्रमात शेतकरी अडकलेला असतोच. काहीही पिकवा, शेवटी त्या उत्पादनाची विक्री कोणातरी दलालाचे हाती. त्यामुळे शेतकऱ्यांची अवस्था अधिकाधिक बिकट होत आहे. द्राक्ष बागायतदारांचे पैशाचे व कष्टांचे जिवावर औषध कंपनी व दलाल मात्र सुखवस्तू बनत आहेत.

गेल्या १२ वर्षांचा बाजारपेठेचा आढावा घेतला तर औषधांचे दर तीन चार पटीने वाढले, रासायनिक खते महागली, मजूरीचे दर वाढले, द्राक्षातील भांडवली खर्च (मंडप, तारा वगैरे) वाढला, पण बाजारात जाणाऱ्या द्राक्षांच्या किंवा बेदाण्याच्या दरामध्ये फारशी वाढ झाली नाही. रासायनिक

२०२३

ब
ह
ड
सी
य

३७

खतांचे दुष्परिणाम दिसू लागून जमिनीची पाण्याची गरजही वाढत चालली आहे. काही भागात तर टँकरने पाणी घालून बागा जगणवण्याचा आटापिटा करणाऱ्या शेतकऱ्यांचे तर प्रचंड हाल आहेत.

एकच पर्याय-सॅट्रीय शेती :

गेल्या १२ वर्षांच्या अखंड कामातून व गांडूळशेती, सॅट्रीय शेती, जीव-उर्जा शेती (Bio-dynamic Farming) व रासायनिक कीड बुरशी नियंत्रक औषधांना पर्यायी आयुर्वेदिक औषधांचा अभ्यास यामुळे माझी या सॅट्रीय शेतीवरील श्रद्धा अधिकाधिक दृढ होते आहे. सॅट्रीय खते वापरणे, निरनिराळ्या हिरवळीच्या पिकांचे व तणांचे नियोजन करून तो सर्व जैविक पदार्थ भूमातेला परत देणे.

शाश्वत शेती संशोधन संस्था, विटा.जि.सांगली येथील प्रगतिशील शेतकरी श्री.जयंत बर्वे यांचा यासंदर्भातील प्रयोग उल्लेखनीय आहे. तो त्यांच्याच शब्दात-

सप्टेंबर २००० मध्ये मी १॥ एकर द्राक्षबाग तास-ए-गणेशची लावली. चरीमध्ये भरपूर सॅट्रीय पदार्थ, कॉंग्रेस गवत गाड्याच्या गाड्या भरले व त्यावर हळद भूसा, तंबाखू भूसा, घायपाताचे तुकडे व नीम पेंड टाकून बागेची लावणी केली. वाळवीसाठी फ्लोरेट आल्ड्रेक्स सारखी औषधे वापरली नाहीत. नेहमीचा बॉवर पध्दतीचा मांडव उभारून पाणी व्यवस्थापन मायक्रो सिप्रॅकलरने केले. शेण मुताची स्लरी व गांडुळांची वाढ यावर बाग मांडवावर गेली. सॅट्रीय खत ग्रीन हार्वेस्टचा वापर केला.

ऑक्टोबर २००१ला छाटणी घेतली व त्यानंतरची औषध योजना पुढील प्रमाणे-

१) छाटणी होताच सर्व खोडे वलांडे यांना गोमय, गोमूत्र, नीमतेल, हिंग यांची रबडी बनवून त्यातच कोरफड (ऑलिव्हेरा) गर घालून सारवण केले. यामुळे मिलीबगचा त्रास होत नाही. हा उपाय पुन्हा एप्रिल छाटणीला करायचा. वर्षात २ वेळा एवढे केले तर मिलिबगचा त्रास होत नाही.

२) छाटणी होताच १ टक्का बोर्डो मिश्रण + वेटेबल सल्फरने खोडे वलांडे धुवून घेतले. एकूण पहिल्या ७० दिवसांत म्हणजे द्राक्ष मण्यात पाणी फिरे पर्यंत किंवा साखर भरू लागे पर्यंत ६ वेळा निवळी बोर्डो+वेटेबल सल्फर फवारले.

३) कीड प्रतिबंधक म्हणून लसूण-मिरची अर्क, वावर्डिंग, वेखंड काढे, गोमूत्र, नीम तेल, हिंग यांच्या एकूण ६ फवारण्या गरजेप्रमाणे दिल्या.

४) छाटणीनंतर उडद्या किडीचा फार त्रास होतो, यासाठी मी ६ ली. रॉकेल+२ ली. दूध भरपूर ढवळून १०० ली. पाण्यात टाकून फवारले. ही फवारणी सायंकाळी करावी. रात्रभर बागेत वास रहातो व उडद्याचा त्रास जाणवत नाही.

५) आमच्या संपूर्ण बागेत भरपूर तुळस व झेंडूची झाडे आहेत. जवळ जवळ प्रत्येक वेलीनंतर यापैकी एक झुडुप आहे. त्यांनी किडींचा प्रतिबंध मोठ्या प्रमाणात केला.

६) बागेत पहिले ७० दिवस १॥ एकरात १ लाइट ट्रॅप वापरला, त्यामुळेही कीड नियंत्रण झाले.

७) बायोडायनॅमिक कॅलेंडर वापरून त्यातील सूचना प्रमाणे गाईचे शिंगातील खताच्या शिंपडण्याचे प्रयोग केले. त्यामुळे जमिनीचा जिवाणू निर्देशांक १०^१ च्या घरात पोहोचला आहे. जमीन खऱ्या अर्थाने जिवंत जमीन बनली आहे.

८) ७० दिवसांनंतर द्राक्षांवर दूध, गोमूत्र, हिंग असे दोन फवारे दिले.

९) व्हर्मीवाश स्वतःच बनवून त्याचे २ फवारे दिले.

निरीक्षणे :

छाटणीपासून १२० दिवस होताच द्राक्षे गोड होऊ लागली. देखणा, फुगीर व गोड माल होताच त्यांची गोडी ब्रिक्समीटरने २३ ते २५ दाखवली.

□ □ □

२०१३

ब
ह
र
र
स
ी
य

३८

ललित



यशाच्या तीन पायऱ्या

तुषार अभिमन्यू घाडगे / तृतीय वर्ष, वाणिज्य

आपले दुर्बल स्थान हीच आपली शक्ती, आपले सामर्थ्य बनवा. कोणी आईच्या पोटातून शिकून येत नाही. प्रत्येकाला जन्मजात जे संस्कार मिळतात व तो स्वतः जे कष्ट करतो, त्यातूनच तो घडत जातो. वडील शिकलेले नाहीत म्हणून आपलं कसं व्हायचं ? असा विचार करू नका. काही वेळा यश मिळत नाही म्हणून नाऊमेद होऊ नका. यश कोणा एका वर्गाच्या लोकांची मक्तेदारी नाही. कष्ट केले की यश मिळतेच.

प्रस्तावना :

यश हे मिळविणाऱ्याचे असते. 'एखादी गोष्ट जमेल का ?' असा न्यूनगंड बाळगू नये. यश ही कोणाची मक्तेदारी नाही. अपयशाने नाऊमेद होऊ नका आणि यशाने हुरळून जाऊ नका. कष्टाला महत्त्व दिल्यास भविष्य उज्ज्वल राहील याची खात्री बाळगा. शुन्यातून विश्व निर्माण करणारी माणसे आपल्या आजूबाजूला आहेत.

आपले दुर्बल स्थान हीच आपली शक्ती, आपले सामर्थ्य बनवा. कोणी आईच्या पोटातून शिकून येत नाही. प्रत्येकाला जन्मजात जे संस्कार मिळतात व तो स्वतः जे कष्ट करतो, त्यातूनच तो घडत जातो. वडील शिकलेले नाहीत म्हणून आपलं कसं व्हायचं ? असा विचार करू नका. काही वेळा यश मिळत नाही म्हणून नाऊमेद होऊ नका. यश कोणा एका वर्गाच्या लोकांची मक्तेदारी नाही. कष्ट केले की यश मिळतेच.

यश मिळविण्यासाठी तीन गोष्टींची गरज असते. १) त्यासाठी उत्कृष्ट प्रेरणा हवी; २) यश मिळविण्याचे तंत्र हवे; ३) जिद्द किंवा चिकाटी हवी.

दोन तरुणांची एक गमतीची गोष्ट आहे. पौर्णिमेची रात्र होती. दोघांनी थोडसे "पेय" प्राशन केले होते. नौकाविहाराची कल्पना डोक्यात आली. तलावावर गेले. वल्ही हातात घेऊन यथेच्छ नौकानयन केले. पहाट झाली. एक तरुण किनाऱ्यावर उतरला व नावेला पाहून जोरजोरात हसू लागला. दुसरा पण थोड्या वेळाने खाली उतरल्यावर पहिल्यासारखाच हसू लागला. कारण नाव जेथे होती तेथेच होती. त्या दोघांनी रात्री नावेचा दोर सोडलाच नव्हता. यशाच्या बाबतीत बहुसंख्य तरुणांची अशीच अवस्था होते. ते

२०१३

ब
हा
डु
सी
य

३९

घडपड करतात, पण हाती काहीच गवसत नाही. म्हणजे ते नशेत असतात, असा गैरसमज करून घेऊ नका. ते निष्काळजी किंवा उदासीन असतात. आपले दोष, आपल्या उणीवा यांच्याशी आपण बांधलेलो असतो. तो दोर हे सोडत नाहीत. भविष्यकाळासाठी महत्वाकांक्षी मनसुवे रचतात. पण भूतकाळातील चुकांनी स्वतःला जखडून ठेवतात.

यश संपादन करणाऱ्या माणसाचा आपण हेवा करतो. अगदी हेवा केला नाही तरी आपण त्याच्यासारखे करू शकलो असतो. परंतु त्याचे नशीब चांगले म्हणून तो यशस्वी झाला. आमचे ग्रहच बरोबर नव्हते. अशी सबब सांगितली जाते. यश मिळविण्यासाठी स्वतःचा स्वतःवर विश्वास हवा. आत्मविश्वास म्हणजे अहंकार किंवा आत्मवंचना नव्हे. अडथळे कितीही येवोत, ते ओलांडण्याची क्षमता माझ्या ठिकाणी आहे, असा विश्वास म्हणजे आत्मविश्वास. हा विश्वास नुसता असून चालत नाही, तो कृतीत उतरला पाहिजे. त्यासाठी गरज आहे प्रयत्नवादी असण्याची. मोठ्या माणसांचे आयुष्य म्हणजे केवळ यशाची मालिका नसते. तर अनेक वेळी ती अपयशांची गाथा असते. 'अपयश ही यशाची पायरी असते' असे म्हणतात ते उगीच नाही. अब्राहम लिंकनचे जीवन त्या दृष्टिने अभ्यासनीय व अनुकरणीय आहे. सतत ३० वर्ष तो अपयशी ठरत होता. धंद्यात त्याने खोट खाल्ली, प्रेमात तो असफल ठरला. १८३१ ते १८५८ पर्यंत निवडणुकीत त्याने आपटी खाल्ली. पण शेवटी १८६० मध्ये अमेरिकेचा राष्ट्राध्यक्ष होऊन त्याने आपल्या अपयशांवर यशाचा कळस चढवला. ज्या बर्नाड शॉला साहित्यिक म्हणून जगभर मान्यता मिळाली. त्याच्या पुस्तकांना पहिली सहा वर्षे एकही प्रकाशक मिळत नव्हता.

यशस्वी होण्यासाठी कल्पनाशक्ती तरल असली पाहिजे. क्रिकेटमध्ये क्षेत्ररक्षक जेव्हा यष्टिरक्षकाकडे सीमारेषेच्या जवळून चेंडू फेकतो तेव्हा प्रथम तो अंतराचे मानसिक चित्र किंवा अंदाज डोळ्यापुढे

आणतो व चेंडू यष्टिरक्षकाच्या हातात बरोबर पडेल अशी कल्पना करून फेक करतो. हेच तंत्र मैदानी स्पर्धेतील उंच उडीत भाग घेणारा स्पर्धक वापरतो. प्रथम आपणास पलीकडे गेल्याचे तो 'पाहतो.' मानसिकदृष्ट्या तो काठी पार करण्यात अपयशी ठरला तर परिणामी त्याच्या पदरीपण अपयश येते. यश मिळविण्यासाठी मानसिक गठन व नियोजन फार महत्वाचा कार्यभाग पार पाडतात. झाडावरून फळ खाली पडणे हे गुरुत्वाकर्षणाचा नियम शोधून काढण्याच्या बाबतीत निमित्तमात्र कारण होते. त्यापाठीमागे अभ्यासातून दिसलेले मानसिक चित्र महत्त्वाचे होते. तुम्हाला जे हवे त्याचाच विचार केल्याने मानसिक प्रतिमा निर्माण होतात. या प्रतिमा यशाची पाऊलवाट खुली करतात. हजारो वस्तूंच्या ढिगाऱ्यातून लोकचुंबक नेमके लोखंड तेवढे उचलतो. अवांतर गोष्टीकडे ओढले न जाता पाहिजे तेवढी गोष्ट अशाच प्रकारे ओढून घेता आली पाहिजे.

आपल्या सर्वांच्या व्यक्तिमत्त्वाची तीन रुपे असतात. १) आपण त्याला समजतो ते; २) लोक त्याला समजतात ते; ३) आपले जे खरे असते ते. यातील खऱ्या रूपाचा जर शोध घेता आला तर तो यशाला पूरक व पोषक ठरतो. यशासाठी ही स्वओळख किंवा आत्मओळख फार आवश्यक आहे. प्रकट, दुर्लक्षित, गुपित व अज्ञात असे व्यक्तिमत्त्वाचे चार कप्पे असतात. सुरुवातीस प्रकट कप्पा वाढविणे व बाकीचे तीन कमी करणे म्हणजे व्यक्तिमत्त्व विकास. ज्याक्षणी आपण आपल्याला ओळखतो. त्याक्षणी आपल्यातील सुप्त व विखुरलेली शक्ती एकत्रित होऊन आपल्यापुढे हात जोडून उभी राहते. सूर्याचा प्रकाश भिंगातून जेव्हा कागदावर पडतो तेव्हा कागद जाळण्याचे त्याच्यात सामर्थ्य आहे, हे आपल्याला समजते. आपली आपल्याला ओळख पटणे याचेच दुसरे नाव ध्येय. ध्येयावाचून जीवन म्हणजे सुकाणूविना नाव, पत्त्यावाचून लिहिलेले पत्र.

यशाचा सोपान चढण्यासाठी जीवनाला चिकाटी, सचोटी, हातोटी व लिखोटी या चार गोष्टींची गरज

आहे. चिकाटी म्हणजे प्रयत्न न सोडणे. स्वातंत्र्यवीर शहीद भगतसिंगला फाशीला जाण्यापूर्वी नेहमीप्रमाणे आपला नित्याचा व्यायाम करताना पाहून जेलरने विचारले, "याचा आता उपयोग काय ?" मला पुढचा जन्म मानवाचा मिळाला तर इंग्रज सत्तेविरुद्ध लढा देण्यासाठी हा व्यायाम उपयोगी पडणार आहे." भगतसिंगाने दिलेले हे उत्तर म्हणजे चिकाटीचा आदर्शपाठ आहे. सचोटी म्हणजे स्वतःच्या कार्यावरील अढळ निष्ठा व कर्तव्यातील प्रामाणिकपणा.

हतोटी म्हणजे बोलण्यातील व वागण्यातील कुशलता. योगः कर्मसु कौशलम् । लोकमान्य टिळकांना कोणीतरी विचारले, "आपण 'गीतारहस्य' ग्रंथ इंग्रजीतून का लिहित नाही ? लोकमान्य टिळकांनी क्षणार्धात उत्तर दिले, "मला वाटते कर्मयोगाची खरी गरज इंग्रजांपेक्षा मराठी माणसाला अधिक आहे. "लिखोटी म्हणजे शब्दांवरील प्रभुत्व. बोलण्यात व लिहिण्यात शब्द हे आपले दास बनले पाहिजेत.

धनाचा धनगर,

अरे हा धनाचा धनगर, धनाचा धनगर ॥८॥

धनाचा धनगर अरे धनगर धनगर,

वेडा भोळा रे माझा धनगर ।

हाती घुंगुराची काठी, पदरी पाळितो मेंढरं,

अरे हा धनाचा धनगर, धनाचा धनगर ॥९॥

काठी आहे त्याच्या खांद्यावरती,

शीळ घालीत ओव्या गातो रानामध्ये ।

लई चोख त्याची मेंढरं ही,

गुण्या गोविंदानं चरती पडकामंघी ॥१०॥

आपल्याच तालामध्ये, आपल्याच गाण्यामध्ये,

रोजीरोटी मिळवितो मोठ्या इमानदारीनं ।

नाही ठारूक त्याला बेइमानी, नाही ठारूक अविचार,

नाही ठारूक त्याला हे किती बेइमानी जग ॥११॥

पर माझ्या वेड्या भोळ्या रे धनगरा,

शिक्षण रे पार तू विसरला ।

माझ्या अडाणी रे मायबापा, पाखरं येऊ दे लवकर,

ज्ञान घ्यायला या ज्ञानमंदिरामध्ये ॥१२॥

जय मल्हारबाच्या नावानं, उठ पुन्हा रे जोमानं,

खांद्यावरची काठी आता हातात घे नेटानं ।

मेंढरं बुझवायची नाहीत त्या काठीनं,

दुनिया बदलायची आहे रे तुला त्या काठीनं ॥१३॥

किरणरत्न जानकर

प्रथम वर्ष, कला



२०१३

ब
हा
रु
सी
य

४९

व्यक्तिचित्रण



गणितज्ज्ञांचा गौरव : श्रीनिवास रामानुजन

कु.निलिमा शिवाजी पाटील / द्वितीय वर्ष, विज्ञान

सर्वज्ञानाचे एकमेकांशी नसलेल्या संबंध ठेवले, व्यक्तिमत्त्वाचा योग्य पध्दतीने विकास केला, विवेकनिष्ठ विचारांची कास धरली, इतरांच्या अवस्थेचा विचार केला व संयम राखून वर्तन केले तर सर्वच व्यक्तिंकडून समायोजित वर्तन निर्माण होण्यास मदत होईल.

आपल्या सर्वांना माहितच असेल की, केंद्रशासनाने २०११-१२ हे वर्ष 'गणित वर्ष' म्हणून घोषित केले आहे. तेव्हापासून गणित विषयाबद्दल सर्व विद्यार्थ्यांमध्ये आवड निर्माण व्हावी म्हणून सर्व महाविद्यालयात २२ डिसेंबर हा दिवस 'गणित दिन' म्हणून साजरा केला जातो. आता तुम्हाला प्रश्न पडला असेल की, २२ डिसेंबर हाच दिवस 'गणित दिन' म्हणून का साजरा केला जातो ? तर या दिवशी असामान्य प्रतिभेचे महान गणिती वैज्ञानिक श्रीनिवास रामानुजन यांचा जन्म झाला. त्यांनी आपल्या भारतभूमीला गणिताचे प्रगल्भ ज्ञान उपलब्ध करून दिले. म्हणूनच २२ डिसेंबर हा दिवस 'गणित दिन' म्हणून साजरा केला जातो.

जगाला शून्याची देणगी देऊन गणिताचे ज्ञान पूर्ण करणाऱ्या भारतभूमीत अनेक गणिततज्ज्ञ होऊन गेले आहेत. त्यामध्ये वयाच्या अवघ्या २३व्या वर्षी 'आर्यभटीय' नावाचा ग्रंथ लिहिणाऱ्या आर्यभट (इसवी सन ४७६ ते ५५०) यांच्यापासून ते के. चंद्रेखरन यांच्यापर्यंत अनेकांचा समावेश होतो. या मालिकेतील एक दैदीप्यमान रत्न म्हणजे श्रीनिवास रामानुजन. श्रीनिवास रामानुजन यांचा जन्म तामिळनाडूमधील तंजावर जिल्ह्यातल इरोड या गावी २२ डिसेंबर १८८७ रोजी झाला. गरिबीमुळे शैक्षणिक सोयी त्यांना उपलब्ध झाल्या नाहीत.

वयाच्या अवघ्या ३२व्या वर्षी मृत्युमुखी पडलेल्या या महापंडिताने आपल्या आयुष्यात गरिबी आणि आजारपण यांच्याशी झुंज देत गणिताचे जे नवे नवे सिद्धांत, सूत्रे मांडली, त्याला तोड नाही ! आता त्यांच्या मृत्यूनंतर ९० वर्षांचा काळ लोटल्यावर त्यांनी तयार केलेल्या काही सूत्रांचा

२०१३

ब
ह
उ
री
य

४२

उपयोग कृष्णविवरांच्या कार्यपद्धतीचे विवरण करण्यासाठी होऊ शकतो, असे पाश्चात्य संशोधकांनी म्हटले आहे.

गणित आणि खगोलशास्त्र यांचा जोडअभ्यास आपल्याकडे आर्यभट, वराहमिहीर, ब्रम्हगुप्त यांच्यापासून अधिक प्रकर्षाने पाहायला मिळतो. प्राचीन काळातील या महान गुरूंच्या मालिकेतीलच रामानुजन हे आधुनिक कडी होते. ज्या मुलाला वयाच्या तीन वर्षापर्यंत बोलताही येत नव्हते त्याने गणितामध्ये जे चमत्कार करून दाखवले आहेत. त्यामुळे त्यांच्या मृत्यूनंतरही इतकी वर्षे जग थक्क होत आहे. तामिळनाडूतील इरोड या गावातील एका गरीब कुटुंबात त्यांचा जन्म झाला. वयाच्या दहाव्या वर्षी त्यांची गणिताशी तोंडओळख झाली आणि गणिताचे त्यांना वेड जडले. इतके की त्यांचे अन्य विषयांकडे साफ दुर्लक्ष होत असे.

वयाच्या पंधराव्या वर्षी रामानुजन यांच्या वाचण्यात जार्ज शुब्रिज कार यांचे मूलभूत गणितावरील कार्य आले. गणिताच्या या प्रगल्भ वाचनाने रामानुजन यांना एक नवीन प्रेरणा मिळाली. जार्जने मांडलेले सिद्धांत पडताळून पाहिल्यावर रामानुजन यांनी काही नवीन प्रमेये मांडली. १९०३ मध्ये रामानुजन यांना मद्रास विद्यापीठाची शिष्यवृत्ती मिळाली. परंतु त्यांनी फक्त गणितावर लक्ष केंद्रित केल्यामुळे व अन्य विषयांकडे दुर्लक्ष केल्याने पदवी परीक्षेत त्यांना अपयश आले. त्यामुळे अकरावीच्या वर्गात असताना ते गणित सोडून अन्य विषयात चक्क नापास झाले आणि त्यांची शिष्यवृत्तीही थांबण्याची वेळ आली !

१९०७ मध्ये त्यांनी कशी तरी शालांत परीक्षा दिली व त्यामध्ये ते अनुत्तीर्ण झाले. याबरोबरच त्यांचे लौकिक शिक्षण संपले असले तरी गणिताच्या उच्चविद्याविभूषित विद्यार्थ्यांनाही शिकवण्याइतके गणिताचे प्रगल्भ ज्ञान त्यांच्याकडे होते. अशी आलौकिक प्रतिभा सहसा सर्वसामान्य लोकांच्या नजरेत येत नाही ही दुर्दैवाची गोष्ट असते. सर्वसामान्य

लोक अशा लोकांनाही आपल्यातीलच एक मानून त्यांच्याकडून व्यवहारातील चार नेहमीच्या गोष्टींची अपेक्षा बाळगत असतात. १९०९ साली त्यांचा विवाह झाला. विवाहानंतर रामानुजन यांनीही शिकवण्या करून, फुटकळ नोकऱ्या करून चरितार्थ चालवला. पण त्यांना कायमस्वरूपी नोकरीची अत्यंत गरज होती. रामचंद्रराव नावाचे गृहस्थ नेलगेरगावी कलेक्टर होते. आणि गणित विषयाची त्यांना खूप आवड असल्याने त्यांनी रामानुजन यांचे गणितावरील प्रभुत्व पाहिले व त्यांना भरपूर मदत केली.

केंब्रीज विद्यापीठातील प्रसिद्ध गणिततज्ज्ञ जी.एच. हार्डी यांच्याशी त्यांचा पत्रव्यवहार सुरू झाल्यावर हे झाकलेले रत्न जगासमोर आले. हार्डी यांनी त्यांना केंब्रीजला बोलावून घेतले. मात्र तिथे त्यांना क्षयाने गाठले. त्याही अवस्थेत त्यांनी गणिताचे अनेक महत्त्वाचे सिद्धांत मांडले. ब्रिटनमधील रॉयल सोसायटीचे सदस्य बनणारे ते आजपर्यंतचे सर्वात लहान वयाचे व्यक्ती आहेत. ट्रिनिटी कॉलेजची फेलोशीप मिळवणारेही ते पहिले भारतीय होत. त्यांचे अनेक शोधनिबंध प्रकाशित झाल्यावर केंब्रीज विद्यापीठाने त्यांना 'बी.ए.' ची पदवी दिली. भारतात परतल्यानंतर त्यांनी मद्रास युनिव्हर्सिटीत काही काळ अध्यापन केले. मात्र शरीराने त्यांना साथ दिली नाही. आणि २६ एप्रिल, १९२० या दिवशी ते वयाच्या अवघ्या ३२व्या वर्षी मृत्युमुखी पडले.

तत्पूर्वी त्यांनी गणिताची नवी ३९०० सूत्रे व सिद्धांत लिहून ठेवले होते. या सूत्रांचा अद्यापही जगभर अभ्यास होत आहे. अलीकडेच त्यांच्या काही सूत्रांचा समावेश क्रिस्टल विज्ञानात करण्यात आला आहे. त्यांच्या कार्याने प्रभावित होऊन गणिताच्या क्षेत्रात होत असलेल्या कार्याबाबत 'रामानुजन जर्नल'चीही स्थापना करण्यात आली आहे. आता इमोरी विद्यापीठाचे गणिततज्ज्ञ केन ओनो यांनी त्यांच्या काही सूत्रांचा अभ्यास करून ती सूत्रे कृष्णविवरांच्या कार्यपद्धतीचा उलगडा करण्यासाठी उपयुक्त असल्याचे दाखवून दिले आहे. एका

२०१३

ब
हा
ड
सी
य

४३

गणितवेड्या भारतीयाचे अल्पायुष्यातील कार्य मृत्यूच्या डोक्यावर पाय ठेवून अद्यापही सुरू आहे, हाच याचा अर्थ ! त्यांचे Eliptic Integral, Hyper Geometry, Reta Fuction, Dugless Identity, Round Numbers etc महत्त्वाचे संशोधन प्रसिद्ध आहे. इंग्लंडमध्ये त्यांनी संख्यांच्या

विभाजनावर संशोधन केले. त्यांचे अनेक शोधनिबंध इंग्लंड, युरोपमध्ये प्रसिद्ध झाले.

अशा या महान गणिततज्ज्ञाची कामगिरी वाखाणण्याजोगीच आहे. त्यांचा गौरव करावा तेवढा थोडाच आहे, असेच म्हणावे लागेल.



आयुष्याची डायरी

चांगल्या मित्रांचा संग्रह
माझ्या आयुष्याच्या डायरीत आहे
डायरीची पाने
मला मोजता येत नाहीत
मित्रांचं हसणं, रुसणं
सारं सारं डायरीच्या पानात आहे
प्रत्येकाचा आवाज माझ्या कानात आहे
कुणाचं काही बिनसलं तर
डायरीची पानं फडफडतात
वादळ होऊन धावतात
मनाच्या आभाळात कडकडाट करतात
वीज होऊन कोसळतात
माझ्या काळजावर
आयुष्याची डायरी पेट घेते
माझ्याच मित्रांच्या वाटेवर उजेड देते
हसतात मग सारे बसतात, क्षणभर विसवतात
हात हातात घेऊन चालू लागतात
कुणाच्यातरी आयुष्याच्या डायरीचं पान म्हणून,
पुन्हा पुन्हा फुलू लागतात

नीरज ज्ञानेश्वर कणसे
प्रथम वर्ष, वाणिज्य

बळीराजाचा तुरुंगवास

भरदिवाळीच्या सणाला
स्वामिमानी शेतकरी आला रस्त्यावर
कामाच्या घामानं मिजायचं असतं,
सरावानं माहिती त्याला
इथे पोलिसांच्या लाठीने पुरा झाला ओला
अशी वेळ येऊ नये
अन्यायाने बळीराजाला खारू नये
पाण्याने शेत भिजवायचं माहित त्याला
या राजाच्या अश्रूंनी
दिवाळीच्या पहिल्या अंधोळीलाच,
तुरुंगाचा उंबरा झाला ओला
मी शेतकरी,
पोलीस भावांनो
घामाच्या दामासाठी झगडण्यात काय गुन्हा ?
बुटासकट तुडविले तुम्ही पुन्हा पुन्हा
तेव्हा माझ्या गोठ्यातल्या गायीलाही फुटला पान्हा
माझं हंबरणं, तिच्या हंबरण्यात मिसळलं
सत्यमेव जयते शिखर क्षणात कोसळलं
बळीराजाच्या घामाच्या दामासाठी
भोगलाय मी तुरुंग
तिथेच माझ्यावर झालेल्या अन्यायाने
माझ्या रक्तात जागा झालाय सुरुंग....
आता पाऊला पाऊलाला पेरणार
फक्त सुरुंग आणि सुरुंगच आणि,
उद्वस्त करणारच बळीराजाचा तुरुंग'

संभाजी विश्वास पाटील
तृतीय वर्ष, कला

२०१३

ब
हा
रु
सी
य

४४

व्यक्तिचित्रण

विजयाताई पाटील - शिक्षणक्षेत्रातील नंदादीप

शरदचंद्र रामचंद्र चव्हाण /माजी विद्यार्थी

कै.विजयाताई या आम्हाला इंग्रजी विषय शिकवित असत. त्यांचा तो पहाडी आवाज व भव्य व्यक्तिमत्व अजूनही आमच्या स्मरणात आहे. त्यांच्या तासाला विद्यार्थ्यांना आपण महाविद्यालयाच्या वर्गात शिकत आहोत की शाळेत शिकत आहोत हे समजत नसे. प्रत्येक तासाला विद्यार्थ्यांना प्रश्न विचारूनच त्या अध्यापन करीत असत.

मी सातारला सन १९६८ साली लाल बहादूर शास्त्री महाविद्यालयात प्रवेश घेतला. कॉलेजची पहिलीच बॅच होती. शास्त्री कॉलेज व भवानी विद्यामंदिराचा परिसर हा उत्सवात जसा आनंद मिळतो तसा आनंद त्याकाळी कै.सौ.विजयाताई व श्री.हणमंतराव पाटील यांच्यामुळे बहरला होता. सकाळी ७ पासून रात्री ११ पर्यंत विवेकानंद संस्थेचे मुख्याध्यापक, अध्यापक या प्रांगणात शैक्षणिक सल्लामसलतीसाठी येत असत. कै.बापूजी साळुंखे हे तर सातारला आल्यानंतर या प्रांगणात येवून सर्वांना मार्गदर्शन करीत असत. कै.विजयाताई या आम्हाला इंग्रजी विषय शिकवित असत. त्यांचा तो पहाडी आवाज व भव्य व्यक्तिमत्व अजूनही आमच्या स्मरणात आहे. त्यांच्या तासाला विद्यार्थ्यांना आपण महाविद्यालयाच्या वर्गात शिकत आहोत की शाळेत शिकत आहोत हे समजत नसे. प्रत्येक तासाला विद्यार्थ्यांना प्रश्न विचारूनच त्या अध्यापन करीत असत. विद्यार्थी व अध्यापक यांच्यामधील आंतरक्रिया त्यांच्या तासाला पहावयास मिळावयाची. विद्यार्थ्यांवर अतोनात प्रेम, शिक्षणाबद्दल अतूट प्रेम, कॉलेज नवीन, त्यात शास्त्र विभागासाठी लागणाऱ्या सर्व सोयी कॉलेज सुरु केल्यापासून ऑगस्ट मध्येच उपलब्ध करून देण्यात त्यांचा सिंहाचा वाटा होता. मा.हणमंतराव पाटील यांच्याकडे त्या एकसारख्या कॉलेजमध्ये ज्या सुविधा नाहीत त्याबद्दल मागणी करून उपलब्ध करून द्यावयाच्या. त्यांच्यातील प्रखर सकारात्मक विचारामुळे त्यांचा आत्मविश्वास प्रत्येक कामात दिसावयाचा. मला तर त्यांनी या क्षेत्रात पाऊल टाकताच विद्यार्थ्यांना सर्वस्व मानून पाऊले टाकली असे म्हणावेसे वाटते. त्यांच्यात शिक्षणाविषयी असणारे असामान्य प्रेम हे वेळोवेळी दिसून यावयाचे. प्राध्यापिका, मुख्याध्यापक हे त्यांच्या घरात

२०१३

ब
हा
डु
सी
य

४५

सदैव दिसावयाचे. शिक्षणक्षेत्रातील त्यांचा प्रवेश या विधानात दडला होता.

"Never judge a seed by its size. There are many branches in it. Waiting to spread for and wide." जीवनात काही करता नाही आले तरी चालेल परंतु अशी निंदा व चेष्टा करून जगू नका असा संदेश देवून दोन तासानंतर त्या वर्गाबाहेर पडल्या.

त्यांचे अमेरिकेत निघून झाल्याची दुःखद वार्ता माझे बंधू रवींद्र यांनी सांगितली. मी ही वार्ता ऐकून हादरलो. इतक्या लवकर त्या गेल्या यावर विश्वास बसला नाही. चैतन्यदायी सळसळते व्यक्तिमत्व हरपले. कै.रा.ना.चव्हाण यांच्या प्रत्येक पुण्यतिथीला त्या आवर्जून उपस्थित राहात. मा.रवींद्र चव्हाण यांच्याबद्दल त्यांना आदर होता. सर्वांना आवडणाऱ्या आपल्या आवडत्या प्राध्यापिका कै.सौ.विजयाताई यांच्या नावातच 'विजय' होता. जीवनात त्यांनी

हणमंतरावांना खरी साथ देत तो साकार केला. हणमंतराव यांच्या अडचणींच्या काळात निर्भयपणे साथ देवून काळे ढग दूर करणाऱ्या विजयाताई यांना भावपूर्ण श्रद्धांजली. या दोघांनीही आपणाभवती काम करणाऱ्या प्रामाणिक कार्यकर्त्यांची फळी निर्माण केली.

मा.शरद साळुंखे यांचा सातारा येथे जो अपघात झाला, त्यावेळी त्या बापूजी साळुंखे यांच्या पाठीशी खंबीरपणे उभ्या राहिल्या व बापूजींना आधार दिला. विवेकानंद संस्थेच्या सातारा जिल्ह्यातील सर्व शाळांच्या मुख्याध्यापकांना त्या अत्यंत आदराने वागवत. त्यामुळेच मा.हणमंतराव पाटील यांच्याभवती कार्यकर्ते जमण्यास मदत होत असे. त्यांना पुन्हा भावपूर्ण श्रद्धांजली. व त्यांनी दिलेला पुढील संदेश कृतीत आणू.

"Man's invaluable and imparishable wealth is leaving, all other Riches are nothing before it."

□ □ □ □

पहिलं प्रेम

वैभव जाधव
तृतीय वर्ष, कला



सगळे म्हणतात कविता जमायला प्रेमात पडावे लागते मला कधी ते जमलेच नाही, कधी कुणावर प्रेम जडलेच नाही असेच झाले एके दिवशी, वारा जोराचा वाहू लागला समोर येताच ती वादळं मनात निर्माण करून गेला पाहताच क्षणी तिला हृदयाचे टोके वाडले का कुणास ठाऊक पावले आपोआप तिच्या मागे वळली त्याच क्षणी ठरवले आता आपण कुणाच्यात तरी हरवायचे एकदा का होईना जाऊन तिच्याशी बोलायचे पण मला कधी ते जमलेच नाही, कारण कधी कुणावर प्रेम जडलेच नाही निघून गेले दिवस, निघून गेली वेळ, माझ्या मनाचा मी करून घेतला होता खेळ सावरण्याचा खूप प्रयत्न केला पण कधी मला ते जमलेच नाही, कारण कधी कुणावर प्रेम जडलेच नाही आजही तिच्या आठवणीत मी रडत आहे तिच्या एका भेटीसाठी माझे मन झुरत आहे मनाला समजवायला सुरवात केली आहे माझे कधी कुणावर प्रेम जडलेच नाही

2023

ब
ह
ड
सी
य

४६

ललित

दुष्काळ भागातील दुरावस्था

कु.निलम सीताराम दळवी / तृतीय वर्ष, विज्ञान

शेते जळली, मळेही सुकले
पाऊस नाही, सर्वच संपले
जीवन अवघे भंगून गेले
भ्रमित कष्टी सारे झाले

सरकार त्यांच्यापरीनि जी मदत करतो ती अपुरी आहे. त्यासाठी आपण नागरिकांनी उदरनिर्वाह मोठ्या जल्लोषात साजरे केला गेला. मोठमोठ्या शहरात या गणपतीच्या साजावटीसाठी व रोषणाईसाठी खूप खर्च केला जातो. तो उवाढव्य खर्च मंडळींनी न करता ते जमलेले पैसे उशा छावण्यांना मदत देण्यासाठी वापरवेत.

दुष्काळाची भीषण छाया
गुरे छावण्याही दिग्मूढ झाल्या
ऊन रणरणे, ढगही बापुडे
न जाणो कुठे पळाले ?

पाण्यासाठी वन-वन सारे
फिरती, भ्रमती डोई घडे,
दैना अशी ही का ? पाप कोणते घडले ?
कदाचित पाणी नाही अडविले
त्याचीच ही कर्म फळे

झाली पाखरे तृष्णात सारी
झाडे झाली निर्जीव कृशती
माती झाली तप्त रूष्ट ती
जग सगळे हे उदास दुःखी

धो-धो पाणी बरसून जावे
नद्या न् ओढे भरून यावे
नभा तुला हे उमगून जावे
पाऊस गाणे ओटा यावे.

सातारा जिल्ह्यातील ज्या भागात पावसाचे पाणी प्रमाण अल्प किंवा अजिबात नाही अशा भागात पशुछावण्या उभारल्या जातात. आपल्या कॉलेज म्हणजेच लाल बहादूर शास्त्री कॉलेजच्या संख्याशास्त्र विभागाच्या शिक्षकांनी या दुष्काळी भागातील पशुछावण्यांना भेट देण्याची संधी आम्हाला

२०१३

ब
हा
दु
री
य

४७

उपलब्ध करून दिली. या भेट देण्यामागे हेतू असा होता की तेथील शेतकऱ्यांच्या अडचणी समजून घ्यायच्या.

त्यानुसार आम्ही दि.२८ व २९ डिसेंबर २०१२ या दिवशी या पशुछावण्यांना भेट दिली. तेथील शेतकऱ्यांना विविध प्रश्न विचारून त्यांच्या समस्या व त्यावर त्यांनी काढलेल्या तोड्यांची माहिती आम्ही एकत्र केली. छावणीत दाखल केलेल्या जनावरांची काळजी घेण्यासाठी जी माणसे तिथे राहिली होती. तिथे त्यांना निवाऱ्यासाठी साधी झोपडी सुद्धा नव्हती की पिण्याच्या पाण्याची सोय नव्हती.

जनावरांसाठी पाठविलेला चारा त्यांना पुरेसा नसल्यामुळे व आधी तो चारा खाल्लेला नसल्यामुळे प्राण्यांचे हाल होत आहेत. त्यांच्या तब्येतीवर कमी अधिक प्रमाणात परिणाम झालेला दिसून आला.

या माणसांची व जनावरांची काळजी घेण्यासाठी सरकार छावणी काढून जनावरांची सोय करत आहे.

जनावरे आजारी पडली तरी त्यांना पाहण्यासाठी डॉक्टरांची सोय केलेली आहे. काही ठिकाणी टँकर मार्फत पाण्याची सोय उपलब्ध करून दिली आहे.

पण मला असे वाटते की, सरकार त्यांच्यापरीने जी मदत करते ती अपुरी आहे. त्यासाठी आपण नागरिकांनी काही तरी उपाययोजना करायला हव्यात. नुकताच गणपती उत्सव मोठ्या जल्लोषात साजरा केला गेला. मोठमोठ्या शहरात या गणपतीच्या सजावटीसाठी व रोषणाईसाठी खूप खर्च केला जातो. तो अवाढव्य खर्च न करता ते जमलेले पैसे अशा छावण्यांना मदत देण्यासाठी वापरावेत. सामाजिक संस्था, पतसंस्था यांनी सुद्धा थोडाफार हातभार लावला तर यात खूप मोठी मदत होईल. सामान्य नागरिकांनी सुद्धा खारीचा वाटा उचलायला हवा. सरकारही आता 'कृत्रिम पाऊस' ही संकल्पना योजणार आहे. शक्य तेवढ्या लवकर पाऊस पाडून शेतकऱ्यांना दिलासा द्यावा त्यामुळे थोडा तरी त्यांचा त्रास कमी होईल.

□ □ □ □

अभिमान

कु.सायली मोहन पवार
द्वितीय वर्ष, वाणिज्य

लाल बहादूर शास्त्री महाविद्यालयाचा आहे आम्हाला अभिमान....

इथे घडतो आणि इथेच घडविला जातो विद्यार्थी

इथे आहे ज्ञान, विज्ञान आणि सुसंस्काराची साथ

म्हणून तर आहे आम्हाला महाविद्यालयाचा अभिमान

इथे भेटतो पुस्तकी ज्ञानाबरोबर वैयक्तिक ज्ञानाचा धडा

इथे प्राचार्य आमच्या संस्कृतीला जाऊ देत नाहीत तडा

आहेत सर्व शिक्षक आई वडील आमचे

जिथे आहेत विद्यार्थी भाऊ बहीण आमचे

म्हणून तर आहे या महाविद्यालयाचा अभिमान

जिथे आहे स्वामी विवेकानंदंबरोबर बापूजींचा आशीर्वाद

इथे आहे विद्यार्थी हुशार

राष्ट्रीय सेवा योजनेतून करतो आम्ही श्रमदान

म्हणून मिळते सुंदर समाजाचे राहणीमान !

सततचे धर्म निरपेक्षतेचे धडे गिरवतो छान

संस्कारातून त्याग सेवेचे मिळते आम्हा ज्ञान

त्यातून जन्म घेतो देशाभिमान

म्हणून म्हणतो माझा भारत महान !

२०१३

ब
ह
ा
ड
ु
स
ी
य

४८

॥ सांस्कृतिक विभाग ॥



महाविद्यालयाचे माजी विद्यार्थी अभिनेते सयाजी शिंदे मार्गदर्शन करताना



८ ऑगस्ट २०१२ 'शिक्षणमहर्षी डॉ.बापूजी साळुंखे' स्मृतिदिनानिमित्त व्याख्यान - प्रा.बाळासाहेब जगताप



५ सप्टेंबर २०१२ शिक्षकदिन व गुणवंत प्रा.सत्कार प्रमुख पाहुणे
मा.शंकर सागरदा (ज्येष्ठ साहित्यिक) विचार व्यक्त करताना



३ जानेवारी २०१३ 'सावित्रीबाई फुले' जयंती निमित्त
व्याख्यान देताना प्रा.डॉ.सौ.शैलजा माने



पारंपारिक दिन १६ जानेवारी २०१३



छत्रपती शिवाजी महाराज जयंती निमित्त व्याख्यान २०-२-२०१३
व्याख्याते प्रा.दीपक जाधव (इतिहास)

श्री स्वामी विवेकानंद शिक्षण संस्था, कोणदापूर संघालित
लाल बहादूर शास्त्री महाविद्यालय, सातारा

॥ महाविद्यालयास 'नॅक' पुनर्मूल्यांकन समितीची भेट ॥



नॅक पीअर टीमचे महाविद्यालयात स्वागत करताना
महाविद्यालयाच्या विद्यार्थिनी



यू. जी. सी. चेअरमन प्रा. चेदप्रकाश यांच्या हस्ते
नॅक प्रमाणपत्र स्वीकारताना प्राचार्य डॉ. राबिंद्र शेजवळ
सोबत डॉ. दिनेश (कुलगुरु, दिल्ली विद्यापीठ)



नॅक पीअर टीम समोर प्राणिशास्त्र विभाग प्रमुख
डॉ. आर. जी. पाटील सादरीकरण करताना



नॅक पुनर्मूल्यांकन समितीची वनस्पती शास्त्र विभागास भेट



विमखाना विभागाच्या प्रात्यक्षिकांची पहाणी करताना
नॅक पीअर टीम



मा. प्राचार्य शेजवळ यांच्याकडे अहवाल सुपूर्त करताना
नॅक पीअर टीमचे चेअरमन डॉ. वसु व सदस्य डॉ. पांडे व प्राचार्य डॉ. हगरगी

॥ राष्ट्रीय कार्यशाळा ॥



वनस्पती शास्त्र विभागाच्या राष्ट्रीय कार्यशाळेमध्ये वीज भाषण करताना प्राचार्य डॉ. चंद्रकान्त खिलारे



वनस्पती शास्त्र राष्ट्रीय कार्यशाळा अवस्ट्रॅलेंट प्रकाशन करताना शिवाजी विद्यापीठ विज्ञान विभाग अधिष्ठाता प्राचार्य डॉ. चंद्रकान्त खिलारे व प्रा. दत्ता गायकवाड-समन्वयक राष्ट्रीय सेवा योजना, शिवाजी विद्यापीठ कोल्हापूर



हिंदी द्वि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी समापन समारंभात अध्यक्षीय मनोगत व्यक्त करताना संस्थेचे सहसचिव प्राचार्य डॉ. अशोक करांडे



हिंदी द्वि-दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाळेत 'शोध संशोधिका' प्रकाशित करताना मा. ना. पतंगरावजी कदम, डॉ. जयप्रकाश कदम, मा. कुलगुरू डॉ. एन. जे. पवार, प्राचार्य डॉ. आर. व्ही. शेजवल व संयोजक प्रा. जयवंत जाधव



हिंदी द्वि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी अध्यक्षीय समारोप करताना मा. कुलगुरू डॉ. एन. जे. पवारसाहेब



हिंदी द्वि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठीत 'दलित नाटक' विषयावर आपले मनोगत व्यक्त करताना डॉ. टी. आर. पाटील (पुणे)

श्री स्वामी विवेकानंद शिक्षण संस्था, कोल्हापूर संचालित
लाल बहादूर शास्त्री महाविद्यालय, सातारा

॥ शिवाजी विद्यापीठ अग्रणी महाविद्यालय योजनेअंतर्गत आयोजित कार्यशाळा ॥



समाजशास्त्र विभागाकडून खास मुलींसाठी पारंपारिक खेळांचे प्राच्यशिक्षक सादरीकरण करताना 'जागृती महिला मंडळ' च्या महिला, उपस्थितीत विद्यार्थिनी व प्राध्यापक वर्ग



'१२५ श्री रामानुजन यांची जयंती व गणित विषयातील योगदान' एक दिवशीय कार्यशाळा डॉ. टी. वी. जगताप, डॉ. एस. एस. भुसनुग्रपट (कर्नाटक युनिव्हर्सिटी, धारवाड) डॉ. एस. एस. पयार



'सूक्ष्म तंत्रज्ञानाचा आधुनिक काळ' एक दिवशीय कार्यशाळा या प्राचार्य डॉ. आर. व्ही. शेजवळ, डॉ. सी. एम. आर. सपकाळ, डॉ. आर. जी. पाटील, प्रा. डॉ. एल. डी. कदम, प्रा. व्ही. एस. पाटील, प्रा. निनाद कदम



'ऑन लाईन प्रवेश परीक्षा देणे' या विषयावरील कार्यशाळेचे उद्घाटन करताना श्री. ए. व्ही. घाटे (संगणक विभाग) श्री. एम. एम. पोंड (कॉमर्स विभाग शिवाजी विद्यापीठ) बालुन प्राचार्य डॉ. आर. व्ही. शेजवळ प्रा. एम. वी. रामकर, प्रा. डॉ. सी. शेजवळ याने आदी



इतिहास विभागातर्फे स्थानिक इतिहास या विषयावर एकदिवसीय कार्यशाळा आयोजित केली होती. प्रमुख पाहुणे प्राचार्य दीपक देशपांडे, या प्राचार्य डॉ. आर. व्ही. शेजवळ, प्रा. कृ. पी. सी. चिकमठ व प्रा. डी. वी. खराडे



छत्रपती शाहू महाराज जयंती निमित्त प्रतिभापूजन कार्यक्रम

आत्मनिष्ठा

११. एक दिन रात

मनोरमा

आत्मनिष्ठा के लिये कर्मयोग (१)
आत्मनिष्ठा के लिये कर्मयोग

१२. एक दिन रात

मनोरमा

आत्मनिष्ठा के लिये कर्मयोग (२)
आत्मनिष्ठा के लिये कर्मयोग

१३. एक दिन रात

मनोरमा

आत्मनिष्ठा के लिये कर्मयोग (३)
आत्मनिष्ठा के लिये कर्मयोग

१४. एक दिन रात

मनोरमा

आत्मनिष्ठा के लिये कर्मयोग (४)
आत्मनिष्ठा के लिये कर्मयोग

“जिस रास्ते चलकर तुम पहुँचे हो,
इस धरती पर,
उसी रास्ते चलकर आया मैं भी,
फिर तुम्हारा कद इतना ऊँचा,
कि आस्मान को भी,
छू लेते हो, तुम आसानी से ।
और मेरा कद इतना छोटा
कि मैं
छू नहीं सकता जमीन भी ।

-श्री ओमप्रकाश वाल्मीकी



विभागीय संपादक
प्रा. जयवंत जाधव

अनुक्रमणिका

गद्य विभाग

- | | | | |
|--|-------------------|-----------------|----|
| १) सामाजिक क्रांति के कहानीकार मोहनदास नैमिशराय | कु. स्नेहल चन्ने | तृतीय वर्ष, कला | ५१ |
| २) सामाजिक क्रांति का उपन्यास 'छप्पर' | कु. जश्विनी शिंदे | तृतीय वर्ष, कला | ५४ |
| ३) आज के समाज जीवन पर करारी चोट - 'उजालों के कछार पर' | श्री. गणेश शिंदे | तृतीय वर्ष, कला | ५६ |
| ५) राष्ट्रभाषा प्रसार के यात्री | कु. तेजल जाधव | तृतीय वर्ष, कला | ६० |

पद्य विभाग

- | | | | |
|------------------|------------------|-----------------|----|
| १) आज का नेता | श्री गणेश शिंदे | तृतीय वर्ष, कला | ५९ |
| २) जीत | श्री सद्दाम शेख | तृतीय वर्ष, कला | ५९ |
| ३) कोशिश | श्री प्रवीण पवार | तृतीय वर्ष, कला | ६४ |
| ४) वो पल | श्री अरुण अवधडे | तृतीय वर्ष, कला | ६४ |
| ५) खुश रहो यारों | श्री सद्दाम शेख | तृतीय वर्ष, कला | ६४ |



सामाजिक क्रांति के कहानीकार मोहनदास नैमिशराय

कु.स्नेहल चन्ने / तृतीय वर्ष कला

डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर ने दलित समाज की उन्नति के कारण का पता लगाया था, यह है दलितों की शिक्षा। इसलिए उन्होंने सामाजिक क्रांति के द्वारा दलित बांधवों को शिक्षा का महत्व प्रतिपादित किया। डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर के अनुयायी दलित साहित्यकारों ने इस पक्ष का भी जोरदार समर्थन अपने साहित्य के द्वारा किया। मोहनदास नैमिशराय इसके उपवाद कैसे हो सकते थे? उन्होंने 'आठारें' कहानी संग्रह की 'अपना गाँव' कहानी में शिक्षा का महत्व प्रतिपादित किया है। 'तुलना' कहानी भी इसी आशय की अभिव्यक्ति करती है।

प्रस्तावना

भारतीय समाज व्यवस्था में ब्राह्मण, क्षत्रीय, वैश्य, शुद्र ये चार वर्ण हैं।स्वार्थी तत्वों ने सवर्ण और दलित इन दो वर्गों में भारतीय समाज का बँटवारा किया। सवर्ण समाज स्वामी बना, जबकि दलित समाज को दास बनाया गया। दलित समाज की अनेक पीढियाँ अँधेरे की खाई में डूबती और अपना अस्तित्व मिटाती गई। तथागत बुध्द, चार्वाक, संत कबीर, जोतिबा फुले, छत्रपति शाहू महाराज, डॉ.बाबासाहब आंबेडकर आदि समाज सुधारकों द्वारा सामाजिक क्रांति की गई। विशेष रूप से सवर्णों द्वारा दलितों के साथ जो अमानवीय व्यवहार किया जाता था, उसके विरोध में डॉ.बाबासाहब आंबेडकर ने दलित अस्मिता का आंदोलन चलाया। यह आंदोलन आगे चलकर सामाजिक क्रांति के रूप में परिवर्तित हो गया, जिससे दलित साहित्य का जन्म हुआ। इस साहित्य में सामाजिक क्रांति के आयाम दिखाई देते हैं।

सामाजिक क्रांति

'क्रांति' शब्द के अलग अलग अर्थ दिखाई देते हैं। 'नालंदा विशाल शब्दसागर' में लिखा है(सं) १.गति। चाल। २.खगोल में वह कल्पित वृत्त जिस पर सूर्य पृथ्वी के चारों ओर घूमता जान पडता है। ३.वह बहुत भारी फेरफार या परिवर्तन जिसके द्वारा किसी स्थिति का स्वरूप बिल्कुल बदलकर और का और हो जाए। उलटफेर। रिवोल्यूशन। जैसे 'राज्य क्रांति', 'हरित क्रांति', 'औद्योगिक क्रांति' आदि कई अर्थों में 'क्रांति' शब्द का प्रयोग किया जाता है। 'क्रांति' और 'परिवर्तन' के बीच का फर्क स्पष्ट करते हुए राकेशकुमार ने लिखा है, "परिवर्तन हमेशा ऊपर से होता है

२०२३

ब
ह
ा
र
ी
य

५१

तथा क्रांति नीचे से होती है। इसी क्रांति की आशा लेखक को समाज के दलित, उपेक्षित कुचले निम्न वर्ग से है, जो स्वाभाविक है कि दलित ही है।" इन दलितों के उत्थान के लिए डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर ने अपना जीवन व्यतीत किया। यह एक मात्र ऐसी रक्तविहीन क्रांति है, जिसने समाज की आधी आबादी वाले घटक को समाज, राष्ट्र की मुख्य धारा में शामिल किया। दलितों को सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, शैक्षिक अधिकार प्राप्त हो गए। इस सामाजिक क्रांति से दलित साहित्य का जन्म हुआ। डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर ने 'कालाराम मंदिर प्रवेश', 'महाड का चवदार तालाब आंदोलन', 'मनुस्मृति दहन' के द्वारा सामाजिक क्रांति की, जिससे दलितों में अस्मिता आ गई। उन्होंने दलितों को एक नई पहचान देने का कार्य किया।

कहानीकार मोहनदास नैमिशराय

हिंदी दलित साहित्यकारों में मोहनदास नैमिशराय का स्थान शीर्षस्थ है। आपका जीवन बहुआयामी रहा है। आपने हिंदी में उपन्यास, कहानी, नाटक, काव्य, आत्मकथा आदि विधाओं पर लेखन कार्य किया है। आपने प्रत्येक विधा में अपना अलग रंग जमाया है। मोहनदास नैमिशराय ने 'आवाजें' और 'हमारा जबाब' ये दो कहानी संग्रह लिखे हैं। इन कहानी संग्रहों में कुल 32 कहानियाँ हैं। मोहनदास नैमिशराय की कहानियों के बारे में कमलेश सचदेव ने लिखा है, "दलितों की पीड़ा को व्यक्त कर देना इन (मोहनदास नैमिशराय की) कहानियों का लक्ष्य नहीं है, बल्कि उनके भीतर सुलगता आक्रोश धीरे धीरे दहकते विरोध में बदलता दिखाने के प्रति भी मोहनदास नैमिशराय सतर्क रहे हैं।"

नगरोन्मुखता का समर्थन

ग्रामीण भागों में नगरों की तुलना में जाति-पाँति, छूआछूत के बंधन कड़े होते हैं। जाति-पाँति, छूआछूत जैसी अमानवीय प्रथाओं को जड़ से उखाड़ फेंकने के लिए इस सामाजिक क्रांति ने नगरोन्मुखता

का समर्थन किया। 'हमारा जबाब' कहानी संग्रह की 'कर्ज' कहानी का नायक अशोक दलित है। उसका परिवार अपने पैतृक ग्राम में रहता है, लेकिन अशोक नौकरी हेतु नगर में रहता है। वह छूआछूत, जाति प्रथा का विरोधी है।

रूढ़ि परंपरा का विरोध।

डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर के नेतृत्व में चलाए गए सामाजिक आंदोलन की सबसे बड़ी उपलब्धि है, दलित समाज में व्याप्त रूढ़ि, परंपरा का विरोध। डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर ने दलित समाज को सवर्णों की दासता से मुक्त कराने के लिए परंपरागत रूप से चली आई सड़ी गली मान्यताएँ और रूढ़ि परंपराओं का विरोध किया। वे इससे दलित समाज को मुक्त करना चाहते थे। इसका प्रतिबिंब मोहनदास नैमिशराय की कहानियों में दिखाई देता है।

उनके द्वारा लिखित 'हमारा जबाब' कहानी संग्रह की 'कर्ज' कहानी में दलित समाज में व्याप्त रूढ़ि, परंपराओं का विरोध किया है। इस पक्ष का चित्रण करते हुए मोहनदास नैमिशराय ने लिखा है, "सदियों से यही तो हो रहा है, अत्याचार और शोषण इससे पहले भी होता था और आज भी हो रहा है। समय बदला पर यह समाज नहीं बदला।" अशोक धर्म के नाम पर होने वाले शोषण का विरोध करते हुए कहता है, "तुम लोग भोले भालों को धर्म का सबक पढ़ा कर कर्ज लेने के लिए मजबूर करते हो।"

अस्पृश्यता का विरोध

वर्ण, जाति व्यवस्था में अछूत दलित कहीं जाने वाली जातियों के साथ अस्पृश्यता का व्यवहार किया गया। यह एक अमानवीय प्रथा रही है। डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर द्वारा चलाई गई सामाजिक क्रांति के अंतर्गत अस्पृश्यता का विरोध किया गया। डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर ने संविधान में अस्पृश्यता उन्मूलन की दृष्टि से प्रावधान रखा, जिससे अस्पृश्यता मिटाने के प्रयास किए गए। सामाजिक क्रांति का फलित दलित साहित्य है। दलित साहित्य

में दलितों द्वारा भोगी गई अस्पृश्यता की वेदना दिखाई देती है। 'हमारा जबाब' कहानी संग्रह की 'जगीरा' कहानी में और इसी कहानी संग्रह की 'गाँव' कहानी में अस्पृश्यता के विरोध में संघर्ष का चित्रण हुआ है। 'हमारा जबाब' कहानी संग्रह की 'हमारा जबाब', 'सुनो बरखुरदार' और 'सफर' कहानी में समतावादी विचारों की स्थापना की गई है, जो सामाजिक क्रांति की उपज है।

दलितों को अधिकारों की प्राप्ति

सामाजिक क्रांति के कारण ही दलितों को मानवीय अधिकार मिल गए। डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर द्वारा किए गए प्रयासों के कारण ही दलितों को सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और शैक्षिक अधिकारों की प्राप्ति हो गई। मोहनदास नैमिशराय के कहानी साहित्य में प्रस्तुत पक्ष का चित्रण दिखाई देता है। उनके द्वारा लिखित 'हमारा जबाब' कहानी संग्रह की इसी शीर्षक की कहानी का नायक हिम्मतसिंह मिठाई की दुकान लगाता है, लेकिन सवर्ण लोग उसका विरोध करते हैं। 'हमारा जबाब' कहानी संग्रह की 'जगीरा' कहानी का नायक जगीरा दलित है। वह दलितों का नेता बन जाता है। वह नगर निगम के चुनाव जीतकर राजनीति में भाग लेता है। मोहनदास नैमिशराय ने इन घटना, प्रसंगों के माध्यम से यह दिखलाया है कि हिम्मतसिंह, जगीरा जैसे दलित सामाजिक, राजनीतिक अधिकारों की प्राप्ति कर रहे हैं। इसके लिए उन्हें कष्ट उठाने पड़ रहे हैं।

शिक्षा का महत्त्व

डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर ने दलित समाज की अवनति के कारण का पता लगाया था, वह है दलितों

की अशिक्षा। इसलिए उन्होंने सामाजिक क्रांति के द्वारा दलित बांधवों को शिक्षा का महत्त्व प्रतिपादित किया। डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर के अनुयायी दलित साहित्यकारों ने इस पक्ष का भी जोरदार समर्थन अपने साहित्य के द्वारा किया। मोहनदास नैमिशराय इसके अपवाद कैसे हो सकते थे? उन्होंने 'आवाजें' कहानी संग्रह की 'अपना गाँव' कहानी में शिक्षा का महत्त्व प्रतिपादित किया है। 'तुलसा' कहानी भी इसी आशय की अभिव्यक्ति करती है।

दलितों द्वारा परंपरागत व्यवसाय त्यागना

सवर्ण समाज व्यवस्था ने दलितों को हीन मानकर उन्हें परंपरागत व्यवसाय करने के लिए मजबूर कर दिया, जिससे उनका जीवन दुविधा में फँस गया। डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर ने सामाजिक क्रांति के आंदोलन में दलितों में अस्मिता जगाने हेतु उन्हें परंपरागत व्यवसाय त्यागने के लिए कहा। दलितों ने डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर की बात का अनुकरण किया। इस पक्ष का चित्रण मोहनदास नैमिशराय द्वारा लिखित 'आवाजें' कहानी संग्रह की इसी शीर्षक की कहानी में हुआ है। इस कहानी में गाँव के मेहतर समाज के लोग डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर द्वारा परंपरागत व्यवसाय त्यागने की बात को स्वीकार करते हैं और गाँव का मलमूत्र उठाने से इन्कार करते हैं। सवर्ण लोग मेहतरों की बस्ती जला देते हैं, लेकिन मेहतर लोग अपनी बात पर अडिग रहते हैं।

इसप्रकार मोहनदास नैमिशराय की कहानियों में शराबपान का विरोध, धार्मिक रूढ़ि परंपरा का मुँहतोड़ जबाब दिया गया है, जिसमें सामाजिक क्रांति का प्रतिबिंब दिखाई देता है।

2023

ब
ह
उ
सी
य

५३



सामाजिक क्रांति का उपन्यास 'छप्पर'

कु.अश्विनी शिंदे / तृतीय वर्ष कला

□ हमारी समाज व्यवस्था कमजोर है, इसमें परिवर्तन होना चाहिए समाज व्यवस्था में एकता, सद्भावना एवं समता लेनी चाहिए। इसे अधिक स्पष्ट करते हुए जयप्रकाश कर्दम जी कहते हैं, "हम व्यवस्था के विरोधी हैं, व्यक्ति के नहीं। हमारी लड़ाई व्यवस्था के खिलाफ है, किसी व्यक्ति से कोई द्वेष नहीं है हमें। हम न्याय और समता के पक्षधर हैं और समानता प्राप्त करने के लिए हमें व्यवस्था को बदलना है। क्योंकि हमारी समाज व्यवस्था अन्धाय और अज्ञानता को जन्म देने वाली है।"

प्रस्तावना

साहित्यकार के विचार, अनुभव और संवेदनाएँ उसके जीवन का प्रतिबिंब हुआ करती हैं। कोई भी साहित्यकार अपने जीवन की स्थितियों, परिस्थितियों एवं घटनाओं की उपज होता है। जयप्रकाश कर्दम जी ऐसे ही बहुमुखी प्रतिभासंपन्न, निर्भीक एवं साहसी साहित्यकार हैं। उनका साहित्य सामाजिक परिवर्तन की माँग करता है। सामाजिक व्यवस्था की वास्तविकता को प्रस्तुत करता उनका साहित्य सामाजिक क्रांति के लिए प्रेरित करता है। जयप्रकाश कर्दम जी दलित लेखक हैं। उन्होंने दलित जीवन की यातनाओं को सूक्ष्मता से अनुभव किया है, भोगा है। इसीलिए उनके साहित्य में सामाजिक विद्रोह विद्यमान है। लेखक जाति-पाँति का विरोध करते हैं। सदियों से चली आ रही सामाजिक व्यवस्था को तोड़कर नए मानवीय मूल्यों को स्थापित करना चाहते हैं। दलित समाज को उत्पीड़न से बाहर निकालने का उनका प्रयास वर्तमान परिप्रेक्ष्य में सराहनीय लगता है।

'छप्पर' उपन्यास में चित्रित सामाजिक क्रांति

"समाज व्यवस्था में परिवर्तन लाने के लिए वैचारिक मूल्यों में संघर्ष होना अनिवार्य है। जब पुराने मूल्य और नए मूल्यों के बीच संघर्ष होगा, तब नए मूल्य स्थापित होंगे और समाज व्यवस्था में परिवर्तन आएगा। जयप्रकाश कर्दम जी का 'छप्पर' ऐसा ही परिवर्तनकारी उपन्यास है।" डॉ. केशवचंद्र शर्मा के इन विचारों से स्पष्ट होता है कि वैचारिक संघर्ष ही सामाजिक परिवर्तन के लिए अनिवार्य है। सन १९९४ में प्रकाशित यह उपन्यास दलितों की सामाजिक वास्तविकता को चित्रित करता है।

प्रस्तुत उपन्यास का नायक चंदन दलित जाति का है। एक मजदूर परिवार में जन्मा यह युवक शिक्षा के लिए जद्दोजहद करता है। चंदन के पिता सुक्खा और रमिया उसे पढ़ाना चाहते हैं। सुक्खा अपने बेटे को पढ़ाने के लिए शहर भेजता है। परिणामतः उसे ठाकुरों और साहूकारों द्वारा उत्पीड़ित किया जाता है। घर से बेघर होकर उसे अपना गाँव छोड़ना पड़ता है। फिर भी सुक्खा हिम्मत नहीं हारता और पास के कस्बे में मेहनत मजदूरी करके अपने बेटे की शिक्षा के लिए पैसे भेजता रहता है।

सुख्खा द्वारा उठाया गया यह कदम महत्वपूर्ण लगता है, क्योंकि शिक्षा ही वह माध्यम है जिसके द्वारा दलित समाज अत्याचार से मुक्त होगा। गाँव के ठाकुरों और साहुकारों को यह अपमान लगता है कि एक चमार का बेटा शिक्षा प्राप्त करने के लिए शहर गया है। सुख्खा को कहा जाता है कि चंदन को शहर से वापस बुलाया जाए, परंतु सुख्खा इन्कार कर देता है।

चंदन शहर में अपनी पढाई पूरी करता है। उच्च शिक्षा भी प्राप्त करता है। अनेक कठिनाइयों के बावजूद स्वयं को आत्मनिर्भर बनाता है। धीरे-धीरे चंदन छोटे-छोटे कस्बों से लेकर शहरों तक अपनी शिक्षा का प्रसार करते हुए दलितों में एक नई चेतना का निर्माण करता है। दलित एकजुट होकर सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक शोषण के विरोध में विद्रोह करते हैं। 'छप्पर' उपन्यास में चंदन सामाजिक क्रांति का प्रतीक बनता है। वह दलित समाज का उद्धार एवं उत्थान करना चाहता है, जिसके लिए वैचारिक संघर्ष, वैचारिक क्रांति महत्वपूर्ण होती है। चंदन इसके लिए स्वयं जुझता है। डॉ. चंद्रकांत मेहता के विचार यहाँ महत्वपूर्ण लगते हैं, "क्रांति अथवा परिवर्तन की सफलता क्रांति की बातें करने वाले लोगों के हाथ में नहीं होती, वरन् उसके मूल्यों को जीवन में उतारकर उसके लिए जुझते हुए लोगों के दिलोदिमाग में होती हैं।" चंदन का व्यक्तित्व ऐसा ही प्रतीत होता है। वह सिर्फ क्रांति की बातें नहीं करता, बल्कि अपने मौलिक अधिकारों को प्राप्त करने के लिए वैचारिक जागरूकता चाहता है। वह कहता है, "मैं अपनी शिक्षा का उपयोग अपने दीन हीन समाज के उत्थान के लिए करूँगा, जो कीड़े-मकौड़ों की तरह जीते हैं। शेष समाज जिनके साथ पशुवत व्यवहार करता है।" अतः यहाँ उल्लेखनीय बात यह है कि उच्चवर्णीय लोगों के मन में दलित समाज के प्रति जो घृणा और तिरस्कार है, उसे वह मिटाना चाहता है। दलितों को समाज में समानता एवं समता का स्थान प्राप्त कराना चाहता है।

चंदन का व्यक्तित्व प्रगतिशील विचारधारा का है। वह मनुष्य को सबसे बड़ी सत्ता मानता है।

ईश्वर और परमात्मा में विश्वास नहीं करता। चंदन कहता है, "दुनिया में आत्मा, परमात्मा, ईश्वर, ब्रह्म, भगवान या इस तरह की किसी सत्ता का कोई अस्तित्व नहीं है। मनुष्य सबसे बड़ी सत्ता है, दुनिया में मनुष्य से बड़ी कोई चीज नहीं है।" चंदन का यही विश्वास उसे उसके मकसद में सफलता देता है। दलित समाज के प्रति उच्चवर्णीय लोगों की नजर में मानवता की लहर चंदन देखना चाहता है। अतः लेखक यहाँ कहना चाहते हैं कि मानव धर्म ही सबसे बड़ा धर्म है।

उच्चवर्ग के लोग निम्नवर्ग की स्त्रियों का दैहिक शोषण करते हैं। इसका भयंकर रूप 'छप्पर' उपन्यास में वर्णित हुआ है। कमला पर हुए बलात्कार का बदला उसके पिता हरिया भट्टा मालिक की हत्या करके चुकाता है। यहाँ हरिया की प्रतिशोध की भावना चित्रित हुई है। हरिया का यह विद्रोह भी सामाजिक क्रांति की प्रेरणा देता है। सदियों से पीड़ित और प्रताड़ित दलित वर्ग के प्रति लेखक के मन में कितनी आस्था है, इसके दर्शन हमें यहाँ होते हैं। जाति-पाँति को तोड़कर राष्ट्रीय एकता एवं वैश्विक शांति की चाह यहाँ स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। आज वर्तमान परिवेश की यह महत्वपूर्ण आवश्यकता है।

लेखक कहते हैं, "हमारी समाज व्यवस्था कमजोर है, इसमें परिवर्तन होना चाहिए। समाज व्यवस्था में एकता, राष्ट्रीयता एवं समता होनी चाहिए।" इसे अधिक स्पष्ट करते हुए जयप्रकाश कर्दम जी कहते हैं, "हम व्यवस्था के विरोधी हैं, व्यक्ति के नहीं। हमारी लड़ाई व्यवस्था के खिलाफ है, किसी व्यक्ति से कोई द्वेष नहीं है हमें। हम न्याय और समता के पक्षधर हैं और समानता प्राप्त करने के लिए हमें व्यवस्था को बदलना है। क्योंकि हमारी समाज व्यवस्था अन्याय और असमानता को जन्म देने वाली है।" इस प्रकार हमारी समाज व्यवस्था में परिवर्तन आएगा तो शोषण का हर कारण नष्ट हो जाएगा। जाति व्यवस्था, वर्ग भेद, वर्ण भेद को तोड़कर समाज में बंधुता अवश्य निर्माण होगी।

2023

ब
ह
उ
सी
य

५५



आज के समाज जीवन पर करारी चोट - 'उजालों के कछार पर'

श्री.गणेश शिंदे / तृतीय वर्ष कला

□
'उजालों के कछार पर' कवि शेखर की बहुआयामी रचना है। समाज व्यवस्था की झँकी दिखाने वाली, समाज मन को तलाशने वाली, राजनीति को उजागर करने वाली, साहित्यिक गतिविधियों को स्पष्ट करने वाली, डॉ. आंबेडकर, कबीर, गौतम के विचारों की बल देने वाली, गाँव की तमझाने वाली यह रचना है।

कवि शेखर द्वारा लिखित 'उजालों के कछार पर' कविता संग्रह २४ सितंबर २००८ को ज्योतिबा प्रकाशन, नागपुर से प्रकाशित हुआ। यह प्रकाशन फुले, शाहू, आंबेडकर की विचारधारा से संबंधित साहित्य को प्रकाश में लाने का महत्त्वपूर्ण कार्य कर रहा है। कवि शेखर के अब तक 'मायावती के गाँव में' और 'मेरे कुनबे के लोग' कविता संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। उनकी यह तीसरी रचना है लगता है। 'मायावती के गाँव में' दलित समाज जीवन की समस्याओं पर दस्तक देने वाला कवि अब पूरी समाज व्यवस्था, देश की राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक स्थिति पर चिंतन करके अपनी अभिव्यक्ति सशक्तता और यथार्थता के साथ प्रस्तुत कर रहा है। कविता मन का उच्छ्वास, विचारों का प्रतीक, भावांदोलन की झँकी, चेतना की विंगारी, अस्मिता की आवाज एवं संघर्ष की प्रेरणा होती है। कवि शेखर की प्रस्तुत रचना इसका प्रमाण लगती है।

आधुनिक कविता मन का रंजन करने के साथ साथ सामाजिक समस्याओं पर प्रकाश डालने का महत् कार्य भी करती है। समाज जीवन की पतों को खोलकर व्यवस्था को अभिव्यक्त करती है। आज का समाज जीवन कई समस्याओं से घिरा है। ऐसी हालत में साहित्यकारों का यह दायित्व बनता है कि वे अपनी ताकद से, कलम से इन्हीं समस्याओं को चित्रित करें। इस दृष्टि से प्रस्तुत रचना में नारी की स्थिति, दलितों की दशा, राजनीतिक व्यथा, लोकतंत्र एवं जनाधार का मतलबी अर्थ, विकास बनाम भ्रष्टाचार, आजादी का झूठा नारा, गाँवों की दयनीय हालत, किसानों की आत्महत्याएँ, धार्मिक आडंबर, साहित्य की स्थिति, डॉ. आंबेडकर, बुध्द, सिध्दार्थ, कबीर का संदेश, गोत्र, दलाल, बिल्डर, तिब्बती, अफीम, चुनाव

आदि पर विचार किया गया है। इसी कारण यह कृति अपने आप में महत्त्वपूर्ण लगती है।

इक्कीसवीं सदी विकास की सदी रही है। इसमें ग्रामविकास, वैश्वीकरण, उदारीकरण, आजादी की दृढ़ता, सत्ता का अधिकार, बुद्धिजीवियों का योगदान, राजनीतिक नेताओं की जिम्मेदारी, मानवी मन की स्थिति, फैशन की बढ़ती गति, विदेशी चित्रों का आकर्षण आदि पर भी चिंतन हो रहा है। लगता है आज का साहित्यकार कवि सिर्फ भावुक नहीं, बल्कि चिंतक भी रहा है। प्रस्तुत संग्रह की कविताएँ इसका प्रमाण हैं। इसी कारण यह रचना पठनीय एवं अनोखी लगती है।

प्रस्तुत कविता संग्रह के मुखपृष्ठ पर काला रंग और उजाले का प्रतीक गोल चाँद दिखाया है। लगता है आज अंधेरे में भटकने वाला यह देश प्रकाश की ओर जा रहा है। इसमें विषय, आलाप, भाव की दृष्टि से साहित्यिक ०५, राजनीतिक ०८, सामाजिक २९, चिंतनपर ०३, धार्मिक ०३, वैचारिक १८, आत्मकथापर ०३, व्यंग्य एवं समस्या पर ०४ इस प्रकार कुल ६५ कविताएँ हैं। अर्थात् यह विभाजन अंतिम नहीं। पाठक इसे सूक्ष्म दृष्टि से देखे तो अन्य विषय भी ज्ञात होंगे। कहना यह है कि यहाँ कवि शेखर जी ने अपनी सामाजिक प्रतिबद्धता को निभाया है। इसमें पहली कविता 'हमारी आंशिक आजादी' और अंतिम 'बयान' यह क्रम भी सोचने के लिए विवश करता है। अर्थात् 'आंशिक आजादी का बयान' ऐसा कहना भी अनुचित नहीं होगा।

प्रस्तुत रचना का शीर्षक है 'उजालों के कछार पर'। 'कछार' का अर्थ है नदी के किनारों की तर और नीची भूमि तथा उजाला याने प्रकाश अपने कुल, जाति में उत्तम व्यक्ति; प्रकाशमान स्थिति। लगता है ऐसी भूमि या उत्तम व्यक्ति के कारण देश प्रकाशित होता है। बाबासाहब, बुध्द, फुले, कबीर ऐसे ही महान व्यक्ति हैं, जिनके कारण भारत भूमि प्रकाशित हो चुकी है। परंतु आज के नेता धूर्त, मतलबी होने

से यह भूमि अंधेरे की ओर जा रही है। कवि ने रचना के अंतिम पृष्ठ पर लिखा है, "उजालों के कछार पर" कविता संग्रह की कविताएँ आंबेडकरवादी दृष्टि की चेतना से युक्त होकर अस्तित्व के आशय को गंभीरता से चित्रित करती हैं। तथा उजालों के धूर्ततापूर्ण मुखौटे यथार्थ को भी बेधडक उकेरती हैं।" आज समाज में विकास का सपना दिखाकर, नकली मुखौटा पहनकर, शोहरत पाने वालों की खाल उतारते हुए कवि कहता है,

"अब भी अंधेरा है उजालों के कछार पर
हमें तो संदेह है सूरज के भी प्यार पर।।"

इन्हीं शब्दों में कवि ने अपनी व्यथा प्रकट की है।

मानवी जीवन की नींव नारी है। उसके कारण दुनिया बनी है, वह ताकद है, दृष्टा भी है; परंतु कवि कहता है कि ऐसी नारी आज भी रो रही है। रूढ़ि-परंपरा से शोषित रूपकुँवर सती जाती है, उसे अग्नि परीक्षा देनी पडती है। कवि कहता है,

"नारी दर्द को टेंगा दिखाती है,
भविष्य को निहारती है;
फिर भी क्यों आन और शान में,
ली जाती है औरत की जान।।"

धर्म के कारण औरत का शोषण होता है। एड्स, असुरक्षित यौन संबंध, नौटंकी, देवदासी के लिए सिर्फ नारी को ही जिम्मेदार माना जाता है। धर्म एक छलावा, पुरुष प्रधान संस्कृति का प्रतीक है। कवि के शब्दों में, "हमें देवदासी का लेबल किसने लगाया है? हमें सभी पुरुषवादी धर्म ने मारा है।" दूसरी ओर घरती को माँ कहकर नारी की महिमा गाते हुए कवि कहता है, 'माँ की सूरत है ये घरती।' लगता है, यहाँ कवि ने नारी के दोनों रूपों पर प्रकाश डाला है; पर शोषित रूप हावी है।

भारत गाँवों का देश है। यहाँ की ८०% आबादी देहातों में रहती है। जब तक गाँवों का विकास नहीं होता, तब तक भारत का सही विकास असंभव है। इसी कारण गांधी जी ने 'देहात की ओर' यह नारा

२०२३

ब
ह
उ
सी
य

५७

दिया था। कवि शेखर ने बदलते गाँवों का, राजनीतिक घोखेबाजी के शिकार कुछ गाँवों का चित्रण करते हुए लिखा है,

“राजपथ से समूचा भारत संचालित होता है।
क्यूं मेरा देहात रोता है। तथा अब कबीर के गाँव में
तुम्हारा हाथ करघा कपडा भी हमने देखा नहीं ओन्ली
विमल की दुकान है। गाँव में सिमेंट के जंगल बढ़ रहे
हैं। विस्थापितों से महानगर भर रहे हैं। ऐसी हालत
में देहात कहो कहाँ मिटाए अपनी थकान।” इन्हीं
शब्दों में कवि ने भावधारा प्रकट की है।

वैश्विकरण, उदारीकरण के कारण लोकतंत्र
खोकला हो रहा है। इसे स्पष्ट करते हुए कवि कहता
है, “वैश्विकरण में चलता रहेगा आर्थिक और
सामाजिक लोकतंत्र के बीज का नाश। अवसर की
समानता लोकतंत्र में गाली है। अब बाँझ हुई हरित
क्रांति। हाँ, आ चुकी है सेज की शांति।” कवि
मानता है, सिंगुर या नंदीग्राम की घटना, उत्तरप्रदेश
में हुई चुनावी प्रक्रिया, किसानों की आत्महत्याएँ,
गुंडाराज का खातमा आदि के मूल में राजनीति है।
यही आम आदमी की जिंदगी बरबाद कर रही है।
‘चलो कुछ अच्छा सोचा जाए और भाईचारे की फसल
उगाए। चलो अब अंधियारे में दीप जलाए ‘यही कवि
का नया आशावाद है।

भारतीय संस्कृति कृषिप्रधान संस्कृति है। यहाँ
का औद्योगिक विकास कृषि पर निर्भर है। इसलिए
लाल बहादुर शास्त्री ने ‘जय जवान जय किसान’ का
नारा दिया था। विकास रथ के इन दो पहियों में से
एक पहिया किसान है। आज भी वह उपेक्षित,
अर्थाभाव, अत्याचार का शिकार है। इस प्रकार
धर्मभीरू, अज्ञानी, मजदूर, श्रमजीवी किसान का चारों
ओर से शोषण-दोहन होने से वह आत्महत्या कर
रहा है। ‘मेहनत वही जिंदगी मौत ही उपहार बनी’
यही उसकी जीवन कथा है। इन्हीं शब्दों में किसान
की दर्दभरी दास्ताँ कवि ने स्पष्ट की है।

आज की आजादी आंशिक आजादी है। डॉ.
आंबेडकर ने मूलभूत प्रश्नों पर आंदोलन चलाया।

सामाजिक, आर्थिक समता की संविधान सभा में बात
उठाई; परंतु आज तक मजहब, संप्रदाय में अटकी
राजनीति ने किसे आजादी दी? यही सवाल कवि
करता है। बिल्डर, दलाल, पंडित, जमींदार, साहुकारों
से आजादी की विंगारी कहाँ गुम हुई? यही सवाल
उठता है। आजादी की दृढ़ता पर विश्वास रखते हुए
कवि कहता है, ‘चलो आओ, मजदूरों को देश का बादशहा
बनाते हैं’। उन्हें उम्मीद है अब सच्चा लोकतंत्र
आएगा, किसान के मनहूस से हाथ में सत्ता का
अधिकार आएगा; परंतु अभी यह सपना है। इसलिए
गुलामी का जमघट दूर करके आजादी का पनघट
बनाने का संकल्प कवि करता है। गौतम, सिध्दार्थ
से उनकी यही प्रार्थना है।

प्रस्तुत रचना में कवि ने बताया है कि मूलभूत
प्रश्नों के लिए डॉ. आंबेडकर ने संघर्ष किया, धार्मिक
पाखंड का विरोध कबीर ने किया, अहिंसा-शांति का
पाठ बुध्द ने सिखाया, करुणा, दया, संयम की शिक्षा
सिध्दार्थ ने दी, नारी शिक्षा का मंत्र फुले जी ने दिया।
कवि ने स्पष्ट किया है कि सामाजिक समता की
स्थापना एवं बहुजनों की रक्षा होना जरूरी है। ‘बयान’
कविता में कवि कहता है ‘ना गाजी ना हम काझी ना
हमारा मक्का ना हमारा मदिना’। उजालों के विचार
के समर्थक हैं कवि शेखर।

साहित्य समाज का दर्पण होता है। साहित्यकार
समाज का अंग होता है। परंतु आज पद, सम्मान,
धनप्राप्ति के कारण साहित्य में परिवर्तन हो रहा है।
बुद्धिजीवी आलोचना करते हैं, प्रकाशक सॉयल्टी लेता
हैं, अकादमी का पुरस्कार किसे मिलता है? आदि
कथन देखकर लगता है कि साहित्य का लक्ष्य धुंधला
हो रहा है। कवि मानता है कि चापलूसी, मक्कारी,
चतुराई से बनी कविता सच्ची कविता नहीं होती। वह
कागज की फुलवारी बनती है। सच्ची कविता ज्ञान
की आँख, हिम्मत का प्रतीक, मन की धारा, सुकोमल,
सुमधुर उमंग की होती है। दलितों के प्रश्नों पर
कॉलम लिखे जाते हैं, परंतु वे कितने संवेदनशील

होते हैं ? सिर्फ बाजार है। साहित्य में होने वाली मिलावट पर वह कहता है, 'वे अच्छे साहित्य के नाम पर परोसते हैं भूसी रोटियाँ। पुरस्कार वितरण में भी बिठाते हैं गोटियाँ।' लगता है, साहित्य की स्थिति पर यही करारा व्यंग्य है, जो वास्तविकता का पर्दाफाश करता है।

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि 'उजालों के कछार पर' कवि शेखर की बहुआयामी रचना है। समाज व्यवस्था की झाँकी दिखाने वाली, समाज मन को तलाशने वाली, राजनीति को उजागर करने वाली, साहित्यिक गतिविधियों को स्पष्ट करने वाली, डॉ. आंबेडकर, कबीर, गौतम के विचारों को बल देने वाली, गाँव को समझाने वाली यह रचना है। 'दृढ

संकल्प', 'कविता का हाल', 'कबीर के गाँव में', 'दलाल', 'बिल्डर', 'बुध का जन्म', 'रोटी की तलाश', 'बयान', 'औरत', 'राजपथ का मृगजल' आदि शीर्षक पढ़ने से ही रचनाकार की सोच स्पष्ट होती है। मैनेजमेंट, सॉयल्टी, आफिशियल, क्लास, क्रिमिलियर आदि कई अंग्रेजी शब्द आधुनिकता के प्रमाण हैं तो बजाज, रिलायंस, पुजारी, नेता, अभिनेता, आदिवासी, बिल्डर, किसान, देवदासी, दलित आदि पेशेगत प्रतीकों का प्रयोग करके अपनी बात मजबूती से प्रस्तुत की है। लगता है, आज कवि नए उजालों में बुध, कबीर का सपना साकार करेंगे; सुजलां सुफलां भारत बनाएंगे। संक्षेप में यह एक ऐसी रचना है, जो सोचने के लिए विवश करती है, समाज जीवन को स्पष्ट करती है।

आज का नेता

(धुन 'एक लडकी को देखा तो ऐसा लगा)

हो S S S एक नेता को देखा तो ऐसा लगा,

जैसे दंगों की आग

जैसे बदनमा दाग

जैसे दाऊद का जाल

जैसे मेमन की चाल

जैसे टैक्स ही टैक्स

जैसे कल्याण का स्नैक्स

जैसे विष से भरी हुई दवा हो SSS

हो S S S एक नेता को देखा तो ऐसा लगा,

जैसे खादी की धान

जैसे कुर्सी की जान

जैसे चमचों का दौर

जैसे जनता की चीख

जैसे संसद का शोर

जैसे डॉलर की भीख

जैसे आहिस्ता आहिस्ता घुटता गला हो S S S

हो S S S एक नेता को देखा तो ऐसा लगा--

श्री गणेश शिंदे

तृतीय वर्ष, कला



जीत

कभी किसी राह पर,

मिली मुझे वो अगर।

खिल जायेगी ये वादियाँ

गुंज उठेगी मन में शहनाइयाँ।

हर डगर और हर नगर

होगी बस उसकी परछाइयाँ।

कभी किसी राह पर,

मिली मुझे वो अगर।

खुशियों की होगी बौछार

गीतों में होगी नई झनकार।

ना रहेगी कोई तकरार

हर तरफ नई उमंग

और नई बहार।

कभी किसी राह पर

जरूर मिलेंगे हम

अब ना होगी कोई हार

क्योंकि मिला है मुझे

'जीत' का उपहार ॥

श्री सद्दाम शेख

तृतीय वर्ष, कला

2023

ब
हा
उ
सी
य

५९



राष्ट्रभाषा प्रसार के यात्री

कु.तेजल जाधव / तृतीय वर्ष, कला

□ व्यक्ति, समूह, समाज, संस्था के संगठन से राष्ट्र बनता है। 'भाषा' उन्हें जोड़ने का साधन है। उन्हीं के कारण भाषा का विकास होता है। हिंदी का फूलना फलना इसी बात का प्रमाण है। सेवा, समर्पण का भाव हिंदी प्रचार-प्रसार में रहा है।

प्रस्तावना

भाषा विचारों एवं भावों की अभिव्यक्ति का साधन, मानव समाज की अपनी अलग पहचान, मानव को एकता के सूत्र में बाँधने की व्यवस्था है। भारत बहुभाषी देश, विविधता से बनी स्वर्णभूमि, अनेक धर्म, संप्रदाय की यह धरती है। मगर 'विविधता में एकता का महामंत्र' इसकी विशेषतम प्रवृत्ति है। मानव मन को जोड़ने वाली भाषा विचार, भावना, संस्कार, संस्कृति की अभिव्यक्ति है। हिंदी राष्ट्रभाषा, संपर्क भाषा, संविधान स्वीकृत भाषा है।

आजादी के आंदोलन में राष्ट्रीयता, स्वदेश, स्वराज्य का प्रचार करने वाली, आम आदमी को जोड़ने वाली हिंदी रही है। हिंदी आत्मसम्मान, राष्ट्रीय एकता, अखंडता की प्रतीक है। संतों, भक्तों, समाज सुधारकों, क्रांतिकारकों से लेकर आम आदमी तक की यह भाषा जनभाषा, जनवादी हिंदी है। इसीलिए नेहरू कहते हैं, "हिंदी जानदार भाषा है।" लाल बहादुर शास्त्री मानते हैं, "हिंदी पढ़ना-लिखना हमारा राष्ट्रीय कर्तव्य है।" महात्मा गांधी का विचार है, "हिंदू-मुस्लिम एकता की नींव हिंदी है।" स्वामी दयानंद के शब्दों में, "हिंदी के द्वारा सारा भारतवर्ष एक सूत्र में पिरोया जा सकता है।" भारतेंदु ने "सब उन्नति का मूल निजभाषा माना", तो पुरुषोत्तमदास टंडन ने "परतंत्रता की निशानी अंग्रेजी को बताया"। इससे स्पष्ट है कि स्वतंत्रता पूर्व काल से आज तक सभी महामानवों ने अपनी भाषा-हिंदी की महिमा प्रस्तुत की है। उन्होंने हिंदी विकास में योगदान दिया है।

व्यक्ति, समूह, समाज, संस्था के संगठन से राष्ट्र बनता है। 'भाषा' उन्हें जोड़ने का साधन है। उन्हीं के कारण भाषा का विकास होता है। हिंदी का फूलना-फलना इसी बात का प्रमाण है। सेवा, समर्पण का भाव हिंदी प्रचार-प्रसार में रहा है। हर एक भारतवासी इस दृष्टि से कार्य कर रहा है। यहाँ हम कुछ व्यक्ति, संस्था का परिचय देखेंगे, जिन्होंने हिंदी के प्रचार-प्रसार में अहम् भूमिका निभाई है।

हिंदी प्रचार-प्रसार में व्यक्ति का योगदान

१) महात्मा गांधी :

महात्मा गांधी व्यक्ति नहीं, बल्कि एक विचार तथा दर्शन हैं, जिनका भारतीय साहित्य पर गहरा प्रभाव है। आजादी के आंदोलन के साथ राष्ट्रभाषा हिंदी का प्रचार एवं प्रसार करने वाले महामानव गांधी जी हैं। उन्होंने 'राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूंगा है', 'हिंदू-मुस्लिम एकता का सूत्र हिंदी है' आदि विचारों पर बल देकर हिंदी का महत्त्व विशद करके राजनीतिक दृष्टि से हिंदी को बढ़ावा दिया। १९१८ में इन्दौर में संपन्न अष्टम हिंदी साहित्य सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए उन्होंने स्पष्ट किया, 'हिंदी ही हिंदुस्तान की राष्ट्रभाषा हो सकती है।' उन्होंने दक्षिण में 'दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा' का शुभारंभ किया। अर्थात् जहाँ हिंदी का विरोध हो रहा था, वहाँ हिंदी का प्रचार करने में महान योगदान दिया। हिंदी प्रसार में अपने पुत्र देवदास को मद्रास भेजना, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति की स्थापना करना, संस्था का अध्यक्ष होना, १९१६ में लखनऊ काँग्रेस के अधिवेशन में प्रथम हिंदी में भाषण देना, हिंदी को 'हिंदुस्तानी' नाम देना, समाज सुधार तथा राष्ट्र निर्माण में हिंदी को बढ़ावा देना, हिंदी को अपनाना, हिंदी प्रचार को राष्ट्रीय कार्य मानना आदि घटनाएँ हिंदी प्रसार में योगदान की प्रमाण हैं। दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, मद्रास, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा, हिंदुस्तानी प्रचार सभा का गठन करना, महात्मा गांधी जी की महान उपलब्धि है।

२) स्वामी दयानंद सरस्वती

स्वामीजी सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक पुनरुत्थान की महान विभूति हैं। आर्य समाज की स्थापना तथा केशवचंद्र सेन की सलाह पर आर्य समाज का प्रचार-प्रसार एवं प्रवचन के लिए हिंदी का प्रयोग किया। 'ऋग्वेद भाष्य भूमिका', 'सत्यार्थ प्रकाश' आदि ग्रंथ हिंदी में लिखे। आर्य समाज के नियम हिंदी में बनाए। वेद मंत्रों के साथ हिंदी का

प्रसार किया। फीजी, मॉरिशस, गयाना, सूरीनाम आदि देशों में हिंदी का प्रचार-प्रसार करके स्वामी जी हिंदी प्रचारक, संघटक बने। यात्रियों के साथ बातचित का माध्यम हिंदी को अपनाया। साप्ताहिक सत्संग, अधिवेशन के भाषण, आर्यदर्पण पत्रिका का प्रकाशन हिंदी में किया। पंजाब, राजस्थान, उत्तरप्रदेश, बिहार में अंग्रेजी शासन का विरोध होने पर हिंदी शिक्षा संस्थान खोले। इसके संदर्भ में डॉ. मलिक कहते हैं, "आर्य समाज ने देश की शिक्षा प्रणाली में हिंदी को सम्मिलित कराने के प्रयास किए थे और साथ ही न्यायालय में भी हिंदी के प्रयोग का आंदोलन चलाया था। राजकाज में हिंदी प्रयोग पर बल दिया। यह उनकी महानता है।"

इसके साथ साथ पुरुषोत्तम दास टंडन, काका कालेलकर, सेठ गोविंददास, डॉ. राजेंद्र प्रसाद, वि. दा. सावरकर, लोकमान्य तिलक, लाला लजपतराय, राजाराम मोहन राय, मदन मोहन मालवीय, कबीर, रैदास, नानक, मीरा, हिंदी के सभी साहित्यकार, पत्रकार तथा समाज सुधारकों का भी हिंदी प्रचार-प्रसार में योगदान रहा है।

हिंदी प्रचार-प्रसार में संस्थाओं का योगदान।

१) दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, मद्रास - महात्मा जी ने १९१८ में दक्षिण में हिंदी प्रचार का आंदोलन चलाया। परिणामस्वरूप गोखले हॉल में डॉ. रामस्वामी अय्यर की अध्यक्षता में इसकी स्थापना हो गई। प्रारंभिक नाम 'हिंदी साहित्य सम्मेलन मद्रास' था। इसके संस्थापक एवं आजीवन अध्यक्ष महात्मा जी रहे। उन्होंने अपने बेटे देवदास को मद्रास भेजकर हिंदी प्रसार का कार्यारंभ किया। डॉ. राजेंद्र प्रसाद, लाल बहादुर शास्त्री, इंदिरा गांधी आदि अध्यक्ष रहे। प्रारंभ में हिंदी सीखने के लिए उत्तर के ६ छात्र दक्षिण भेजे और दक्षिण के ६ छात्र उत्तर भेजकर एकता का सूत्र बनाया। विभिन्न प्रांतीय भाषाओं में सहयोग बढ़ाना, एकता का प्रयास करना, हिंदी विकास के लिए अनुकूल माहोल बनाना आदि इसके उद्देश्य रहे हैं। यह सरकार द्वारा अभिस्वीकृत

२०२३

ब
हा
दु
सी
य

६९

संस्था है। १९३५ में हिंदी प्रचार सभा, हैद्राबाद, १९४३ में हिंदी प्रचार सभा, बंगलोर की स्थापना की। हिंदी महाविद्यालय, हिंदी प्रचारक विद्यालय शुरू किए। लगभग १००० पुस्तकों का प्रकाशन किया। हिंदी प्रचार समाचार, दक्षिण भारत, केरल भारती पत्रिकाओं का प्रकाशन हो रहा है। परीक्षा विभाग, प्रकाशन विभाग कार्यरत है। १९६४ में राष्ट्रीय महत्त्व की संस्था घोषित करके उनके कार्य को सम्मानित किया गया। आज हजारों अध्यापक, लाखों छात्र हिंदी की सेवा कर रहे हैं। तमिलनाडू, आंध्र, केरल, म्हेसुर में केंद्र शुरू किए हैं। दक्षिण भारत के कोने-कोने में हिंदी प्रसार का कार्य करने वाली यह संस्था हिंदी प्रचारकों का प्रेरणा स्रोत बनी है। इसका कार्यालय त्यागरायनगर, मद्रास १७ में है।

२) काशी नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी-

आंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त संस्थान, धर्म, राजनीति, संप्रदाय से दूर राष्ट्रभाषा हिंदी तथा राष्ट्रलिपि देवनागरी के प्रचार प्रसार के उद्देश्य से १८९३ में वाराणसी में इसकी स्थापना हुई। गोपालदास खत्री, श्यामसुंदर दास, मदन मोहन जी, अंबिका दत्त व्यास प्रमुख रहे। हिंदी प्रचार एवं प्रसार में रचनात्मक और आंदोलनात्मक कार्य किया, जिसके परिणाम स्वरूप १९०० से उत्तर प्रदेश सरकार ने अदालती कामकाज के लिए हिंदी को अपनाया। अनुपलब्ध प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथों की खोज, बृहत कोशों का निर्माण, हिंदी भाषा तथा साहित्य का इतिहास लेखन, अनुसंधान कार्य, साहित्यिक संगोष्ठियों का आयोजन, ८०,००० ग्रंथों का भांडार, दस हजार अप्राप्य हस्तलिखितों की सुरक्षा, उच्चस्तरीय शोध के लिए विशाल पुस्तकालय, स्वतंत्र अनुसंधान कक्ष, प्रकाशन विभाग, सात खंडों में हिंदी शब्दसागर, हिंदी वैज्ञानिक शब्दावली, संक्षिप्त शब्दसागर, पृथ्वीराज रासो, परमाल रासो, बीसलदेव रासो का प्रकाशन, विविध विधाओं-विषयों पर हजारों ग्रंथों का

विमोचन, श्रेष्ठ रचनाओं को पुरस्कार, कामताप्रसाद गुरु का हिंदी व्याकरण, आ. रामचंद्र शुक्ल का हिंदी साहित्य का इतिहास, हिंदी अंग्रेजी शब्दकोश का प्रकाशन आदि इसकी महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ हैं। हिंदी प्रसार के लिए संकेत लिपि की स्थापना, टंकन प्रशिक्षण की व्यवस्था की। नागरी प्रचारिणी सभा साहित्यिक एवं शोध पत्रिका, सरस्वती पत्रिका, नागरी प्रचारिणी पत्रिका का प्रकाशन करके हिंदी प्रचार प्रसार में अहम् भूमिका निभाने वाली, १९९३ में सौ साल पूरे करने वाली और आज तक कार्यरत रहने वाली यह अनोखी संस्था है।

३) हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग - १९१० में श्यामसुंदर दास की प्रेरणा से, नागरी प्रचारिणी सभा के तत्वावधान में भारतवर्ष में हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए महामना मालवीय जी की अध्यक्षता में हिंदी भाषा एवं देवनागरी के प्रचार-प्रसार के लिए इसका गठन किया गया। टंडन जी प्रधानमंत्री बने, जिन्होंने नियम बनाए। हिंदी की उन्नति करना, मुद्रण सुलभ लिपि का निर्माण करना, हिंदी प्रचारकों का सम्मान करना, उच्च परीक्षाओं का आयोजन करना, ग्रंथ प्रकाशन, प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथों की खोज, भारतीय साहित्य संस्कृति संबंधी ग्रंथों का प्रकाशन, विश्वविद्यालय का निर्माण, सम्मेलन पत्रिका, राष्ट्रभाषा संदेश का विमोचन, प्रतिवर्ष वार्षिक अधिवेशन का आयोजन आदि कार्य करके हिंदी प्रसार करने वाली यह संस्था है। १९६३ में राष्ट्रीय महत्त्व की संस्था के रूप में इसे अभिस्वीकृति मिली। मालवीय जी, महात्मा गांधी, पद्मसिंह शर्मा, कन्हैयालाल मुंशी, राहुल सांकृत्यायन आदि इसके सभापति रहे। इसका कार्यालय हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग (इलाहाबाद) में है।

४) राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा - दक्षिण भारत में हिंदी का प्रचार कार्य जोरों पर था; अन्य शेष हिंदीतर प्रदेशों में हिंदी प्रचार के उद्देश्य से, महात्मा जी की प्रेरणा से १९३६ में इसकी

स्थापना हो गई। डॉ. राजेंद्र प्रसाद जी की अध्यक्षता में समिति का गठन हुआ, जिसमें नेहरू, टंडन, माखनलाल जी, कालेलकर, सुभाषचंद्र, शंकरराव देव थे। 'एक हृदय हो भारत जननी' यह घोष वाक्य बनाया। असम, पंजाब, गोवा, मणिपुर, बंगाल, श्रीलंका, अरुणाचल प्रदेश, राजस्थान में हिंदी प्रचार संस्थान खोल दिए। राष्ट्रभाषा, राष्ट्रभारती पत्रिकाओं का प्रकाशन, १४ भाषाओं के प्रतिनिधि कवियों की रचनाएँ, 'कविश्री' और 'भारतभारती' पुस्तकमाला का प्रकाशन किया। राष्ट्रभाषा कोविद, राष्ट्रभाषा रत्न, साहित्य विशारद, राष्ट्रभाषा आचार्य आदि परीक्षाओं का आयोजन, पुस्तक प्रकाशन, हिंदी दिवस समारोह, राष्ट्रभाषा प्रचार सम्मेलन, अनुवाद, देवनागरी लिपि में सुधार, आदि कार्य करने वाली यह संस्था है। ब्रह्मदेश, लंका, फीजी, जावा, अमरिका, अफ्रीका आदि देशों में कार्यरत संस्थान है। इसका कार्यालय राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा (महाराष्ट्र) में है।

५) केंद्रीय सचिवालय हिंदी परिषद, नई दिल्ली - केंद्रीय सरकारी कर्मचारियों में हिंदी भाषा और साहित्य के प्रति रुचि उत्पन्न कराने, सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग का मार्ग प्रशस्त कराने के उद्देश्य से ३ मई, १९६० को दिल्ली में इसका गठन किया गया। बैंक, जीवन बीमा निगम, डाक, रेल, केंद्रीय संस्था कार्यालयों में परिषद कार्यरत है। रचनात्मक योगदान देने वाली यह परिषद है। राजभाषा विशेषांक, खेल विशेषांक, हिंदी परिचय पत्रिका का प्रकाशन, संगोष्ठियों तथा विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन, साहित्य प्रकाशन, प्रदर्शनियाँ, सरकारी कामकाज संबंधी शब्दावली, अधिसूचना, आवेदन, कार्यालयों के हिंदी नामों का प्रकाशन, तार, कोड आदि विविध कार्य करके हिंदी प्रचार में सहयोग देने वाली यह सरकारी परिषद है। सरकारी कर्मचारियों को हिंदी अपनाने के लिए प्रोत्साहित करने वाली यह संस्था है। इसका कार्यालय एक्स वार्ड ६८ सरोजनी नगर, नई दिल्ली ३१ है।

६) महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा, पुणे - महात्मा जी की प्रेरणा से १९३७ में पूना में सम्मेलन हुआ, जिसमें अखिल महाराष्ट्र हिंदी प्रचार समिति कायम की गई। यह प्रारंभ में वर्धा, प्रयाग से संबंधित रही। १९४६ में 'महाराष्ट्र हिंदी समिति' का नामकरण 'महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा' हो गया। केंद्र पूना में रहा। प्रादेशिक भाषा के महत्त्व के साथ आंतर्प्रातीय व्यवहार के लिए राष्ट्रभाषा का प्रयोग, राष्ट्रनिर्माण में हिंदी का प्रयोग, एकता संवर्धन के लिए राष्ट्रभाषा आदि रूपों में रचनात्मक योगदान देने वाली यह सभा है। औरंगाबाद, धुलिया, नागपुर, बंबई में शाखाएँ कार्यरत हैं। प्रवीण, पंडित, पद्म, अनुवाद पंडित जैसी परीक्षाओं का आयोजन, 'राष्ट्रवाणी', 'हमारी बात' जैसी हिंदी मासिक पत्रिकाओं का विमोचन, हिंदी अध्यापकों के लिए प्रशिक्षा विद्यालय, बृहत् हिंदी-मराठी शब्दकोश, मराठी-हिंदी शब्दकोश का निर्माण, हिंदी व्याख्यानमाला का आयोजन आदि कार्य कर रही है। इसका कार्यालय राष्ट्रभाषा भवन, नारायण पेठ पुणे ३०१ है।

इसके साथ उत्तर प्रदेश हिंदी अध्ययन संस्थान, लखनऊ; म्हासुर हिंदी प्रचार सभा, बंगलोर; भारतीय हिंदी परिषद, प्रयाग; असम राष्ट्रभाषा परिषद, गुवाहाटी; गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद; अखिल भारतीय हिंदी संस्था संघ तथा नागरी लिपि परिषद, नई दिल्ली; देवनागरी प्रचारिणी सभा, मेरठ; हिंदुस्तानी अकादमी, इलाहाबाद; हिंदी विद्यापीठ, देवघर; हिंदी प्रचार सभा, हैदराबाद; केरल हिंदी प्रचार सभा, तिरुवनन्तपुरम, मणिपुर; हिंदी परिषद, इम्फाल; मध्यप्रदेश हिंदी परिषद, भोपाल; बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना; कर्नाटक महिला हिंदी सेवा समिति, बंगलोर; मराठवाडा राष्ट्रभाषा समिति, औरंगाबाद; दिल्ली प्रांतीय परिषद, दिल्ली; महाराष्ट्र राज्य हिंदी साहित्य अकादमी मुंबई आदि कई हिंदी प्रेमी संस्थान हिंदी प्रचार-प्रसार में सर्वस्व योगदान दे रहे हैं।

२०१३

ब
ह
ा
र
ी
य

६३

कोशिश

जिंदगी तो एक जुआ है,
कभी हारना तो कभी जितना है,
बस ! कोशिश करते रहना है ॥

सुखदुख तो आते जाते हैं,
उससे निराश न होना है,
बस ! कोशिश करते रहना है ॥

कुछ पाकर खोना है,
कुछ खोकर पाना है,
बस ! कोशिश करते रहना है ॥

कोशिश से फल मिलता है,
उससे कभी भागना नहीं,
बस ! कोशिश करते रहना है ॥

श्री प्रवीण पवार
तृतीय वर्ष, कला

वो पल

अगर आप साथ ना हो तो
पल भी युगों जैसे लगते हैं,
आप साथ हो तो घंटों भी
पलों जैसे लगते हैं
हमेशा आपको लगता है
भूल जाते हैं हम आपको,
लेकिन आपको क्या पता ?
हर पल आपकी याद आती है हमको ।
आपकी कमी हमेशा सताती है हमको
लेकिन आपको लगता है,
आपको सताने में मजा आता है हमको ।
पता नहीं कब समझोगी मेरा दिल
और कब आएगा जिंदगी में वो हसीन पल !

श्री अरूण अवघडे
तृतीय वर्ष, कला



खुश रहो यारों

जिंदगी है छोटी मेरे यारों
हर पल में खुश रहो ।
बाहए खुश रहो
घर में खुश रहो ।
आज पनीर नहीं
तो दाल में ही खुश रहो ।
आज जिम जाने का समय नहीं,
तो दो कदम चल के ही खुश रहो ।
आज कोई नाराज है,
उसके इस अंदाज में ही खुश रहो ।
जिसे देख नहीं सकते,
उसकी आवाज में ही खुश रहो ।
जिसे पा नहीं सकते,
उसकी याद में ही खुश रहो ।
फेसबुक ना मिला तो
SMS में ही खुश रहो ।
बीते हुए कल की जो मिठी यादें हैं,
आज उनको याद करके ही खुश रहो ।
जिंदगी है छोटी मेरे यारों
हर पल में खुश रहो ।

श्री सद्दाम शेख
तृतीय वर्ष, कला

2023

ब
ह
उ
सी
य

६४

॥ विविध उपक्रम ॥



सूक्ष्मजीवशास्त्र विभागापासून सॅनोटेक्नॉलॉजी विषयावर आयोजित केलेल्या एकदिवसीय सेमिनार प्रसंगी प्रमुख पाहुण्या डॉ.सो.मनिषा सपकाळ यांचे स्वागत करताना प्राचार्य डॉ.शेजवळ सर



इतिहास विभाग-डॉ.अप्पासाहेब पवार इतिहास अभ्यास मंडळाचे उद्घाटन करताना प्रा.किशोर सुता



संस्कृत दिनानिमित्त व्याख्यान देताना प्रा.डॉ.सो.उर्मिला अरणके



पालक बैठक : मार्गदर्शन प्राचार्य डॉ.राजेंद्र शेजवळ



आजी माजी विद्यार्थी स्नेहमेळावा प्राचार्य डॉ.आर.व्ही.शेजवळ व्याख्यान देताना प्रमुख पाहुणे-प्रा.डॉ.आ.इ.साळेंखे,प्रा.डॉ.श्रीमती सुहासिनी राजेभोंसले व प्रा.कु.मयुरा राजे भोंसले



वनस्पती शास्त्र विभाग आयोजित काम पठारावरील पुष्प फोटो प्रदर्शन पाहताना राष्ट्रीय कार्यशाळेमधील सहभागी

श्री स्वामी विवेकानंद शिक्षण संस्था, कोल्हापूर संघनित
लाल बहादूर शास्त्री महाविद्यालय, सातारा

बहादुरीय | २०१२-२०१३ |



॥ राष्ट्रीय छात्र सेना ॥



कॉप्टन
प्रा. डॉ. महेश गायकवाड



गौरव गाडे
सिनिअर अंडर ऑफिसर



संप्रप्य देशमुख
ज्यु. अंडर ऑफिसर



अल्ताफ शेख
ज्यु. अंडर ऑफिसर



संकेत पॉदवड
वेम्ट कॅप्टेन



लाल बहादूर छात्रसेनिक सोबत मा. प्राचार्य डॉ. आर. पी. शेखवड,
प्रा. डॉ. कॉप्टन महेश गायकवाड



नॅक पीअर टीम स्वागतमाठी छात्रसेनिकांकडून
'गार्ड ऑफ ऑनर'



'धावा खोल-सेकलन अंटक-डेपो'
प्रात्यक्षिक दाखविताना छात्रसेनिक



वृक्षारोपण व श्रमदान करताना
एन. सी. सी. कॅडेट्स व ऑफिसर

श्री स्वामी विवेकानंद शिक्षण संस्था, कोणहापूर संघालात
लाल बहादूर शास्त्री महाविद्यालय, सातारा

॥ विविध उपक्रम : नवीन अभ्यासक्रम कार्यशाळा ॥



प्राणिशास्त्र नवीन अभ्यासक्रम कार्यशाळेचे उद्घाटन करताना डॉ. आर.एन.पाटील, डॉ. डी.चॅरी.मुळे, प्राचार्य मुहम्मद सादुल्लेखे, डॉ. आर.जी.पाटील, डॉ.एम.एस.गायकवाड



बी.एस्सी. भाग ३, प्राणिशास्त्र विषयाच्या नवीन अभ्यासक्रम कार्यशाळेमध्ये मार्गदर्शन करताना डॉ.पी.डी.राऊत (पर्यावरण विज्ञान विभाग प्रमुख, शिवाजी विद्यापीठ, कोल्हापूर)



वनस्पती शास्त्र नवीन अभ्यासक्रम कार्यशाळा मा.विलासराव पाटील-उंडाळकर उद्घाटनपर भाषण करताना



वनस्पती शास्त्र विषयाच्या नवीन अभ्यासक्रम कार्यशाळेमध्ये बीवभाषण करताना डॉ.संभाजीराव चव्हाण चेअरमन अभ्यास घडळ वनस्पती शास्त्र, शिवाजी विद्यापीठ, कोल्हापूर



बी.ए.भाग ३ राज्यशास्त्र विषयाच्या एकदिवसीय कार्यशाळेमध्ये मार्गदर्शन करताना माजी खासदार श्रीनिवास पाटील



राज्यशास्त्र नवीन अभ्यासक्रम एक दिवसीय कार्यशाळा सहभागी प्राध्यापक

श्री ग्यामी विवेकानंद शिक्षण संस्था, कोल्हापूर संयोजित
लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय, सातारा

॥ दूर शिक्षण व स्पर्धा परीक्षा ॥



स्पर्धा परीक्षा विभाग प्रेरणा अॅकॅडमी सातारा यांचेकडून यु.पी.एस.सी./एम.पी.एस.सी. परीक्षा संदर्भात मार्गदर्शन सोबत केंद्रसंयोजक प्रा. दीपक जाधव, प्रा. डॉ. डी. आर. भुटीयानी



शिवाजी विद्यापीठ दूर शिक्षण विभाग कमिटीची अभ्यास केंद्रास सदिच्छा भेट मा. डॉ. अपराज, प्रा. शेते यांचे स्वागत करताना प्राचार्य शेजवळ साहेब केंद्र संयोजक प्रा. दीपक जाधव



Placement Cell च्या वतीने आय.सी.आय.सी.आय. बँकेच्या सहकार्याने आयोजित 'Campus Interview' च्या उद्घाटन कार्यक्रमात बोलताना अध्यक्ष मा. प्राचार्य डॉ. आर. व्ही. शेजवळ व बँकेचे सैल्स मॅनेजर श्री. गजानन गायकवाड व मान्यवर



Placement Cell वतीने आयोजित 'कॅम्पस इंटरव्यू' चे उद्घाटन दीपप्रज्वलन करताना मा. प्राचार्य डॉ. आर. व्ही. शेजवळ, आय. आर. आय. एस. कंपनीचे मॅनेजर राधवेंद्र तोमर, सन. सी. मॅनेजरपेट क. च्या मॅनेजर सी. पल्लवी जाधव व इतर मान्यवर



स्पर्धा परीक्षा मार्गदर्शन उद्घाटन सभारंभ उद्घाटक मा. अमोल सांबे, अध्यक्ष-मा. प्राचार्य राजेंद्र शेजवळ, केंद्रसंयोजक-प्रा. दीपक जाधव, उपप्राचार्य-प्रा. आर. आर. गायकवाड



दूर शिक्षण अभ्यास केंद्राची पहाणी करताना शिवाजी विद्यापीठ, दूर शिक्षण विभागातील मान्यवर

श्री स्वामी विवेकानंद शिक्षण संस्था, कोल्हापूर मंचालित
लाल बहादूर शास्त्री महाविद्यालय, सातारा

INDEX

| | | | |
|----|----------|-----------------------------------|--|
| 67 | B.Sol | Miss. Madani Sanaulata | PROSE SECTION |
| 70 | B.A.II | Miss. Inqwalia Sushila Ghoshkanti | 1) Language (A Bridge to the World) |
| 72 | B.Sa.III | Miss. Patti Sayal S. | 2) Pt. of Women in Indian society |
| 74 | B.A.II | Brudhailal Khandawar | 3) 'A Shadow' by R.K. Narayan |
| 78 | B.A.II | Miss. Saini Anvita Astok | 4) Author - Unique Identification Number |

*A little learning is a dangerous thing;
 drink deep, or taste not the Pierian spring;
 there shallow draughts intoxicate the brain,
 and drinking largely sobers us again.*

**Alexander Pope,
 An Essay on Criticism
 English poet & satirist
 (1688-1744)**



Section Editor

Mr. Prashant P. Lohar

INDEX

PROSE SECTION

- | | | | |
|---|-----------------------------------|----------|----|
| 1) Language : A Bridge to the World | Miss. Mulani Sana Altaf | B.Sc I | 67 |
| 2) Place of Women in Indian society | Miss. Ingawale Suchita Shashikant | B.A.II | 70 |
| 3) 'A Shadow' by R.K.Narayanan | Miss. Patil Sayali.S. | B.Sc.III | 72 |
| 4) Aadhar - Unique Identification Number | Bhujbal Aniket Nandkumar | B.A.II | 74 |
| 5) The Ongoing Tragedy of India's Widows | Miss. Sathe Ashwini Ashok | B.A.II | 76 |
| 6) Stem Cells | Miss. Paradeshi Pratiksha Rajan | B.Sc.III | 78 |
| 7) Genetically Modified Crops | Miss. Dongare Priyanka Shankar | B.Sc.II | 81 |
| 8) Study of Antiangiogenic Action of extract of salivary glands of <i>Periplaneta americana</i> | Miss. Nalavade Varsha Vinayak | B.Sc.III | 85 |
| 9) The Lion | Sayyam Machindra More | B.A.III | 89 |

POETRY SECTION

- | | | | |
|---|-----------------------|----------|----|
| 1) Welcome to Wherever You Are | Tellis Melroy Monthu | B.Sc.III | 71 |
| 2) Her Toil | Jasmin Shaikh Akbar | B.A.III | 73 |
| 3) To My Mother | Gadekar Ashok Gajanan | B.A.III | 75 |
| 4) Pleasure | Pankaj H. Bhosale | B.A-II | 80 |
| 5) Difference Between You and I, What ? | Prafull Bhiku Bodke | B.A.II | 84 |
| 6) My Mother | Niraj Kanse | B.Com I | 88 |



LANGUAGE : A BRIDGE TO THE WORLD

Miss. Mulani Sana Altaf / B.Sc I

□
It makes no difference whether you learn a language for your job or for fun. Language opens up new worlds. With the right approach, you'll find it easy to learn new words and grammar.

ENGLISH : The global language

Do you know that French was once the language of international diplomacy ? Or that German almost became the global language ? After having gained independence from Britain in the 18th Century, the newly formed American states voted on the language they would use to communicate in future. Would it be English or German ? After all, there were a lot of German immigrants living in the Thirteen Colonies. Of course, we all know today what language the young nation's lawmakers decided upon.

For variety of reasons English has become the leading world language. In the worlds of commerce, science or aviation (aircraft study), an ability to communicate in English is the key to a capacity to function effectively in these areas. The vocabularies of most major languages are now filled with English terms. Terms like 'Shopping', 'Jogging', 'Weekend', 'hard drive' and 'salary' are just a few of the English words & phrases that have crept into some of the other main languages of the world.

Easy way to learn difficult words

Unusual & difficult words are often the ones that give us the most trouble. Focus your attention on the

2023

ब
ह
उ
सी
य

६७

foreign word & link it with words you know in your own language. Make a note of the similarities and differences in form & content. For example the German word 'Kindheit' means 'childhood' in English. The sound of the German suffix '-heit' is similar to the English '-hood', while 'kind' and 'child' look the same. Just think of the German word 'Kindergarten', which is widely used in English to describe a nursery or pre-primary school.

The beginning is difficult

By their nature, Children enjoy learning. But acquiring the foundations of a language is a matter for logical thought processes, & we can only acquire this knowledge with some effort. We can only become proficient in a foreign language if we have understood, investigated and processed it in our minds.

The quickest way to master a foreign language is, of course, to learn it in the country where it is spoken. Daily practice makes it possible to carry out conversations with in a relatively short period of time. A person who has learnt to speak French or English in this way will forget certain words again when he or she stops using them, but all that is needed is a short period of 'refreshment' to restore the ability of them.

When you first start to learn a new language, you find that you have to get used to new and strange sounding tones. Germans have difficulty pronouncing the English 'th', since that sound is not found in their language. If

a German-speaker wishes to pronounce that sound correctly, he or she will have to listen and watch how a native speaker-forms the sound. They can, of course, try to find sounds that are similar in their own language. English-speakers have the same difficulty in rolling their tongue is the way French people do.

Learning a language in funny way

Language is a gateway to new worlds and cultures. Learning a language is an adventure, but it should also be fun. Here are a few tips on how to help your memory to retain a new language.

Be creative

You will learn much faster if you deploy your creative sense. The brain processes intuition, creativity and the perception of emotions differently from factual knowledge. When learning a new language, you should make use of all the different areas of your brain, and let them work together as a team so that they complement one another.

Use your senses

Sensory perception can be used to make dull material more interesting. Begin with the world of sound. Listen to an English song or a French Chanson, & translate the text. Try to understand exactly what is expressed by the song. You will remember the words better when you have a melody to associate them with.

Use flash cards

Write the vocabulary you have to memorise on flash cards. These are

pieces of cardboard or index cards that you look at for a 'flash' and then hide away as you try to remember the meaning of the word. Flash cards can be taken anywhere. you can use them to study in the doctor's waiting room or in the bus or train. Be creative here too, and use differently coloured pens to write the words on the cards. You may remember from school days or university lectures that the things you write down are generally the things that remain firmly imprinted in your memory. Amazingly, more than half the information you learn is absorbed just through the act of writing it down.

You also need to organise & summarise the material when you note it down. This is only possible if you have understood it. Write the English word on the front of the card and the foreign word on the back. Mix the cards & test your-self. Concepts that you remember can be put into a 'success' pile, while the rest can be re-used.

Because images are more readily retained in the memory, it is worthwhile trying to make small drawings. Perhaps your card could show an automobile with the word 'car' and, on the back, the French word 'l' automobile. Drawing

pictures can even make grammar easier to learn.

For example

| French | English |
|---------------|--------------|
| la faim | Hunger |
| avoir faim | to be Hungry |
| Chana | warm |
| il fait chana | it is warm |
| jai chana | I am warm |

There are about 6 thousand million people living on earth, and they speak 6,258 different languages. It is more and more important for us-and even more so for our children-to be able to communicate in a shrinking world. This means learning a second or even a third language is necessary.

What is the French word for 'bottle' ? correct, it's 'bouteille'. But how do you remember how to pronounce that ? Here's an idea :- Just think of the last sound of 'halibut' (Fish) and the first sound in egg.

All languages are living things and possess strong images. The image of 'a wolf in sheep's clothing' - denoting a concealed threat - is a strong one in English, but is also found in the German 'ein Wolf im Schafspelz.'

Article



PLACE OF WOMEN IN INDIAN SOCIETY

Miss. Ingawale Suchita Shashikant / B.A.II

In past some people couldnot educate their girls but in these days parents provide education for their girls as well as boys. The education is most important for boys and girls. Because, our lives are totally dependent on our education. By taking the education many women are doing good jobs. All women attain their household chores.

When seven colours are mixed makes rainbow like this when the seven good activities or the seven good things are mixed then it makes a human being or a one good person called as 'Woman'.

One year ago, some people said that the women are Goddesses and they have good thoughts.

I think that the world is like a bicycle and the bicycle having two wheels, one wheel is of a man and other is of a woman. The God makes all human beings means the God makes all men and women.

A poem which is written by poet. 'Mr. Tambe' gives the information about the 'Queen of the Zashi'. The queen of Zashi made hard work to give the independence for our country. Other women like Madam Kama, Anni Benzent etc. did hard work for our India. Savitribai Phule, first lady Doctor Anandibai Joshi, Laxmibai Tilak, Ramabai Ranade etc. these women while living in rural areas faced many social problems. These women were not only emotional but also intelligent.

In Indian society women are intelligent than the men. The activities of women are very fast and the place of women in Indian Society is high. Some women progress in their life and develop their place in Indian Society. The women are present in every things as well as very every activities. The women reached the Moon

२०१३

ब
ह
उ
स
ी
य

१०

and the best example is 'Kalpana Chavala and Sunita Williams'. In past, first lady prime minister was 'Indira Gandhi'.

In past some people couldnot educate their girls but in these days provide parents education for their girls as well as boys. The education is most important for boys and girls. Because, our lives are totally dependent on our education. By taking education many are doing gives good jobs. All women attain their household chores.

In future we can observe a considerable change in the lives of women, particularly, the women's which live in rural areas. Women will be considered equal.

In those days, many women were in the field of social work. These women worked for the society. The best example of social worker is 'Advocate Varsha Deshpande'.

People in the India and also in the world should give the respect to the Indian women.



Welcome to Wherever You Are

Maybe it seems different,
But everything is same.
We all have the Blood of Eden,
running through our vein.
You know sometimes,
it's hard for you to sustain
You count between just who you are,
and who you want to be.
If you feel alone lost,
and need a friend.
Remember whenever you begin
you start with your exam,
Welcome, to where ever you are
This is your life you made it this for.
Welcome, you got to believe
Right here, right now.
You are exactly where one
supposes to be.
Welcome to wherever you are
When everybody's in
and you are left out
and you are feeling drowning
in the shadow of the dawn

Everybody wants the miracle,
Their own way.
Just listen to yourself,
not what other people say.
When it seems alone lost,
and feeling down.
Remember everybody's different,
Take a look around.
Welcome to wherever you are
He who you want to be
He who you are
everyone is a hero
everyone is a star
When you want to give
and your heart is about to break
Remember that you one perfect
God makes no mistake
Welcome to wherever you are
for you are exactly where
one supposes to be
Welcome to wherever you are.

Tellis Melroy Monthu

B.Sc.III

२०२३

ब
ह
ड
स
य

७९

Literary Critic



A SHADOW BY R.K.NARAYANAN

Miss. Patil Sayali.S. / B.Sc.III

It is a story of a boy named Shambhu & his widowed mother, Shambhu's father, a Film hero from Tamil films died one day suddenly. His last Film "Kumari" come at the theatre & Shambhu went to see it. The reactions of Shambhu of his mother to the Film are recorded in the story. Here is an example of how the Shadow of a dead man can be a powerful influence.

R.K. Narayan is one of the leading Indian writers, writing in English. He is both a novelist and a story writer. Through his novels he created an imaginary town called Maigudi, which grew along with every new novel he wrote. He became known even to the illiterate. When his novel "The Guide" was turned into a film of the same title.

Here, we are going to know a story, which has all above features of writings of R.K. Narayan. It is a story of a boy named shambhu & his widowed mother. Shambhu's father, a film hero from Tamil films died one day suddenly. His last film "Kumari" comes at the theatre & Shambhu goes to see it. The reactions of Shambhu, of his mother to the film are recorded in the story 'A shadow'. Here is an example of how the shadow of a dead man can be a powerful influence.

This story has only two characters, Shambhu and his mother. Shambhu's father is dead. But the dead man exercises considerable influence on his family. To Shambhu his father a good person, though his deeds were bad in life. The mother, however, would like to forget him. His last film appeared at the theatre Shambu was eager to see it. He asked for money. His mother was horrified. She had to face some thing She did not

२०२३

ब
ह
ड
ड
सी
य

७२

want to. She wanted to avoid seeing the film. On the other hand Shambhu was eager to see it. He notes in the story that he liked his father very much & became one with his screen image as the father of Kumari. He looked at Kumari as his sister & wished to save her from father's anger. When his mother allowed him to see the film everyday he was overjoyed. He was proud of his father & the Film. He told his school friends how his father got 10,000 rupees for the story & the role. It was not the regular Tamil Film. It was eleted special, it was of the best. He was quite to see his father in the film behaving, dressing, singing exactly as in real life. He was all excited about it. His was the reaction of a child, who loves the father, is proud of, yet afraid of him. On the contrary, his mother's response was contradictory. He was eager to see his film and she was eager to avoid it. His memories were painful to her. To see him speak & move on the screen was unbearable. There may be many reasons for this. Shambhu had to give up the idea up of seeing

the film through on its last run at the theatre. This was a very sad things for him & he burst out in tears. To him the film was the return of his dead future. He welcomed it with open arms. His mother, on the otherhand had it as a painful experience.

Through these reactions a very mixed picture of a film-Star comes up. He loved his son Shambhu & was overjoyed even at the little success of the son. But he was moody. He was as easily furious as he was pleased. When pleased he danced and when furious he beat Shambhu. By nature he was impatient, moody & adamant but as a father he was good to his son. That's why, Shambhu loved to go to the theatre everyday, even twice his mother had disallowed.

The story is woven upon a very ordinary, daily situation-the memories of the dead & the effect of them on the people in the family. R.K. Narayan narrates the story in a straight forward manner.

Her Toil

Thus, she looked for
Love divine;
To drink and die
True and fine.
On the top of mountain,
In the valleys deep,
She sought compassion
And blissful sleep.
Is it in the books revered,

Or lies in the lover's eyes.
She knew not knots
Of faithless mankind.
God, unending,
Straem of kindness,
Here ends her toil
She confesses her mind.
Jasmin Shaikh Akbar

B.A.III

२०२३

ब
ह
उ
सी
य

७३

*Informative
Article*



AADHAR - UNIQUE IDENTIFICATION NUMBER

Bhujbal Aniket Nandkumar / B.A.II

□
The government undertook an effort to provide a clear identity to residents first in 1993 with the issue of photo identify cards by the Election Commission. Government sources said the UID number would only guarantee identity no other benefits or entitlements. It is a proof of identity and does not confer Citizenship.

□
Prime Minister Dr. Manmohan Singh & UPA chairperson Ms. Sonia Gandhi on Sep 29, 2010 launched the AADHAR project in Tembhli village in Nandurbar district of Maharashtra. The two leaders presented Unique Identification (UID) numbers known as AADHAR number to ten people of the village. With this Tembhli became the first AADHAR village in India. Tembhli resident Ms. Ranjana Sonawne became the first Indian to have the UID number. The number assigned to her is 782474317884.

□
The UID number would now enable them to open bank account without any hassle, to get ration anywhere in the country, and to get job cards among other facilities. Nandurbar a backward district with a substantial tribal population was chosen to symbolise the stated aim of the scheme. It is to first benefit the tribals and the needy people in the country. Among the states, Maharashtra will be the first to get the UID, the rest of India will get within a span of four years.

□
The government has made a provision of Rs. 120 crores for their issuing. The authority headed by Infosys co-founder, Nandan Nilkani would work in close co operation with the Home Ministry which would provide the population data via. Registrar General of the census

2023

ब
ह
उ
स
य

७४

concurrent to 2011 census. A similar model would be followed at the state level.

The Unique ID number will not substitute other existing numbers a person may have (PAN number, passport number, ration card number etc.). Rather, it will be an additional unique numbers to be cited along with existing numbers for different purposes. This will help weed out duplicate and ghost cards that are widespread today (notably in BPL ration cards) and may be bogus bank account and property deeds.

A single universal identity number will help to eliminate fraud and

duplicate identities resulting in significant savings to the state exchequer. The government undertook an effort to provide a clear identity to residents first in 1993 with the issue of photo identify cards by the Election commission. The Government sources said the UID number would only guarantee identity no other benefits or entitlements. It is proof of identity and does not confer citizenship. The Registrars that the Authority plans to partner with in its first phase. The National Rural Employment Guarantee Act, the Rashtriya Swasthya Bima Yojhana, and the public Distribution system will help bring large numbers into the system.

To My Mother

Gadekar Ashok Gajanan

B.A.III



O My lovely Mother, Sweet flowers I bring,
Mother, accept, I pray, My offering for your sacrifices.
O My Mother, my own Mother,
Who is more sacred than the heaven,
And more pure than the Ganga's water,
So, I am the one who lives in her heart,
Was dearer to my soul than myself
O My Mother, on whose knee I learnt,
Love-lore that is not troublesome,
Whose service is special dignity,
Whose affection and benidiction remains,
Still the end of the live or dooms day.
O My Mother, who made a golden cradle,
That on a willow swung, awoke all night,
And woven lovely colourul clothes,
With the gold and silver thread.
O My Mother, 'Golden Top of Care'.
Where no worries, no care,
Love like a mountain and deep like sea-water,
It's just pray to God, If I get reborn,
Then just make me her son.

२०१३

ब
ह
ड
ड
सी
य

७५



ONGOING TRAGEDY OF INDIA'S WIDOWS

Miss. Sathe Ashwini Ashok / B.A.II

□
To help widows & other women who have been raped, I would go & beg to the judges. "Please, give me your time. Every room in a school is to be changed into a courtroom. We got 400 cases to be settled at once" Giri recalls.

Widows in India have a pronoun problem. The estimated 40 million women widows in the country go from being called "she" to "it" when they lost their husbands. They become "de-sexed" creatures. Clearly, it's more than a problem of language. Although that discrimination goes further, with epithets such as "husband eater" used against them. In the northern Indian state of Punjab, a widow is referred to as randi, which means "Prostitute" in Punjabi. In this region, they usually arrange for the widow to marry her deceased husband's brother, because being owned by a man is a way to avoid being raped.

□
"Widowhood is a state of social death, even among the higher castes." says Mohini Giri, a veteran activist in the fight for women's rights who was nominated for the Nobel Prize in 2005. She is also director of the Chennai based social work non profit organization Guild for Service. "Widows are still accused of being responsible for their husband's death & they are expected to have a spiritual life with many restrictions which affects them both physically & psychologically". Although widows today are not forced to die in ritual sati, they are still generally expected to mourn until the end of their lives, the Hindu progenitor of mankind. "A

२०१३

ब
ह
उ
सी
य

७६

virtuous wife is one who after the death of her husband constantly remains chaste & reaches heaven though she has no son".

Whether young or old, widowed women leave behind their colourful saris, part with their jewelry & even shove their heads if they are in the more conservative Hindu traditions. All of this is designed so as not encourage sexual desire. The widow is 'uglified' to deprive of the core of her femininity. It is an act symbolic of castration. She is deprived of the red dot between her eyebrows that proclaims her sexual energy.

Widows seem to follow rules based on tradition because they have internalized them. They keep doing what other widow did without asking, resigned to kind of fate such as placing restrictions on their own diets. Orthodox Hindus believe that onions, garlic, pickles, potatoes & fish fuel sexual passions by stimulating the blood, but these are the same foods necessary to avoid malnutrition or even death. In India as a whole, mortality rates are 85 % higher among widows than among married women, according to research by the Guild for Service. In much of Indian society across caste & religion a widow is often perceived by family members to be a burden & sexually threatening toward marriages.

In some of the ashrams in Vrindavan, the same protection that young widow seek hidden in

countryyards, misshappen into sexual exploitation. The heads of some ashrams use their power to force young widow into prostitution in order to earn themselves "extra" money.

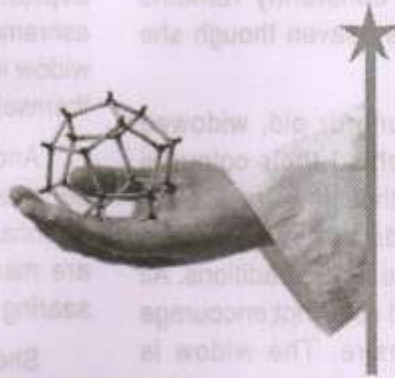
And what happens to those who become pregnant after being raped, as Khanna explains clearly "These widows are mauled by quacks for a painfully searing abortion".

She says, "If that's not done, then it would have an extra mouth to feed & an extra pair of hands to beg". The basic precepts that allow for this constant abuse of widow have also allowed their abusers to escape already exist that ensure women's rights. When she was chairwoman of the National Commission for Women, Kharina come up with ways to deliver justice more readily.

To help widows & other women who have been raped, I would go & beg to the judges. "Please, give me your time. Every room in a school is to be changed into a courtroom. We got 400 cases to be settled at once" Giri recalls.

According to the Home Ministry's National Crime Bureau of India, violence against women is the fastest growing crime. Every 34 minutes, a woman is raped & every 43 minutes a woman is kidnapped. 40 millions widows continue to be deprived of their basic dignity as a kind of atonement for some sin. It's a the punishment for being a woman & a widow in India.

Informative
Article (Science)



STEM CELLS

Miss. Paradeshi Pratiksha Rajan / B.Sc.III

□
Although stem cells do not serve any one function, many have the capacity to serve any function after they are instructed to specialize. Every cell in the body, for example, is derived from first few stem cells formed in the early stages of embryological development.

□
Stem cells are biological cells found in all multicellular organisms, that can be divided (through mitosis) and differentiated into diverse specialized cell types and can self-renew to produce more stem cells. In mammals, there are two broad types of stem cells: embryonic stem cells which are isolated from the inner cell mass of blastocysts, and adult stem cells which are found in various tissues. In adult organisms, stem cells and progenitor cells act as a repair system for the body, replenishing adult tissues. In a developing embryo, stem cells can differentiate into all the specialized cells (there are called pluripotent cells), but also maintain the normal turnover of regenerative organs, such as blood, skin, or intestinal tissues.

□
There are three accessible sources of autologous adult stem cells in humans :

1. Bone marrow, which requires extraction by harvesting, that is, drilling into bone.
2. Adipose tissue which requires extraction by liposuction, and
3. Blood, which requires extraction through pheresis, where in blood is drawn from the donor (similar to a blood donation), passed through a machine that

२०१३

ब
ह
उ
सी
य

१९८

extracts the stem cells and returns other portions of the blood to the donor.

Stem cells can also be taken from umbilical cord blood just after birth, of all stem cells type, autologous harvesting involves the least risk. By definition, autologous cells are obtained from one's own body, just as one may bank his or her own blood for elective surgical procedures.

Highly plastic adult stem cells routinely used in medical therapies, for example in bone marrow transplantation. Stem cells can now be artificially grown and transformed (differentiated) into specialized cells types with characteristics consistent with cells of various tissues such as muscles or nerves through cell culture. Embryonic cell lines and autologous embryonic stem cells generated through therapeutic cloning have also been proposed as promising candidates for future therapies.

Properties -

The classical definition of stem cell requires that it possess two properties :

1. **Self-renewal** : The ability to go through numerous cycles of cell division while maintaining the undifferentiated state.
2. **Potency** : The capacity to differentiate into specialized cell types. In the strictest sense, this requires stem cells to be either totipotent or pluripotent - to be able to give rise to any mature cell type, although multipotent or unipotent

progenitor cells are sometimes renamed to as stem cells. A part from this it is said that stem cell function is regulated in a feed back mechanism.

Potency definitions -

Pluripotent, embryonic stem cells originates as inner cell mass (ICM) cells within a blastocyst. These stem cells can become any tissue in the body, excluding a placenta. Only cells from an either stage of the embryo, known as the morula, are totipotent, able to become all tissues in the body and the extraembryonic placenta.

Human embryonic stem cells :

- A. Cell colonies that are not yet differentiated.
- B. Nerve cell.

Potency specifies the differentiation potential (the potential to differentiate into different cell types) of the stem cell.

1. **Totipotent** : Stem cells can differentiate into embryonic and extraembryonic cell types.
2. **Pluripotent** : Stem cells are the descendants of totipotent cells and can differentiate into nearly all cells, i.e. cells derived from any of three germ layers.
3. **Multipotent** : Stem cells can differentiate into a number of cells, but only those of a closely related family of the cells.
4. **Oligopotent** : Stem cells can differentiate into only a few cells, such as lymphoid or myeloid stem cells.

2023

ब
हा
र
सी
य

७९

Identification of stem cells -

Although there is no complete agreement among scientists of how to identify stem cells, most tests are based on making sure that stem cells are undifferentiated and capable of self-renewal. Tests are often conducted in the laboratory to check for these properties.

One way to identify stem cells in a lab, and the standard procedure for testing bone marrow or haematopoietic stem cell (HSC), is by transplanting one cell to save an individual without HSCs. If the stem cells produce new blood and immune cells, it demonstrates its potency.

Research with stem cells -

Scientists and researchers are interested in stem cells for several reasons. Although stem cells do not serve any one function, many have the capacity to serve any function after they are instructed to specialize. Every cell in the body, for example, is derived from first few stem cells formed in the early stages of embryological development. Therefore, stem cells extracted from embryos can be induced to become

any desired cell type. This property makes stem cells powerful although to regenerate damaged tissue under the right conditions.

General Scientific discovery -

Stem cell research is also useful for learning about human development. Undifferentiated stem cells eventually differentiate partly because a particular gene is turned on or off. Stem cell researchers may help to clarify the role that genes plays in determining what genetic traits or mutations we receive. Cancer and other birth defects are also affected by abnormal cell division and differentiation. New therapies for diseases may be developed if we better understand how these agents attack human body.

Another reasons why stem cell research is being pursued is to develop new drug, scientists could measure a drug's effect on healthy normal tissue by testing the drug on tissue grown from stem cells rather than testing the drug on human volunteers.

PLEASURE

Pure pleasure,
Give up leisure
Get pure pleasure....
Plan the work
Run with the time
Second by second
You progress fine....

Disturbs may be there
Take their care
Success will be yours
If you correct more....
Get pure pleasure
Work more and more
Have a strong desire
To give up leisure....

Pankaj H. Bhosale, B.A-II

**Informative
Article (Science)**



GENTICALLY MODIFIED CROPS

Miss. Dongare Priyanka Shankar / B.Sc.II

The regulation of genetic engineering concerns the approaches taken by government to assess and manage the risks associated with the development and release of genetically modified crops.

Genetically modified crops are plants, the DNA of which has been modified using genetic engineering techniques to resist pests & agents causing harm to plants & to improve the growth of these plants to assist in farmer's efficiency. Genetic engineering techniques are much more precise than mutagenesis where an organism is exposed to radiation or chemicals to create a non-specific but stable change. GM crops also are involved in controversies over GM food with respect to whether food produced from GM crops is safe & whether GM crops are needed to address the world's food needs.

Gene flow in plants

Scientist first discovered that DNA naturally transfers between organisms in 1946. It is now known that there are several natural mechanisms for flow of genes (horizontal gene transfer) and these occur in nature on a large scale-for example, it is a major mechanism for antibiotic resistance in pathogenic bacteria, and it occurs between plant sps. This is facilitated by transposons, retrotransposons, proviruses and other mobile genetic elements that naturally translocate to new sites in a genome. They often move to new species over an evolutionary time scale and play a major role in dynamic changes to chromosomes during evolution.

२०१३
**ब
ह
उ
स
ी
य**
८१

History

The first genetically modified plant was produced in 1982, using an antibiotic-resistant tobacco plant. The first field trials of genetically engineered plants occurred in France & the USA in 1986, when tobacco plants were engineered to be resistant to herbicides. In 1987, Plant Genetic Systems, founded by Marc Van Montagu and Jeff Schell, was the first company to develop genetically engineered plants with insect tolerance by expressing genes encoding for insecticidal proteins from *Bacillus thuringiensis* (Bt). The first genetically modified crop approved for sale in the U.S. in 1994, was the FlavrSavr tomato, which had a longer shelf life.

Methods

A genetically engineered plant is generated in a laboratory by altering its genetic makeup. This is usually done by adding one or more genes to a plant's genome using genetic engineering techniques. Most genetically modified plants are generated by the biolistic method or by *Agrobacterium tumefaciens* mediated transformation. Plant scientists, backed by results of modern comprehensive profiling of crop composition, point out that crops modified using GM techniques are less likely to have intended changes than are conventionally bred crops. In research tobacco is most genetically modified plants due to well developed transformation methods, easy propagation and well studied genomes.

It serve as model organisms for other plant SPS.

In the biolistic method, DNA is bound to tiny particles of gold or tungsten which are subsequently shot into plant tissue or single plant cells under high pressure. The accelerated particles penetrate both the cell wall & membranes. The DNA separates from the metal & is integrated into plant genome inside the nucleus. This method has been applied successfully for many cultivated crops.

Business of GM crops

Players in agriculture business markets include seed companies, agrochemical companies, farmers, universities that develop new crops & whose agricultural extensions advise farmers on best practices. According to the International service for the Acquisition of Agri-Biotech Applications, in 2010 approximately 15 million farmers grew biotech crops in 29 countries.

Uses, actual and proposed

GM crops grown today have been modified with traits intended to provide benefit to farmers, consumers or industry. These traits include improved shelf life, disease resistance, stress resistance, herbicide & pest resistance. Production of useful goods such as biofuel or drugs and ability to absorb toxins for use in bioremediation of pollution.

Due to high regulatory and research costs the majority of GM crops in agriculture consist of commodity crops such as soybean, maize, cotton & rapeseed.

What feeds what we eat

As the demand for livestock products increases worldwide, there is an increase in feed grain demand. GM crops have indirectly benefited livestock production by creating a larger grain output & surplus. Most

farmers prefer a corn grain & soyabean meal in their feeds for nutritional value. GM feeds show no difference in digestability, feed intake, milk production, feed efficiency & live animal weight gain compared to conventional crops.

Extent of worldwide use of GM crops

| Country | 2010-planted area (million hectares) | 2009 Agriculture area | % of GM crops | Biotech crops |
|---------------|--------------------------------------|-----------------------|---------------|-----------------------------|
| USA | 66.8 | 403 | 16.56 % | Soyabean, Cotton, Sugarbeet |
| Brazil | 25.4 | 265 | 9.60 % | Soyabean, Cotton |
| India | 9.4 | 180 | 5.22 % | Cotton |
| Rest of World | 14.7 | 3,883 | 0.38 % | - |

Examples of genetically modified crops (Data - 2009/2010)

| Crop | Properties of the genetically modified variety | Modification | % modified in world |
|-----------|--|--|---------------------|
| Rapeseed | Resistance to herbicides, high laurate canola, oleic acid canola | New genes added | 21% |
| Maize | Pesticides in organic crop production, added enzyme alphaamylase, that converts starch into sugar to facilitate ethanol production | New genes, some from the bacterium <i>Bacillus thuringiensis</i> | 26% |
| Cotton | Kills susceptible insects pests | gene for 1 or more Bt crystal proteins transformed into plant genome | 49% |
| Sugarcane | Resistance to certain pesticides high sucrose content | New genes added/ transferred into plant genome | ---- |
| Soyabeans | Resistance to glyphosate make less saturated & fats Kills susceptible insect pests | Herbicide resistant gene taken from bacteria inserted into soyabean | 77 % |

२०१३

ब
ह
उ
स
य

८३

Managing emergence of resistance

One method of reducing resistance is the creation of non-Bt crop refuges to allow some nonresistant insects to survive and maintain a susceptible population. To reduce the change, an insect would become resistant to a Bt crop. The commercialization of transgenic cotton & maize in 1996 was accompanied with a management strategy to prevent insects from becoming resistant to Bt crops. The aim is to encourage a large population of pests so that any resistance genes that are recessive are greatly diluted within the population.

Regulation

The regulation of genetic

engineering concerns the approaches taken by governments to assess and manage the risks associated with the development and release of genetically modified crops.

Controversy

Critics have objected to GM crops per se on several grounds including ecological concerns & economic concerns raised by the fact that these organisms are subject to intellectual property law. GM crops also are involved in controversies over GM food with respect to whether food produced from GM crops is safe & whether GM crops are needed to address the world's food needs.

Difference Between You and I, What ?

Oh, people of the city,
Everyone knows,
I am cobbler by trade,
And tanner by trade
One of low castes and yet,
Within my heart
I meditate upon God
I am haunted day and
Night by the thought,
Of my low birth,
Society and deeds.
Oh God ! Lord of the
Universe
Oh life of my life,
forget me not,
I am ever they slave,

You are me and I am you
What is the difference,
Between us !
We are like gold and,
The bracelet or water
And the waves
If I did not commit any
Sins, Oh infinite Lord,
How would you have,
Acquired the name
Buddhang sarrang Gachhami
Radeemer of Sinner, ?
The servant is known,
By his God. And the Lord
and master,
Is known by his servant.

Prafull Bhiku Bodke
B.A.II

२०१३

ब
ह
उ
सी
य

८४

Research article
(Science)

STUDY OF ANTIANGIOGENIC ACTION OF EXTRACT OF SALIVARY GLANDS OF *PERIPLANETA AMERICANA*

Miss. Nalavade Varsha Vinayak / B.Sc.III

□
A complex carbo-hydrate may be in form of sulphated or non sulphated mucopolysaccharides or some form of protein from salivary gland might be playing important role in the antiangiogenesis. Therefore we can conclude that angiogenesis is highly significant evidently at 48,72 & 96 hrs as impared to remaining hrs.

Introduction :-

Angiogenesis is a physiological process of formation of new vessels originating as capillaries, sprouting from preexisting small vessels. Angiogenesis is important in tumor growth. A number of natural inhibitors have been identified that can block the formation of new blood vessels. (Folkman, 1990) This idea is now blossomed into very promising anticancer strategy and many angiogenic inhibitions have been developed that include antibodies developed against Growth factors, Thromboplastin, angiostatin, endostatin etc.

Much of the study on angiogenesis is carried out on mice, monkeys and other mammals.

Types of Angiogenesis:-

• Sprouting angiogenesis;-

Sprouting angiogenesis was the first identified form of angiogenesis. It occurs in several well-characterized stages. First, biological signals known as angiogenic growth factors activate receptors present on endothelial cells present in pre-existing blood vessels. Second, the activated endothelial cells begin to release enzymes called proteases that degrade the basement membrane to allow endothelial cells to escape from the original (parent) vessel walls. The endothelial cells then proliferate

२०२३

ब
ह
ड
सी
य

८५

into the surrounding matrix and form solid sprouts connecting neighboring vessels. As sprouts extend toward the source of the angiogenic stimulus, endothelial cells migrate in tandem, using adhesion molecules, the equivalent of cellular grappling hooks, called integrins. These sprouts then form loops to become a full-fledged vessel lumen as cells migrate to the site of angiogenesis.

• **Intussusceptive angiogenesis:-**

Intussusception, also known as splitting angiogenesis, was first observed in neonatal rats. In this type of vessel formation, the capillary wall extends into the lumen to split a single vessel in two. There are four phases of intussusceptive angiogenesis. First, the two opposing capillary walls establish a zone of contact. Second, the endothelial cell junctions are reorganized and the vessel bilayer is perforated to allow growth factors and cells to penetrate into the lumen. Third, a core is formed between the 2 new vessels at the zone of contact that is filled with pericytes and myofibroblasts. These cells begin laying collagen fibers into the core to provide an extracellular matrix for growth of the vessel lumen. Finally, the core is fleshed out with no alterations to the basic structure. Intussusception is important because it is a reorganization of existing cells. It allows a vast increase in the number of capillaries without a corresponding increase in

the number of endothelial cells. This is especially important in embryonic development as there are not enough resources to create a rich microvasculature with new cells every time a new vessel develops.

Mechanism of Angiogenesis:-

In molecular mechanism of angiogenesis, researchers have now determined six distinct steps involved with complex biological process. These are

1. Vasodilation, endothelial permeability and periendothelial support.
2. Endothelial cell proliferation and migration.
3. Lumen formation.
4. Endothelial cell survival.
5. Endothelial cell differentiation.
6. Vessel remodeling.

Material and Methods:-

- Chick embryo as an animal model

Experimental protocol:

- **Step-I: Incubation of Egg: -**

The fertilized eggs were cleaned and disinfected with 70% alcohol and divided in six groups. 48 hrs, 72 hrs and 96 hrs. The eggs were incubated in an aseptic incubator in vertical position such as blunt end of egg faced upward and was maintained at 38° c temperature and humidity at 70%.

- **Step-II: Experimental animal organ extract preparation:-**

Salivary gland extract was prepared in alcohol 20 mg of salivary gland of *P. americana* was homogenated in

1 ml of distilled water. Then 5ml cold alcohol is added in the homogenate and kept it at 10°C for 5 to 7 hrs centrifuged and evaporated the supernatant to remove alcohol. The residue was dissolved as per the dose in HBBS. For the dose administration Hanks Balanced salt solution (HBBS) is used as saline.

- **Step III: Method for Dose administration:-**
After designed period of incubation the eggs were cleaned with 70% alcohol. A small window was made at blunt end of each of the egg under aseptic conditions dose 1mg/ml of HBBS of salivary gland extract of *P. americana* were injected. The windows

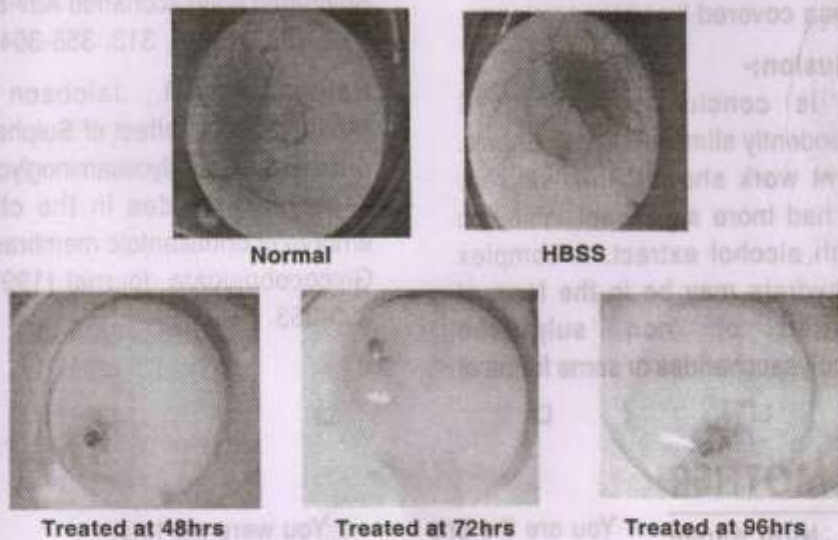
were sealed with surgical adhesive tape. All embryo exposures were conducted in proper sterilized conditions prescribed by window method.

Treatment of salivary gland extract was initiated as a single dose at different hrs of development and embryos were observed.

Eggs were opened in plate having 0.9% buffered Nad saline, to view the Chorioallantoic membrane for study.

Observation: -

Photograph showing development of CAM in chick embryo after 144 hrs.



of incubation

Figure I —VIII showing alteration in the angiogenesis CAM of chick embryo. Dose initiation at 48hrs., 72hrs., 96hrs., after final development of 144 hrs by salivary gland extract of *P.americana*

Fig I-Normal —Normal Angiogenesis in CAM of chick embryo after 144 hrs of development.

Fig II - Control (HBSS) - Figure shows increase in the angiogenesis than the normal

Fig III — (48hrs) 1mg/ml salivary gland alcohol extract- Figure shows reduction in the angiogenesis of CAM than normal and also reduction in number and area covered by viteline veins.

Fig IV -(72 hrs) 1mg/ml salivary gland alcohol extract - Figure shows reduction in the angiogenesis of CAM than normal and also reduction in number and area covered by viteline veins.

Fig V - (96 hrs) 1mg/ml salivary gland alcohol extract- Figure shows reduction in the angiogenesis of CAM than normal and also reduction in number and area covered by viteline veins.

Conclusion:-

It is concluded that HBSS independently stimulate angiogenesis. Present work showed that salivary gland had more significant inhibition through alcohol extract. A complex carbohydrate may be in the form of sulphated or non sulphated mucopolysaccharides or some forms of

proteins from salivary gland might be playing important role in the anti angiogenesis. Similar type of results were observed by Hahnenberger R. and Jakobson A.(1991). Therefore we can conclude that angiogenesis is influenced by salivary gland extract of *P. americana* inhibition of angiogenesis is highly significant evidently at 48, 72 and 96 hrs as compared to remaining hrs.

References-

- 1) Folkman 1975, In Tumar Angiogenesis (eds. Marme, D & Fuseing. N) 1-28.
- 2) Folkman J. (1990) "Control of angiogenesis by Heparin & other Sulphated polysaccharide Adv-Exp. Med. Biol (1980), 313, 355-364.
- 3) Hahneberger R., Jalobson A., "Antiangiogenic effect of Sulphated & nonsulphated glycosaminoglycans & polysaccharides in the chick embryo chorioallantoic membrane", Glycocobnjugate Journal (1991) : 350-353.

2023
 ब
 ह
 उ
 सी
 य
 ८८

MY MOTHER

Niraj Kanse
B.Com I



| | |
|-----------------------|-----------------------------------|
| You are the one | You were my tutor |
| Who is my teacher | You pray to the God |
| You are the one | To make my life longer |
| Who made my future | You worked hard |
| You taught me culture | And made me stronger |
| You made me soldier | It is you, only you & no one else |
| When I followed | Mother, my lovely "Mother". |
| the wrong path | |

Story

THE LION

Sayyam Machindra More / B.Sc.III

As days passed, the jungle turned into a mess. There were other animals who were wise and thoughtful. They contemplated the situation. Meeting of all animals was called.

In ancient time, there was a dense jungle on the upper parts of Sahyadri where in lived many animals. Samsher, a royal lion ruled the jungle with wit and might, and of course without courtiers. He was an adored King. He never killed anyone for sports. He never hunted cubs or dying animals. His territory was full with prey. He loved his kingdom for he was born and grew up among these sky-touching gigantic trees and colossal edges of mountains. He loved to drink wine red water of the river that danced through the ranges. It had quenched his thirst for so many years. After hunt or run, he used to sit in his heavenly den and rest peacefully.

One day he was after a deer his fond prey. He knew his prey was the most alert and watchful. Cautiously he strode the grassy field; his eyes were steady, claws ready to catch and tear. He gathered his strength in his paws and sportily jumped over in the field where that deer and his friends were grazing silently. However not that they were slipshod, they sensed danger and there was clamor. Each one ran directionless with life-in-hand alacrity. Samsher chased them breathlessly. That moment was ill-timed for Samsher as after making his blood effort, he could not even scratch a scanty scar on their skin. This is first time he could not make it. Was his strength weakening? He kept thinking. That day went without eating anything.

Incident made Samsher think of his future. He began to ponder over the matter for long time. Was he turning old? His strength was dropping like leaves fall dry and lifeless. He also began to remember his youthful days. His wife was hunted by a man when she was young. He raised his son Baban as carefully as a sheep did. However

2023

ब
ह
ड
स
य

८९

he left Samsher soon as he grew young and strong. Samsher advised him to stay hi this part of jungle as he would be ruler after him. He however wanted to go beyond the frontier and rule the world. Samsher soon left alone. He began to spend his time in darkness of the den. His hunger began to die. Rarely he was seen outside or chasing his fond prey.

The jungle was witnessing the change. Bears were first to notice this change. Then there was rumor that Samsher was fatally ill, his strength had withered and he would soon die. There were other animals who were adversaries to Samsher. So far Samsher had kept his opponents under his powerful thump. They felt that the showers of rainfall would soon come down. Kanan, a wolf was eyeing on this scene for a long time. He was archenemy. His dream to rule the jungle was not possible until this Samsher lived. And why couldn't he be King? He was powerful though not as much as Samsher. He was witty and cunning and knew all ways of jungle. Was it not true that even Shamsher took his advice? And now moment of realization of his dream was imminent. Soon the jungle was replete with the gossips. Yet no one dared to go inside Samsher's den.

As days passed, the jungle turned into a mess. There were other animals who were wise and thoughtful. They contemplated the situation. Meeting of all animals was held. Bears opinioned a jungle could not be left without a king. Pigs explained that the jungle was identified after who ruled it and if a jungle was without a lion, man would soon destroy it. Bahadur, a prudent elephant came out with a suggestion that it

Samsher could not look after the jungle, his son Babansher, should be called back as he was the rightful heir to the Kingship. Kanan interrupted that other animals should get a chance to prove them and how a deserter could be made a king of the jungle which he did not love. Kanan was ignored for many of them knew his intension. Long went talking and it was decided to ask Samsher himself to declare his successor. However, bears went in search of Babansher for they wanted him to come back before the situation would turn worse.

Here Kanan along with two of his friends planned to kill weak Samsher as it was possible now. They entered the den furtively at the time when Samsher was sleeping as he usually did when the son is beating the jungle. Yet Samsher was not an indolent King though the age had made him weak he was not vulnerable. He sensed the treacherous steps and woke up to welcome. Kanan said, "Long live our King!" and they circled him. Samsher roared, "Kanan I knew why are you here but till the last drop of my blood I will not let your dream come true" As he said so, they attacked him and injured. Samsher narrowly escaped and counterattacked one of them. There was terrible fight for long time. The blood crammed the den. Kanan made every attempt to slay him. Samsher fatally injured gave a final blow to Kanan in which Kanan got killed meanly. At last part of Sahyadri, Babansher received the message of his friends whereof he left to meet his father. When he arrived and entered the den, he saw dying flicker of life in his father's eyes which told him to look after his kingdom.

अनुक्रमः

| | | | |
|---------------------------------------|--------------------------|--------------------|----|
| १) संस्कृतं संस्कृतिश्रियाः । | कु.माधवी मुकुंद देशपांडे | कलायां तृतीय वर्षे | १३ |
| २) जयतु जयतु श्री स्वामी विवेकानंदः । | कु.झीनत शौकत मुलाणी | कलायां तृतीयवर्षे | १४ |
| ३) आगतं । आगतं । नैकं आगतम् । | कु.प्रीती जावा शिंदे | कलायां तृतीयवर्षे | १४ |

संस्कृतं संस्कृतिश्रियाः ।
जयतु जयतु श्री स्वामी विवेकानंदः ।
आगतं । आगतं । नैकं आगतम् ।

सहितः



संस्कृतं संस्कृतिश्रियाः ।

कु.माधवी मुकुंद देशपांडे / कलायां तृतीय वर्षे

□
मॅक्समूल्लर-मॅक्डोनेल-
लुडविग-कीथादयः विद्वानः
संस्कृतभाषया अत्यन्तं प्रभाविताः
अभवत् । अधुनाऽपि अमेरिका-
रुस-इंग्लैड प्रभृतिषु देशेषु
संस्कृतभाषाग्रन्थाः अनृद्यन्ते,
प्रचार्यन्ते, अभिनीयन्ते सन्मान्यन्ते
च । अत एव भाषेयं न केवलं
भारतस्य भाषा अपि तु
अन्तरराष्ट्रीय भाषाऽपि विद्यते ।
भाषैषा न अतिक्लिष्टा । एषा
भाषा सरला, सुलभा, सुमधुरा,
सुबोधा, सरसा, सुललिता च
वर्तते । इयं भाषा सर्वविधदोष-
शून्या । संस्कृतं हि संस्कृतिश्रिया ।

भारतस्य द्वे प्रतिष्ठे । संस्कृतं तथा संस्कृतिः । 'सत्यमेव जयते ।'
इति संस्कृतवाणी आदर्शरूपेण सर्वे परिगृहीता । नौ विभागे 'शं नो वरुणः',
जीवनविमानिगमे 'योगक्षेमं वहाम्यहम्' इति द्योतकानि वाक्यानि परिगृहीतानि ।
आकाशवाण्यां 'बहुजनसुखाय बहुजनहिताय' दूरदर्शने अपि च 'सत्यं शिवं
सुन्दरम्' इति संस्कृतवचनमेव आदर्शरूपेण विराजन्ते ।

वेदाः उपनिषदाः पुराणानि रामायणमहाभारतादयो भारतीय
संस्कृतिबोधकाः सर्वैः ग्रन्था संस्कृतेनैव सुरचिताः । यथा चीनदेशस्य राष्ट्रभाषा
चीनी, इंग्लंडदेशस्य आङ्ग्ली तथा हि भारतस्य भाषा अवश्यमेव भारती-
संस्कृतभाषा भवति । अधुना हिंदी विशेषकारणानुसारेण राष्ट्रभाषापदं नीता ।
तथापि अघिरात् गीर्वाणभाषा-देवभाषा अखिलभारतस्य राष्ट्रभाषापदं
प्राप्त्यति, इति अनेकेषां विदुषां दृढो विश्वासः । प्राचीनत्वाद्नेक भाषाणां
जननीभूता गीर्वाणभाषा भारतस्य राष्ट्रभाषा भूत्वा अस्मद्भारतगौरवम्
असंशयं लोके वर्धयिष्यति ।

□
मॅक्समूल्लर-मॅक्डोनेल-लुडविग-कीथादयः विद्वानः संस्कृतभाषया
अत्यन्तं प्रभाविताः अभवत् । अधुनाऽपि अमेरिका-रुस-इंग्लैड प्रभृतिषु
देशेषु संस्कृतभाषाग्रन्थाः अनृद्यन्ते, प्रचार्यन्ते, अभिनीयन्ते सन्मान्यन्ते च ।
अत एव भाषेयं न केवलं भारतस्य भाषा अपि तु अन्तरराष्ट्रीय भाषाऽपि
विद्यते । भाषैषा न अतिक्लिष्टा । एषा भाषा सरला, सुलभा, सुमधुरा,
सुबोधा, सरसा, सुललिता च वर्तते । इयं भाषा सर्वविधदोषशून्या । संस्कृतं
हि संस्कृतिश्रिया ।

२०१३

ब
ह
उ
री
य

९३

जयतु जयतु श्री स्वामी विवेकानंदः ।

जयतु जयतु श्री स्वामी विवेकानंदः ॥१॥

जगत्त्रयभूषितो वंदनीयस्त्वं
कृष्ण इव सत्यधर्मउद्धारकस्त्वं
जयतु जयतु श्री स्वामी विवेकानंदः ॥१॥

विश्वबंधुत्वसंस्थापकस्त्वं,
संसारे जीवसेवाकर्तारं त्वं हि,
हिंदुधर्मस्य संरक्षकस्त्वं,
जयतु जयतु श्री स्वामी विवेकानंदः ॥२॥

रक्षणकर्ता त्वं दीनदुःखितानां,
उद्धारकर्ता त्वं सर्व नारिणां,
दिशादर्शक त्वं हिन्दुजनानां
जयतु जयतु श्री स्वामी विवेकानंदः ॥३॥

रामकृष्णस्य सच्छिष्यस्त्वं,
भारतभूमौ सुपुत्रस्त्वं,
सत्यधर्मस्य पालकस्त्वं,
जयतु जयतु श्री स्वामी विवेकानंदः ॥४॥

पाश्चात्यदेशे धर्मपरिषदे
सभायां सिंहवत् गर्जयतः
हिन्दुधर्मस्य तत्त्वज्ञानं प्रस्कृतयतः
जयतु जयतु श्री स्वामी विवेकानंदः ॥५॥

संसारे क्षुब्धसागरजले दीपस्तंभवत्
विचारऊर्मिकल्लोले युवकानां जीवने
दीपशिखेव शाश्वत मार्गदर्शकस्त्वं
जयतु जयतु श्री स्वामी विवेकानंदः ॥६॥

बहुजनसुखाय च बहुजनहिताय
शिवभावनया जीवसेवां कुर्वन्तः
अमृतस्य पुत्राः ! उत्तिष्ठत । जाग्रत ।
प्राप्यं वरान् निबोधत । इति सनातन उपदेशकाः त्वं ।
जयतु जयतु श्री स्वामी विवेकानंदः ॥७॥

(श्री स्वामी विवेकानंदस्य
शतपञ्चाशः जन्मोत्सव निमित्तेन)

कु.झीनत शौकत मुलाणी
कलायां तृतीयवर्षे

आगतं । आगतं । नैकं आगतम् ।

पणवआनकगोमुखाः
शंखाः भेर्यः निनन्दन्ति
अस्माकं महाविद्यालये,
आगतं । आगतं । नैकं आगतम् ॥१॥

सर्वेऽपि जागरूकाः, सर्वेऽपि कार्यमग्नाः
सर्वे स्व स्व विभागे सुसज्जीकृताः ।
सर्वत्र सुशोभनम् । सर्वत्र नवकरणं ।
आगतं । आगतं । नैकं आगतम् ॥२॥

सर्वत्रऽपि संगणकीकरणाः ।
सर्वत्रऽपि अमलं विमलम् ।
सर्वेऽपि यतन्तु वक्तुं आंग्लभाषायां ।
आगतं । आगतं । नैकं आगतम् ॥३॥

उपरि हसन्ति परि
अंतरंगे तणावग्रस्ताः ।
अध्यापनकार्येऽपि न मग्न मानसः
आगतं । आगतं । नैकं आगतम् ॥४॥

अल्पं शयनं न मधुरं भोजनं
न कश्चित् अपि गृहं गमिष्यति,
सर्वेऽपि परस्परं कुपन्ति,
आगतं । आगतं । नैकं आगतम् ॥५॥

अनन्तरं नैकस्य सभासदाः आगताः ।
यत्र यत्र पश्यन्ति, तत्र तत्र शोभनं विमलं,
परीक्षणं कुर्वन्तः ते अतिथिसत्कारेण आनन्देन गताः ।
आगतं । आगतं । नैकं आगतम् ॥६॥

तदनन्तरं सर्वे शिथिलाः सन्ति,
सर्वत्र न शोभनं, न विमलं
भोजनस्य आनन्दं गृह्णन्ति, निद्रां अनुभूयन्ते ।
गतं । गतं । नैकं गतम् ।

कु.प्रीती आबा शिंदे
कलायां तृतीयवर्षे

२०२३

ब
हा
दु
सी
य

१४

आकाशमकरुण

७१

७२

००१

१०१

१०२

२०१

३०१

४०१

५०१

६०१

७०१

८०१

९०१

१००१

११०१

१२०१

१३०१

१४०१

१५०१

१६०१

१७०१

१८०१

१९०१

२००१

२१०१

२२०१

२३०१

२४०१

२५०१

२६०१

२७०१

२८०१

२९०१

३००१

३१०१

आकाशमकरुण

आकाशमकरुण

आकाशमकरुण

आकाशमकरुण

आकाशमकरुण

आकाशमकरुण

आकाशमकरुण

आकाशमकरुण

आकाशमकरुण

आकाशमकरुण

आकाशमकरुण

आकाशमकरुण

आकाशमकरुण

आकाशमकरुण

आकाशमकरुण

आकाशमकरुण

आकाशमकरुण

आकाशमकरुण

आकाशमकरुण

आकाशमकरुण

आकाशमकरुण

आकाशमकरुण

आकाशमकरुण

आकाशमकरुण

आकाशमकरुण

आकाशमकरुण

आकाशमकरुण

आकाशमकरुण

आकाशमकरुण

आकाशमकरुण

आकाशमकरुण

आकाशमकरुण

आकाशमकरुण

आकाशमकरुण

आकाशमकरुण

'तुम्ही काय करणार आहात'

यावर नव्हे

तर

'तुम्ही काय केले आहे'

यावर

जग तुमचे मुल्यमापन करते.

**अहवाल
विभाग**

विभागीय संपादिका

प्रा.कु.प्रतिभा चिकमठ

अनुक्रमणिका

| | |
|---|-----|
| १) जिमखाना विभाग | ९७ |
| २) राष्ट्रीय छात्रसेना | ९९ |
| ३) राष्ट्रीय सेवा योजना | १०० |
| ४) सांस्कृतिक विभाग | १०१ |
| ५) युवामहोत्सव विभाग | १०१ |
| ६) अग्रणी महाविद्यालय योजना | १०२ |
| ७) प्रसिद्धी विभाग | १०३ |
| ८) परीक्षा विभाग | १०४ |
| ९) विद्यार्थी कल्याण मंडळ | १०४ |
| १०) प्राध्यापक प्रबोधिनी | १०४ |
| ११) नॅक समिती | १०४ |
| १२) यशवंतराव चव्हाण महाराष्ट्र मुक्त विद्यापीठ, नाशिक | १०४ |
| १३) दूर शिक्षण विभाग | १०६ |
| १४) स्पर्धा परिक्षा मार्गदर्शन केंद्र | १०६ |
| १५) आविष्कार | १०६ |
| १६) मराठी विभाग | १०७ |
| १७) हिंदी विभाग | १०८ |
| १८) संस्कृत विभाग | १०९ |
| १९) इंग्रजी विभाग | १०९ |
| २०) इतिहास विभाग | ११० |
| २१) भूगोल विभाग | ११० |
| २२) अर्थशास्त्र विभाग | १११ |
| २३) राज्यशास्त्र विभाग | ११२ |
| २४) मानसशास्त्र विभाग | ११२ |
| २५) वाणिज्य व व्यवस्थापन विभाग | ११२ |
| २६) वनस्पतीशास्त्र विभाग | ११३ |
| २७) प्राणीशास्त्र-विभाग | ११३ |
| २८) रसायनशास्त्र विभाग | ११४ |
| २९) गणित विभाग | ११५ |
| ३०) संख्याशास्त्र विभाग | ११६ |
| ३१) सुक्ष्मजीवशास्त्र विभाग | ११६ |
| ३२) ग्रंथालय | ११७ |
| ३३) प्लेसमेंट सेल | ११८ |
| ३४) वैयक्तिक अहवाल सन २०१२-२०१३ | ११९ |

वरिष्ठ विभाग वार्षिक अहवाल सन २०१२-२०१३

जिमखाना विभाग

शैक्षणिक वर्ष २०१२-२०१३ मध्ये सिनिअर जिमखाना विभागाने विविध क्रीडा प्रकारात यश संपादन केले आहे. शिक्षणमहर्षी डॉ. बापूजी साळुंखे यांनी दिलेल्या चैतन्याचा मंत्र घेऊन आमचे खेळाडू आपल्या कर्तृत्वाचा ठसा मातीवर उमटवत गेले वर्षभर खेळाडूंनी गौरवशाली कामगिरी केली आहे. त्यांनी महाविद्यालयाचा व आमच्या संस्थेचा मान व सन्मान वाढविला आहे.

यशस्वी विद्यार्थ्यांचा सत्कार ही इतर विद्यार्थ्यांची खरी प्रेरणा असते. या प्रेरणेतूनच पुन्हा उधाचे नवे बहादूर खेळाडू उभे रहात असतात. आमच्या महाविद्यालयातील खेळाडूंनी या वर्षामध्ये झोनल, इंटर झोनल, विद्यापीठ, अखिल भारतीय आंतर विद्यापीठ स्पर्धेत पुढीलप्रमाणे यश मिळविले आहे.

१) शिवाजी विद्यापीठ संघात निवड झालेले विद्यार्थी :

१. ऋषिकेश अरनकल्ले - बी.ए. भाग १
अखिल भारतीय मल्लखांब स्पर्धेसाठी कुरुक्षेत्र येथे निवड.
२. विक्रम जगन्नाथ शिंदे - बी.एस्सी. भाग ३
अखिल भारतीय शूर्तींग स्पर्धेसाठी अमृतसर येथे निवड.
३. अभिजित मोहन साळुंखे - बी.ए. भाग २
अखिल भारतीय ज्युदो स्पर्धेसाठी पंजाब येथे निवड.
४. भिवा पांडुरंग सुळ - बी.कॉम. भाग २
अखिल भारतीय कुस्ती स्पर्धेसाठी संघात अमरावती येथे निवड.
५. गणेश अंकुश जाधव - बी.ए. भाग ३
अखिल भारतीय कबड्डी संघामध्ये चेन्नई येथे निवड.
६. प्रणित प्रदिप सुतार - बी.कॉम. भाग ३
अखिल भारतीय आर्चरी स्पर्धेसाठी अमृतसर येथे निवड.

७. कुणाल रविंद्र तावरे - बी.कॉम. भाग २
अखिल भारतीय आर्चरी स्पर्धेसाठी शिवाजी विद्यापीठ संघामध्ये निवड. (अमृतसर)
८. अमित प्रकाश म्हागडे - बी.ए. भाग १
अखिल भारतीय आर्चरी स्पर्धेसाठी शिवाजी विद्यापीठ संघामध्ये निवड (अमृतसर)
- २) इंटर झोनल स्पर्धेत यश मिळवलेले विद्यार्थी
१. पंकज घोडिराम माने बी. कॉम. भाग १
पॉवर लिफ्टिंगमध्ये शिवाजी विद्यापीठाच्या इंटर झोनल स्पर्धेत सिल्व्हर मेडल मिळाले.
२. समीर मधुकर साबळे बी.ए. भाग १
अखिल भारतीय अश्वमेघ स्पर्धेसाठी शिवाजी विद्यापीठ संघामध्ये एकत्रित सराव शिबीरासाठी निवड.
३. निलेश चंद्रकांत भोसले बी.कॉम. भाग २
झोनल स्पर्धेत द्वितीय क्रमांक (बुद्धिबळ) इंटर झोनल स्पर्धेसाठी निवड.
४. सुरज बजरंग पवार बी.कॉम. भाग ३
झोनल बुद्धिबळ स्पर्धेत प्रथम क्रमांक इंटर झोनल स्पर्धेसाठी निवड.
५. सागर सयाजी घोरपडे बी.ए. भाग २
इंटर झोनल मल्लखांब स्पर्धेत महाविद्यालयात जनरल चॅम्पियनशीप प्रथम
६. सागर मुरलीधर घोरपडे बी.ए. भाग २
इंटर झोनल मल्लखांब स्पर्धेत महाविद्यालयात जनरल चॅम्पियनशीप मिळवून देण्यात मोलाचे सहकार्य.
७. अल्ताफ तबरक शेख बी.कॉम. भाग २
इंटर झोनल मल्लखांब स्पर्धेत महाविद्यालयात जनरल चॅम्पियनशीप मिळवून देण्यात मोलाचे सहकार्य.
८. परशुराम सिधाप्पा वसमनी बी.ए. भाग २
इंटर झोनल मल्लखांब स्पर्धेत महाविद्यालयात जनरल चॅम्पियनशीप मिळवून देण्यात मोलाचे सहकार्य.

२०१३

ब
ह
ा
ड
ी
य

१७

९. तृप्ती श्यामराव शिंदे बी.ए. भाग १
इंटर झोनल आर्चरीमध्ये कपाऊंड स्पर्धेत प्रकारात
प्रथम क्रमांक.

१०. आकाश अर्जुन बेंद्रे बी.एस्सी. भाग ३
इंटर झोनल शुटिंग स्पर्धेत तृतीय क्रमांक.

३) झोनल स्पर्धेत यश मिळवलेले विद्यार्थी

झोनल कबड्डी स्पर्धेत प्रथम क्रमांक (शिवाजी
विद्यापीठ अंतर्गत घेण्यात येणाऱ्या सातारा विभागीय
कबड्डी स्पर्धेत प्रथम क्रमांक) मिळविणाऱ्या खेळाडूंची
नावे खालील प्रमाणे

१. अभिजित मोरे (कर्णधार)
२. गणेश जाधव (उपकर्णधार)
३. हरीश साबळे
४. सुरज साबळे
५. गणेश साबळे
६. समीर साबळे
७. किशोर बनकर
८. विकी बेलकर
९. सागर पवार
१०. अमोल आवळे
११. परशुराम वसमनी
१२. सागर साबळे

शिवाजी विद्यापीठ अंतर्गत घेण्यात येणाऱ्या
सातारा विभागीय स्पर्धेत द्वितीय क्रमांक मिळविणारा
जलतरण मधील खेळाडू

4 X 100 m Free Style II

4 X 100 m Midlay Realy II

१. महेश ढाणे
२. शरद मारुती कदम
३. जीवन जालिंदर निकम
४. अमित राजेंद्र शिंदे
५. किरण विलास बोडके
६. ऋषिकेश संजय शिंदे

शिवाजी विद्यापीठ अंतर्गत सातारा विभागीय
बुद्धिबळ स्पर्धेत महाविद्यालयाने जनरल चॅम्पियनशिप
मिळवले विजयी खेळाडू खालीलप्रमाणे

१. सुरज बजरंग पवार
२. आदित्य राजन चिकणे
३. निलेश चंद्रकांत भोसले
४. शाहरुख इस्माईल शेख

शिवाजी विद्यापीठ अंतर्गत सातारा विभागीय
हॅण्डबॉल स्पर्धेत महाविद्यालयाने तृतीय क्रमांक
मिळवला. खालील खेळाडूंची इंटर झोनल स्पर्धेसाठी
निवड करण्यात आली ते खेळाडू

१. रोहित आवळकर (कर्णधार)
२. निलेश भोसले (उपकर्णधार)
३. अर्जिंक्य आवारे
४. जयराम राटोड
५. ओंकार इंगवले
६. भगवान कदम
७. संजय वायदंडे
८. सचिन घाडगे
९. रूपेश दानवले
१०. मोहसीन शेख
११. परशुराम वसमनी
१२. सोमनाथ जाधव

शिवाजी विद्यापीठ अंतर्गत सातारा विभागीय
कुस्ती स्पर्धेतील यश मिळवून इंटर झोनल स्पर्धेसाठी
निवड झालेले खेळाडू

१. नागेश तुळशीदास शेलार
२. हणमंत खताळ

शिवाजी विद्यापीठ अंतर्गत गोळाफेक स्पर्धेत द्वितीय
मिळविणारी महाविद्यालयातील एकमेव महिला खेळाडू

१. नम्रता राजेंद्र यादव (बी.कॉम. भाग १)

४) विशेष प्राधान्य मिळवलेले विद्यार्थी

जिल्हास्तरीय क्रॉसकंट्री स्पर्धेत प्रथम क्रमांक

१. जाधव तेजस दशरथ
२. अमोल श्रीरंग कांबळे

६६ की.ग्रॅ. वजनी गटात सुवर्णपदक विजेता आग्रा
येथे झालेल्या नॅशनल स्पर्धेसाठी ज्युदो स्पर्धेत निवड
१. अभिजित साळुंखे

याशिवाय शिवाजी विद्यापीठ अंतर्गत घेण्यात
येणाऱ्या विभागीय आणि आंतर विभागीय क्रीडा
प्रकारात महाविद्यालयाचा समावेश होता. त्यामध्ये
टेबल टेनिस, बॅडमिंटन, क्रॉसकंट्री, क्रिकेट, फुटबॉल,
स्वॉफ्टबॉल, बॉक्सिंग यासारख्या सांघिक आणि
वैयक्तिक क्रीडा प्रकारात विद्यार्थ्यांचा सहभाग होता.

२०१३

ब
ह
र
ु
री
य

१८

यामध्ये महाविद्यालयाचे प्राचार्य डॉ. आर.व्ही. शेजवळ यांचे वेळोवेळी मार्गदर्शन लाभले. तसेच जिमखाना सदस्य प्रा. आर.जी पाटील, प्रा.आर.आर. गायकवाड, प्रा.डी.जी. साळुंखे, प्रा. एस.एम. मेस्त्री यांचे नेहमीच सहकार्य लाभले. तसेच महाविद्यालयातील प्राध्यापक बंधुभगिनी व प्रशासकीय कर्मचारी वर्गाचे सहकार्य लाभले. महाविद्यालयातील अटॅण्डट श्री. विजय गायकवाड यांनी आमच्या गुणवंत खेळाडूंच्या कौतुकासाठी वर्षभर फलक लेखन केले याबद्दल त्यांचे आभार. आम्ही मानत आहोत. या सर्वांच्या सहकार्यामुळेच महाविद्यालयाचा जिमखाना विभाग क्रीडा प्रकारात यश मिळवत आहे.

प्रा.व्ही.ए. जाधव
फिजीकल डायरेक्टर

राष्ट्रीय छात्रसेना

आपल्या महाविद्यालयाची एन.सी.सी. कंपनी कोल्हापूर ग्रुप मध्ये २२ महाराष्ट्र बटालियन एन.सी.सी. सातारा यांच्या कक्षेत काम करते. या कंपनीमध्ये एक ऑफिसर, १०५ छात्रसैनिक आहेत. महाविद्यालयात खालील उपक्रम राबविण्यात आले.

१) आर्मी अॅटॅचमेंट कॅम्प, अहमदनगर :

१ डिसेंबर ते १५ डिसेंबर २०१२ या कॅम्पमध्ये ज्यु. अंडर ऑफिसर अर्जिंक्य आवारे सी.क्यु. एम.एच. अल्ताफ शेख, कॅडेट महेश शिंदे, कॅडेट आवळे अमोल, कॅडेट प्रमोद इंगळे यांनी सहभाग घेतला व क्रॉस कंट्री स्पर्धेमध्ये अल्ताफ शेख व अमोल आवळे यांनी प्रथम क्रमांक मिळविला.

२) राष्ट्रीय एकात्मता शिबीर, पांचगणी :

१२ मे २०१२ ते २३ मे २०१२ या दरम्यान झालेल्या शिबीरात ज्युनिअर अंडर ऑफिसर संग्राम देशमुख व सी.क्यु.एम.एच. अर्जिंक्य आवारे यांनी सहभाग घेतला होता तसेच या शिबीरात रस्सीखेच या खेळाचे प्रतिनिधीत्व संग्राम देशमुख याने केले होते व त्यात त्याने बटालियनला प्रथम क्रमांक प्राप्त करून दिला.

३) वार्षिक प्रशिक्षण शिबीर, महागाव :

१ ऑगस्ट २०१२ ते १० ऑगस्ट २०१२ या दरम्यान झालेल्या शिबीराचे नेतृत्व सिनीअर अंडर ऑफिसर गौरव गाडे याने केले होते. व या शिबीरात पूर्ण टीमला ड्रील कॉम्पीटीशन मध्ये तृतीय क्रमांक मिळाला होता. या शिबीरात २९ छात्र सैनिकांनी सहभाग घेतला होता.

४) वार्षिक प्रशिक्षण शिबीर, पांढरपाणी :

१९ नोव्हें. २०१२ ते २० नोव्हें. २०१२ या दरम्यान झालेल्या शिबीराचे नेतृत्व सार्जंट मगर प्रशांत याने केले होते. व या शिबीरामध्ये १२ छात्र सैनिकांनी भाग घेतला होता.

५) वार्षिक प्रशिक्षण शिबीर, महागाव :

२ जानेवारी २०१३ ते ११ जानेवारी २०१३ या दरम्यान झालेल्या शिबीराचे नेतृत्व सार्जंट माने निखिल याने केले होते. व या शिबीरामध्ये पूर्ण टीमला ड्रील कॉम्पीटीशनमध्ये प्रथम क्रमांक प्राप्त झाला होता. या शिबीरात २८ छात्र सैनिकांनी सहभाग घेतला होता.

६) वार्षिक प्रशिक्षण शिबीर, महागाव :

१४ जानेवारी २०१३ ते २३ जानेवारी २०१३ या दरम्यान झालेल्या शिबीराचे नेतृत्व कार्पोरल जाधव गौरव याने केले होते व त्याला 'रायफल शुटींग' या स्पर्धेत प्रथम क्रमांक प्राप्त झाला. या शिबीरात १८ छात्र सैनिकांनी सहभाग घेतला.

सामाजिक उपक्रम :

- १) 'स्टे अलाईव्ह, डोन्ट ड्रीक अॅण्ड ड्राईव्ह' रॅली दि.१५ सप्टें.२०१२.
- २) ९ ऑगस्ट २०१२ रोजी आपल्या २७ एन.सी.सी. छात्र सैनिकांनी रक्तदान केले होते.
- ३) ६ जानेवारी २०१३ रोजी 'मातोश्री वृद्धाश्रम, महागाव' या ठिकाणी एन.सी.सी. छात्र सैनिकांनी वृक्षारोपण केले.
- ४) दैनिक सकाळ मार्फत आयोजित 'अर्जिंक्यतारा दुर्ग स्वच्छता मोहीमेत' आपल्या महाविद्यालयाच्या माननीय प्राचार्यांच्या समवेत सर्व प्राध्यापक,

२०१३

ब
हा
र
ु
सी
य

१९

प्रशासकीय सेवक यांच्यासह एन.सी.सी. छात्र सैनिकांनी सहभाग घेतला होता.

या वर्षी 'बी' प्रमाणपत्र परीक्षा २० जानेवारी २०१३ रोजी महागाव या ठिकाणी पार पडली. तसेच 'सी' प्रमाणपत्र परीक्षा १७ फेब्रुवारी २०१३ रोजी कराड या ठिकाणी पार पडली.

एन.सी.सी. प्रथम वर्षातील बेस्ट कॅडेट म्हणून घोंदवड संकेत याला मेजर धनश्री सावंत पुरस्कार प्रदान करण्यात आला.

या वर्षी आमच्या एन.सी.सी. च्या विविध कार्यक्रमांसाठी कमांडींग ऑफिसर कर्नल रमेश भड व सातारा मिलिट्री कॅन्टीनचे व्यवस्थापक कर्नल वी.एस. पवार यांनी भेट दिली आहे.

शिस्तबद्ध नियमित व होतकरू कॅडेटमुळे एन.सी.सी. कंपनीची बटालियनमध्ये चांगली प्रतिमा निर्माण झाली आहे. या उपक्रमासाठी आम्हाला बटालियनमधून कमांडींग ऑफिसर कर्नल रमेश भड व अॅडमिनिस्ट्रेटिव्ह ऑफिसर कर्नल हेमंत जाधव यांचे नेहमी मार्गदर्शन व सहकार्य मिळत आहे.

एन.सी.सी.चे सर्व उपक्रम उत्कृष्ट व यशस्वीरीत्या पार पाडण्यासाठी आमच्या सर्व छात्रसैनिकांचा मोलाचा वाटा आहे. त्यामध्ये सिनिअर अंडर ऑफिसर गाडे गौरव अरूण, ज्युनिअर अंडर ऑफिसर देशमुख संग्राम व शेख अल्ताफ आणि एन.सी.सी. विभागाचे सेवक श्री. विवेक कुलकर्णी यांचे विशेष सहकार्य असते. या सर्व उपक्रमांचे प्रेरणास्थान महाविद्यालयाचे प्राचार्य डॉ. आर.व्ही. शेजवळ यांचे मार्गदर्शन व सहकार्य एन.सी.सी. विभागाला नेहमी लाभले आहे.

कॅप्टन डॉ. महेश गायकवाड
कंपनी कमांडर

राष्ट्रीय सेवा योजना

नियमित कार्यक्रम :

राष्ट्रीय सेवा योजना विभागाचा उद्घाटन समारंभ दि. ३० ऑगस्ट २०१२ रोजी मा. राजेंद्र चोरगे, संस्थापक बालाजी चॅरीटेबल ट्रस्ट, सातारा

व महाविद्यालयाचे प्राचार्य आर.व्ही. शेजवळयांच्या अध्यक्षतेखाली उपस्थितीत पार पडला या वेळी मा. चोरगे यांनी आदर्श स्वयंसेवक तीन मुली व तीन मुलांना बक्षीसाचे वितरण केले. दि. ९ ऑगस्ट २०१२ रोजी महाविद्यालयात रक्तदान शिबीराचे आयोजन करणेत आले. यामध्ये २५ विद्यार्थ्यांनी रक्तदान केले. दि. ०२.०८.२०१२ रोजी मुलांच्याकडून जमविलेल्या निधीतून विविध बटालीयन मधील सीमेवर लढणाऱ्या विविध सैनिकांना पोस्टाने राख्या पाठविल्या व शास्दाश्रम जकातवाडी येथे १२५ विद्यार्थ्यांना राख्या बांधल्या. सर्व विद्यार्थ्यांना खाऊ वाटप केले. दि. ५.९.२०१२ रोजी महाविद्यालयात शिक्षक दिन साजरा केला व महाविद्यालयातील प्राध्यापकांचा स्वयंसेवकांनी सत्कार केला. दिनांक २ ऑक्टोबर गांधी जयंती दिवशी ज्येष्ठ नागरिक संघ सातारा यांच्या २१व्या वर्धापनदिनी १० स्वयंसेवकांनी ज्येष्ठ नागरीकांना चहापान त्याचप्रमाणे आधार देण्याचे काम केले. दि. ६ ऑक्टोबर २०१२ रोजी कॉलेज परीसरातील स्वच्छता व कुंड्यातील तणनिर्मुलनाचे कार्य केले. दि. ३ फेब्रुवारी २०१३ रोजी एन.एस.एस.विभागामार्फत एक दिवशीय स्वच्छता कॅम्प अर्जिक्यतारा किल्ला येथे आयोजित केला.

दि. ७ ते १६ जून २०१२ या कालावधीत कृषी विद्यापीठ राहुरी येथे आयोजित राज्यस्तरीय आपत्कालीन व्यवस्थापन प्रशिक्षण शिबीरामध्ये एक स्वयंसेवक त्याचप्रमाणे विद्यापीठस्तरीय विशेष श्रम संस्कार शिबीर दि. २४ नोव्हेंबर ते ३१ नोव्हेंबर या कालावधीत अतीत जि. सातारा येथे दोन स्वयंसेविका सहभागी झालेल्या.

जागतिक एड्स दिना निमित्त जनजागृती रॅली दि. १ डिसेंबर २०१२ रोजी जिल्हा रुग्णालय सातारा येथे आयोजित रॅलीमध्ये स्वयंसेवक सहभागी झाले. सेवक सामाजिक सांस्कृतिक क्रिडा मंडळ सातारा आयोजित सहकार शोभायात्रेमध्ये स्वयंसेवक व स्वयंसेविका सहभागी झाले.

महाविद्यालयाच्या राष्ट्रीय सेवा योजनेचे विशेष श्रम संस्कार शिबीर दि. २२.१२.२०१२ ते २८.१२.२०१२ या कालावधीत मौजे साबळेवाडी ता.जि. सातारा येथे आयोजित केले होते. शिबीरास विभागातील १२५ विद्यार्थी व ५ प्राध्यापक, ३ शिक्षकेतर कर्मचारी सहभागी झाले होते. शिबीरामध्ये ग्रामस्वच्छता, शौचालयासाठी खड्डे काढणे, नाला काढणे, रस्ता तयार करणे, मंदिर परिसर स्वच्छता, वृक्षारोपणासाठी खड्डे काढणे, वनराई बंधारा इत्यादी कामे केली. त्याचप्रमाणे पशुचिकित्सा शिबीर, आरोग्यशिबीर उद्बोधनपर व्याख्याने करमणुकीचे कार्यक्रम पार पाडण्यात आले.

वरील सर्व उपक्रम राबविणेसाठी प्रा.डॉ.बी.डी. सगरे, प्रा.कु.पी.सी. चिकमठ, प्रा.ए.एम. कस्तुरे व प्रा.व्ही.एस. पाटील यांचे मोलाचे सहकार्य लाभले.

प्रा.पी.एस. जाधव
कार्यक्रम अधिकारी

सांस्कृतिक विभाग

- १) दिनांक २६ जून २०१२ रोजी छत्रपती शाहू महाराज जयंती निमित्त प्रतिमापूजन व प्रा.आर.आर. गायकवाड यांचे व्याख्यान.
- २) दिनांक ०८ ऑगस्ट २०१२ रोजी शिक्षणमहर्षी डॉ. बापूजी साळुंखे पुण्यतिथी निमित्त प्रतिमापूजन व प्रा. बाळासाहेब जगताप यांचे व्याख्यान.
- ३) दिनांक ०५ सप्टेंबर २०१२ रोजी शिक्षक दिनानिमित्त गुणवंत प्राध्यापक सत्कार कार्यक्रमाचे आयोजन, प्रमुख पाहुणे मा. शंकर सारडा (ज्येष्ठ साहित्यिक) सातारा.
- ४) दिनांक ०२ ऑक्टोबर २०१२ महात्मा गांधी व लालबहादूर शास्त्री जयंतीनिमित्त प्रतिमापूजन प्रशासकीय सेवक श्री. उबाळे व श्री. लाड यांच्या हस्ते प्रतिमा पूजन.
- ५) दिनांक ११ ऑक्टोबर २०१२ रोजी महाविद्यालयीन कलाकारांच्या हस्ते सांस्कृतिक विभागाचे उद्घाटन.

६) दिनांक ०६ डिसें. २०१२ रोजी डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर पुण्यतिथीनिमित्त प्रतिमापूजन.

७) दिनांक ०३ जानेवारी २०१३ रोजी सावित्रीबाई फुले जयंतीनिमित्त प्रतिमापूजन व प्रा.डॉ.सौ. शैलजा माने यांचे व्याख्यान.

८) दिनांक १२ जानेवारी २०१३ ते १९ जानेवारी २०१३ या कालावधीत 'स्वामी विवेकानंद जयंती सप्ताह' आयोजन, यामध्ये विविध विषयावरील व्याख्याने आयोजित केली गेली.

९) दिनांक १६ जानेवारी २०१३ रोजी "पारंपारिक दिन" आयोजित केला गेला.

१०) दिनांक ०७ फेब्रुवारी २०१३ रोजी गुणवंत विद्यार्थी सत्कार (सी.आर.) समारंभाचे आयोजन.

११) दिनांक १९ फेब्रुवारी २०१३ रोजी छत्रपती शिवाजी महाराज जयंती निमित्त प्रतिमापूजन व दि. २० फेब्रुवारी २०१३ रोजी प्रा. दिपक जाधव यांचे व्याख्यान आयोजित केले गेले.

१२) दिनांक ११ एप्रिल २०१३ रोजी महात्मा फुले जयंती निमित्त प्रतिमापूजन.

१३) दिनांक १४ एप्रिल २०१३ रोजी डॉ. आंबेडकर जयंतीनिमित्त प्रतिमापूजन.

वरील सर्व कार्यक्रम यशस्वी होणेसाठी महाविद्यालयाचे प्राचार्य डॉ. आर.व्ही. शेजवळ यांचे मार्गदर्शन व कमिटी सदस्य प्रा.कु.पी.सी.चिकमठ व प्रा.डी.व्ही. रुपनवर यांचे सहकार्य लाभले.

प्रा.एल.एम. मेस्त्री
सांस्कृतिक विभाग प्रमुख

युवामहोत्सव विभाग

शैक्षणिक वर्ष २०१२-१३ या कालावधीत शिवाजी विद्यापीठ आयोजित युवा महोत्सवामध्ये ३२वा जिल्हास्तरीय युवा महोत्सव दि. १ ऑक्टोबर २०१२ रोजी प्रा. संभाजीराव कदम महाविद्यालय, देऊर येथे संपन्न झाला. या महोत्सवामध्ये महाविद्यालयातील १६ विद्यार्थी व ११ विद्यार्थिनी

२०१३

ब
हा
ड
सी
य

१०१

यांनी विविध कला प्रकारात सहभाग घेतला. जिल्हास्तरीय पातळीवर मुकनाट्य व लघुनाटिका या कला प्रकारांना अनुक्रमे तृतीय क्रमांक मिळाला. पुढे याच कला प्रकारांची इचलकरंजी येथे मध्यवर्ती युवा महोत्सवामध्ये निवड झाली. तेथेही सादरीकरण करण्यात आले. युवा महोत्सवामधील सर्वच सदस्यांना तसेच विद्यार्थ्यांना महाविद्यालयाचे प्राचार्य डॉ. राजेंद्र शेजवळ यांचे मार्गदर्शन लाभले. प्रा.डी.जी. साळुंखे, प्रा. मनोज जाधव, प्रा. श्रीमती मयुरा राजेभोसले, प्रा. मेस्त्री तसेच प्रा. मदने यांचे सहकार्य लाभले.

प्रा. बाळासाहेब जगताप
चेअरमन

निबंध, वक्तृत्व व वादविवाद स्पर्धा

या शैक्षणिक वर्षामध्ये यशवंतराव चव्हाण सायन्स कॉलेज कराड यांनी आयोजित केलेल्या वक्तृत्व स्पर्धेसाठी महाविद्यालयातील विद्यार्थी - जाधव किशोर मारुती व कु. भोसले स्मीता प्रकाश बी.कॉम. भाग २ यांनी सहभाग घेतला.

श्री. स्वामी विवेकानंद केंद्र - कन्याकुमारी, शाखा सातारा व लाल बहादूर शास्त्री महाविद्यालय सातारा यांच्या संयुक्त विद्यमाने 'युगनायक' या पुस्तकाच्या आधारावर ५० मार्कांची लेखी परीक्षा घेण्यात आली. या परीक्षेमध्ये प्रथम तीन क्रमांक पुढीलप्रमाणे-

- १) प्रथम : श्री. गाडे गौरव अरुण, बी.ए.१
- २) द्वितीय : श्री.कुलकर्णी अभय सुधीर,
१२वी सायन्स
- ३) तृतीय : कु. अहिरे अश्विनी अरुण, बी.ए. ३

श्री. स्वामी विवेकानंद शिक्षण संस्था, कोल्हापूर द्वारा आयोजित शिक्षण महर्षी डॉ. बापूजी साळुंखे निबंध वक्तृत्व व चित्रकला स्पर्धा महाविद्यालयीन स्तरावर दि. १७.०१.२०१३ रोजी आयोजित करण्यात आल्या होत्या. त्यामध्ये प्रथम तीन क्रमांक काढण्यात आले. त्यातील प्रथम दोन विजेत्या

क्रमांकाना विभागीय स्तरावरील स्पर्धेसाठी पाठविण्यात आले. प्रथम तीन क्रमांक पुढील प्रमाणे

निबंध स्पर्धा -

- १) प्रथम : कु.साबळे कोमल अंकुश, बी.एस्सी.१
- २) द्वितीय : कु. भोसले पूजा अंकुश, बी.एस्सी.१
- ३) तृतीय : कु. अहिरे अश्विनी अरुण, बी.ए.३

वक्तृत्व स्पर्धा -

- १) प्रथम : कु. भोसले स्मीता प्रकाश, बी.कॉम.२
- २) द्वितीय : कु. जाधव किशोर मारुती, बी.कॉम. २
- ३) तृतीय : कु. वाघुंबरे अर्चना चंद्रकांत, बी.एस्सी.१

चित्रकला स्पर्धा

- १) प्रथम : कु. रावखंडे ज्योतीराम, बी.एस्सी. १
- २) द्वितीय : कु. इथापे कल्याण रविंद्र, बी.ए.३
- ३) तृतीय : कु. मोरे अक्षय दिलीप, बी.एस्सी. २

या विभागासाठी महाविद्यालयाचे प्राचार्य डॉ.आर.व्ही. शेजवळ यांचे अनमोल मार्गदर्शन व सहकार्य लाभले. तसेच या विभागातील सदस्य प्रा. श्रीमती डॉ.एस.एस. राजेभोसले, प्रा.बी.एस. जगताप, प्रा.डी.डी. रुपनवर यांचेहही मोलाचे सहकार्य लाभले. प्रा.डॉ.बी.डी. सगरे, प्रा. अनंता कस्तुरे, प्रा.पी.पी. लोहार, श्री.एस.डी. जिरगे यांनी परीक्षक म्हणून सहकार्य केले. या विभागाचे कार्यक्रम यशस्वी करण्यासाठी उपप्राचार्य डॉ.आर.जी. पाटील, प्रा.आर.आर. गायकवाड, प्रा.डॉ. महेश गायकवाड व सर्व सहकारी प्राध्यापक व सर्व शिक्षकेतर कर्मचारी यांचे मोलाचे सहकार्य लाभले.

प्रा. सतीश कुदळे
चेअरमन, निबंध, वक्तृत्व व वादविवाद स्पर्धा

अग्रणी महाविद्यालय योजना

अग्रणी महाविद्यालय योजने अंतर्गत महाविद्यालयात विविध विभागाकडून एक दिवशीय कार्यशाळा आयोजित करण्यात आल्या असून त्याचा अहवाल पुढीलप्रमाणे आहे.

२०१३

ब
ह
ड
ड
सी
य

१०२

१) दि. ०७.०९.२०१२ या दिवशी 'पारंपारिक खेळातून दर्शविणारी संस्कृति' या विषयावर समाजशास्त्र व विद्यार्थिनी विकास मंडळाच्या संयुक्त विद्यमानाने एक दिवशीय कार्यशाळा घेण्यात आली. या कार्यशाळेला सातारा येथील जागृती महिला मंडळाच्या महिलांनी वेगवेगळे पारंपारिक खेळाचे प्रात्यक्षिक दर्शविले. तसेच खेळाचे महत्व, ते का साजरे करतात या विषयी मार्गदर्शन केले. या कार्यशाळेत १५५ विद्यार्थिनी व महिला प्राध्यापक सहभागी झाल्या. सदर कार्यशाळा यशस्वी करण्यासाठी प्रा.डॉ.सौ. शैलजा माने, मा.प्राचार्य डॉ.आर.व्ही. शेजवळ यांचे सहकार्य लाभले. तसेच महिला प्राध्यापक व कार्यालयीन सेवकांचे सहकार्य मिळाले.

२) दि. १३.०९.२०१३ या दिवशी गणित विभागाच्यावतीने '१२५वी श्री रामानुजन यांची जयंती व गणित विषयातील योगदान' या विषयावर एक दिवशीय कार्यशाळा आयोजित करण्यात आली. या कार्यशाळेसाठी प्रमुख वक्ते मा.डॉ.एस.एस. भुसनुरमठ (कर्नाटक युनिव्हर्सिटी, धारवाड, कर्नाटक) उपस्थित होते. प्रा.डॉ.एस.एम. पवार, प्रा.डॉ.आर.जी. पाटील (प्राणीशास्त्र विभाग प्रमुख), मा.प्राचार्य डॉ.आर.व्ही. शेजवळ व सेवकवर्ग यांचे सहकार्य लाभले. सदर कार्यशाळेस ८३ विद्यार्थी व ५ प्राध्यापक उपस्थित होते.

३) दि. २४.०९.२०१३ या दिवशी इतिहास विभागाच्यावतीने 'स्थानिक इतिहास' या विषयावर एक दिवशीय कार्यशाळा आयोजित करण्यात आली. सदर कार्यशाळेमध्ये ७० विद्यार्थी व ९ प्राध्यापक तसेच शिक्षकेतर कर्मचारी उपस्थित होते. या कार्यशाळेसाठी मा. प्राचार्य दिपक देशपांड (बाळासाहेब वितळे महाविद्यालय, मिलवडी, जि. सांगली) हे उद्घाटक म्हणून उपस्थित होते. तसेच प्रा.डी.बी. खराडे यांनी

मार्गदर्शन केले. ही कार्यशाळा यशस्वी करण्यासाठी प्रा.कु.पी.सी. चिकमठ (विभागप्रमुख), प्रा. दिपक जाधव, मा.प्राचार्य डॉ.आर.व्ही. शेजवळ (अध्यक्ष) यांचे मार्गदर्शन व सहकार्य लाभले. तसेच शिक्षकेतर कर्मचारी यांचे सहकार्य लाभले.

४) दि. २०.०२.२०१३ या दिवशी सुक्ष्मजीवशास्त्र विभागाच्यावतीने 'सुक्ष्म तंत्रज्ञानाचा आधुनिक कल' या विषयावर एक दिवशीय कार्यशाळा आयोजित करण्यात आली. सदर कार्यशाळेसाठी डॉ.सौ. सपकाळ एम.आर. (सुक्ष्मजीवशास्त्र विभाग प्रमुख, बाळासाहेब देसाई कॉलेज, पाटण) हे प्रमुख पाहुणे व मा. प्राचार्य डॉ.आर.व्ही. शेजवळ हे अध्यक्ष म्हणून उपस्थित होते. प्रा.डॉ.एल.डी. कदम (भौतिकशास्त्र विभाग प्रमुख (वाय.सी.आय.एस. कॉलेज, सातारा), डॉ.सौ. सपकाळ एम.आर. यांनी मार्गदर्शन केले. कार्यशाळा यशस्वी करण्यासाठी प्रा.व्ही.एस. पाटील (विभाग प्रमुख), मा. प्राचार्य डॉ.आर.व्ही. शेजवळ, प्रा. निनाद कदम, प्रा. विकास भोसले व सेवक वर्ग यांचे सहकार्य लाभले.

वरील प्रमाणे महाविद्यालयात अग्रणी महाविद्यालय योजनेअंतर्गत उपक्रम राबविण्यात आले.

प्रा. एम.बी. रासकर
विभागप्रमुख

प्रसिद्धी विभाग

या शैक्षणिक वर्षामध्ये महाविद्यालयाने आयोजित केलेल्या विविध शैक्षणिक, सांस्कृतिक व सामाजिक उपक्रमांच्या बातम्या तयार करून विविध वर्तमानपत्रांकडे पाठविण्यात आल्या. त्या सर्व बातम्यांना सर्व वर्तमानपत्रांनी यथोचित प्रसिद्धी दिली. वर्तमानपत्रांप्रमाणेच विविध वृत्तवाहिन्यांनीही सर्व उपक्रमांची वेळीवेळी प्रसिद्धी दिली याबद्दल सर्व प्रसारमाध्यमांचे आम्ही मनापासून आभारी आहोत. या विभागासाठी प्रा.डॉ.श्रीमती एस.एस. राजेभोसले,

२०१३

ब
ह
उ
सी
य

१०३

प्रा.पी.पी. लोहार, सर्व विभागांचे प्रमुख व सहभागी प्राध्यापक यांचे सक्रिय बहुमोल सहाय्य मिळाले. कार्यालयीन अधीक्षक श्री. एन.बी. पाटील, प्रबंधक श्री. सदानंद देशमुख व त्यांचे सहकारी श्री. वैभव संपकाळ, श्री. प्रकाश महाडीक यांचे सहकार्यही या विभागसाठी लाभले.

महाविद्यालयाचे प्राचार्य डॉ. राजेंद्र शेजवळ यांनी मार्गदर्शन केले.

प्रा. अनंता कस्तुरे
विभाग प्रमुख

परीक्षा विभाग

शैक्षणिक वर्ष २०१२-१३ मध्ये परीक्षा विभागामार्फत अंतर्गत मूल्यमापनासाठी पुढीलप्रमाणे कार्यवाही करण्यात आली.

- १) मा. प्राचार्यांच्या अध्यक्षतेखाली दि. १७.०८.२०१२ रोजी परीक्षा विभागाची बैठक होऊन त्यात वर्षभरात होणाऱ्या अंतर्गत मूल्यमापनाबद्दल नियोजन करण्यात आले.
- २) वी.ए./बी.कॉम. भाग २ मधील विद्यार्थ्यांकडून प्रथम सत्रासाठी ४०:१० पॅटर्ननुसार १० मार्कांसाठी सप्टेंबर महिन्यात व द्वितीय सत्रासाठी फेब्रुवारी महिन्यात प्रत्येक विषयांचे एक एक होम असाइनमेंट लिहून घेण्यात आले. व त्यांची गुणपत्रके वेळेत विद्यापीठाकडे पाठविली.
- ३) वी.ए./बी.कॉम. भाग ३ मधील विद्यार्थ्यांकडून ४०:१० पॅटर्ननुसार १० गुणांसाठी प्रथम सत्रात सेमिनार व द्वितीय सत्रात उरलेल्या १० गुणांसाठी प्रोजेक्ट वर्क घेण्यात आले. तसेच त्यांची गुणपत्रके वेळेत विद्यापीठाकडे पाठविली.
- ४) चालू वर्षी वी.ए./बी.कॉम. भाग १च्या परीक्षा विद्यापीठाने महाविद्यालयाकडे सोपविल्याने प्रथम सत्रात ऑक्टोबर/नोव्हेंबर २०१२ मध्ये विद्यापीठाच्या मार्गदर्शनाप्रमाणे या वर्गाची ५० गुणांची परीक्षा घेऊन त्यांची गुणपत्रके वेळेत

विद्यापीठाकडे पाठविली. तसेच द्वितीय सत्रात मार्च/एप्रिल २०१३ मध्ये पुन्हा ५० गुणांची परीक्षा घेऊन त्यांची गुणपत्रके वेळेत विद्यापीठाकडे पाठविणार आहोत.

कला व वाणिज्य शाखेच्या सर्व प्राध्यापकांनी नियोजनाप्रमाणे अंतर्गत मूल्यमापनाच्या परीक्षा घेऊन वेळेत गुणपत्रके जमा करून परीक्षा विभागास सहाय्य केले तर परीक्षा विभागाचे सदस्य प्रा. सतीश कुदळे व प्रा. अनंता कस्तुरे यांनी परीक्षा विभागाचे कार्य सुरळीतपणे पार पाडण्यासाठी मोलाचे सहकार्य केले. तसेच वेळोवेळी येणाऱ्या अडचणी सोडविण्यासाठी मा. प्राचार्यांनी मोलाचे मार्गदर्शन केले. या सर्वांचे मनःपूर्वक आभार.

प्रा. जयवंत जाधव
परीक्षा विभाग प्रमुख

विद्यार्थी कल्याण मंडळ

आपल्या महाविद्यालयातील गरीब, होतकरू, हुशार विद्यार्थ्यांना शिक्षणापासून वंचित राहायला लागू नये म्हणून विद्यार्थ्यांसाठी विद्यार्थी कल्याण मंडळामार्फत आर्थिक मदत दिली जाते. चालू शैक्षणिक वर्ष २०१२-१३ मध्ये १५ विद्यार्थ्यांना साधारणपणे ४,०००/- रुपये विद्यार्थी कल्याण मंडळामार्फत वाटप करण्यात आले. आणि त्यांना शिक्षणाची दारे खुली करण्यात आली.

प्रा.डॉ.सौ. शैलजा माने, प्रा.डॉ.आर.जी. पाटील, प्रा.डी.जी. सालुंखे यांचे सहकार्य लाभले. या विभागासाठी मा. प्राचार्य डॉ. शेजवळ यांचे मोलाचे सहकार्य लाभले.

प्रा.आर.आर. गायकवाड
चेअरमन, विद्यार्थी कल्याण मंडळ

प्राध्यापक प्रबोधिनी

आपल्या महाविद्यालयामध्ये प्राध्यापकांच्या विचारांना चालना देण्यासाठी व सर्वच प्राध्यापकांच्या विचारांची देवाण घेवाण व विचार मंथन व्हावे यासाठी प्राध्यापक प्रबोधिनीचे आयोजन केले जाते.

चालू शैक्षणिक वर्ष २०१२-१३ मध्ये निरनिराळ्या विषयावरती अनेक प्राध्यापकांनी आपले विचार मांडले. त्यामध्ये अनेक प्राध्यापक सहभागी झाले आणि विचार मंथन घडवून आणले. प्रा.साबळे आर.आर. यांनी सहकार्य केले.

या विभागासाठी प्राचार्य डॉ.आर.व्ही.शेजवळ यांचे मोलाचे मार्गदर्शन लाभले.

प्रा.आर.आर.गायकवाड
चेअरमन, प्राध्यापक प्रबोधिनी

नॅक समिती

नॅक बॅंगलोर यांच्या वतीने महाविद्यालयाने पुनर्मूल्यांकन (Re-Accreditation) दिनांक १२, १३ व १४ ऑक्टोबर २०१२ रोजी संपन्न झाले. या पुनर्मूल्यांकनासाठी महाविद्यालयाशी संबंधित प्रत्येक घटकाने मनापासून घेतलेले कष्ट व देऊ केलेले उत्स्फूर्त सहकार्य यामुळे अत्यंत उत्कृष्ट पध्दतीने महाविद्यालय पुनर्मूल्यांकनासाठी आलेल्या समितीस सामोरे गेले.

संस्था पदाधिकारी मा.प्राचार्य, उपप्राचार्य महाविद्यालयाच्या नॅक समितीचे सर्व सन्माननीय सदस्य, सर्व क्रायटेरियांचे प्रमुख, आय.व्यू.ए.सी.चे चेअरमन व सदस्य, प्राध्यापक वर्ग, प्रशासकीय कर्मचारी, विद्यार्थी-विद्यार्थिनी, पालक, महाविद्यालय परिसरातील सुजाण नागरिक, माजी विद्यार्थी या सर्वांनीच मनापासून केलेल्या प्रयत्नामुळे महाविद्यालयास २.८६ इतके गुणांकन प्राप्त झाले. हे मिळालेले यश हे सर्वांच्या एकत्रित प्रयत्नांचे फलित आहे.

महाविद्यालयाशी संबंधित सर्वच घटकांचे मनःपूर्वक आभार

प्रा.डी.जी.साळुंखे
नॅक समन्वयक

यशवंतराव चव्हाण

महाराष्ट्र मुक्त विद्यापीठ, नाशिक

सध्या या अभ्यासकेंद्रात पूर्वतयारी, बी.ए./बी.कॉम, वृत्तपत्रविद्या व ज्ञानसंज्ञापन पदविका आणि एम्.बी.ए. हे अभ्यासक्रम शिकविले जातात.

सध्या या अभ्यासकेंद्रात ५४ प्राध्यापकांच्या सहकार्याने ८५ पेपर्स शिकविले जातात. विद्यार्थ्यांना मार्गदर्शन करण्यासाठी प्रत्येक रविवारी सकाळी १० ते ४.४५ या वेळेत संपर्क सत्रे आयोजित केली जातात.

सन २०१२-१३ या शैक्षणिक वर्षातील प्रवेश पुढीलप्रमाणे

| | | |
|----------------------------|---|-----|
| १) पूर्वतयारी | - | २८८ |
| २) बी.ए.१ | - | ५४५ |
| ३) बी.ए.२ | - | ४३९ |
| ४) बी.ए.३ | - | २९० |
| ५) बी.कॉम.१ | - | ८३ |
| ६) बी.कॉम.२ | - | ४९ |
| ७) बी.कॉम.३ | - | २६ |
| ८) वृत्तपत्र विद्या पदविका | - | ३६ |
| ९) एम्.बी.ए.१ | - | २७ |
| १०) एम्.बी.ए.२ | - | ३९ |

या अभ्यासकेंद्रातील एकूण विद्यार्थीसंख्या - १८०६

बी.ए./बी.कॉम., एम्.बी.ए., पत्रकारिता या वर्गाची संपर्कसूत्रे सप्टेंबर २०१२ पासून सुरु झाली असून विद्यार्थी लाभ घेत आहेत. सध्या या महाविद्यालयाचे अभ्यासकेंद्र हे संख्यात्मक व गुणात्मक दृष्ट्या पुणे विभागातील नंबर एकचे केंद्र आहे. वृत्तपत्रविद्या व जनसंज्ञापन पदविका अभ्यासक्रम २०१२-१३ या वर्षाच्या वर्गाचा उद्घाटन समारंभ मा.प्राचार्य डॉ.आर.व्ही.शेजवळ यांच्या अध्यक्षतेखाली संपन्न झाला. तर नमुना वृत्तपत्र उद्घाटन सोहळा ज्येष्ठ पत्रकार जयवंत गुजर व कोषाध्यक्ष सातारा जिल्हा ग्रंथमहोत्सव सातारा श्री प्रतिप डी. कांबळे यांच्या हस्ते मा.प्राचार्यांच्या अध्यक्षतेखाली संपन्न झाला. यावेळी श्री.जयंत लंगडे, श्री.मधुसुदन पत्की, श्री.विलास माने, श्री.शैलेंद्र पाटील यांची सन्माननीय उपस्थिती कार्यक्रमास लाभली होती. तसेच या वर्षी पूर्वतयारीचा निकाल १०० टक्के लागला आहे.

२०१३
ब
ह
उ
सी
य
१०५

केंद्रप्रमुख मा.प्राचार्य डॉ.आर.व्ही.शेजवळ यांच्या कुशल नेतृत्व व मार्गदर्शनाखाली हे अभ्यासकेंद्र कार्यरत आहे. केंद्रसहायक श्री.कागवाडे ए.बी. व सेवक श्री.प्रकाश माने यांचे या कामी असणारे सहकार्य फार मोलाचे आहे. एम्.बी.ए.विभागाचे प्रमुख म्हणून प्रा.डॉ.डी.आर.भुटियानी हे काम पाहतात. त्यांना अधीक्षक श्री.एन्.बी.पाटील व सेवक श्री.लाड डी.ए. यांचे सहकार्य लाभले आहे. या सर्वांचे मनःपूर्वक आभार.

प्रा.डी.जी.साळुंखे
केंद्रसंयोजक

दूर शिक्षण विभाग

महाविद्यालयात सन २००९-२०१० पासून शिवाजी विद्यापीठ अंतर्गत दूरशिक्षणकेंद्र सुरु आहे. गतवर्षी या विभागात २१५० विद्यार्थी प्रवेशित होते.

सन २०१२-१३ या शै.वर्षात बी.ए./बी.कॉम. सेमी १/२, ३/४, ५/६ तसेच एम.ए./एम.कॉम १/२ या वर्गासाठी एकूण २०४७ विद्यार्थी प्रवेशित आहेत.

या अभ्यासकेंद्रास दूरशिक्षण विभागाचे कुलसचिव डॉ.व्ही.एन.सोयम, डॉ.अपराज यांनी भेट देवून अभ्यासकेंद्राबाबत समाधान व्यक्त केले.

या वर्षी अभ्यासकेंद्राचा विद्यार्थी संतोष यादव (एम.ए.१) शिवाजी विद्यापीठ, कोल्हापूर अंतर्गत झालेल्या वक्तृत्व स्पर्धेत प्रथम क्रमांक पटकावला.

महाविद्यालयाचे प्राचार्य मा.डॉ.आर.व्ही.शेजवळ यांनी या विभागासाठी नेहमीच सहकार्य केले आहे. विद्यार्थ्यांचा दूर शिक्षण विभागाकडील वाढता कल पाहून दूर शिक्षण विभागात अनेक सुखसोयी दिल्या तसेच गेल्या वर्षी कमवा व शिकवा योजनेअंतर्गत केंद्रसहाय्यक मदतनीस म्हणून कु.खलिफा या विद्यार्थीनीस काम करण्याची संधी दिली व मदतनीस श्रीमती जाधव मॅडम यांना काम करण्याची संधी दिली.

केंद्रसेवक प्रदिप कांबळे, सर्व प्राध्यापक, प्रशासकीय स्टाफ यांचे सदैव सहकार्य लाभले.

प्रा.दिपक जाधव,

केंद्र संयोजक, दूरशिक्षण विभाग

स्पर्धा परिक्षा मार्गदर्शन केंद्र

सन २०१२-१३ या शैक्षणिक वर्षामध्ये महाविद्यालयात स्पर्धा परिक्षा मार्गदर्शन केंद्र सुरु करण्यात आले. या वर्षी MPSC/UPSC पूर्वतयारी वर्ग वर्षभर चालवण्यात आले. या वर्गामध्ये २८ विद्यार्थी विद्यार्थीनींनी प्रवेश घेतला.

या मार्गदर्शन केंद्राचे उद्घाटन मा.अमोल तांबे (अतिरिक्त पोलीस अधीक्षक, सातारा) यांचे शुभहस्ते संपन्न झाले. या वर्षी विद्यार्थ्यांच्यासाठी स्वतंत्र अभ्यासिका, ग्रंथालय व इंटरनेट सुविधा उपलब्ध करून देण्यात आल्या. तसेच प्रेरणा ॲकॅडेमी यांचे मार्फत MPSC/UPSC व स्पर्धा परिक्षांचे नवीन स्वरूप व सुधारीत अभ्यासक्रम या विषयी व्याख्यान आयोजित करण्यात आले. वेळोवेळी होणाऱ्या स्पर्धा परीक्षांची माहिती व मार्गदर्शन ही या केंद्रामार्फत करण्यात आले. विद्यार्थ्यांची चाचणी परीक्षा घेण्यात आली.

या विभागास मा.प्राचार्य शेजवळ यांचे सदैव मार्गदर्शन लाभले. तसेच प्रा.रमेश मदनने प्रा.आर.आर.साबळे यांचे सहकार्य लाभले.

प्रा.डी.एस्.जाधव
स्पर्धा परीक्षा मार्गदर्शन केंद्र

आविष्कार

सन २०१२-१३ या शैक्षणिक वर्षामध्ये शिवाजी विद्यापीठ कोल्हापूर अंतर्गत दहिवडी महाविद्यालय दहिवडी येथे झालेल्या जिल्हास्तरीय आविष्कार संशोधनपर लेख (Research articles) पोस्टर स्पर्धेमध्ये महाविद्यालयामधून एकूण सहा विभागांनी आपले संशोधनपर लेख सादर केले सहापैकी पुढील पाच लेखांना पारीतोषिके मिळाली.

२०१३

ब
हा
र
ु
सी
य

१०६

जिल्हास्तरीय स्पर्धा

| क्र. | विभाग | मार्गदर्शक | सहभागी विद्यार्थी | शिर्षक | क्रमांक |
|------|--------------------|-----------------------|--|--|---------|
| १) | रसायनशास्त्र | डॉ. सी. पी. माने | तोशीफ पटवेकर राकेश सावंत | "A Car running on hydrogen Gas." | द्वितीय |
| २) | प्राणिशास्त्र | डॉ. आर. जी. पाटील | कु. वर्धा नलवडे कु. प्रतिक्षा परदेशी | "Study of Antiangiogenic action of extract of salivary glands of Periplanata americana" | द्वितीय |
| ३) | सूक्ष्म जीवशास्त्र | श्री. व्ही. एस. पाटील | श्री. मेलराँय तेलीस | "Isolation of halotolerant Acotobacter species from saline soil" | तृतीय |
| ४) | सूक्ष्म जीवशास्त्र | श्री. एन. ए. कदम | कु. आरती कुलकर्णी कु. भाग्यश्री अडसुळ | Antibiotic resistance pattern in Pseudonous aeruginosa pathogen from hospitals of Satara city" | तृतीय |
| ५) | कॉमर्स | डॉ. दर्शन भुटीयानी | कु. एस्. पी. भोसले कु. एस्. एन. जाधव | "Foreign trade investment in Retail." | तृतीय |
| ६) | समाजशास्त्र | डॉ. सौ. एस. के. माने | कु. एम. एस. पालकर कु. ए. ए. साठे | "Save the baby girls" | सहभाग |

विद्यापीठ स्तरीय स्पर्धा

दि. ३।१।२०१३ रोजी झालेल्या आविष्कार स्पर्धेमध्ये जिल्हास्तरीय स्पर्धेमधील सर्व पारीतोषिक विजेत्या विद्यार्थ्यांनी आपले संशोधनपर लेख विद्यापीठ स्तरीय स्पर्धेत सादर केले. सदर स्पर्धेमध्ये रसायनशास्त्र विभागातील श्री. तोशीफ पटवेकर व राकेश सावंत यांनी सादर केलेल्या लेखाची प्रथम क्रमांकासाठी निवड झाली.

राज्य स्तरीय स्पर्धा

विद्यापीठ स्तरीय स्पर्धेमध्ये प्रथम क्रमांक आलेला संशोधनपर लेख श्री. तोशीफ पटवेकर याने कोकण कृषी विद्यापीठ दापोली येथे राज्यस्तरीय स्पर्धेमध्ये दि. ७ ते ९ जानेवारी २०१३ रोजी सादर केला. सदर लेखासाठी श्री. पटवेकर यास डॉ. आर. व्ही. शेजवळ, डॉ. एम. टी. थोरात, डॉ. सी. पी. माने व डॉ. डी. व्ही. रुपनवर यांनी मार्गदर्शन केले.

आविष्कार संशोधन स्पर्धेसाठी संघव्यवस्थापकाचे काम डॉ. सी. पी. माने यांनी केले.

डॉ. सी. पी. माने
विभागप्रमुख

मराठी विभाग

शैक्षणिक वर्ष २०१२-१३ या कालावधीत मराठी विभागाच्यावतीने विविध कार्यक्रमांचे आयोजन करण्यात आले.

मराठी विभागाच्यावतीने व शिवाजी विद्यापीठाच्या प्रौढ व निरंतर विभाग यांच्या वतीने ग्रामीण पत्रकारिता व जनसंपर्क माध्यमे व कोर्स घेण्यात आला. तसेच 'मायबोली' या भित्तिपत्रकाचे महाविद्यालयाचा आणि मराठी विभागाचा माजी विद्यार्थी चित्रपट अभिनेते सयाजी शिंदे यांच्या शुभहस्ते उद्घाटन करण्यात आले.

२०१३

ब
ह
ड
सी
य

१०७

मराठी विभागाच्या विद्यार्थ्यांना वाङ्मयीन जाणीवेचा स्पर्श व्हावा म्हणून कवी संमेलनाचे आयोजन करण्यात आले. सदर संमेलनासाठी कवी सुभाष सरदेशमुख यांना प्रमुख पाहुणे म्हणून निमंत्रित करण्यात आले होते. या कार्यक्रमासाठी अध्यक्ष म्हणून प्राचार्य डॉ.राजेंद्र शेजवळ लाभले होते. विद्यार्थ्यांच्या कविता सादरीकरणारने कार्यक्रमाची शोभा वाढविण्यात आली.

दि.५ मार्च २०१३ रोजी शैक्षणिक सहल व निसर्ग सान्निध्यात निरोप समारंभाचे आयोजन करण्यात आले होते. विद्यार्थ्यांचा उत्स्फूर्त प्रतिसाद मिळाला. सदर कार्यक्रमास प्रा.आर.आर.गायकवाड व प्रा.डॉ.दर्शन कुटियानी पाहुणे लाभले. शैक्षणिक वर्ष २०१२-१३ मधील मराठी विभागामार्फत पार पडलेल्या कार्यक्रमासाठी मा.प्राचार्य डॉ.राजेंद्र शेजवळ यांचे बहुमोल मार्गदर्शन मिळाले. मराठी विभागातील प्रा.अनंता कस्तुरे यांचे मोलाचे मार्गदर्शन मिळाले.

प्रा.बाळासाहेब जगताप
विभागप्रमुख

हिंदी विभाग

शैक्षणिक वर्ष २०१२-१३ मध्ये हिंदी विभागामार्फत खालील उपक्रम राबविण्यात आले.

- १) विद्यार्थ्यांच्या कलागुणांना वाव मिळावा, त्यांच्यात लेखन प्रवृत्ती निर्माण होऊन ती वाढीस लागवी व हिंदी विषयाची आवड निर्माण व्हावी म्हणून 'शेरो-शायरी' या भित्तिपत्रिकेचे प्रकाशन शिवाजी विद्यापीठाचे कुलगुरु मा.डॉ.एन.जे.पवार यांचे शुभहस्ते ऑगस्ट २०१२ मध्ये व 'शब्दशिल्प' या भित्तिपत्रिकेचे प्रकाशन डॉ.गजानन भोसले यांचे शुभहस्ते सप्टेंबर २०१२ मध्ये करण्यात आले. यात अनेक विद्यार्थ्यांनी उत्स्फूर्तपणे भाग घेतला.
- २) प्रतिवर्षाप्रमाणे या वर्षीही विभागामार्फत महाविद्यालयात 'हिंदी दिन' उत्साहाने साजरा करण्यात आला. हिंदी दिनानिमित्त आयोजित कार्यक्रमात डी.पी.भोसले महाविद्यालय, कोरेगाव येथील हिंदी विषयाचे प्रपाठक व शिवाजी

विद्यापीठाचे हिंदी अभ्यासमंडळाचे सदस्य डॉ.गजानन भोसले यांनी विद्यार्थ्यांना मार्गदर्शन केले. या कार्यक्रमास विद्यार्थी मोठ्या संख्येने हजर होते.

- ३) चालू वर्षी दि.११ व १२ ऑगस्ट २०१२ रोजी हिंदी विभाग, विद्यापीठ अनुदान आयोग व महाराष्ट्र हिंदी परिषद यांच्या संयुक्त विद्यमाने महाविद्यालयात 'सामाजिक क्रांति और दलित साहित्य' या विषयावर द्वि दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाळेचे आयोजन करण्यात आले. या कार्यशाळेचे उद्घाटन मा.नामदार पतंगरावजी कदम यांचे शुभहस्ते व मा.कुलगुरु डॉ.एन.जे.पवार यांचे अध्यक्षतेखाली संपन्न झाले. दिल्ली येथून आलेले प्रसिध्द दलित साहित्यिक डॉ.जयप्रकाश कर्दम यांनी बीजभाषण करून कार्यशाळेचा आरंभ केला. सदर कार्यशाळेत काशी विद्यापीठातून आलेले डॉ.सुधाकर पांडेय, आसाम विद्यापीठातून आलेले डॉ.दिनेश चौबे, शिवाजी विद्यापीठातून आलेले डॉ.पी.एस.पाटील व डॉ.अर्जुन चव्हाण, पुणे विद्यापीठातून आलेले डॉ.टी.आर.पाटील, शिवाजी विद्यापीठ हिंदी अभ्यासमंडळाचे अध्यक्ष डॉ.वसंत सुर्वे यांनी मार्गदर्शन केले. या कार्यशाळेचे समापन थोर साहित्यिक व विचारवंत डॉ.आ.ह.साळुंखे यांचे शुभहस्ते व स्वामी विवेकानंद शिक्षण संस्थेचे सहसचिव डॉ.अशोक करांडे यांचे अध्यक्षतेखाली संपन्न झाले. हिंदी विषयाच्या १९८ प्राध्यापकांनी या कार्यशाळेचा लाभ घेतला.

- ४) जानेवारी २०१२ पासून आम्ही विभागाचे स्वतंत्र ग्रंथालय सुरु केले आहे. सध्या या ग्रंथालयात २५० हून अधिक ग्रंथ असून विभागातील विद्यार्थ्यांच्या बरोबर माजी विद्यार्थीही या ग्रंथालयाचा लाभ घेत आहेत.

प्राचार्य डॉ.आर.व्ही.शेजवळ आणि विभागातील सहकारी प्रा.डॉ.बी.डी.सगरे यांचे उत्तम सहकार्य मिळाले.

प्रा.जयवंत जाधव
विभागप्रमुख

२०१३

ब
हा
रु
सी
य

१०८

संस्कृत विभाग

संस्कृत विभागाच्या वतीने दि.१०।८।२०१२ रोजी संस्कृत दिन साजरा करण्यात आला. त्यासाठी प्रमुख पाहुणे म्हणून छत्रपती शिवाजी कॉलेजच्या प्रा.डॉ.सौ.उर्मिला अराणके या उपस्थित होत्या. त्यांनी 'संस्कृत क्षेत्रातील नोकरी व व्यव्तीमत्व विकासाच्या संघी' या विषयावर व्याख्यान दिले.

तसेच दि.१२।२।२०१२ रोजी आजी-माजी विद्यार्थ्यांचा मेळावा मा.प्रा.डॉ.आ.ह.साळुंखे यांच्या मार्गदर्शनाखाली आयोजित केला होता. विभागातर्फे 'संस्कृत संभाषण' हा दहा दिवसाचा कोर्स आयोजित केला होता.

शिक्षक दिनाच्या निमित्ताने कार्यालयीन कर्मचारी यांचा सत्कार केला व रजिस्ट्रार श्री.एस.व्ही.देशमुख यांच्या हस्ते संस्कृत विभागाचे उद्घाटन केले तर कार्यालयीन अधीक्षक श्री.एन.बी.पाटील व ग्रंथपाल एल.एन.कुंभार यांच्या हस्ते उत्तररामचरित चित्रपट दर्शन या भितीपत्रकेचे उद्घाटन केले.

प्रा.डॉ.श्रीमती सुहासिनी राजेभोसले यांनी प्रमुख पाहुणे म्हणून एस.जी.एम.कॉलेज कराड येथे संस्कृत दिन ११।८।२०१२ व सौ.वेणूताई चव्हाण कॉलेज कराड येथे साधन व्यक्ती ५।२।२०१३ रोजी प्रमुख पाहुण्या म्हणून उपस्थित होत्या. तसेच अजिंक्य महिला पतसंस्था, सातारा येथेही व्याख्यान दिले. तसेच डॉ.बापूजी साळुंखे राज्यस्तरीय निबंध स्पर्धेत परीक्षक म्हणून काम केले. गुजरात शासनाच्या वतीने खिद्रापूर येथे मातृश्राध्द क्षेत्राचे विकास केला जात आहे. त्यासाठी 'श्राद्धविवेक' या १८व्या शतकातील संस्कृत ग्रंथाचे हिंदी भाषांतर करून दिले. तसेच शिवाजी विद्यापीठातर्फे प्रकाशित होणाऱ्या बी.ए.भाग-१ या वर्गाच्या तीन क्रमिक पुस्तकांचे घटक विभागाचे संपादन केले.

याच विभागाच्या कु.मयुरा राजेभोसले या संस्कृत नेट परीक्षा उत्तीर्ण झाल्या. तसेच महिला व

बालकल्याण विभाग सातारा यांनी आयोजित केलेल्या निबंध व चित्रकला स्पर्धेचे परीक्षक म्हणून काम केले. व सातारा आकाशवाणीवर 'आठवड्यातील कर्तृत्ववान महिला', या विषयावर आपले मत सादर केले.

दरवर्षी संस्कृतमध्ये प्रथम येणाऱ्या विद्यार्थ्यांना डॉ.आ.ह.साळुंखे यांच्यातर्फे डॉ.बापूजी साळुंखे पारितोषिक दिले जाते ते कु.झीनत शौकत मुलानी व कु.मोनाली संजीव पालकर या विद्यार्थीनींना मिळाले.

या विभागास मा.प्राचार्य डॉ.आर.व्ही.शेजवळ यांचे सहकार्य व मौलिक मार्गदर्शन मिळाले.

प्रा.डॉ.श्रीमती एस.एस.राजेभोसले
संस्कृत विभाग प्रमुख

DEPARTMENT OF ENGLISH

The department organizes various activities throughout the academic year for the betterment of students.

- 1) The inauguration of Dr. Bapuji Salunkhe English literary association and welcome of B.A. part I optional English students was organized in the month of July 2012.
- 2) Two wall papers were published one in each term. There was display of wall papers on the topic "Sarojani Naidu: Nightingale of India" and on "Opportunities for English Graduates".
- 3) A one day English speaking trip to Vasota Fort and Pleasure tour of B.A. III special students to Ganapatipule was organized.
- 4) Two movies based on prescribed texts were screened for part II and part III students. They were 'Ice-Candy Man', 'My Fair Lady'.
- 5) On 22-12-2012 a seminar on "Language Enhancement

२०१३

ब
ह
उ
स
य

१०९

Programme" in spoken English and soft skills was organized with coordination of ELIXIR.

- 6) A Guest lecture of Prof Dr. J. A. Mehtre was organized on the topic "Improve Your Vocabulary" for B.A. part III students on 29-12-2012.
- 7) Mock Interview for B.Sc. III students was organized on 9-2-2013.
- 8) A farewell function for B.A. III special English students was organized.
- 9) Prof. D.G. Salunkhe worked as NAAC coordinator while Mr. P. P. Lohar is selected for Teacher fellowship under FIP. All faculties are involved in academic and research activities.

Prin. Dr. R.V. Shejawal was a major support and inspiration behind all these activities. The faculties Mr. P. P. Lohar, Prof. Manoj Jadhav, Prof. Ms. Shital Thakar and Prof. Milind Oval helped a lot to carry out these activities successfully.

Prof. D.G.Salunkhe
Head Dept. of English

इतिहास विभाग

डॉ.अप्पासाहेब पवार इतिहास अभ्यास मंडळ

शैक्षणिक वर्ष २०१२-१३ मध्ये इतिहास विभागातर्फे पुढील उपक्रम राबविण्यात आले.

- १) भितीपत्रीका प्रकाशन-
९ ऑगस्ट क्रांतीदिनी क्रांतीकारकाच्या जीवनावर आधारित भितीपत्रीका प्रकाशित केली.
- २) इतिहास अभ्यास मंडळाचे उद्घाटन-
इतिहास विभागातर्फे डॉ.अप्पासाहेब पवार इतिहास अभ्यास मंडळचे उद्घाटनासाठी प्रा.श्रीकांत सुतार, श्रीमती मिनलबेन मेहता कॉलेज

पाचगणी यांचे 'सातारा जिल्ह्यातील सामाजिक कार्यकर्ते' या विषयावर व्याख्यान आयोजित केले होते.

३) एक दिवसीय कार्यशाळा-

अग्रणी महाविद्यालयांतर्गत एक दिवसीय कार्यशाळा 'स्थानिक इतिहास' या इतिहासातील नवीन प्रवाह विषयावर आयोजित केली होती. या कार्यशाळेसाठी प्रमुख पाहुणे म्हणून मा.प्राचार्य डॉ.दीपक देशपांडे, बाबासाहेब चितळे महाविद्यालय भिलवडी जि.सांगली यांना आमंत्रित केले होते.

दुसरे वक्ते मा.प्रा.खराडे ए.बी. व अध्यक्ष म्हणून मा.प्राचार्य डॉ.आर.व्ही.शेजवळ हे उपस्थित होते.

४) विद्यार्थी सेमीनार-

बी.ए.भाग दोन व तीनच्या विद्यार्थ्यांनी वेगवेगळ्या विषयावर आपले शोधनिबंध सादर केले.

५) शैक्षणिक सहल-

इतिहासाच्या अभ्यासक्रमानुसार असणाऱ्या पुणे, सिंहगड, केळकर वस्तू संग्रहालय या ऐतिहासिक स्थळांना भेटी व त्यावर आधारित प्रोजेक्ट तयार केले.

- ६) इतिहास विभागातर्फे राबविल्या जाणाऱ्या उपक्रम मास महाविद्यालयाचे प्राचार्य डॉ.आर.व्ही.शेजवळ यांचे वेळोवेळी मार्गदर्शन व सहकार्य मिळाले. तसेच विभागाचे प्रा.दीपक जाधव यांचेही सहकार्य मिळाले.

प्रा.प्रतीभा चिकमट
इतिहास विभाग प्रमुख

भूगोल विभाग

सन २०१२-१३ या शैक्षणिक वर्षात विभागाच्या वतीने पुढील उपक्रम राबविण्यात आले आहेत.

- १) दि.५ सप्टेंबर २०१२ रोजी विभाग प्रमुख प्रा.एम्.बी.रासकर, प्रा.बी.बी.बागूल व प्रा.व्ही.एम्.बनसोडे यांच्या उपस्थितीत भूगोल विभागामध्ये 'शिक्षक दिन' साजरा करण्यात आला. या वेळी महाविद्यालयाचे प्राचार्य

२०१३

ब
ह
उ
सी
य

११०

डॉ. आर. व्ही. शेजवळ, उपप्राचार्य
आर. आर. गायकवाड प्रमुख पाहुणे म्हणून
उपस्थितीत होते. तसेच विद्यार्थ्यांनी यावेळी
शिक्षकांविषयी आदर व्यक्त करणारी मनोगते
व्यक्त केली.

- २) आक्टो २०२ मध्ये भूगोल विभागातील विद्यार्थ्यांनी
'सातारा जिल्ह्यातील दुष्काळी प्रदेश' या
विषयावर भितीपत्रिका सादर करण्यात आली.
- ३) दि. २६.१२.२०२ या दिवशी भूगोल विभागाच्या
वतीने मौजे रोहोट ता. सातारा येथे 'शैक्षणिक
प्रकल्प' या विषयावर सर्व्हे करून प्रकल्प तयार
करण्यात आला.
- ४) दि. २९.९.२०१३ ते २४.९.२०१३ या
कालावधीत भूगोल विभागातील विद्यार्थ्यांची
'भूगोल शैक्षणिक अभ्यास सहल' सातारा
कोयनानगर-डेरवण-मार्लेश्वर-गणपतीपुळे-
पावस-मालवण-पणजी (गोवा)-कोल्हापूर-
सातारा अशी आयोजित करण्यात आली.
- ५) दि. २२.२.२०१३ रोजी बी.ए.भाग २ 'पर्यटन
भूगोल' या विषयाची शैक्षणिक सहल सातारा-
कण्हेरी मठ-कोल्हापूर-पन्हाळा-ज्योतिबा अशी
आयोजित करण्यात आली.

वरील सर्व उपक्रम यशस्वीरित्या पार पडलेले
असून यासाठी महाविद्यालयाचे प्राचार्य डॉ. आर. व्ही.
शेजवळ यांचे बहुमोल मार्गदर्शन लाभले. तसेच
महाविद्यालयातील प्रशासकीय सेवक वर्ग व भूगोल
विभागातील प्रा. वी. वी. बागल, प्रा. व्ही. एम्. बनसोडे,
प्रा. ए. व्ही. भोसले, श्री. केदार यांचे सहकार्य लाभले.

प्रा. एम्. वी. रासकर
विभागप्रमुख

अर्थशास्त्र विभाग

अर्थशास्त्र विभागा मार्फत शैक्षणिक वर्ष
२०१२-२०१३ मध्ये विविध उपक्रम राबविण्यात
आले. ऑगस्ट २०१२ मध्ये बी.ए.भाग-३ च्या

विद्यार्थ्यांनी F.D.I. या विषयावर भिती पत्रिका सादर
केली. अर्थशास्त्र विषयाच्या विद्यार्थ्यांनी
महाविद्यालयातील विद्यार्थ्यांचा आर्थिक-सामाजिक
सर्वे एक प्रश्नावली तयार करून केला. त्यात
महाविद्यालयातील विद्यार्थ्यांकडून प्रश्नावली भरून
घेवून कुटूंबाचा व्यवसाय, जाती निहाय वर्गीकरण,
शेती, घरे शिष्यवृत्ती सवलती या विषयी माहिती
संकलीत केली. व अहवाल सादर केला.

बी.ए.भाग-३ व २ च्या विद्यार्थ्यांनी
महाविद्यालय-परिसरातील रहिवाश्यांचे एकूण १००
कुटूंबाचे प्रत्यक्ष घरोघरी भेटी देवून प्रश्नावलीच्या
माध्यमातून कुटूंबाचे आर्थिक-सामाजिक-सर्वेक्षण
करून अहवाल सादर केला.

संशोधन प्रकल्प, क्लासरूम सेमिनार, शैक्षणिक
सहल या सारखे उपक्रम ही राबवले. शैक्षणिक सहल
दि. १४/०२/२०१३ व दि. १५/०२/२०१३
सातारा-डेरवण-गणपतीपुळे-रत्नागिरी-पावस-
सिंधुदूर्ग-कोल्हापूर-सातारा अशी दोन दिवसांची होती.
सहलीत प्रेक्षणीय स्थळांच्या भेटी बरोबरच आंबा, काजू,
नारळ बागांनाही भेटी दिल्या व माहिती घेतली.

या शैक्षणिक वर्षात चिकणेवाडी गोवे, उडतरे
या गावातील विद्यार्थ्यांच्या घरी सर्व विद्यार्थ्यांसह भेटी
दिल्या. व पालकांशी संवाद साधला. बी.ए.भाग-३
च्या विद्यार्थ्यांसाठी.

बी.ए.भाग-३ च्या विद्यार्थ्यांचे वाढदिवस ही
साजरे करण्याचे कार्य विभागात करण्यात आले.

विभागातील वैयक्तिक कार्य पुढीलप्रमाणे

१) प्रा. आय. वी. अहिरे :- शिवाजी विद्यापीठ शिक्षक
संघटना-आयोजित-राष्ट्रीय सेमिनार मध्ये
सहभाग दि. १७-२-२०१३

• दि. २ मार्च २०१३ व दि. ३ मार्च २०१३
रोजी दोन दिवसीय "राष्ट्रीय मानवीय एकता
संमेलन"-जे.पी. नाईक सेंटर कोथरुड पुणे यांत
सक्रिय सहभाग. आयोजनातही सहभाग घेतला.

२०१३

ब
हा
ड
सी
य

१११

२) प्रा. एस्.पी. कुदळे :- बदललेल्या बी.ए.भाग-३ च्या अभ्यासक्रम कार्यशाळेत कोल्हापूर येथे सहभाग.

- पाचगणी कॉलेजच्या N.S.S. कॅम्पमध्ये व्याख्यान.
- शिवाजी विद्यापीठ अर्थशास्त्र परिषदेच्या वार्षिक अधिवेशन पाचगणी येथे दि. २३/२४ फेब्रु. २०१३ सहभाग.

शैक्षणिक वर्ष २०१२-१३ मध्ये अर्थशास्त्र विभागात प्रा. एस्.पी. कुदळे व प्रा. आर.पी. मदन कार्यारत होते. त्यांचे चांगले सहकार्य मिळाले.

प्रा. ईश्वर अहीरे
विभागप्रमुख

राज्यशास्त्र विभाग

आपल्या महाविद्यालयात राज्यशास्त्र विभागामध्ये सन २०१२-१३ मध्ये विविध कार्यक्रम घेण्यात आले. प्रथम B.A.3 च्या राज्यशास्त्र विषयाच्या पेपर १ व १४ च्या नवीन सुधारित अभ्यासक्रमाच्या संदर्भात प्राध्यापकांसाठी एकदिवसीय कार्यशाळेचे शिवाजी-विद्यापीठाच्या सहकार्याने आयोजन करण्यात आले. त्यासाठी ६५ प्राध्यापक सहभागी झाले. त्यानंतर १५ ऑगस्ट २०१२ ला 'भारत खरोखर स्वतंत्र आहे का ?' या विषयावर भिक्तीपत्रिकेचे आयोजन केले. तसेच २६ नोव्हेंबर २०१२ ला 'संविधान दिन' साजरा करण्यात आला. यशवंतराव चव्हाण यांचे जन्मशताब्दी वर्षा निमित्त प्राचार्य रमणलाल शहा यांचे 'महाराष्ट्राचे शिल्पकार यशवंतराव चव्हाण' या विषयावर व्याख्यान आयोजित केले.

अशा प्रकारे आपल्या महाविद्यालयात राज्यशास्त्र विभागामध्ये विविध कार्यक्रम वर्षभरामध्ये घेण्यात येत असताना या विभागामध्ये विभागप्रमुख म्हणून प्रा. गायकवाड आर.आर. हे उत्कृष्टपणे काम पाहत आहेत. त्यांना सहकार्य प्रा. गायकवाड जी.बी. करीत आहेत.

या विभागासाठी वेळोवेळी प्राचार्य डॉ. आर.व्ही. शेजवळ यांचे मोलाचे मार्गदर्शन लाभले आहे.

प्रा. आर.आर. गायकवाड
राज्यशास्त्र विभागप्रमुख

मानसशास्त्र विभाग

- १) मानसशास्त्र विभागातील विद्यार्थीनींनी दिनांक:- ०२ ऑगस्ट २०१२ रोजी रक्षाबंधन व खाऊ वाटप या कार्यक्रमाचे आयोजन "शारदाबाई पवार माध्यमिक आश्रमशाळा" जकातवाडी, सातारा येथे केले.
- २) दि. १० ऑक्टोबर २०१२ "जागतिक मानसिक आरोग्य दिनानिमित्त" 'प्रेरणादायी विचार' या भिक्तीपत्रिकेचे प्रकाशन.

प्रा. एस.एस. मेस्त्री
विभागप्रमुख

वाणिज्य व व्यवस्थापन विभाग

वाणिज्य व व्यवस्थापन विभागांतर्गत -

- दि. १०/१२/२०१२ रोजी तिसाई फाऊंडेशनचे श्री शंकरराव करपे यांचे "गरज गुंतवणूकीची व भारतीय शेअर्स बाजार" या विषयावरील व्याख्यान आयोजित करणेत आले.
- दि. १०/८/२०१२ रोजी 'एज्युब्रीज' कंपनीचे मॅनेजर श्री. सोनी डिसोजा यांचे 'Soft Skills and English speaking' या विषयावरील व्याख्यानाचे आयोजन करणेत आले.
- दि. २२/९/२०१२ रोजी 'इंडियन इन्स्टीट्यूट ऑफ कॉम्प्युटररायज्ड अकौंटिंग' या कंपनीचे मॅनेजर डॉ. सागर उपाध्ये यांचे 'Computerised Accounting' या विषयावरील व्याख्यान संपन्न झाले.
- दि. २४/९/२०१२ रोजी प्रा. आर.आर. ओहोळ यांचे 'उद्योजकता विकास' या विषयावरील व्याख्यान संपन्न झाले.
- दि. १७/१/२०१३ रोजी न्यू इंडिया इन्शुरन्स कंपनीच्या वतीने प्रश्नमंजुषा स्पर्धा आयोजित करणेत आली. वाणिज्य शाखेच्या विद्यार्थ्यांनी त्यात सहभाग घेतला. प्रथम तीन क्रमांकांना रोख पारितोषिके देण्यात आली.

- शिवाजी विद्यापीठ आयोजित दहिवडी कॉलेज दहिवडी येथे संपन्न झालेल्या जिल्हास्तरीय अविष्कार संशोधन स्पर्धेत वाणिज्य विभागाच्या कु.स्मिता भोसले व कु. संजीवनी जाधव यांनी सादर केलेल्या 'किरकोळ क्षेत्रातील थेट परकीय गुंतवणूक-तारक की मारक' या पोस्टर सादरीकरणस तृतीय क्रमांक प्राप्त झाला.
- दि. ९/१/२०१३ रोजी वाणिज्य विभागाची 'कोकण दर्शन' सहल संपन्न झाली.
- दि. ११/१०/२०१३ रोजी 'थेट परकीय गुंतवणूक' (FDI) या भित्तीपत्रिकेचे उद्घाटन मा. प्राचार्य डॉ. आर.व्ही. शेजवळ यांचे हस्ते संपन्न झाले.
- सन २०१२-२०१३ या वर्षात UGC मान्यताप्राप्त 'Certificate Course in Income Tax' हा कोर्स चालविणेत आला. ९५ विद्यार्थ्यांनी त्यात सहभाग घेतला तसेच 'Online Banking and Marketing' ह्या शॉर्ट टर्म कोर्सच्या २ बॅचेस संपन्न झाल्या. एकूण १३१ विद्यार्थ्यांनी सादर कोर्स यशस्वी पूर्ण केला.

तसेच या विभागांतर्गत यशवंतराव चव्हाण महाराष्ट्र मुक्त विद्यापीठाचा M.B.A. हा अभ्यासक्रम चालविला जातो. चालू शैक्षणिक वर्षामध्ये MBA भाग १ साठी २६ विद्यार्थ्यांनी व MBA भाग २ साठी ३१ विद्यार्थ्यांनी प्रवेश घेतला.

मा. प्राचार्यांचे मार्गदर्शन व मौलिक सूचना वेळोवेळी मिळाल्या. वरील उपक्रम राबविण्यासाठी विभागप्रमुख प्रा. डॉ. दर्शन भुटियानी, प्रा. जी.आर. वास्के, प्रा. एस.डी. बोराटे, प्रा. सौ. ए.व्ही. होरकरी यांचे सहकार्य लाभले.

प्रा. डॉ. दर्शन भुटियानी
विभागप्रमुख (कॉमर्स)

वनस्पतीशास्त्र विभाग

विभागामार्फत विद्यापीठ स्तरीय नविन बदललेल्या अभ्यासक्रमासंदर्भात महाविद्यालयीन शिक्षकांसाठी एक दिवशीय कार्यशाळा आयोजित केली

होती. सादर कार्यशाळेस ६५ शिक्षक हजर होते.

दि. १३ व १४ ऑगस्ट रोजी विभागामार्फत महाविद्यालयात 'एकात्मिक कीड व्यवस्थापन व जैविक नियंत्रण' या विषयावर राष्ट्रीय पातळीवरील अधिवेशनाचे आयोजन केले होते. सादर अधिवेशनात प्राध्यापक संशोधक व विद्यार्थी संशोधक त्याचबरोबर एक आंतरराष्ट्रीय संशोधक मिळून १५३ व्यक्तींचा सहभाग होता.

विभागामार्फत शैक्षणिक सहलीचे आयोजन करणेत आले. बी.एस्सी.भाग ३ वनस्पतीशास्त्र विषयाच्या विद्यार्थ्यांची संकलन सहल माथेरान, कणकेश्वर, अलीबाग येथे तीन दिवसांची आयोजित केली होती.

विभागात शैक्षणिक वर्ष २०१२-२०१३ पासून जैवविविधता आणि तिचे संवर्धन या विषयाचा सीओसी कोर्स चालू करणेत आला आहे. त्याच प्रमाणे आळबी लागवड हा १५ दिवसाचा कोर्स चालू आहे. विभागात दोन लघु शोध प्रकल्प चालू आहेत. त्याच बरोबर एक लघु शोध प्रकल्प मान्यतेसाठी विद्यापीठ अनुदान आयोग मंडळाकडे सादर केला आहे. विभागातील दोन प्राध्यापकांनी पीएच.डी.साठी रजिस्ट्रेशन केले आहे.

वरील सर्व उपक्रम राबविणेसाठी विभागातील प्रा.एस.ए.मोहिते, प्रा.आर.आर. साबळे, प्रा. कु. ए.ए. किर्दत त्याचप्रमाणे श्री. ढमाळ ए.एन, आयु. विराजे ए.बी. श्री. थिटे एस.एन. यांचे मोलाचे सहकार्य लाभले.

प्रा. पी.एस. जाधव
विभागप्रमुख

प्राणीशास्त्र-विभाग

प्राणीशास्त्र विभागामार्फत शैक्षणिक वर्ष २०१२-१३ मध्ये खालील प्रमाणे शैक्षणिक कार्यक्रम राबविले.

१. अविष्कार - शिवाजी विद्यापीठा मार्फत घेण्यात येणाऱ्या सातारा विभागीय 'अविष्कार' स्पर्धेत B.Sc.3 च्या विद्यार्थींनी कु. वर्षा नलवडे व कु.

२०१३

ब
हा
रु
सी
य

११३

प्रतिक्षा परदेशी यांनी भाग घेतला. "Poster Presentation" मध्ये द्वितीय क्रमांक मिळविला.

२. अभ्यास सहल - या विभागातर्फे - जंजीरा-श्रीवर्धन व हरीहरेश्वर या ठिकाणी समुद्र-किनाऱ्यावरील प्राण्यांचा अभ्यास करण्यासाठी व महाबळेश्वर येथे "मधुमक्षीका पालन" व 'अजिक्यतारा' येथे पक्षी निरीक्षणासाठी सहली आयोजित करण्यात आल्या होत्या.
३. कार्यशाळा - शिवाजी विद्यापीठाच्या सहकार्याने दि. ८ ऑगस्ट २०१२ रोजी B.Sc.3 या वर्गाच्या नवीन अभ्यासक्रमातील प्राध्यापकांच्यासाठी कार्यशाळा आयोजित करण्यात आली होती.
४. नेस्ट लेक्चर व कार्यशाळा - प्रा. डॉ. एस्.एस्. पाटील यांचे "सर्पविविधता" या विषयावर व्याख्यान व विद्यार्थ्यांसाठी "साप हाताळणे व त्याला जीवदान देणे" या विषयावर कार्यशाळा आयोजित करण्यात आली होती.
५. भितीपत्रिका - "पक्षी-विविधता" व "सर्प विविधता" या विषयावर दोन भितीपत्रिकांचे प्रकाशन करण्यात आले.
६. Conference मध्ये सहभाग - प्रा. डॉ. आर.जी. पाटील, प्रा. डॉ. सुपुगडे व प्रा. आर.आर. ओहोळ, प्रा. कु. गुजर, प्रा. कु. यादव व प्रा. कु. सुर्यवंशी यांनी वेगवेगळ्या कार्यशाळेत सहभाग घेऊन शोधनिबंधाचे वाचन केले. एकुण २२ कार्यशाळा मध्ये सहभाग व १० शोधनिबंध सादर केले.
७. शोधनिबंध प्रसिध्द - प्रा. डॉ. आर.जी. पाटील व प्रा. डॉ. सुपुगडे यांनी प्रत्येकी दोन शोधनिबंध राष्ट्रीय व आंतरराष्ट्रीय जर्नल मध्ये प्रसिध्द केले.
८. C.O.C. - विद्यार्थ्यांसाठी-"Environmental awareness" या विषयावरील सर्टीफिकेट कोर्सचे आयोजन करण्यात आले.

९. रिसर्च प्रोजेक्ट - यावर्षी प्रा. डॉ. आर.जी. पाटील यांच्या "कृष्णा नदीतील पर्यावरण व मास्यांचा विविधता" या विषयावरील मेजर रिसर्च Project साठी विद्यापीठ अनुदान आयोगात 1095000/ रु. मंजूर केले आहेत. मेजर रिसर्च प्रोजेक्टचे काम सुरु झाले असून त्यांना कु. मयुरी गुजर या 'Project Fellow' म्हणून मदत करीत आहेत. तसेच प्रा. आर.आर. ओहोळ यांच्या "Study og pollinatas" या विषयावरील मायनर रिसर्च प्रोजेक्ट चे कार्य या वर्षी चालु झाले. त्यासाठी त्यांना युजीसीने रु. १,५०,०००/- एवढे अनुदान मंजूर केले आहे.

प्राणीशास्त्र विभागाचे विभाग प्रमुख डॉ. आर.जी. पाटील, प्रा. डॉ. व्ही.बी. सुपुगडे, प्रा. आर.आर. ओहोळ, प्रा. गुजर, प्रा. यादव, प्रा. सुर्यवंशी यांनी या कामी परिश्रम घेतले. व प्राचार्य. आर. व्ही. शेजवळ यांनी मार्गदर्शन केले.

प्रा.डॉ.आर.जी.पाटील
विभागप्रमुख

रसायनशास्त्र विभाग

सन २०१२-१३ या शै. वर्षामध्ये रसायनशास्त्र विभागातर्फे खालील उपक्रम राबविण्यात आले.

- १) ऑगस्ट २०१२ मध्ये वर्तमान पत्रामधील विविध वैज्ञानिक लेखांच्या कात्रणांच्या भितीपत्रिकेचे उद्घाटन मा. प्राचार्य डॉ. आर.व्ही. शेजवळ यांच्या हस्ते करण्यात आले.
- २) ऑक्टोबर २०१२ मध्ये बी.एस्सी.भाग ३ चे विविध विषयावर पोस्टर प्रेझेंटेशन स्पर्धेचे आयोजन करण्यात आले. सदर स्पर्धेमध्ये बी.एस्सी.भाग ३ मधील ६० विद्यार्थ्यांनी सहभाग घेतला. सदर लेखांचे वाय.सी.आय.एस. साताराच्या प्राध्यापकांनी परीक्षण करून त्यामध्ये खालील तीन क्रमांक काढण्यात आले.
- १) प्रथम - तोशिफ पटवेकर, शाहीस्ता शेख
- २) द्वितीय - कु. मेघा धनवडे, कु. सोनाली पवार

- ३) तृतीय-मिलिंद नलवडे, दिनेश पवार व कौस्तुभ शिंगटे
४) उत्तेजनार्थ - पोतदार, मस्के.

यामध्ये प्रथम क्रमांक आलेल्या पोस्टरचे अविष्कार २०१२-१३ मध्ये, जिल्हास्तरीय स्पर्धा, विद्यापीठ स्तरीय स्पर्धा व राज्यस्तरीय स्पर्धेमध्ये प्रदर्शन करण्यात आले.

- ३) बी.एस्सी.भाग ३ मधील तोसिफ पटवेकर व राकेश सावंत यांनी रसायनशास्त्र विभागातर्फे दहिवडी कॉलेज दहिवडी येथे शिवाजी विद्यापीठ अंतर्गत झालेल्या अविष्कार स्पर्धेमध्ये "हायड्रोजन गॅसवर चालणारी गाडी" हा संशोधनपर लेख सादर केला. सादर लेखास द्वितीय क्र. मिळाला तसेच सादरच्या लेखास शिवाजी विद्यापीठ कोल्हापूर येथे झालेल्या विद्यापीठ स्तरावरील स्पर्धेमध्ये प्रथम क्रमांक मिळाला. तसेच सादरचा लेख कृषी विद्यापीठ दापोली येथे राज्यस्तरीय स्पर्धेमध्ये प्रदर्शित करण्यात आला.
- ४) वाय.सी.आय.एस.कॉलेज सातारा व शिवाजी विद्यापीठ कोल्हापूर येथील राष्ट्रीय चर्चासत्रामध्ये प्राचार्य डॉ. आर.व्ही. शेजवळ व डॉ. सी.पी. माने यांनी भाग घेतला.
- ५) डॉ. एम.टी. थोरात व प्रा. डी.व्ही. रुपनवर यांनी वनस्पतीशास्त्र विभागातर्फे झालेल्या राष्ट्रीय कार्यशाळेमध्ये शोधनिबंध सादर केला.

प्रा.डॉ.एम्.टी.थोरात
विभागप्रमुख

DEPARTMENT OF PHYSICS

Principal (Dr) R.V. Shejwal in a guarted the posters prepared by our students in 1st week of October 2012. Following students prepared the poster on different topics in Physics.

- 1) Miss Rupali Gaikwad -
Photoelectric Effect

- 2) Miss Pranali Kothavale -
Raman Effect
3) Miss. Sayali Patil - Compton Effect
4) Miss. Pallavi Surve - Polarimeter

Prof. (Dr.) A. E. Korade attended 3 workshops on revised syllabus of B.Sc 3 in August/Sept.2013. He worked as a chairman for one session in eaon workshop. He attended 4 National seminars during this academic year.

Prof (Dr.) S.R. Jadhav attended 2 workshops on revised syllabus of B.Sc.3 in August/September 2012. Department conducts study tours of B.Sc. 2 students every year.

Prof. Dr. A.E. Korade
H.O.D.

गणित विभाग

शैक्षणिक वर्ष २०१२-१३ गणित विभागाच्या वतीने विद्यार्थ्यांसाठी गुणवत्ता व स्पर्धात्मक परीक्षा यासाठी वेळोवेळी योग्य मार्गदर्शन केले जात आहे. शिवाजी विद्यापीठ प्रथम सत्र (semester 1) B.Sc. 1.2.3. मधील अनुत्तीर्ण विद्यार्थ्यांना गणित विषयाची उजळणी व शंकानिरसन केले जात आहे. तसेच B.Sc.3 च्या विद्यार्थ्यांची युनिटप्रमाणे टेस्ट घेतली जाते. अर्बेंडा महाविद्यालय, पुणे येथे गणित सॉफ्टवेअर राष्ट्रीय कार्यशाळा आयोजित केली होती. या कार्यशाळेसाठी प्रा. डॉ. एस.एम. पवार उपस्थित होते. शिवाजी विद्यापीठ मॅथेमॅटिक्स सोसायटीच्या वतीने प्रत्येक वर्षीप्रमाणे या वर्षी पेट-वडगाव जि. कोल्हापूर येथे कॉन्फरन्स व स्टुडंट कार्निव्हल चे आयोजन केले होते. या कॉन्फरन्ससाठी आपल्या महाविद्यालयातील गणित विभागाचे ४ विद्यार्थी उपस्थित होते. स्टुडंट कार्निव्हलमध्ये घेण्यात आलेल्या लेखी परीक्षेत कु. प्रणाली दत्तात्रय कोठावळे हीने प्रथम क्रमांक मिळविला व Quiz मध्ये प्रथम क्रमांक मिळवला.

२०२३
ब
हा
ड
ु
सी
य
११५

केंद्र सरकारने सन २०११-१२ हे गणित वर्ष म्हणून जाहीर केले होते. त्याप्रमाणे आपल्या महाविद्यालयातर्फे शनिवार दि. १९-१-२०१३ रोजी "श्रीनिवास रामानुजन यांची १२५ वी जयंती व त्यांचे गणित विषयातील जागतिक योगदान" याविषयी एकदिवसीय सेमिनार आयोजित केली होती. शिवाजी विद्यापीठ अग्रणी महाविद्यालयामार्फत या सेमिनारचे आयोजन केले होते. या सेमिनारसाठी ज्येष्ठ गणित-तज्ज्ञ डॉ.एस.एस.भुसनुर्मठ, कर्नाटक युनिव्हर्सिटी, धारवाड (कर्नाटक) यांना प्रमुख वक्ते म्हणून बोलावले होते. या सेमिनारसाठी सातारा जिल्ह्यातून प्राध्यापक व विद्यार्थी बहुसंख्येने उपस्थित होते.

पुणे हिंजवडी येथे III-JAM-2013 परीक्षेसाठी गणित विभागाच्या वतीने B.Sc 3 मधील ७ विद्यार्थी उपस्थित होते. असे अनेक उपक्रम गणित विभागाच्या वतीने राबविले जात आहेत. या विभागासाठी प्राध्यापिका कु. निकिता देसाई काम करत आहेत.

प्रा.डॉ.एस.एम्.पवार
विभागप्रमुख

संख्याशास्त्र विभाग

शैक्षणिक वर्षे २०१२-१३ मध्ये संख्याशास्त्र विभागातील अहवाल खालील प्रमाणे आहे.

- १) श्री ओंकार गायकवाड हा विद्यार्थी बी.एस्सी भाग २ मध्ये संख्याशास्त्र विषयात विद्यापीठात प्रथम आला व डॉ. पी.व्ही. सुखात्मे अॅवॉर्ड पटकावला.
- २) बी.एस्सी.१, व २ व बी.कॉम २ मधील विद्यार्थ्यांना लेखी व तोंडी स्पर्धा परिक्षेत सहभाग घेतला.
- ३) श्री स्वप्निल देशमुख याने प्रथम सत्र परिक्षेत संख्याशास्त्रात १०० पैकी ९९ मार्क्स मिळवले.

प्रा.डी.पी.वट्टमवार
विभागप्रमुख

सुक्ष्मजीवशास्त्र विभाग

- १) सुक्ष्मजीवशास्त्र विभागामार्फत २० फेब्रु. २०१३ रोजी नॅनोटेक्नॉलॉजी या विषयावर एकदिवसीय सेमिनार शिवाजी विद्यापीठाच्या लीड कॉलेज कार्यक्रमांतर्गत यशस्वीरीत्या राबविण्यात आले. सदरच्या सेमिनारसाठी एकूण ९२ विद्यार्थी उपस्थित होते.
- २) शैक्षणिक सहल या उपक्रमांतर्गत किसन वीर सातारा सहकारी साखर कारखाना, किसन वीर अल्कोहोल कारखाना, किवीज अॅक्वा मिनरल वॉटर पॅकेजिंग विभाग, भुईज व मॅप्रो फूड पार्क, पाचगणी या ठिकाणी भेटी देऊन अभ्यास केला.
- ३) शेतकऱ्यांना जैविक पाणी तपासणी मोफत करून दिली.
- ४) 'सर्टिफिकेट कोर्स इन इंडस्ट्रियल क्वालिटी कंट्रोल मायक्रोबायॉलॉजी' हा तीन महिन्याचा अल्पावधीचा कोर्स यशस्वीरीत्या सुरु आहे.
- ५) शिवाजी विद्यापीठाच्या जिल्हास्तरीय आविष्कार २०१३ स्पर्धेत टेलीस मेलरॉय व आरती कुलकर्णी, भाग्यश्री कुलकर्णी, भाग्यश्री अडसूळ यांनी तृतीय क्रमांकाची प्रत्येकी दोन पारितोषिके जिंकली.
- ६) बी.एस्सी भाग ३ चे विद्यार्थी टेलीस मेलरॉय, भाग्यश्री अडसूळ व सारीका ढगे यांनी राज्यस्तरीय संशोधन स्पर्धेत सहभाग घेतला.
- ७) प्रा. पाटील व्ही.एस. व प्रा. कदम एन.ए. यांचे मायनर रिसर्च प्रोजेक्ट्सना मान्यता मिळून काम सुरु.
- ८) वरील सर्व उपक्रमासाठी प्रा. कदम एन.ए. प्रा. भोसले व्ही.बी, श्री शंकर शिंदे व श्री एस.एस. चव्हाण यांनी उत्तम सहकार्य केले.
- ९) या विभागासाठी वेळोवेळी प्राचार्य. डॉ. आर.व्ही. शेजवळ यांचे मोलाचे मार्गदर्शन लाभत आहे.

प्रा. व्ही.एस. पाटील
सुक्ष्मजीवशास्त्र विभागप्रमुख

ग्रंथालय

ग्रंथालय ही एक सामाजिक संस्था मानली जाते. महाविद्यालयातील शैक्षणिक व सांस्कृतिक कार्यात ग्रंथालयाचे योगदान मोलाचे असते. सर्व आधुनिक सोयींनी परिपूर्ण असलेले समृद्ध ग्रंथालय हे या महाविद्यालयाचे वैशिष्ट्य आहे. विद्यार्थी, प्राध्यापक, संशोधक, बहिस्त वाचक वर्ग केंद्रबिंदू मानून ग्रंथालयाची वाटचाल सुरु आहे.

आज रोजी ग्रंथालयात सिनिअर, ज्युनिअर, पी.जी., यु.जी.सी., सी.ओ.सी. याशिवाय सिनिअर, ज्युनिअर, बुक बँक विभागाकडील एकूण ग्रंथसंख्या ९६,७२९ इतकी आहे. संदर्भ विभागात शब्दकोश, ज्ञानकोश, विज्ञानकोश, संदर्भग्रंथ, Audio Vidio CD's, क्रमिक पुस्तके देवघेव विभाग, नियतकालिके व वर्तमानपत्रे, नोकरी संदर्भातील जाहिराती, स्पर्धा परीक्षेची कात्रणे, इत्यादी काचफलकात लावली जातात. तसेच विद्यार्थिनीसाठी स्वतंत्र अभ्यासिकेची सोय असून यामध्ये नियतकालिके, वर्तमानपत्रे, नोकरीविषयक जाहिराती, स्पर्धा परीक्षेची कात्रणे, स्वतंत्र लंच टेबल व संगणक इत्यादी सोयी तसेच विद्यार्थी, प्राध्यापक, संशोधक यांना infibnet ची सुविधा उपलब्ध करून दिलेली आहे. यामध्ये 2100 E-Journals 51000 व E-Books इंटरनेटवर अॅक्सेस करता येतात.

'बुक बँक योजना' हे या महाविद्यालयाचे वैशिष्ट्य आहे. या योजनेतून नाममात्र शुल्क घेवून विद्यार्थ्यांना वर्षभर पुस्तक संच दिले जातात. या वर्षात ५९५ विद्यार्थ्यांनी या योजनेचा लाभ घेतला. यापैकी गरीब अभ्यासू व अपंग विद्यार्थ्यांना ९० मोफत संचाचे वाटप करण्यात आले.

'कमवा शिका' योजनेतून संगणक ज्ञान असलेल्या तीन विद्यार्थ्यांना ग्रंथालयात काम करण्याची संधी दिली आहे. विवेकानंद सप्ताहानिमित्त ग्रंथालयात

'डॉ. बापूजी साळुंखे' व 'विवेकानंदांच्या' चरित्र ग्रंथांचे प्रदर्शन तसेच 'छत्रपती शाहू महाराज' यांच्या जयंती निमित्त ग्रंथाचे प्रदर्शन मांडण्यात आले होते.

ग्रंथालयामध्ये विविध विषयांची ६६ नियतकालिके येतात. त्यावर ३५०००/- रु. इतका खर्च केला असून ग्रंथालयात ९६ दैनिके येतात. त्यावर अंदाजे ९२,०००/- रु इतका खर्च होतो.

२०१२-१३ या वर्षामध्ये एकूण खरेदी केलेली ग्रंथसंख्या

| विभाग | ग्रंथसंख्या | खर्च |
|---------------------|-------------|----------|
| सिनिअर | ४९४ | ७०,९८६/- |
| यु.जी.सी.(सी.ओ.सी.) | १२४ | ७७,७५७/- |
| ज्युनिअर | १५८ | १२,९९३/- |

विद्यार्थ्यांना वाचनाची आवड निर्माण होण्यासाठी रिडर्स क्लब व अॅडव्हान्स लर्नर ही योजना ग्रंथालयात सुरु करण्यात आली असून क्रमिक पुस्तकांव्यतिरिक्त अवांतर वाचनासाठी बारोअर्स कार्डवर पुस्तके दिली जातात. व त्या विद्यार्थ्यांनी पुस्तकामध्ये काय वाचले ते लेखी स्वरूपात घेवून त्यातून बेस्ट रिडर्स निवडले जातात. याला विद्यार्थ्यांचा चांगला प्रतिसाद मिळतो.

याशिवाय सी.ओ.सी. कोर्सला अॅडमिशन घेतलेल्या विद्यार्थ्यांना स्वतंत्र बारोअर्स कार्ड वर पुस्तकांची देवघेव केली जाते.

सध्याचे युग हे माहिती-तंत्रज्ञानाचे युग आहे. ग्रंथालय व माहिती शास्त्र हे माहिती तंत्रज्ञानाच्या जवळचे क्षेत्र असल्याने जास्तीत जास्त प्रगत माहिती-तंत्रज्ञानाचा वापर या क्षेत्रात होत आहे. महाविद्यालयीन ग्रंथालय विद्यार्थ्यांच्या जीवनाला आकार देण्याचे कार्य करीत असते. याची जाणीव ठेवून विद्यार्थ्यांना माहिती, ज्ञान तत्पर व जलद गतीने मिळण्यासाठी ग्रंथालयात संगणकीकरणाचे काम सुरु असून, पुढीलवर्षापर्यंत हे काम पूर्ण होईल.

वेळोवेळी ग्रंथालयाच्या कामकाजामध्ये प्राचार्यांचे व ग्रंथालय समितीचे प्रोत्साहन तसेच बहुमोल मार्गदर्शन लाभते आहे.

२०१३

ब
ह
उ
स
य

१९७

वरील सर्व उपक्रमांमध्ये ग्रंथालयातील सर्व कर्मचारी उत्साहाने सहकार्य करतात. ग्रंथालय लिपिक श्री. कुंभार एच.जे., ग्रंथालय परिचर श्री बेळंबे एस.बी., श्री. माने पी.के., श्री. गायकवाड व्ही.जे., श्रीमती. दिघे ए.एस. व श्री. पवार पी.जे. या सर्वांचे ग्रंथालयाचे कामकाज व्यवस्थित पार पाडण्यात मोलाचे सहकार्य मिळते आहे.

श्री. राजामानसिंग दामले
प्र.ग्रंथपाल

अग्रणी महाविद्यालय योजना

दि. २०.३.२०१३ या दिवशी लाल बहादूर शास्त्री महाविद्यालय, सातारा व शिवाजी विद्यापीठ कोल्हापूर यांच्या संयुक्त विद्यमाने भूगोल व समाजशास्त्र विभागाच्या वतीने "ऑनलाईन प्रवेश परीक्षा डेमो" बाबत एक दिवसीय कार्यशाळा आयोजित करण्यात आली. सदर कार्यशाळेस श्री. घाटे ए.व्ही. (संगणक विभाग), श्री.पोळ एम.एम. (कॉमर्स विभाग) शिवाजी विद्यापीठ कोल्हापूर, मा. प्राचार्य डॉ.आर.व्ही शेजवळ, प्रा.डॉ. शैलजा माने उपस्थित होते. या कार्यशाळेस बी.ए. भाग ३/ बी.एससी. भाग ३ मधील ४०० विद्यार्थी, शिक्षक, शिक्षकेतर कर्मचारी सहभागी झाले होते.

सदर कार्यशाळा यशस्वी करण्यासाठी महाविद्यालयातील प्राध्यापक, शिक्षकेतर कर्मचारी यांचे सहकार्य लाभले.

प्रो. एम.बी. रासकर
विभागप्रमुख

प्लेसमेंट सेल

महाविद्यालयाचा प्लेसमेंट सेल विद्यार्थ्यांना रोजगाराच्या संधी उपलब्ध करून देणे, तसेच विद्यार्थ्यांचा व्यक्तिमत्त्व विकास, मुलाखत तंत्र आणि उद्योजकिय कौशल्ये विकसित करणे ह्या ध्येयाने कार्यरत आहे. सन २०१२-२०१३ या शैक्षणिक वर्षात प्लेसमेंट सेलच्यावतीने खालील उपक्रम राबविण्यात आले.

- दि. ४.७.२०१२ रोजी Corning Company च्या सहकार्याने महाविद्यालयात 'Campus Interview' चे आयोजन करण्यात आले. ८८ विद्यार्थ्यांनी यात सहभाग घेऊन मुलाखती दिल्या. त्यापैकी १९ विद्यार्थ्यांची कंपनीने निवड केली.
- दि. ३१.८.२०१२ रोजी Edubridge कंपनीचे डॉ. सोनी डिसोजा यांचे 'Soft Skill development' या विषयावर व्याख्यान आयोजित करणेत आले.
- दि. ६.९.२०१२ रोजी Institute of Computerised Accounting या संस्थेचे डॉ. सागर उपाध्ये यांचे 'Computerised Accounting' चे प्रात्यक्षिक यांचे आयोजन करण्यात आले.
- दि. ७.१०.२०१२ रोजी Sun-C management Consultancy यांचे सहकार्याने Compus Interview चे आयोजन करण्यात आले Seinumero, IRIS, Raj Escort, K-bouvet या कंपन्यांनी यात सहभाग घेतला. महाविद्यालयाच्या आजी-माजी विद्यार्थ्यांनी तसेच अन्य सुशिक्षित बेरोजगार युवक युवतींनी अशा एकूण ४४१ जणांनी यात प्रत्यक्ष मुलाखती दिल्या. त्यापैकी ५३ विद्यार्थ्यांची विविध पदांकरिता कंपन्यांनी निवड केली. सदर कार्यक्रम माच्या यशस्वी आयोजनाकरिता महाविद्यालयाच्या माजी विद्यार्थी संचाचेही मोलाचे सहकार्य लाभले.
- दि. १९.१.२०१३ रोजी पेंस रोजगार व व्यवसाय प्रशिक्षण मार्गदर्शन अभियानांतर्गत 'रोजगार संधी व प्रशिक्षण मार्गदर्शन' या विषयावर मा.श्री. युवराज भांडवलकर यांच्या व्याख्यानाचे आयोजन करण्यात आले.
- दि. १.२.२०१३ रोजी 'MPTA Education' या संस्थेचे प्रा. शोएब पठाण यांचे 'Job

२०१३

ब
ह
ा
र
ु
स
ी
य

११८

'Oriented Training Programs' या विषयावरील मार्गदर्शनपर व्याख्यान महाविद्यालयात संपन्न झाले.

- रिलायन्स लाईफ इन्शुरन्स कं.लि. यांचे वतीने स्वयंरोजगार निर्मितीसाठी विद्यार्थ्यांसाठी परीक्षा व ट्रेनिंग या कार्यक्रमाचे दि. ४.२.२०१३ ते ११.२.२०१३ या कालावधीत आयोजन केले. महाविद्यालयातील विद्यार्थी बहुसंख्येने यात सहभागी झाले.
- दि. १६.३.२०१३ रोजी आय.सी.आय.सी.आय. बँकेच्या सहकार्याने महाविद्यालयात 'कॅम्पस इंटरव्ह्यू'चे आयोजन करण्यात आले. सातारा आय.सी.आय.सी.आय. शाखेचे सेल्स मॅनेजर

□

□

□

□

गजानन गायकवाड हे प्रमुख पाहुणे म्हणून उपस्थित होते. मा. प्राचार्य डॉ. आर.व्ही. शेजवळ हे कार्यक्रमाच्या अध्यक्षस्थानी होते. विविध शाखेच्या ६५ विद्यार्थ्यांनी यात सहभाग घेतला व प्रत्यक्ष मुलाखती दिल्या.

प्लेसमेंट सेलच्या या विविध कार्यक्रमांच्या आयोजनाकरिता मा. प्राचार्य डॉ.आर.व्ही. शेजवळ यांचे मार्गदर्शन लाभले. तसेच प्लेसमेंट सेलचे सदस्य प्रा.पी.पी. लोहार सर व प्रा.ए.एम. कस्तुरे सर, महाविद्यालयातील सर्व प्राध्यापक वर्ग, शिक्षकेतर कर्मचारी वर्ग व विद्यार्थीवर्गाचे अनमोल सहकार्य लाभले.

प्रा.आर.जी.वारके
प्लेसमेंट सेल प्रमुख

वैयक्तिक अहवाल सन २०१२-२०१३

प्रा. एस.एम. मेस्त्री

- १) दि. ०२ सप्टेंबर २०१२ रोजी 'शिवाजी विद्यापीठ शिक्षक संघ' (सुटा) कोल्हापूर आयोजित 'राष्ट्रीय सेमिनार' मध्ये सहभाग, स्थळ : कमला कॉलेज, कोल्हापूर.
- २) दि. २८ व २९ जानेवारी २०१३ रोजी 'नाईट कॉलेज ऑफ आर्ट्स अँड कॉमर्स', कोल्हापूर आयोजित 'राज्यस्तरीय सेमिनार' मध्ये सहभाग.
- ३) दि. १७ फेब्रुवारी २०१३ 'शिवाजी विद्यापीठ शिक्षक संघ' (सुटा) कोल्हापूर आयोजित 'राष्ट्रीय सेमिनार' मध्ये सहभाग, स्थळ : वाय.सी. इन्स्टिट्यूट ऑफ सायन्स, सातारा
- ४) कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय, वाठारस्टेशन आयोजित एन.एस.एस. शिबीरामध्ये दि. ३० जानेवारी २०१३ रोजी 'भावनिक आरोग्य' या विषयावर व्याख्यान.
- ५) छत्रपती शिवाजी कॉलेज, सातारा आयोजित एन.एस.एस. शिबीरामध्ये दि. १७ जानेवारी

२०१३ रोजी 'पसायदान' या विषयावरील व्याख्यानामध्ये अध्यक्षीय मनोगत.

- ६) दि. ०२ मार्च २०१३ रोजी एल.बी.एस. कॉलेज, सातारा 'प्राध्यापक प्रबोधिनी' मध्ये 'एकटेपणा' या विषयावर व्याख्यान.

DR. C.P. MANE

- 1) A research article entitled "Hexavalent Chromium recovery by liquid-liquid extraction with 2-octylaminopyridine from acidic chloride media and its sequential separation from other heavy toxic metalions" was published in International Journal - AREBIAN JOURNAL OF CHEMISTRY - having impact factor 1.3
- 2) Attended a state level seminar on "NUCLEAR CHEMISTRY" organized by Department of

२०१३

ब
हा
ड
सी
य

११९

Chemistry Y.C.I.S. satara on 6th October, 2012.

3) Attended a National Conference on "CURRENT RESEARCH IN CHEMICAL SCIENCE" (CSRC-2013) organized by Dept. of Chemistry, Shivaji University, Kolhapur on 22nd and 23rd January 2013.

4) Worked as B.O.S. sub committee member Shivaji University, Kolhapur organized for the preparation of B.Sc. I, II, III semester syllabus.

DR.A.E. KORADE

Associate Professor
Head, Dept. of Physics

1) Participated in two one day workshops on revised syllabus of Physics (B.Sc.III, Semester V/VI) at S.S.Dr.Bapuji Salunkhe College, Miraj (Dist. Sangli) and P.D.V.P. College, Tasgaon (Dist. Sangli) and Balasaheb Desai College, Patan (Dist. Sangli) on 13.8.2012. Also worked as Chairman for one session in this workshop.

2) Attended one day National Seminar on "Quality of Higher Education &

Kakodkar Report" organized by SUTA Samrutibhavan, Kamala College Campus, Kolhapur.

3) Participated in XXVIII Academic Conference and National Seminar on "Higher Education in 12th Five Year Plan : Ajanda role of teachers and Teacher's Movements" at Sampurnanand Sanskrit University, Varanashi (U.P.) organised by AIFUCTO & M.G. Kashi Vidypeeth Afficted College Teacher Association on 15-17 Dec. 2012.

4) Attended two day National Seminar on "Recent Developments and Measurement Techniques in Astronomy and Astrophysics" at Shahajiraje Mahavidyalaya Khatav (Dist. Satara) on 16th & 17th December 2013.

5) Participated in one day National Seminar on "Proposed Maharashtra Universities Act and Quality of Higher Education" on 17th February 2013 at Y.C. Institute of Science, Satara organized by SUTA.

2023

ब
ह
र
स
ी
य

१२०

अभिनंदन !

अ) केंद्रशासन पुरस्कृत शिष्यवृत्ती मिळालेले विद्यार्थी

| | | |
|------------------------------|--------|------------|
| १. श्री.देशमुख स्वप्निल सतीश | B.Sc.I | Rs. 1000/- |
| २. श्री.बाबर निखील कृष्णा | B.Sc.I | Rs. 1000/- |

ब) शिवाजी विद्यापीठ गुणवत्ता शिष्यवृत्ती मिळालेले विद्यार्थी

| | | |
|------------------------------|--------------------|------------|
| १. कु.नलवडे वर्षा विनायक | B.Sc.III (Zoology) | Rs. 2500/- |
| २. श्री.देशमुख स्वप्निल सतीश | B.Sc.I | Rs. 5000/- |

क) कु.प्रणाली दत्तात्रय कोठावळे B.Sc.III

शिवाजी विद्यापीठ गणित सोसायटीने घेतलेल्या क्वीझ स्पर्धेत ९९% गुण मिळवुन प्रथम क्रमांक.

॥ विद्यार्थी संसद : ज्युनिअर विभाग ॥



कु. संयुक्ता यादव
१२वीं सायन्स अ



कु. पूजा श्रिवस्तव
१२वीं सायन्स क



कुलदीप जगदाळे
१२वीं वाणिज्य अ



कु. कंचन गोळे
१२वीं वाणिज्य ब



कु. गौरी जाधव
१२वीं कला अ



विलास जाधव
१२वीं कला ब



कु. पूजा श्रिवस्तव
१२वीं कला क



ऑकार विडे
११वीं सायन्स अ



कु. अश्विनी मोरे
११वीं सायन्स ब



कल्याणी सावंत
११वीं सायन्स क



संकेत चिखे
११वीं सायन्स ड



अक्षय यादव
११वीं वाणिज्य अ



शहावाज वेग
११वीं वाणिज्य ब



कु. अंसारी शेहनज
११वीं कला अ



कु. अर्चना पवार
११वीं कला ब



सातारा जिल्हा परिवेदेचे शिक्षण अर्थ व क्रीडा सभापती मा. संजय देसाई यांचा 'शिक्षकदिन' कार्यक्रमात सत्कार करताना प्राचार्य डॉ. आर. व्ही. शेजवळ, प्रा. गीताजली साळुखे, प्रा. आर. ए. पाटील, प्रा. कुलकर्णी, प्रा. चंद्रकांत पाटील

॥ अभिनंदन ! ॥



कु. अशिका बागवान
१२वीं २०१२च्या परीक्षेत कॅलिब्रमध्ये प्रथम

बहादुरीय | २०१२-२०१३ |

॥ ज्युनिअर महाविद्यालयाचे क्रीडा वैभव ॥



प्रा. विनायक भोई
विमखाना प्रमुख



श्री. अश्विंक्य जांभळे
किक बॉक्सिंग स्पर्धेसाठी
दिल्ली येथे निवड



श्री. सिद्धार्थ सारलेकार
राज्यस्तरीय निवड
कबड्डी



श्री. रुदल कदम
दक्षिण कोरिया, आंतरराष्ट्रीय निवड
'रंग ऑफ वॉर' (रस्सीखेच)



कु. प्रमिला भोसले
सोलापूर येथील राज्यस्तरीय
स्पर्धेसाठी निवड (कबड्डी)



श्री. सुरज देसमो
रुतौमगड येथील राष्ट्रीय
स्पर्धेसाठी निवड



श्री. शिवराम चोर्ट
आचरो (धनुर्विद्या)
राष्ट्रीय स्तरावर सुवर्ण पदक



श्री. इकबाल शेख
हॉकी राष्ट्रीय स्तरावर निवड



कु. सोनम आवारे
राज्यस्तरावर
निवड (कबड्डी)



प. बंगाल (कलकता) येथील राष्ट्रीय स्तरावर आचरी (धनुर्विद्या) स्पर्धेमध्ये
गोल्डमेडल मिळवणारा श्री. शिवशंकर चोर्ट, प्राचार्य डॉ. आर. व्ही. शेजवळ,
प्रा. विनायक भोई, प्रा. विकास जाधव, प्रा. आर. आर. गायकवाड,
प्रा. आर. ए. पाटील, श्री. महाडिक



दिल्ली (लुधियाना) येथील राष्ट्रीय किक बॉक्सिंग स्पर्धेसाठी निवड
श्री. अश्विंक्य जांभळे, प्रा. डॉ. राजेंद्र शेजवळ, प्रा. विनायक भोई
मा. किशोरभाऊ तपासे



क्रिकेट स्पर्धेत रत्नागिरी येथील विभागीय उपविजेते पद मिळवणारा संघामोबत
प्राचार्य डॉ. आर. व्ही. शेजवळ, प्रा. विनायक भोई, प्रा. डी. जी. साळुंखे



राज्यस्तरीय बॉस्केटबॉल स्पर्धेसाठी निवड श्री. अधिपेक शिंदे,
प्राचार्य डॉ. आर. व्ही. शेजवळ
मोबत प्रा. विनायक भोई, प्रा. आर. आर. गायकवाड, प्राचार्य शेट मर

श्री स्वामी विवेकानंद शिक्षण संस्था, कोल्हापूर संघर्षित
लाल बहादूर शास्त्री महाविद्यालय, सातारा

॥ विविध गुणांनी नटलेला ज्युनिअर विभाग ॥



कला/वाणिज्य- 'नवागतांचे स्वागत' कार्यक्रमात नवीन विद्यार्थ्यांचे स्वागत करताना प्रा. श्रीधर साठुंखे, प्रा. गीतांजली साठुंखे, प्रा. आर. ए. पाटील, प्रा. कुलकर्णी, प्रा. पादव



जिल्हास्तरीय-१२ वी विज्ञान उच्चकृत अभ्यासक्रम (जीवशास्त्र व गणित) कार्यशाळा - मा. प्राचार्य शेजवळ व मा. चव्हासाहेब जाधव



११वी साधनस पालक मेळावा मार्गदर्शन करताना डॉ. आर. व्ही. शेजवळ, प्रा. सी. एस. वाघ, पाटणे, प्रा. कारभारी इतर पालक



स्वामी विवेकानंद सप्ताहात शिक्षणमहर्षी डॉ. बापूजी साठुंखे सक्कूच, निबंध, चित्रकला स्पर्धेचा उद्घाटन सोहळा



डॉ. बापूजींच्या आठवणींना उजळा देताना मा. मानसिंगराव जगताप, प्राचार्य डॉ. आर. व्ही. शेजवळ, प्रा. आर. ए. पाटील



१२वी साधनस पालक मेळावा मार्गदर्शन करताना प्रा. एम. ए. कारभारी, प्राचार्य डॉ. रानेंद्र शेजवळ, प्रा. सी. पाटणे व पालक

श्री स्वामी विवेकानंद शिक्षण संस्था, कोल्हापूर संस्थान
लाल बहादूर शास्त्री महाविद्यालय, सातारा

बहादुरीय | २०१२-२०१३ |

॥ 'आम्ही आहोत नव्या वाटेचे प्रवासी' : पर्यटन आणि विविध उपक्रम ॥



शैक्षणिक सहल (कोकणदर्शन) गणपतीपुळे आगर
विभाग प्रमुख प्रा.सौ.आय.पी.पवार, प्रा.आर.ए.पाटील, प्रा.चंद्रकांत पाटील



पाटेरवर पेशवेकालीन पुरातन तीर्थक्षेत्र पाहण्यासाठी वर्षा
सहलीमध्ये मार्गक्रमण करताना विद्यार्थी विद्यार्थिनी



शैक्षणिक सहल २०१२-१३ कोकण दर्शन
गणपतीपुळे समुद्रातील आनंदाचा क्षण



शिवसागर (कोयनानगर) नेहरू उद्यानातील भारताचे पहिले
पंतप्रधान पंडित नेहरुंनी राष्ट्राला उद्देशून केलेला उपदेश



शिक्षक दिन व सर्वपल्ली राधाकृष्णन जयंती याचे
औचित्य साधून केलेल्या 'सदाफुली' भित्तिपत्रिकेचे उद्घाटन
शिक्षण सभापती मा.संजय देसाई, मा.प्राचार्य डॉ.राजेंद्र शेजवळ व इतर



८ मार्च जागतिक महिला दिनानिमित्त सुशीलादेवी हायस्कूलच्या
विद्यार्थीनींनी सादर केलेला 'सुशील स्वा धारा' या कार्यक्रमात
विद्यार्थीनी समवेत सौ.निंबकर मॅडम व सुतार सर

श्री ग्यामी विवेकानंद शिक्षण समिती, कोल्हापूर संघीनित
लाल बहादूर शास्त्री महाविद्यालय, सातारा

॥ विविध गुणांनी नटलेला ज्युनिअर विभाग ॥



कला/वाणिज्य - 'नवागतांचे स्वागत' कार्यक्रमात नवीन विद्यार्थ्यांचे स्वागत करताना प्रा. श्रीधर साळुंखे, प्रा. गीतांजली साळुंखे, प्रा. आर. ए. पाटील, प्रा. कुलकर्णी, प्रा. यादव



जिल्हास्तरीय-१२ वी विज्ञान उर्ध्वकृत अभ्यासक्रम (जीवशास्त्र व गणित) कार्यशाळा - मा. प्राचार्य शेजवळ व मा. बापूसाहेब जाधव



११वी सायन्स पालक मेळावा मार्गदर्शन करताना डॉ. आर. व्ही. शेजवळ, प्रा. सो. एम. वाय. पाटणे, प्रा. कारभारी इतर पालक



स्वामी विवेकानंद सजाहात शिक्षणमहर्षी डॉ. बापूजी साळुंखे वक्तृत्व, निबंध, चित्रकला स्पर्धेचा उद्घाटन सोहळा



डॉ. बापूजींच्या आठवणींना उजाळा देताना मा. मानसिंगराव जगताप, प्राचार्य डॉ. आर. व्ही. शेजवळ, प्रा. आर. ए. पाटील



१२वी सायन्स पालक मेळावा मार्गदर्शन करताना प्रा. एम. ए. कारभारी, प्राचार्य डॉ. राजेंद्र शेजवळ, प्रा. सो. पाटणे व पालक

श्री स्वामी विवेकानंद शिक्षण संस्था, कोल्हापूर संघीनित
लाल बहादूर शास्त्री महाविद्यालय, सातारा

कनिष्ठ

संपादक

| | | | |
|-----|--------|-----------|------------------------|
| ४२१ | कवि २१ | कवि विभाग | कवि विभाग - संयोजक (१) |
| ४२२ | कवि २२ | कवि विभाग | 'कवि' मधील कविता (२) |
| ४२३ | कवि २३ | कवि विभाग | कवि विभाग (३) |



संपादक

| | | | |
|-----|--------|-----------|----------|
| ४२४ | कवि २४ | कवि विभाग | कवि (४) |
| ४२५ | कवि २५ | कवि विभाग | कवि (५) |
| ४२६ | कवि २६ | कवि विभाग | कवि (६) |
| ४२७ | कवि २७ | कवि विभाग | कवि (७) |
| ४२८ | कवि २८ | कवि विभाग | कवि (८) |
| ४२९ | कवि २९ | कवि विभाग | कवि (९) |
| ४३० | कवि ३० | कवि विभाग | कवि (१०) |
| ४३१ | कवि ३१ | कवि विभाग | कवि (११) |
| ४३२ | कवि ३२ | कवि विभाग | कवि (१२) |
| ४३३ | कवि ३३ | कवि विभाग | कवि (१३) |
| ४३४ | कवि ३४ | कवि विभाग | कवि (१४) |
| ४३५ | कवि ३५ | कवि विभाग | कवि (१५) |
| ४३६ | कवि ३६ | कवि विभाग | कवि (१६) |
| ४३७ | कवि ३७ | कवि विभाग | कवि (१७) |
| ४३८ | कवि ३८ | कवि विभाग | कवि (१८) |
| ४३९ | कवि ३९ | कवि विभाग | कवि (१९) |
| ४४० | कवि ४० | कवि विभाग | कवि (२०) |

आयुष्यात मला भावलेलं एक गूज सांगतो.
उपजीविकेसाठी आवश्यक अभ्यासाच्या विषयाचं
शिक्षण जरूर घ्या पोटापाण्याचा उद्योग जिद्दीनं करू.
पण एवढ्यावरच थांबू नका. साहित्य, चित्र, संगीत,
नाट्य, शिल्प, अथवा ह्यांतल्या एखाद्या तरी कलेशी
मैत्री जमवा. पोटापाण्याचा उद्योग तुम्हाला जगविलं;
पण कलेशी जमलेली मैत्री तुम्ही का जगायचं
हे सांगून जाईल.

-पु.ल.देशपांडे

कनिष्ठ विभाग संपादक

प्रा.चंद्रकांत पाटील



विभागीय संपादक

प्रा.पी.एन.हरनोळ

अनुक्रमणिका

गद्य विभाग

| | | | |
|---|--------------------|---------------|-----|
| १) जलसंवर्धन : काळाची गरज 'पाणी वाचवा जीव वाचवा !' | आरती ढमाळ | १२ वी शास्त्र | १२३ |
| २) कल्पनातीत भरारी | अनुष्का सतिश घाडगे | ११ वी शास्त्र | १२५ |
| ३) स्त्रीभ्रुण हत्या | अरुणा सराटे | ११ वी वाणिज्य | १२७ |

पद्य विभाग

| | | | |
|--------------------------------|------------------------|---------------|-----|
| १) इवलेसे | प्रगती जाधव | ११ वी शास्त्र | १२८ |
| २) सायन्स साईड | रंगनाथ बाढू काटे | ११ वी शास्त्र | १२८ |
| ३) आयुष्याचे पर्व | प्राजक्ता सुनिल शिंगटे | ११ वी शास्त्र | १२९ |
| ४) जीवन कसं असावं ! | मधु पवार | ११ वी वाणिज्य | १२९ |
| ५) कव्वाली | आदित्य विजयकुमार वाघ | १२ वी शास्त्र | १२९ |
| ६) मातीने मला काय दिले ? | सुश्रुषा सोनावणे | ११ वी शास्त्र | १३० |
| ७) प्रेम म्हणजे | मनिषा माने | ११ वी वाणिज्य | १३० |
| ८) नियती | रंगनाथ बाढू काटे | ११ वी शास्त्र | १३० |
| ९) माणसं | अनघा अनिल मेढेकर | ११ वी वाणिज्य | १३१ |
| १०) आयुष्य असंच जगायच असतं.... | अनघा अनिल मेढेकर | ११ वी वाणिज्य | १३१ |
| ११) आई-बावा | अनुराधा शिंदे | ११ वी वाणिज्य | १३२ |
| १२) कन्या | गीता सुरेश माने | ११ वी वाणिज्य | १३२ |



जलसंवर्धन : काळाची गरज 'पाणी वाचवा जीव वाचवा !'

आरती ढमाळ / १२ वी शास्र

जोपर्यंत आपण पाण्याचे जीवनवाचक मूल्य न जाणता त्याच्याकडे फुकट गिळणारे अमर्याद नैसर्गिक साधन अशा ब्रजरेने बघतो, तसेच शेती, कारखाने यांच्यासाठी लागणारा कच्चा माल असा त्यांचा बाजारी दर (Value) उबतो. तेव्हाच आपल्याला आजसारखी किंमत मोजावी लागते.

असं म्हटल जातं की तिसरं महायुध झालच तर त्यामागचे कारण 'पाणी' हे असेल. पाण्याची टंचाई दिवसेंदिवस तीव्र होत चालली आहे. पाण्याशिवाय कोणतेही जीवन अशक्य आहे. म्हणजेच 'जल हेच जीवन' हे निसर्गसूत्र आपल्याला अनंतकालापासून माहीत आहे. जगातील सर्व महान मानव व संस्कृतीचा उगम आणि विकास हा नदी किनाऱ्यावरच झाला आहे. निसर्गातील सूक्ष्मजीव, वनस्पती, तसेच मानवासह इतर प्राणी ह्यांच्या उत्क्रांती, अस्तित्व आणि विकासासाठी अनादिकालापासून नैसर्गिक नद्या, सरोवरे, दलदली अशा पाणथळ जागांतील पाण्याला अनन्यसाधारण महत्व आहे.

गेल्या शतकात वेगाने वाढलेली लोकसंख्या, नागरिकरणाच्या वाढत्या गरजा, औद्योगिकीकरण, रासायनिक शेती, जलप्रदूषण ह्यामुळे जगभर सर्वत्र जलसंसाधनाचा गुणात्मक आणि संख्यात्मक न्हास होत असल्याचे वैज्ञानिक आणि शास्त्रज्ञ ह्यांना दिसून आले आहे. जलसंसाधनाचा न्हास हा जगापुढे मोठाच पर्यावरणीय धोका असल्याचे जाणवते म्हणूनच संपूर्ण जगापुढे पाणीसाठे, पाणथळ जमीनींचे संवर्धन यांसारखे उपक्रम करणे गरजेचे आहे. पाणथळ जागा म्हणजे ज्या जमिनीवर वर्षभर किंवा वर्षात काही काळ पाणी वहाते किंवा स्थिर पाणी असते. त्या सर्व महत्वाच्या नैसर्गिक किंवा मानवनिर्मित पाणथळ जागा यामध्ये प्रामुख्याने दोन प्रकार आहेत. १) वहाते पाणी २) स्थिर पाणी डोंगराळ भागातील नदी उगमातील झरे, प्रपात, धबधबे, नाले यापासून उपनद्या, नद्या, कालवे, खाड्या इ. या वहात्या पाण्याच्या परिसंस्था त्याप्रमाणे नैसर्गिक किंवा मानवनिर्मितजल साधनसंपत्ती ही पाणथळ जागात सामाविष्ट असल्याने त्यांचे संरक्षण आणि संवर्धन करणे आपल्यावर बंधनकारक आहे.

२०२३

ब
हा
ड
सी
य

१२३

पाणीसाठ्यांची सर्व सजीवांना त्यांच्या अस्तित्वासाठी प्रत्यक्ष किंवा अप्रत्यक्षपणे महत्त्वपूर्ण गरज आहेच पण तसेच नैसर्गिक जलचक्र नियमन, कार्बन वायूचे शोषण, वादळे व पुरापासून संरक्षण, गाळसंचय आणि सुपीक जमिनीची निर्मिती असे हे पाणथळ इतर काही उपयोग आहेत. विशेष म्हणजे ह्या सर्व महत्त्वाच्या क्रियांना नैसर्गिक किंवा मानवनिर्मित असे दुसरे कोणतेही पर्याय नाहीत.

महाराष्ट्रात तर यंदा अभूतपूर्व पाणी टंचाईला तोंड द्यावे लागत आहे. बहुतेक घटनांच्या पाणी साठ्यात मोठ्या प्रमाणात घट झाली आहे. त्यामुळे ऐन जानेवारीच्या महिन्यातच तीव्र टंचाई जाणवू लागली आहे. पश्चिम महाराष्ट्रात काही जिल्हे सोडता उर्वरित महाराष्ट्रात यंदा अभूतपूर्व दुष्काळी परिस्थिती निर्माण झाली आहे. सरकारला पिण्याचे पाणी पुरवठ्याला प्राधान्य देऊन शेती आणि उद्योग यांना पाणी पुरवठा कमी करावा लागत आहे. त्यामुळे साखर कारखाने, बाटलीबंद पिण्याच्या पाण्याचे कारखाने धोक्यात आहेत.

सरकार टंचाईग्रस्त शहरांना प्रथमच रेल्वेने पाणी पुरवठा करण्याच्या पर्यायाचा विचार करत आहे. येत्या असंख्य उन्हाळ्यात कधी नाही एवढ्या मोठ्या प्रमाणात टँकरने पाणीपुरवठा करावा लागत आहे.

पशुधनाच्या बाबतीत तर पाणी व चारा टंचाईमुळे परिस्थिती जास्तच गंभीर झाली आहे. आणि लाखो दुष्काळग्रस्त जनावरांसाठी राज्यातील चारशेपेक्षा जास्त छावण्याही कमी पडत आहेत.

जाणकारांच्या मते १९७२ सालच्या दुष्काळपेक्षा जास्त गंभीर दुष्काळ यावर्षी आहे. त्यामुळे दुष्काळनिवारण्यासाठी तात्पुरत्या उपाययोजना न करता कायमस्वरूपी उपाययोजनांवरच भर द्यायला हवा. यासाठी ठोस पावले उचलल्यास भविष्यात दुष्काळावर प्रभावीपणे मात करता येईल.

जोपर्यंत आपण पाण्याचे जीवनावश्यक मूल्य न जाणता त्याच्याकडे फुकट मिळणारे अमर्याद नैसर्गिक

साधन अशा नजरेने बघतो, तसेच शेती, कारखाने यांच्यासाठी लागणारा कच्चा माल असा त्यांचा बाजारी दर (Value) असेल. तेव्हाच आपल्याला आजसारखी किंमत मोजावी लागते.

शेवटी 'अति तिथं माती' हा निसर्गाचा नियम आहे. मानव हा निसर्गाचा न्हास करीत आहे. त्याचेच दुष्परिणाम आज तो भोगत आहे. जंगलतोड, खाणकाम, वादते प्रदूषण, नैसर्गिक संसाधनाचा अर्निबंध वापर यामुळे दुष्काळाच्या आपत्ती आपल्यावर कोसळत आहे ज्या भागात पाऊस कमी आहे तेथे थेंब न थेंब पाण्याचा वापर तर झालाच पाहिजे, मात्र जेथे बऱ्यापैकी पाऊसमान आहे, त्या भागातही पाण्याच्या कार्यक्षम वापरावर लक्ष केंद्रित करायला हवे.

यंदाच्या दुष्काळाने प्रतिकूल परिस्थितीवर कशी मात करायची आणि भविष्यात अशी परिस्थिती उदभवू नये म्हणून काय काळजी घ्यायला हवी हे सर्वांना शिकवले आहे. एकीकडे नवनवे तंत्रज्ञान आत्मसात करणाऱ्या देशातील नागरिकांनी निसर्गाचा समतोल कुठे ढळतोय का याचाही विचार करायला हवा. आणि नैसर्गिक संसाधनाचा काळजीपूर्वक आणि काटकसरीने वापर करावा !

ठाऊक आहे का ?

खेडोपाडी नसते मुळी पाणी
पाणी शोधत दूर जाती ऐका !
त्यांची कहाणी

उन्हाळ्यात नद्या पडतात कोरड्या ठक्क
मरुन जाती गुरे !

पुन्हा पुन्हा पडतो दुष्काळ
लोक उपाशी तिन्ही त्रिकाल
पोटं लागती खपाटीला
कितीकं लागती देशाघडीला
तेही असती बांधव आपुले त्यांना विसरु नका
'कर्तव्याला सतत स्मरा' 'पाणी संयमाने वापरा !'
पाणी, पाणी, पाणी म्हणजेच जीवन
पाण्यासाठी फिरती वणवण त्यांची ठेवा आठवण !



तलित

कल्पनातीत भरारी

अनुष्का सतिश घाडगे / ११ वी शाख



रुतामी विवेकानंदानांनी 'सनातन भारत' जगाला दाम्प्रविला कल्पनाले 'मॉडर्न इंडियाचे दर्शन घडविले. दोघांचेही कपडे भगव्याच रंगाचे. दोघांनीही स्वतःचा विकास करीन पण जगाचे कल्याण करीन हे तटयज्ञान वानतवात आणलं. ईश्वरी अवतार आदर्श जीवनाचा वस्तुपाठ यांचे मूर्तीमंत उदाहरण म्हणजे कल्पना घाडगे.

"The path from dream to reality does exist" हा संदेश आहे. कल्पनातीत भरारी मारणाऱ्या आपल्या कल्पना चावलाचा. शनिवार १ फेब्रुवारी २००३ रात्री साडे आठचा सुमार चॅनेल बदलताना पडघावर एक जळती रेषा उतरताना दिसली. आजूबाजूला अग्निकण विखुरत होते. रिमोटवरची बटणे दाबणारे बोट क्षणभर थांबले. खालची अक्षरांची सरकती पट्टी निवेदकाचा तटस्थ आवाज अक्षरे डोळ्याने वाचली शब्द कानाने टिपले. अर्थ मनात उतरायला एक दोन क्षण लागले आणि सगळ्या विश्ववासियांच्या काळजातून शब्द उमटले आई गऽऽ.....देवाऽऽ मृत्यूची घटना तशी दुःखदच असते. पण कल्पनाचा आणि कोलंबियाचा मृत्यू घटका लावणारा होता.

कल्पना घाडगे ही मूळ भारतीय वंशाची कर्नाल गावची. सुरुवातीच्या काही दिवसात त्यांची परिस्थिती अत्यंत हलाखीची होती. भारत पाक फाळणीमुळे वडील बनारसीलाल भारतात आले. पुढे येथेच त्यांचा संयोगिताशी विवाह झाला. त्यांना चार मुले पैकी कल्पना-मोंटू शेंडेफळ शाळेच्या पहिल्याच दिवशी बाईंनी कल्पनाला नाव विचारल तेव्हा तिने सांगितल मोंटू, बाई म्हणाल्या हे तुझ घरातल नाव झाल पाळण्यातल काय ? तेव्हा कल्पनाने स्वतःचे नाव स्वतःच ठेवले-कल्पना-ड्रीम ऑफ इमॅजीनेशन.

कल्पनाचे वडील पुढे सुपर टायर कंपनीचे मालक झाले. परंतु कल्पनाने कधीही ऐश्वर्याचा उपभोग घेतला नाही. तिने कपड्यांना कधीही इस्त्री केली नाही. ती ब्यूटी पार्लर मध्ये गेली नाही. ती स्वतःचे केस स्वतःच कापत होती. घरात २४ फोरव्हीलर असूनही कल्पना सायकलनेच शाळेत जात होती. ती कधीही मैत्रीणींच्यात रमली नाही. मोठा भाऊ संजय आणि त्यांच्या मित्रांच्यात ती रमत असे. ती नेहमी पुरूषी ड्रेस वापरत होती. डान्स, पेंटिंग, पिकनिक, कराटे हे तिचे आवडते छंद होते. आपल्या भावाला म्हणजे संजयला जर अवकाशात भरारी घ्यायची असेल तर मला पण घ्यायची असा तिचा आग्रह होता. नील आर्मस्ट्रॉंग चंद्रावर गेले. तेव्हाची तीने यानाची चित्रे प्रतिकृती आपल्या घरात लावली होती. म्हणतात ना मुलाचे पाय पाळण्यात दिसतात. १२वी नंतर तिने एरॉनॉटिकल इंजिनिअरिंगसाठी चंदीगड येथे प्रवेश घेतला. विजेते वेगळ्या गोष्टी करत

२०२३

ब
ह
ड
स
य

१२५

नाहीत. तर प्रत्येक गोष्ट वेगळेपणाने करतात. एरॅनॉटिकल इंजिनिअरिंगला जाणारी ती एकमेव मुलगी होती.

चंदीगडला पापार्जीचे एक श्रीमंत मित्र होते. त्यांच्याकडे कल्पनाला ठेवण्यात आले. त्यांचा १४ रुमचा बंगला होता. तरीही कल्पना गेस्ट हाऊस म्हणजे अडगळीच्या खोलीत राहू लागली त्याचे कारण म्हणजे तेही एक मोठे उद्योगपती असल्यामुळे त्यांच्याकडे माणसांची सारखी ये-जा राहणार त्यामुळे मन एकाग्र राहणार नाही.

१९८२ मध्ये ती इंजिनिअर होऊन बाहेर पडते तेव्हा ती त्याच कॉलेजवर लेक्चरचे काम सुरु करते. दरम्यान मास्टर ऑफ सायन्ससाठी तिने टेक्सास विद्यापीठाकडे अर्ज केला होता. टेक्सास विद्यापीठाकडून मुलाखतीसाठी बोलावणे येते त्यावेळी वडील पापाजी परदेशी होते. ते आल्यावर अगदी २ ते ३ दिवसात अनंत अडचणीतून त्यांनी कल्पनाला तिथे पाठविले.

१९८८ साली पी.एच्.डी. झाल्यानंतर कल्पना नासामध्ये गलेलवट्ट पगाराची चीफ सायंटिस्ट म्हणून नोकरी करते. १९८४ साली मूळचा फ्रेंच असलेला जीन पियर म्हणजेच जे.पी.यांच्याबरोबर कल्पनाचा विवाह झाला. त्यांच्यामुळे ती पाण्यातील स्क्रूबा ड्रायव्हिंग हा रोमांचक प्रकारही शिकली जेपेने तिच्या स्वप्नांना समजून घेतले आणि त्यांना मुर्त स्वरूपात आणण्यासाठी सर्वतोपरी साथ दिली.

१९९७ साली कोलंबीयातून ती अंतराळात गेली. १६ दिवसांची ही परिक्रमा होती. त्यावेळी इंद्रकुमार गुजराल यांनी विचारले वहाँ से हिंदूस्थान कैसा दिख रहा है। अचानक आलेल्या प्रश्नाला समर्पक उत्तर देण्यासाठी बहुत सुकृतांची जोडी असावी लागते उत्तर देताना ती म्हणते मला कुठल्याही एका कोपऱ्यात बंदिस्त करू नका मी केवळ कर्नाल किंवा भारताची नाही. 'द होल युनिव्हर्स इज माय नेटीव्ह लँड (हे विश्वची माझे घर) पुढे ती म्हणते. तुमच्या २४ तासात मला माझ्या हिंदूस्थानचे दर्शन १५ वेळा घडतय मी खूप भाग्यवान आहे.

२००३ मध्ये पुन्हा ती अवकाशात गेली तेव्हा तत्कालीन पंतप्रधान वाजपेयी तिला विचारतात How do you feel in space ती उत्तर देते मी निर्विकल्प समाधीचे सुख अनुभवत आहे. तुकाराम महाराज वैकुंठाला गेले आपली कल्पना नाही का सदेह वैकुंठाला गेली.

आज अमेरिकेत सर्व रस्त्यांना कोड नंबर आहेत. परंतु न्यूयॉर्कमधील ७४ नंबरच्या रस्त्याला कल्पना चावलाचे नाव आहे. तिच्या मृत्यूनंतर राष्ट्राध्यक्ष बुश यांनी K.C. हॉल (कल्पना चावला हॉल) बांधला. त्याच्या उद्घाटनासाठी पापार्जीना बोलविण्यात आले. समोरच एका टेकडीवर श्रध्दांजलीचा कार्यक्रम होता. पापार्जीनी विचारले तुम्ही का रडता मुले म्हणाली कल्पनामुळेच आमचा सर्व खर्च भागत होता. आईला तर खूप वाईट वाटले. आई तिला 'दळभद्री' म्हणायची कारण कल्पनाने सॅकड हॅन्ड घर घेतले होते. त्यात वॉशिंग मशीन, डिश वॉशर अशा आधुनिक सोयी नव्हत्या. ती सायकलने किंवा पायीच जायची एका बुटाचा जोड १५ वर्षे वापरायची तिला फक्त तीन ड्रेस होते. अवकाशात जाण्यापूर्वी तिने आपल्या खात्यावरील सर्व रक्कम बर्ड प्रोटेक्शन संस्थेला देणगी दिली होती. कल्पना इतक्या पैशाचे काय करत होती याचे उत्तर मृत्यूनंतर आई वडिलांना मिळाले. त्यांनी मुलीकडून मूल्यशिक्षणाचा धडा घेतला. तिने वडिलांना हिंदूस्थानचा ५ पैसे टॅक्स चुकवू नका असे सांगितले होते.

कल्पना हॅबिट नावाची फॅशन आज अमेरिकेत येत आहे. यामधून पाणी, पेट्रोल कमीत कमी वापरा आणि आपल्या पृथ्वीमातेचे कमीत कमी शोषण करा असा सल्ला दिला जातो.

स्वामी विवेकानंदांनी 'सनातन भारत' जगाला दाखविला कल्पनाने 'मॉडर्न इंडियाचे दर्शन घडविले. दोघांचेही कपडे भगव्याच रंगाचे. दोघांनीही स्वतःचा विकास करीन पण जगाचे कल्याण करीन हे तत्वज्ञान वास्तवात आणलं. ईश्वरी अवतार आदर्श जीवनाचा वस्तूपाठ याचे मूर्तिमंत उदाहरण म्हणजे कल्पना चावला म्हणूनच ती माझी आवडती शास्त्रज्ञ आहे.

□ □ □

2023

ब
हा
दु
री
य

१२६

चिंतन



स्त्रीभ्रूण हत्या

अरुणा सराटे / ११ वी वाणिज्य

□ आपल्याकडे पुरुषप्रधान संस्कृती स्त्रीला तीच्या पायावर उभचं राहू दिलं नाही. आतापर्यंत तिला स्वातंत्र्याने जगूच दिलं नाही. हुंडाबळी, स्त्रीशिक्षण, स्त्रीमुक्ती, स्त्रीस्वातंत्र्य कितीतरी अशा अनेक संघटना स्त्रियांसाठी काम करत असतात. दुसरीकडे मात्र घरामध्ये मुली वर मुली जन्माला आल्या तर त्या त्याच्या जन्मदात्या आई-वडिलांनाच नको असतात. गोठ्यात गाय किंवा शेळी जन्माला आलीतर आनंद व्यक्त करतात.

आजकाल स्त्री अवकाशात गेली पायलट झाल्यात वेगवेगळ्या बँकाच्या कंपनीच्या सी-ओपदी विराजमान झाल्या. पंतप्रधान आहेत. राष्ट्रपती आहेत तरी ही स्त्री जन्माची कहाणी सुफळ संपन्न झाली का ? सामान्य स्त्रीचे आयुष्य आजही सामोरय बद्धच आहे. आपल्याकडे पुरुषप्रधान संस्कृतीने स्त्रीला तीच्या पायावर उभचं राहू दिलं नाही. आतापर्यंत तिला स्वातंत्र्याने जगूच दिलं नाही. हुंडाबळी, स्त्रीशिक्षण, स्त्रीमुक्ती, स्त्रीस्वातंत्र्य कितीतरी अशा अनेक संघटना स्त्रियांसाठी काम करत असताना दुसरीकडे मात्र घरामध्ये मुली वर मुली जन्माला आल्या तर त्या त्याच्या जन्मदात्या आई-वडिलांनाच नको असतात. गोठ्यात गाय किंवा शेळी जन्माला आलीतर आनंद व्यक्त करतात. अंज्यातून कोंबडीबाहेर आलीतर देवपावला म्हणतात. तरीपण नवबधूवरांना मात्र अष्टपुत्र सौभाग्यवती भव ! आपण सगळेच म्हणतोना पण काळ बदललाय पण बदललेल्या काळामध्ये अष्टपुत्राचं इष्टपुत्र झालंय का सांगाना. तुझ्यापोटी छानसी गोंडस मुलगी जन्माला यावी असा आशीर्वाद का नाही दिला जात. आपल्याकडे मुलाला वंशाचा दिवा मानतात ना. तसेच मुलीला वंशाची पणती का मानले जात नाही. आपल्या पुरुष प्रधान संस्कृतीमध्ये लग्नानंतर मुलीचं नाव बदलले जाते. आडनाव सुद्धा तिला नवऱ्याचं लावावे लागते. आणि म्हणूनच मुलगी कितीही हुशार असली तरी मुलाच्या तुलनेत तिला कायम दुय्यमच स्थान मिळते. कारण वंशाच नाव हा मुलगा पुढे चालवणार असतो. जोपर्यंत मानवाच्या मनावर असे रेखाटलेले गेले आहे तोपर्यंत कोणत्याही मुलीला किंवा स्त्री मोकळा श्वास कधीही घेऊ शकत नाही. म्हणूनच सांगते तिला आनंदाने जगू द्या !

“झाशीची राणी लक्ष्मीबाई एकच,
होती नार पुत्र पाठीशी ढाल,
छातीसी कमरेला तलवार.”

२०१३

ब
हा
दु
सी
य

१२७

अशा प्रकारे प्रत्येक स्त्रीने धाडस केले पाहीजे व अनेक खुंटल्या जाणाऱ्या कळ्यांना वाचवले पाहीजे. त्या कळ्या उमलायच्या आत नका खुडू. तुम्हाला आई पाहीजे, बहिण पाहीजे, तुमच्यासाठी कायपण म्हणायला देव्यानी सारखी बायको पाहीजे तर मुलगी का नको. मुलगी नको तर वंशाला दिवा कसा मिळणार बोला ना. अजून किती कळ्या खुंटल्या जाणार आहेत. अजून किती.

'एक दिवस मन मनाशी बोलेल,
फक्त शब्दांचा भास राहिल, ।
डोळे माझे पाणावलेले,
तो क्षण अबोल राहिल ॥
पुन्हा सांगड घालायची,
नाही असा नियतीचा खेळ राहिल ।
पण जीवनभर आठवेल
अशी या मला जन्म देणाऱ्या आईची
ओढ राहिल.....!!

इवलेसे

इवलेसे ते पुस्तक,
टक लावून वाचावेसे वाटते
कारण जग किती सुंदर आहे
ते ते मला साध्या सोप्या शब्दात सांगून जाते.
इवलासा तो कंपास
वारंवार सारेचजण त्याचा करतात उपहास,
पण भविष्यात मी कुणी मोठा
माणूस होणार आहे याचा तो,
माझ्या मनी निर्माण करतो ध्यास.
इवलेसे ते मन,
पण सर्व सुखदुःख जाणते
जगण्याची देते उभारी
वाईट विसरून चांगले लक्षात ठेव म्हणते.
इवलासा तो प्राण
सतत धडपडत असतो,
स्वकर्तृत्वाने, किर्तीरुपी उरावे
म्हणून क्षणाक्षणाला मरत असतो.
क्षणाक्षणाला मरत असतो.

प्रगती जाधव
११वी शाख

सायन्स साईड

बघा प्रक्रिया स्लाईड, वाचा पुस्तक गाईड,
सोडवून इक्वेशन सॉलिड, अशी ही सायन्स साईड ॥१॥
फिजिक्स म्हणजे गव्हरसिंग,
हा नावाजलेला डाकू,
धमकी देतो, भावही खातो,
दावतो रामपूरी चाकू ॥
बच्चन वानी याची हाईट,
मारतो वकिलांचे पाईट,
मारतो नियंत्रणाची फाईट ॥१॥
केमिस्ट्रीच्या कॉलेजमध्ये सुटलाय सुसाट वारा ।
प्रयोगशाळेत जाता येतो, अंगावरी शहारा ॥
सल्फ्युरिक ॲसिडचा दंगा, सोडियम क्लोराईडचा पिंगा,
हायड्रोजनचा छळतो भुंगा, नायट्रोजन तर दावतो इंगा ॥२॥

जीवनशास्त्र जीवच घेतो दिसतोय,
लोभस चेंडू ह्या चेंडूची डायग्रॅम,
काढता फुटतोय कसा झेंडू किती,
किती बेडूक तर हातातच धरा,
त्याचे डिस्कशन करा ॥३॥

प्रयोगशाळेच्या जंगलामध्ये उपकरणाची झाडी,
शास्त्रज्ञांची भूते इथे ती आहे वनवास वाडी,
नाही सुखाची ही बाग, धोका आहे इथे जागो जाग,
फुरकारतो इंग्लिश नाग, डरकाळतो गणिती वाघ ॥४॥

(संग्रहीत) रंगनाथ बाळू काटे
११वी शाख

२०१३

ब
हा
ड
ु
सी
य

१२८

आयुष्याचे पर्व

जीवनाची ही अलगद वाट
अश्रूंची हे त्यात धुके दाट
क्षितीजांची ही नवी पहाट
जीवनाची ही अलगद वाट....

पाऊलावर पाऊल टाकण्याची नवी दिशा उमलण्याची
सदाबहार स्वप्ने फुलवण्याची जीवनाची ही अलगद वाट....

जीवनाचा हा नवाच अर्थ
करा प्रयत्नांची शर्थ
सर्वांगी यशस्वी बनवण्याची
जीवनाची ही अलगद वाट....

शेवटचेच सत्य एक जीवनात करुण भेद
भावनांचे विचार अनेक मग येईल सामर्थ्याची लाट
जीवनाची ही अलगद वाट....

प्राजक्ता सुनिल शिंगटे
११वी शाखा

जीवन कसं असावं !

जीवन कसं असावं ?

वान्याची झुळूक आल्यानंतर
वेलीवरची पानं-फुलं
आनंदानं डुलावी-हलावी तसं....

जीवन कसं असावं ?

झुळझुळत्या झन्याप्रमाणं
निर्मळ पाण्यासारखं
एखाद्याचं प्रतिबिंब पाण्यात उठतं तसं....

जीवन कसं असावं ?

चिमण्या बाळाच्या ओठावरचं
नुकत्याच उमललेल्या कळीप्रमाणं
मनाला आनंद देणारं....

खरचं जीवन कसं असावं

हळूहळू स्नेहसंबंध वाढविणारं
मनातल्या सुप्त भावनांना
अलगद जागं करणारं....

मधु पवार
११वी वाणिज्य

कव्वाली

कव्वाली

कोण होतीस तू काय झालीस तू
अग ! एव्हडी कशी प्रगती केलीस तू
कोण होतीस तू ॥१॥

होतीस अबला झालीस सबला
होतीस भिंतीआड तोडून कवाड
कशी बाहेर आलीस तू,
कोण होतीस तू कशी झालीस तू ॥१॥

होतीस धाकात आलीस लोकात
होतीस गोघात आलीस देशात
मुक्तीसाठी लढलीस तू
कोण होतीस तू काय झालीस तू ॥२॥

होतीस माता तू झालीस नेता तू
होतीस परावलंबी झालीस स्वावलंबी
सत्तेसाठी लढलीस तू
कोण होतीस तू काय झालीस तू ॥३॥

होतीस निरक्षर झालीस साक्षर
होतीस दिलदार झालीस पदवीधर
चंद्रावर गेलीस तू
कोण होतीस तू काय झालीस तू ॥४॥

होतीस धरती झालीस राज्यकर्ती
सोडून अधोगती झालीस राष्ट्रपती
स्त्रीशक्तीचा ध्वज फडकविलास तू
कोण होतीस तू काय झालीस तू ॥५॥

अग ! एव्हडी कशी प्रगती केलीस तू
कोण होतीस तू काय झालीस तू

आदित्य विजयकुमार वाघ
१२ वी शाखा

२०२३

ब
हा
र
ु
सी
य

१२९

मातीने मला काय दिले ?

“या मातीने मला काय दिले
रडत रडत नाही हसत हसत
कसे जगायचे ते शिकवले
स्वतःसाठी जगतोच आपण
त्याला न म्हणती जीवन
दुसऱ्यासाठी जगणे हेच खरे समर्पण”
“वाघासारखे निर्भिडपणे जगावे
पण प्राणीमात्रांना दया दाखवतांना
फुलापेक्षाही कोमल व्हावे.
उंच आकाशात झेप घेण्याची जिद्द असावी
मातीत जन्मलो आपण याचीही जाणीव ठेवावी.”
“स्वतःसाठी सगळेच जगतात
दुसऱ्यासाठीही थोडे जगावे
मात्र देशासाठी जगतांना
मनातील कर्णाला जागे ठेवावे
कारण-थेंबाथेंबाने भरते तळे
मनाला मने मिळती जेव्हा तेंव्हा
देशावरील संकट टळे.”

सुश्रुपा सोनावणे
११वी शास्त्र



प्रेम म्हणजे

प्रेम म्हणजे काय ? हे कुणाला कधी कळले का ?
प्रेम म्हणजे जीवन आहे हे कधी कुणी जाणलं का ?
प्रेम म्हणजे त्याग आहे हे कुणी मानलं का ?
प्रेम म्हणजे भाषा आहे ती कुणाला समजली का ?
प्रेम म्हणजे माता आहे ती कुणाला उमगली का ?
प्रेम म्हणजे गुरु आहे तो कुणी चिंतला का ?
प्रेम म्हणजे संसार आहे त्यात कुणी गुंतला का ?

मनिषा माने
११वी वाणिज्य

नियती



नियती

नाही पाणी नाही चारा
झाडालाही नाही राहिले पानं
तरीही, जगू आणि जगवू या मातीची आन
नाही अन्न नाही पाणी
जनावरांच्याही माथी नेहमीच लिहलीय छावणी
व्यापारी नोकरदार सदैव सुखात
आम्ही शेतकरी मात्र फिरतोय दुःखात
गुरं दोरं पाखरं निवारा शोधती
दुष्काळामुळे काळी आईही घापा टाकून रडती
पुन्हा पुन्हा का होते दुष्काळाची पुनरावृत्ती
त्या निसर्गाच्या मनीसुध्दा नीच वृत्ती.
कोणी खाती दह्या तुपाशी
आम्ही शेतकरी मात्र सदैव उपाशी
ओढे नाले केंव्हाच आटले
आम्हा शेतकऱ्यांसाठी तर आभाळचं फाटले
तुटक्या फुटक्या संसारा कसे टिगळ लावायचे
एकाच्या अंगावर पांघरुण घालू म्हटले तर
दुसरे उघडे पडायचं
माय-धरणीनं दूर आम्हा लोटले
आता आम्ही कुणापुढे हात जोडायचे.

रंगनाथ बाळू काटे
११वी शास्त्र

२०१३

ब
हा
डु
सी
य

१३०



माणसं

जीवनाच्या वाटेवरी
साथ देतात, मात करतात
हात देतात, घात करतात
तीही असतात....माणसं

संधी देतात, संधी साधतात
आदर करतात, भाव खातात
तीही असतात....माणसं

वेड लावतात, वेडंही करतात
घास भरवतात, घास हिरावतात
तीही असतात....माणसं

पाठीशी असतात, पाठ फिरवतात
वाट दाखवतात, वाट लावतात
तीही असतात....माणसं

शब्द पाळतात, शब्द फिरवतात
गळ्यात पडतात, गळा कापतात
तीही असतात....माणसं

काडीनं देतात, गाडीनं काढतात
मातीत घालतात, मातीलाही जातात
तीही असतात....माणसं

दूर राहतात, तरी जवळची वाटतात
जवळ राहून देखील परक्यासारखी वागतात
तीही असतात....माणसं

नाना प्रकारची अशी नाना माणसं
ओळखावीत कशी ?
सारी असतात आपलीच माणसं !!!

अनघा अनिल मेढेकर
११वी वाणिज्य



आयुष्य असंच जगायच असतं....

जे घडलं ते सहन करायचं असतं,
बदलत्या जगाबरोबर बदलायचं असतं,
आयुष्य असंच जगायचं असतं....

कुटून सुरु झालं हे माहित नसलं
तरी कुठे थांबायचं हे ठरवायचं असतं,
आयुष्य असंच जगायचं असतं....

कुणासाठी काहीतरी निःस्वार्थपणे करायचं
स्वतःच्या सुखापेक्षा इतरांना सुखवायचं
आयुष्य असंच जगायचं असतं....

दुःख आणि अश्रूना मनात कोंडून ठेवायचं
स्वतःला हसता नाही आलं
तरी दुसऱ्यांना हसवायचं असतं
आयुष्य हे असंच जगायचं असतं....

मरणानं समोर येऊन जीव जरी मागितला
तरी मागून मागून काय मागितलंय
असंच नेहमी म्हणायचं असतं.
आयुष्य हे असंच जगायचं असतं....
आयुष्य हे असंच जगायचं असतं....

अनघा अनिल मेढेकर
११वी वाणिज्य

२०२३

ब
ह
ड
सी
य

१३१

आई-बाबा



पृथ्वीचा कागद केला, समुद्राची केली शाई,
महानपण आईच हो तरी संपतच नाही.
आई महान खरेच बाप नाही हो लहान
आई चंदन-चंदन बाप खालची सहाण

आई वाटोळा मी चंद्र
आणि मोकळे आकाश,
सूर्य होऊनी आकाशी
बाप देतसे प्रकाश.

आई पाने-फुले, फांद्या आणि फळे गोडगोड,
त्याच झाडाच्या तळाशी बाप जसा मूळ खोड

माय नारळात पाणी
आणि फणसात गरा
काटे, कवटी घेवून
बाप देतसे टकरा.

माय जितकी ही मोठी बाप त्याच्या दसपट,
दोघे नदी नि समुद्र कशासाठी खटपट ?

नदी मिळते समुद्रा
किती सुंदर मिलन,
उभे आभाळ पेलती
सारे कवेत घेवून

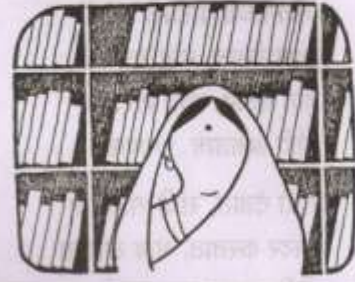
एका हाताने का कधी सांगा वाजते हो टाळी
बागेतल्या फुलाला या बाप सांभाळतो माळी

करु नका हो तुलना
दोघे संसाराचे हात,
हात हातात घेऊन
संसाराला पेलतात.

अनुराधा शिंदे
११वी वाणिज्य



कन्या



कन्या

'जन्माला आली तरी, स्वागत होत नाही,
कन्या आहे म्हणून, आनंद होत नाही !
'परक्याचे धन म्हणून पिता उदास होई;
वंशाचा दिवा नाही म्हणून आई उदास होई !

'शिकून यमुनेची निर्मलता, गंगेची धार होते,
कमावती म्हणून घराचा आधार होते !

'लम्नाच्या बाजारात उभे रहावे लागते;

कन्या आहे म्हणून टोमणे सहन करावे लागते !

'आईवडिलांना होते सतत लम्नाची घाई
सतत वर पक्ष विचारतो लग्न करता का ताई !
'पसंद केली जाते शिकली आहे म्हणून
तरीही हुंडा मागणी वरपक्षाकडून !

'लग्न होई थाटात येते सासरी हसत;

पैशांसाठी मात्र छळली जाते सतत !

एक दिवस जीवनाला ती खूप कंटाळते;

जीवन संपविण्यासाठी मृत्यूला कवटाळते !

अशी ही व्यथा आहे,

भारत देशांतील कन्येची !

तरीही बदलत नाही विचारधारा समाजाची....

गीता सुरेश माने
११वी वाणिज्य

२०१३

ब
ह
र
स
ी
य

१३२

किष्किष्क

२४१ अन्धीके २२

अन्धीके

विष्क केष्क के विष्कके (२)

अन्धीके

२४२ अन्धीके २२

२४३ अन्धीके २२



अन्धीके

अन्धीके (२)

अन्धीकेके (२)

माँ के लाडलो की कीमत अदा करो
बिस्तर पर केसरिया कफन बांध झुमो चलो ।
चामुण्डा के मुंडो की माल अधूरी है;
काली के कर का अर्पण अब भी रीता है ।
जो हास्य हुमस्य से वरण मौत को करता है
वह राष्ट्र अमर हो जाता युग युग जीता है ।

किष्किष्क
हिंदी विभाग

विभागीय संपादक
प्रा. रशीद देसाई

अनुक्रमणिका

गद्य विभाग

| | | | |
|------------------------------------|-------------|---------------|-----|
| १) शिक्षणमहर्षी डॉ. बापूजी साठुंखे | माधुरी जाधव | ११ वी वाणिज्य | १३५ |
|------------------------------------|-------------|---------------|-----|

पद्य विभाग

| | | | |
|--------------------|-----------------|-----------|-----|
| १) पल पल | काजल अरुण गोडसे | ११ वी कला | १३८ |
| २) जीवन की परिभाषा | काजल अरुण गोडसे | ११ वी कला | १३८ |



एक एक एक कि निराल है कि
एक एक एक एक एक एक एक एक एक
एक एक एक कि कि कि कि कि कि कि
एक एक कि कि कि कि कि कि कि कि कि
कि कि कि कि कि कि कि कि कि कि कि
कि कि कि कि कि कि कि कि कि कि कि



शिक्षणमहर्षी डॉ.बापूजी साळुंखे

माधुरी जाधव / ११ वी वाणिज्य

□ बापूजी के जीवन में बिकली की चमक और सागर जैसी दिभागता थी। उन्हे आकाश की गहनता थी। मन की ज्यछा लगे वह आवरण मे लाने का उबका स्वभावधर्म रहा। बापूजी ने अपने जीवन में आवरण की सवसे ज्यादा महत्व दिया।

“एक तपस्वी मैंने देखा, ढूँढ रहा था मैं बंजर धरती, पत्थर-पत्थर खोद रहा था निकल रहे थे, हीरे-माणिक और माती।”

दुनिया के हर एक क्षेत्र में बहुत तपस्वी, त्यागी, महान देशभक्त हो गए जो अपने कार्य से सामान्य से असामान्य, मनुष्य से देवता बन गए। कहते हैं, मनुष्य जन्म से नही कर्ज से बड़ा होता है। इसी कारण महापुरुषों को हम युगपुरुष कहते है। जिन्होने एक नया युग अपने महान कार्य से निर्माण किया है। उनका रास्ता ही वैभव की ओर ले जाता है। उनका काम ही ईश्वर की पूजा बन जाती है। उनका नाम ही ईश्वर की पूजा बन जाती है। उनका कार्य ही देवता बन जाता है।

शिक्षा क्षेत्र में साठ साल पहले महाराष्ट्र की भूमी में एक ज्ञानमहर्षी ने शिक्षा का कार्य शुरु किया। सारी दुनिया मे जिनका नाम भारतीय संस्कृति का उद्गाता है उस श्री.स्वामी विवेकानंद के नाम से अपनी संस्था की नींव डाली। सन १९५४ में ज्ञान की गंगा घर-घर पहुँचने का मुरलीघर के मंदिर मे जिन्होने संकल्प किया और 'स्वामी विवेकानंद शिक्षण संस्था' की स्थापना की, उस महान महर्षी का नाम गोविंद ज्ञानोजी उर्फ बापूजी साळुंखे है। ज्ञान विज्ञान और सुसंस्कार। इसलिए बच्चों को सुशिक्षित और सुसंस्कृत बनाने की शपथ ली। इस नई शिक्षा की प्रणालीद्वारा बच्चों में थे। लेकिन बहुत सीधे-साधे रहते थे। बापूजी का व्यक्तित्व भी इसी

2023

ब
हा
डु
सी
य

१३५

प्रकार का होने के कारण वे शीघ्र ही गांधीभक्त बन गए। और उन्होंने खादी कपड़े पहनने की शपथ ली। उन्होंने आजीवन गांधी टोपी, खदर का नेहरु शर्ट और पाजामा पहना। बापूजी का पहनावा साधा था, लेकिन विचार ऊँचे थे। ऊँचे विचार यानी जीवन के सामान्य स्तर से कहीं ऊपर ले जानेवाले आदर्श विचार। वे असल में गांधीजी जैसा जीवन बीता रहे थे। पवित्रता, निरपेक्ष सेवा, अतुलनीय त्यागी वृत्ति, अन्यायों के खिलाफ लड़ने की सत्याग्रही प्रवृत्ति। मानव जाति से असीम प्रेम करने की अलौकिक शक्ति सीधी रहन-सहन और ऊँचे विचार इसलिए वे सब के बापूजी बने। उन्हें गरीबों से अमीरों तक अशिक्षितों से सुशिक्षितों तक, अज्ञानी से सुजानी तक, कनिष्ठ कर्मचारियों से वरिष्ठतम अधिकारियों तक, विद्यार्थियों से गुरुजनों तक सब लोग पहचानते थे।

साडे छह फूट ऊँचाई, सफेद गोरा रंग, वाणी में शुद्धता, सदाचारी जीवन, सात्विक आहार, मराठी, अंग्रेजी और संस्कृत भाषा पर प्रभुत्व, कवि का कोमल हृदय जैसी अनेक विशेषताओं ने उनके व्यक्तिमत्त्व को गरिमामय बनाया था। उनकी कथनी और करनी में अंतर नहीं था।

मतलब बापूजी की वाणी में शीतलता और सरलता थी। इसी सदगुणों से उन्होंने लाखों लोगों का विश्वास संपादन किया। बापूजी को भोग से अधिक त्याग महत्वपूर्ण लगता था। उनके मतानुसार भोग में स्वार्थ छिपा होता है और त्याग में निस्वार्थ होता है। सत्य यह एक विशाल पेड़ है उसके नीचे आश्रय करने से हमें ढेर सारे फल दिखते हैं। उसका कोई अंत नहीं है। सत्य में जैसे-जैसे उतरने की कोशिश करेंगे तो हाथ में सिर्फ रत्न ही पाएँगे। बापूजी के जीवन में बिजली की चमक और सागर जैसी विशालता थी। उनमें आकाश की गहनता थी। मन को अच्छा लगे वे ही आचरण में लाने का उनका स्वभाव धर्म रहा। बापूजी ने अपने जीवन में

आचरण को सबसे जादा महत्व दिया। महाराष्ट्र के तेरह जिलों में तीन सौ पचास शिक्षा केंद्र स्थापन किए। आज इन केंद्रों में लगभग तीन लाख विद्यार्थी पढ़ रहे हैं और दस हजार गुरुजन शिक्षा का कार्य निभा रहे हैं। सच्चाई, चारित्र्य संपन्नता, प्रामाणिकता, त्याग सेवा और शोषण विरहित सदगुणों को प्रस्तुत करने की आजीवन उन्होंने कोशिश की। उन्होंने अपनी शिक्षा संस्था की प्रार्थना में ही 'सर्वधर्मसमभाव' का संदेश दिया है।

इस शिक्षण महर्षी का जन्म सातारा जिले की पाटण तहसील के राजापुर पेठ में ९ जून १९१९ में एक गरीब किसान के घर में हुआ। बापूजी एक वर्ष के थे उसी वक्त उनकी माता का स्वर्गवास हुआ। बापूजी जब पाँच बरस के थे, तभी से वह ईश्वर की पूजा करते थे। उनके पिताजी कहते थे कि ईश्वर की पूजा करने से हमें विद्या, ज्ञान मिलता है। और संकटों में ईश्वर ही हमारी मदत करता है। हमें सुखी बनाता है। उनके पिताजी ज्ञानोजी रावजी ने बहुत लाड-प्यार से उन्हें संभाला। लेकिन नियति बहुत कठोर होती है। बापूजी जब ग्यारह बरस के थे तब उनके पिताजी का देहांत हुआ। गाँव में प्राथमरी शिक्षा लेने के बाद वे इस्लामपूर आए। पाटण से इस्लामपूर ७० किलोमीटर दूर है, इतना अंतर उन्होंने पैदल ही पार किया था। इस्लामपूर में रहने के लिए छात्रावास नहीं था। गरीब होने से वे किराए पर कमरा भी नहीं ले सकते थे। इसलिए उन्होंने राममंदिर का आश्रय लिया। गाँव में सघन लोग थे। कुछ लोगों ने भोजन की व्यवस्था की। अनाथ बापूजी ने मैट्रिक तक की शिक्षा इसी प्रकार पूरी की। मैट्रिक के बाद बापूजी कोल्हापूर आए और प्रिन्स शिवाजी फ्री बोर्डिंग में प्रवेश लिया। यह बोर्डिंग कोल्हापूर के समाज सुधारक क्रांतिकारी राजा शाहू छत्रपती ने शुरू किया था।

पूजा के बाद दख्खन में कोल्हापूर का राजाराम कॉलेज मशहूर था। बापूजी राजाराम कॉलेज में

पढने लगे । १५ दिसंबर १९४० को उनका विवाह हुआ तो १९४५ मे उन्होने बी.ए.उत्तीर्ण किया । ८ अगस्त, १९४२ मे महात्मा गांधीजी ने अंग्रेजोके खिलाफ मुंबई मे 'चले जाव' की घोषणा की । बापूजी के मन मे राष्ट्रभक्ती की ज्योती जाग उठी और उन्होने स्वतंत्रता संग्राम मे भाग लिया । सत्य, अहिंसा, ईश्वर प्रेम, राष्ट्रभक्त और मानवप्रेम आदि गांधीजी के तत्वो से वे अपनी प्रबुद्ध वाणी से व्यक्त करते थे ।

महात्मा गांधीजी खादी, पंचा और धोती पहनने ये वे बैरिस्टर बापूजी ने शिक्षा के प्रचार-प्रसार हेतु

अपना जीवन समर्पित किया । महान कार्य करते करते ८ अगस्त १९८७ मे बापूजी ने दुनिया से बिदाई ली । वह दुनिया से चल बसे उनके से गौरवान्वित किया । शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापूर ने उन्हे डी.लिट की पदवी से सम्मानित किया । तो लोगो ने उन्हे शिक्षण महर्षी कहना शुरु किया ।

बहुत सी खडतर कठिनाइयाँ पार करके इस युगपुरुष ने महान संस्था का निर्माण किया । मूलतः यही बापूजी को सच्ची आदरांजली है ।

एक सिने मुलाकात



| | |
|-----------------------|-----------------------------|
| आपका परिचय | - राजा हिंदूस्थानी |
| आपका निवास | - प्रेमनगर |
| आपका नाम | - राजा बाबू |
| पिता का नाम | - मिस्टर इंडिया |
| माँ का नाम | - मदर इंडिया |
| बहन का नाम | - गंगा, यमूना, सरस्वती |
| बीवी का नाम | - बसंती टांगेवाली |
| बच्चों के नाम | - राम, लखन |
| आपकी मनोकामना | - प्यार किया तो डरना क्या ? |
| क्या कमाना चाहते हो ? | - रोटी, कपड़ा और मकान |
| क्या करते हो ? | - प्यार, मुहब्बत और इश्क |
| तनखा कितनी मिलती है- | चार सौ बीस (४२०) |
| कभी कुछ किया है ? | - एस बॉस |
| क्या किया है ? | - मैंने प्यार किया है । |
| किससे | - दिल से |
| प्यार करने के बाद | - कुछ कुछ होता है । |
| क्या होता है ? | |
| प्यार कब किया है | - बीस साल बाद |
| अधिक प्रिय क्या है ? | - तिरंगा |
| आपका आदर्श | - सत्यम्, शिवम्, सुंदरम् |

2023

ब
हा
उ
सी
य

१३७



पल पल

किन-किन पलों का हिसाब रखूँ
हर पल में मैंने दुनिया का
एक एक रंग देखा.....

निखरा गहरा प्यारा विचित्र-सा डरवाना
बहुत आजमाया इन पलों का.....
बहुत रोका इनको संभालके अपने दिल के पास.....

रेन की तरह इन पलों से फिसलकर
हम भविष्य की ओर बढ़ते हैं,
एक कदम और एक पल को अतित में समाके.....

भविष्य के अंधकार में अपना
कलका नया सवेरा ढूँढने
में तो इन्हीं अतित के पलों के साथ
अपना समय बिता रही हूँ.....

जो मन भाये उन्हीं पलों की श्रृंखला
बनाकर पहनी हूँ उसपर.....

अपने मन के अंदर ठानी
एक सुंदर स्वच्छ तस्वीर पर
तस्वीर मेरे प्यार की
सँजाये हूँ उसे अभी तक
यही कहीं दिल में हर पल
पल पल.....

काजल अरुण गोडसे
११वी कला

जीवन की परिभाषा

जीवन एक चुनौती है,
उसका सामना कीजिए ।
जीवन एक वरदान है,
उसे स्वीकार कीजिए ।

जीवन एक कर्तव्य है,
उसका पालन कीजिए ।
जीवन एक खेल है,
उसे खेलिए ।

जीवन एक अवसर है,
उसका सदुपयोग कीजिए ।
जीवन एक सफर है,
उसे पुरा कीजिए ।

जीवन एक प्रण है,
उसका पालन कीजिए ।
जीवन एक अनुपम है,
उसकी महीमा गाइये ।

जीवन एक समस्या है,
उसे सुलझाइए ।
जीवन एक संघर्ष है ।
उससे छंद कीजिए ।

जीवन एक रहस्य है,
उसे पाइए ।
जीवन एक कथा है,
उसे सुनिए ।
जीवन एक कटुसत्य है,
उसे अपनाइए ।

कु. सलोनी सय्यद
११वी वाणिज्य

2023

ब
ह
ड
स
ी
य

१३८

INDEX



*Drive my dead thoughts over the Universe
Like withered leaves to quicken a new birth !
And, by the incantation of this verse,
Scatter, as from an unextinguished hearth,
Ashes and Sparks, my words among mankind !
Be through my lips to unawakened earth,
The trumpet of a prophecy ! O Wind,
If winter comes can spring be far behind ?*

P.B. Shelley

English
Section
JUNIOR

Section Editor

Mr. S. U. Patil

INDEX

PROSE SECTION

- | | | | |
|--|-----------------|--------------|-----|
| 1) Benzene in beverages ? | Arti Dhamal | 12th Science | 140 |
| 2) Poised thinking : a key to success | Priyanka Dighe | 11th Science | 143 |
| 3) Be positive | Harshala Sabale | 11th Science | 144 |

POETRY SECTION

- | | | | |
|--------------------|-------------------------|--------------|-----|
| 1) True Friendship | Harshala Shivaji Sabale | 11th Science | 146 |
| 2) What is life | Shrikant Satish Shedge | 11th Science | 146 |
| 3) Best Friends | Harshala Shivaji Sabale | 11th Science | 147 |

Informative



BENZENE IN BEVERAGES ?

Arti Dhamal / 12th Science

□ *Benzene is commonly found in air in both urban and rural areas, the levels are usually low. Areas of heavy traffic, petrol stations and areas near industrial sources might have higher level. For most people, the exposure to benzene is higher from air as compared to food.*

Additives and preservatives in foods were considered helpful when food first began to be mass-produced, but time has shown that not all additives and preservatives are good for people to ingest. They can cause harmful side effects and allergies.

Certain combinations of preservatives could increase the risk to health. Sodium benzoate and ascorbic acid are preservative and vitamin C resp. They are two common preservatives which are considered harmless, each having been listed as safe. Ascorbic acid is a natural component of fruit juices and is also added to preserve colour, while sodium benzoate has strong antimicrobial qualities. Look the ingredients label of several soft drinks and you will find sodium benzoate and ascorbic acid listed. The concentration at which sodium benzoate is found is supposed to be safe. The problem arises when two of them are used together then they produce benzene.

A study was carried out in a range of soft drinks/ beverages containing sodium benzoate and ascorbic acid which can reach together to cause benzene formation through the decarboxylation of benzoic acid under certain conditions, such as exposure to heat and light. A large number of diet, colas sampled in US

2023

ब
ह
उ
सी
य

१४१

between 1995 and 2001 had benzene levels higher than the limit permissible in drinking water.

The industry has covered up benzene contamination in soft drinks for quite sometime. Reports of benzene in soft drinks have been confirmed in the U.S., U.K. and Australia.

However, it is said that the levels found to date pose no health risk. It is also possible that some beverage firms might not know the potential for sodium benzoate and ascorbic acid to cause benzene formation in drinks.

The problem is that exposure to benzene is not only through beverages, which is only one of the sources.

While Benzene is commonly found in air in both urban and rural areas, the levels are usually low. Areas of heavy traffic, petrol stations and areas near industrial sources might have higher level. For most people, the exposure to benzene is higher from air as compared to food.

Most of the benzene taken in through the lining of gastrointestinal track and enters the blood stream it travels throughout the body and can be stored in bone marrow and fat; the liver

and the bone marrow convert benzene into metabolites, which may cause some of the harmful effects of benzene exposure. Most of the metabolites of benzene are excreted in urine within 48 hours.

At higher concentration benzene is highly toxic, hazardous substance and a known human carcinogen linked to cancer.

Especially, disturbing is the fact that such products pose a potentially bigger problem when it comes to consumption by children since their body mass very less.

There have been no standards for benzene in beverages, perhaps they all figure that when you put sugar, artificial flavours in same water,

The two ingredients are still used together in a wide range of soft drinks across the world.

Formation of benzene in beverages is a real danger in a country like India with hot summers and where many street vendors refrigerate a few packs while rest are displayed outside to attract customers. Do not need to pay attention to the problem and study it in detail ?

२०२३

ब
ह
उ
सी
य

१४२

Literary



POISED THINKING : A KEY TO SUCCESS

Priyanka Dighe / 11th Science



There is a spark in every humanbeing Gautam Budha said "tatavm Asi that is thou. But most of the time man do not know this. Your situation is just like a deer in search of kasturi, you know that what you are but you do not know what you may be.

It means you never try to peep into your inner consciousness (mind) when you look into your inner mind you know your limits and abilities. It needs some good efforts to fulfill your ambitions (dreams) it also helps to abolish some false/wrong ideas if there are any.

When you peep into your inner mind you must have positive opinions, thinking with you. It helps you to conquer, increase your confidence and it definitely boost you. But if you have negative thinking, you will be discouraged and once you are discouraged you will loose confidence once you loose confidence you will never stand in your life.

Up's and downs are the part and parcel of life. Whenever you are in trouble never be discouraged you just have patience in your life. You just face it boldly. You can definitely overcome the calamity.

Just keep in mind well that every "cloud has silver lining" it means after dark moments in your life there is definitely a movement of joy (happiness) it means you know, a life is combination of joy and sorrow. As you know that every coin has two sides similarly joy and sorrow are also two sides of life.

Whenever there is sorrow most of the times you become emotional, to be too much emotional is harmful to the body and mind. It cripples you and you become tame. For the success you must have poised thinking.

Poised thinking is the key to success in life.

२०२३

ब
ह
उ
स
य

१४३

Informative



BE POSITIVE

Harshala Sabale / 11th Science

It's true that life does not belong same to all. There are ups and downs in the life. As this is the era of competition, our younger generation must be under pressure of fulfilling their parents' dreams. They must be facing the unending competition with others and with themselves also.

Before few days, there was a news about a girl. She committed suicide as she had got less marks in exam. Such type of incidents are increasing day by day. Our youth, who are the pillars of our nation, who are supposed to change the society they are becoming the victims of depression, frustration and committing suicides. Isn't it horrifying?

It's true that life does not belong same to all. There are ups and downs in the life. As this is the era of competition, our younger generation must be under pressure of fulfilling their parents' dreams. They must be facing the unending competition with others and with themselves also. But is it the right way to face the situation? Someone has said, "Life is a pendulum of clock that moves between joy and sorrow." This is obvious that sometimes we might face failure in life but we should have to face it bravely. We have to change our attitude towards life. It should be positive just like the person who looks at the half-filled glass and satisfies to think at least it is half-filled. So be satisfied with what you have got and try to make it better. We must remember and think that life doesn't come back. God gives us one chance and it depends upon us how we use it. So be positive and make your life happy and beautiful...

२०१३

ब
ह
उ
सी
य

१४४

Filler



READ, THINK, REMEMBER

Harshala Sabale / 11th Science

- Winning doesn't always mean being first; winning means you are doing better than you have done before....
- Never break four things in your life-Trust, Promise, Relation and Heart because when they break they don't make noise but pain a lot.
- If you win, you need not explain..... But if you lose you shouldn't be there no explain.
- Every one thinks of changing the world, but no one thinks of changing himself.
- If someone feels that he had never made a mistake in his life, then it means he had never tried a new thing in his life.
- In a day, when you don't come across any problem. You can be sure that you are travelling in a wrong path.
- If we cannot love the person whom we see, how can we love God whom we cannot see.

Three sentences for getting success:

- 1) Know more than others.
 - 2) Work more than others.
 - 3) Expect less than others.
- The greatest gift you can give someone is your time because when you give someone your time you are giving them a portion of life that you will never get back.



२०१३

ब
ल
ड
स
य

१४५



True Friendship

Once in a lifetime
you find a friend
who touches not only your heart
but also your soul.
Once in a lifetime
you discover someone
who stands beside you
not over you.
Once in a lifetime
if you are lucky
you find someone
as I have found you.
Very special people
we can be ourselves with,
talk with, laugh with,
hope with and believe with...

Harshala Shivaji Sabale
11th Science

BEST FRIENDS

When you're not here
to share my days and nights
My life is so incomplete
For you are my heart, my soul
The 'oneness' I had know to seek.
Without you I merely exist from day to day
With you I know that I will find
All that I have been searching for
My completeness, my eternal peace of mind.
You are the keeper of my dreams
The man who holds my heart in his hands
The one I want to spend my life with
The one with whom I will always stand.
Stand besides through thick and thin
Through all that life will throw our way
Knowing that this special love we share
Will guide us, each and every day.
This journey was started long ago
Before this time and place
The journey of completeness
As two hearts and souls embrace
Forever is what I want with you
For the search is at an end
Our hearts have found each other
As lovers, as soul-mates, as friends.

Harshala Shivaji Sabale
11th Science

What is life

- | | |
|-----------------------|----------------|
| Life is a challenge | - Meet it. |
| Life is a gift | - Accept it. |
| Life is a Sorrow | - Overcome it. |
| Life is a duty | - Perform it. |
| Life is a game | - Play it. |
| Life is a opportunity | - Take it. |
| Life is a promise | - Fulfil it. |
| Life is love | - Enjoy it. |
| Life is beauty | - Praise it. |
| Life is a spirit | - Realise it. |
| Life is a puzzle | - Solve it. |
| Life is a goal | - Achieve it. |

Shrikant Satish Shedge
11th Science



२०२३

ब
ह
उ
स
ी
य

१४६

आकाशिकसुन्दर

२५१

आकाशिक २२

आकाशिकसुन्दर

आकाशिकसुन्दर

आकाशिकसुन्दर (२)

२५१

आकाशिक २२

आकाशिकसुन्दर (२)



“अगळ्यांशी जो प्रामाणिकपणे वागतो,
जो दुसऱ्या बद्दल कृतज्ञ आहे,
त्याच्या पाठीशी परमेश्वरी शक्ती असते.
माणसाने नेहमी अज्ञान्याने वागावे,
उद्योगी असावे. नेकीने, सत्याने वागावे,
माणुसकीने वागावे हाच मानवाचा धर्म आहे.”

- महात्मा जोतिबा फुले

कनिष्ठ

संस्कृत विभाग

विभागीय संपादक

प्रा.सौ.एम.ए.भोरे

अनुक्रमणिका

गद्य विभाग

| | | | |
|----------------------|--------------|---------------|-----|
| १) सज्जन प्रशंसा | आरजू बागवान | ११ वी विज्ञान | १४९ |
| २) स्वामी विवेकानंदः | हर्षला साबळे | ११ वी विज्ञान | १५१ |



विज्ञान विभाग

१) सज्जन प्रशंसा

२) स्वामी विवेकानंदः

३) स्वामी विवेकानंदः

४) स्वामी विवेकानंदः

५) स्वामी विवेकानंदः

६) स्वामी विवेकानंदः



७) स्वामी विवेकानंदः

८) स्वामी विवेकानंदः

ललित

सज्जन प्रशंसा

आरजू बांगवान / ११ वी विज्ञान

चंदनाचे झाड तोडले-कापून काढले तरी आपला सुवास सोडत नाही.

प्रलय काळात समुद्र आपली मर्यादा सोडतो, त्यालाही बंधन नको वाटते.

सज्जनांच्या तोंडी (दुसऱ्याचे) दोष हे गुण होतात आणि दुर्जनांच्या तोंडी (दुसऱ्याचे) गुण हे दोष ठरतात.

छिन्नोऽपि चन्दतरुः न जहाति गन्धं,
वृध्दोऽपि वारणपतिः न जहाति लिलाम् ।
यन्त्रोर्पितो मधुरतां न जहाति च इक्षुः
क्षीणोऽपि न त्यजति शीलगुणान् कुलीनः ॥

भाषांतर :

चंदनाचे झाड तोडले-कापून काढले तरी आपला सुवास सोडत नाही. हत्ती म्हातारा झाला तरी आपल्या लीला-क्रिडा सोडत नाही. ऊस चरकात पिळून काढला तरी आपला गोडवा सोडत नाही. चांगल्या कुळात जन्माला आलेला मनुष्य क्षीण-अशक्त झाला तरी आपले शील आणि गुण सोडत नाही.

प्रलये भिन्न मर्यादा भवन्ति किल सागराः ।

सागरो भेदमिच्छान्ति प्रलयेऽपि न साधवः ॥

भाषांतर :

प्रलय काळात समुद्र आपली मर्यादा सोडतो, त्यालाही बंधन नको वाटते. पण असेच संकट जर सज्जनांवर आले तर ते आपली मर्यादा कधीच सोडत नाहीत.

गुणायन्ते दोषाः सुजनवदने दुर्जनमुखे

गुणा दोषायन्ते तदिदमपि नी विस्मयपदम् ।

महामेघः क्षारं पिबति कुरुते वारि मधुरम्

फणी पीत्वा दुग्धं वर्मान गरलं दुःसहतरम् ॥

भाषांतर :

सज्जनांच्या तोंडी (दुसऱ्याचे) दोष हे गुण होतात आणि दुर्जनांच्या तोंडी (दुसऱ्याचे) गुण हे दोष ठरतात. यात आम्हाला जरादेखील आश्चर्य

२०२३

ब
हा
दु
री
य

१४९

वाटत नाही. मोठा मेघ (समुद्राचे) खारे पाणी पितो आणि त्याचे गोड पाणी करतो, तर सर्प दूध पिऊन अतिशय असह्य असे विष ओकतो.

सन्त एवं सतां नित्यमापदुधरणक्षमाः ।

गजानाम् पङ्कमग्नानाम् गजा एव धुरंधराः ॥

भाषांतर :

सज्जनांचे संकट निवारण करण्यास नेहमी सज्जनच समर्थ असतात. (संकटातून उध्दार करतात) (जसे) चिखलात रुतलेल्या हर्तीना बाहेर काढण्यास हत्तीच समर्थ असतात.

सुजनम् व्यजनम् मध्ये चारुवेशसमुद्भवम् ।

आत्मानम् च परिभ्राम्य परताप निवारणम् ॥

भाषांतर :

मला सज्जन पंख्याप्रमाणे वाटतात. चांगल्या बांबूपासून बनवलेला पंखा जसा स्वतःला (गरगर) फिरवून दुसऱ्याचा ताप दूर करतो. तसा सज्जन (स्वतः भटकून) दुसऱ्याची पीडा निवारण करतो.

विपदि धैर्यमथाभ्युदये क्षमा,

सदसि वाक्पदुता युधिविक्रमः

यशसि चाभिरुचिर्यसनं

श्रुतौ प्रकृतिसिध्दमिदं हि महात्मनाम् ॥

भाषांतर :

संकटकाळी धैर्य, उत्कर्षाच्यावेळी क्षमा, सभेमध्ये वक्तृत्व, युध्दात पराक्रम, यशाची आवड आणि विद्याप्राप्तीचे व्यसन हे गुण सत्पुरुषांच्या ठिकाणी स्वाभाविकच असतात.

विकृतिर्नैव गच्छन्ति सङ्गदोषेण साधवः ।

अविष्टितो महासर्पेश्चन्दनो न विषायते ॥

भाषांतर :

सज्जन वाईट संगतीने विघडत नाहीत. (त्यांच्या स्वभावात वाईट बदल होत नाही) महासर्पानी वेढा घातलेले चंदनाचे झाड विषारी होत नाही.

वित्ते त्यागः क्षमा शक्तौ दुःखैः दैन्यविहीनता ।
निर्दम्भता सदाचारो स्वभावोऽहं महात्मनाम् ॥

भाषांतर :

संपत्तीच्या बाबतीत त्याग (दान) करणे, शक्ती असताना क्षमा दाखवणे, दुःखामध्ये दैन्यता नसणे आणि चांगल्या वागणुकीत ढोंग नसणे हा थोर लोकांचा स्वभाव असतो.

चलत्येकेन पादेन तिष्ठत्येकेन बुद्धिमान् ।

माऽसमीक्ष्य परं स्थानं पूर्वमायतनं त्यजेत् ॥

भाषांतर :

शहाणा मनुष्य एक पाऊल टाकतो (पुढे एक पाऊल चालतो) आणि एका पायाने उभा राहतो. तसे दुसरे ठिकाण नीट पाहिल्याशिवाय पूर्वीची जागा सोडू नये. (धरसोड वृत्तीच्या माणसाचा नेहमी तोटा होतो.)

गुणा गुणज्ञेषु गुणी भवन्ति

ते निर्गुणं प्राप्य भवन्ति दोषाः ।

आस्वाद्यतोयाः प्रभवन्ति नद्यः

समुद्रमासाद्य भवन्त्यपेयाः ॥

भाषांतर :

गुण जाणणारे असतील त्यांच्याजवळ गुण हे गुण ठरतात. तेच निर्गुणी मनुष्याकडे गेल्यावर (जाऊन) (गुणी मनुष्याचे गुणही) दोषच ठरतात. गोड पाणी असलेल्या नद्या उगम पावतात, पण समुद्राला मिळाल्यानंतर (जाऊन) पिण्यास अयोग्य पाणी असलेल्या होतात. (त्यांचे पाणी खारट होते).

ललित



स्वामी विवेकानन्दः

हर्षला साबळे / ११ वी विज्ञान

स्वामीविवेकानन्दः नरेन्द्रस्य नाम विवेकानन्दः इति अभवत् । अयं च नरेन्द्रः भारतभ्रमणं योगनाथनां च कृत्वा त्रिनवत्यधिकाष्टादशत (१८९३) तमे वर्षे अमेरिकादेशस्य शिकागोनगरे विश्वधर्मसम्मेलने भारतस्य गौरवं प्रतिष्ठापितवान् ।

| | |
|----------------|---|
| जन्मतिथि | : January 12, 1863 Monday |
| जन्मस्थानम् | : कोलकता, बङ्गालराज्यम्, भारतम् |
| पूर्वाश्रमनाम | : Narendranatha Dutta |
| मृत्युतिथि | : 4 July 1902 (aged 39) Friday |
| मृत्युस्थानम् | : कोलकतासमीपे बेलूरमतः |
| गुरुः/गुरवः | : रामकृष्ण परमहंसः |
| शिष्याः | : स्वामी सदानन्दः, सोदरी निवेदिता |
| तत्त्वचिन्तनम् | : वेदान्तः |
| साहित्यिककृतयः | : राजयोगः, कर्मयोगः, भक्तियोगः, ज्ञानयोगः |
| उक्तिः | : Come up, olions and shake off the delusion that you are sheep; you are souls immortal, spirits free, blest and eternal; ye are not matter; ye are not bodies; matter is your servant not you the servant of matter. |

सन्ति बहवो भारतस्य वरपुत्राः येषु अविस्मरणीयः स्वामी विवेकानन्दः । सः विश्वधर्मसम्मेलने भारतीय-संस्कृतेः उपदिष्टतां श्रेष्ठतां च प्रादर्शयत् । बङ्गप्रान्तस्य कोलकातानगरे त्रिषष्ट्याधिकशततमे (१८६३) वर्षे जनवरी मासस्य द्वादशे दिने एतस्य जन्म अभवत् । तस्य पिता श्री विश्वनाथदत्तमहोदयः । पूर्वं तस्य नाम नरेन्द्रनाथदत्तः इति आसीत् । एषः

२०२३

ब
ह
उ
सी
य

१५१

उत्साही, हास्यप्रियः करुणापरः च आसीत् । नरेन्द्रः बाल्ये कपीन्, मयूरान्, कपोतान् च पालयति स्म । एषः पितुः हयान् अपि रक्षति स्म । अध्ययनपदस्य नरेन्द्रः शास्त्रीयसङ्गीतस्य अभ्यासं करोति स्म । प्रतिदिनं व्यायामं करोति स्म । ध्यानसिद्धः अयं भ्रूमध्ये ज्योतिरेकं पश्यति स्म । ईश्वरं ज्ञातुं पाश्चात्यदर्शनस्य भारतीयदर्शनस्य च गभीरम् अध्ययनं कुर्वन् अयं नरेन्द्रः विश्वविद्यालयस्य स्नातकपदवीम् अधिगतवान् । अस्मिन्नेव समये दैवयोगात् दक्षिणेश्वरस्थे कालीमन्दिरे परमहंसस्य रामकृष्णदेवस्य दर्शनं तेन प्राप्तम् । रामकृष्णमुद्दिश्य नरेन्द्रः पुष्टवान् 'किं भवान् ईश्वरं दृष्टवान् ?' इति । 'आम् । त्वामिव ईश्वरमपि पश्यामि' इतिरामकृष्णदेवः स्मयमानः अवदत् । एष एव महापुरुषः नरेन्द्रस्य अध्यात्म-गुरुः अभवत् ।

सन्यासदीक्षानन्तरं नरेन्द्रस्य नाम विवेकानन्दः इति अभवत् । अयं च नरेन्द्रः भारतभ्रमणं योगसाधनां च कृत्वा त्रिनवत्यधिकाष्टादशत (१८९३) तमे वर्षे

अमेरिकादेशस्य शिकागोनगरे विश्वधर्मसभायां भारतस्य गौरवं प्रतिष्ठापितवान् । तत्र सभास्थले विविध धर्मग्रन्थाः एकस्य उपरि एकः इति क्रमेण स्थापिताः आसन् । संयोगवशात् श्रीमद्भगवद्गीता सर्वेषां पुस्तकानाम् अधः आसीत् । एकः अमेरिकावासी उपहासपूर्वकम् अवदत्- 'स्वामिन् । भवतां गीता सर्वेषां धर्मग्रन्थानाम् अधः वर्तते' इति । अत्युत्पन्नमतिः स्वामी विवेकानन्दः हसन्नेव प्रत्यवदत्- 'आम् । सत्यम् । आधारशिला तु अधः एव भवति । सा यदि बहिः स्वीक्रियेत तर्हि समग्रम् अधः पतिष्यति' इति । विदेशेषु वेदान्तधर्मस्य प्रचारं कृत्वा भारतं प्रत्यागतः सः देशोद्धाराय युवकान् प्रेरितवान् । जनसेवा, स्वास्थ्यरक्षा, स्त्रीरक्षा, आधुनिकप्रौद्योगिकी प्रभृतिषु क्षेत्रेषु असाधारणं कार्यकर्तुं 'रामकृष्णमिशन' इति संस्थां संस्थाप्य जनेषु शक्तिजागरणं कृतवान् । स्वामिविवेका-नन्दस्य अयं सन्देशः अद्यापि भारतीयान् प्रेशयति- "उत्तिष्ठत्, जाग्रत, प्राप्य वरान्निबोधत ।"

२०१३

ब
ह
उ
सी
य

१५२

कनिष्ठ

| | | |
|-----|--|------|
| १११ | (नवमी) विभिन्न विषयों पर प्रश्नोत्तर (१) | (१) |
| ११२ | (नवमी) विभिन्न विषयों पर प्रश्नोत्तर (२) | (२) |
| ११३ | विभिन्न विषयों पर प्रश्नोत्तर (३) | (३) |
| ११४ | विभिन्न विषयों पर प्रश्नोत्तर (४) | (४) |
| ११५ | विभिन्न विषयों पर प्रश्नोत्तर (५) | (५) |
| ११६ | विभिन्न विषयों पर प्रश्नोत्तर (६) | (६) |
| ११७ | विभिन्न विषयों पर प्रश्नोत्तर (७) | (७) |
| ११८ | विभिन्न विषयों पर प्रश्नोत्तर (८) | (८) |
| ११९ | विभिन्न विषयों पर प्रश्नोत्तर (९) | (९) |
| १२० | विभिन्न विषयों पर प्रश्नोत्तर (१०) | (१०) |
| १२१ | विभिन्न विषयों पर प्रश्नोत्तर (११) | (११) |
| १२२ | विभिन्न विषयों पर प्रश्नोत्तर (१२) | (१२) |
| १२३ | विभिन्न विषयों पर प्रश्नोत्तर (१३) | (१३) |
| १२४ | विभिन्न विषयों पर प्रश्नोत्तर (१४) | (१४) |
| १२५ | विभिन्न विषयों पर प्रश्नोत्तर (१५) | (१५) |
| १२६ | विभिन्न विषयों पर प्रश्नोत्तर (१६) | (१६) |
| १२७ | विभिन्न विषयों पर प्रश्नोत्तर (१७) | (१७) |
| १२८ | विभिन्न विषयों पर प्रश्नोत्तर (१८) | (१८) |
| १२९ | विभिन्न विषयों पर प्रश्नोत्तर (१९) | (१९) |
| १३० | विभिन्न विषयों पर प्रश्नोत्तर (२०) | (२०) |
| १३१ | विभिन्न विषयों पर प्रश्नोत्तर (२१) | (२१) |
| १३२ | विभिन्न विषयों पर प्रश्नोत्तर (२२) | (२२) |
| १३३ | विभिन्न विषयों पर प्रश्नोत्तर (२३) | (२३) |
| १३४ | विभिन्न विषयों पर प्रश्नोत्तर (२४) | (२४) |
| १३५ | विभिन्न विषयों पर प्रश्नोत्तर (२५) | (२५) |
| १३६ | विभिन्न विषयों पर प्रश्नोत्तर (२६) | (२६) |
| १३७ | विभिन्न विषयों पर प्रश्नोत्तर (२७) | (२७) |
| १३८ | विभिन्न विषयों पर प्रश्नोत्तर (२८) | (२८) |
| १३९ | विभिन्न विषयों पर प्रश्नोत्तर (२९) | (२९) |
| १४० | विभिन्न विषयों पर प्रश्नोत्तर (३०) | (३०) |

तळहात बघू नकोश

तशा तो कोरुच अस्तो

कारण

आयुष्याचं गीत लिहायला

मनगटच मजबूत अशावं लागतं

बघणाऱ्यांनी अवश्य बघावं

पण

हातावरच्या रेषा न्याहाळताना

मनगट पिचणार नाही

याची काळजी घ्यावी



विभागीय संपादक

प्रा.सौ.इंदुमती पवार

अनुक्रमणिका

| | |
|--|-----|
| १) विद्यार्थी संसद प्रतिनिधी समिती (विज्ञान) | १५५ |
| २) वेळापत्रक व तासिका नियंत्रण विभाग (विज्ञान) | १५५ |
| ३) शिक्षक-पालक संघ | १५५ |
| ४) MHTCET कमिटी | १५६ |
| ५) १२वी विज्ञान उच्चकृत अभ्यासक्रम कार्यशाळा | १५६ |
| ६) परीक्षा विभाग | १५७ |
| ७) शिक्षक प्रतिनिधी | १५७ |
| ८) भित्तिपत्रिका विभाग | १५७ |
| ९) सांस्कृतिक विभाग (विज्ञान) | १५८ |
| १०) परीक्षा विभाग कला वाणिज्य शाखा | १५८ |
| ११) सांस्कृतिक विभाग (कला, वाणिज्य) | १५८ |
| १२) गुणवत्तावाढ विभाग | १५९ |
| १३) विद्यार्थी संसद (कला, वाणिज्य) | १५९ |
| १४) सहल पर्यटन | १६० |
| १५) वक्तृत्व निबंध व चित्रकला स्पर्धा | १६० |
| १६) स्टाफ सेक्रेटरी | १६० |
| १७) वेळापत्रक व तासिका नियंत्रण विभाग (कला, वाणिज्य) | १६१ |
| १८) ज्युनि. जिमखाना विभाग | १६१ |

शुद्धिक
प्राधान्य प्राप्त

कनिष्ठ विभाग वार्षिक अहवाल सन २०१२-२०१३

विद्यार्थी संसद प्रतिनिधी समिती

सायन्स विभाग

शैक्षणिक वर्ष २०१२-२०१३ मध्ये ज्युनिअर सायन्स विभागात गुणवत्ता प्रमाण मानून खालील विद्यार्थ्यांची वर्ग प्रतिनिधी म्हणून निवड केली व विद्यार्थी संसद स्थापन केली आहे.

| वर्ग | विद्यार्थ्यांचे नाव |
|---------------|-------------------------|
| ११वी सायन्स : | कु. मोरे अश्विनी नारायण |
| १२वी सायन्स : | कु. यादव संयुक्ता संजय |

प्रा.सौ. व्ही. एस. शिंदे
विद्यार्थी संसद प्रमुख

वेळापत्रक व तासिका नियंत्रण विभाग

ज्यु. सायन्स विभाग

शैक्षणिक वर्ष २०१२-१३ मध्ये ज्युनिअर शास्त्र विभागात इयत्ता ११वी व १२वी प्रत्येकी ४ अशा एकूण ८ तुकड्या होत्या. एकूण १० विषय २७ शिक्षक वर्ग व ८७५ विद्यार्थी संख्येचा अंतर्भाव होता. एकावेळी किमान आठ व कमाल ११ तासिका दुपार सत्रात नविन इमारतीमध्ये पहिल्या, दुसऱ्या व तिसऱ्या मजल्यावर घेतल्या जात होत्या.

महाविद्यालयाच्या दैनंदिन अध्ययन-अध्यापन प्रक्रियेचा एक अत्यंत संवेदनशील व अविभाज्य घटक असणाऱ्या तासिका नियंत्रण विभागाची जबाबदारी वेळापत्रकानुसार वक्तशीरपणे तासिका शृंखला अखंडीत ठेवून नियमितपणे वर्षभर सातत्याने शांततापूर्ण वातावरणात व्यवस्थित पार पाडली. त्याचप्रमाणे वेळोवेळी होणाऱ्या परीक्षा, सहशालेय उपक्रम व विभागीय संयुक्त कार्यक्रमाच्या आवश्यकतेनुसार विद्यार्थी हित डोळ्यापुढे ठेवून सकारात्मक दृष्टीकानातून तासिका व्यवस्थापन केले.

वेळापत्रक व तासिका नियंत्रण विभागाचे काम म्हणजे तारेवरची कसरत. ती सुरळीतपणे पार पाडण्यासाठी सदर विभागातील सदस्य प्रा.डॉ.सौ.

निंबाळकर एस.के., प्रा.सौ. थोरात ए.ए. व प्रा. पाटील एस.एस. यांचे सहकार्य व प्रा.एम.एम. कारभारी व मा.प्राचार्य डॉ.आर.व्ही. शेजवळ यांचे मोलाचे मार्गदर्शन लाभले.

प्रा.एस.बी. पाटील
वेळापत्रक व तासिका नियंत्रण विभाग प्रमुख

शिक्षक-पालक संघ

ज्यु. सायन्स विभाग

शिक्षणातून सुजाण नागरिक घडवा, ज्ञानाचे योग्य उपयोजन करणारा सुसंस्कृत माणूस निर्माण व्हावा यासाठी शिक्षणमहर्षी डॉ. बापूजी साळुंखे यांनी अनेक संस्कार केंद्रे निर्माण केली. लाल बहादूर शास्त्री महाविद्यालय हे त्यापैकीच एक. आमच्या महाविद्यालयामध्ये अनेक उपक्रम राबविले जातात. ११वी व १२वी चे वर्ष हे विद्यार्थ्यांच्या जीवनाला वळण देणारे वर्ष असते. विद्यार्थ्यांच्या प्रगतीसाठी तसेच पालक-विद्यार्थी व शिक्षक यांच्यात सुसंवाद व्हावा यासाठी पालक मेळाव्याचे आयोजन करण्यात आले. पालक मेळावा हा विद्यार्थ्यांच्या आणि पालकांच्या मनामध्ये विचारांच्या पेरणीचा कार्यक्रम असतो.

इ. १२वी च्या विद्यार्थ्यांच्या पालकांचा मेळावा दि. २४.०९.२०१२ ला घेण्यात आला. त्यामध्ये पालकांना वर्षभराचे नियोजन सांगण्यात आले. घटक चाचणी १ची निकालपत्रके पालकांना देण्यात आली.

इ. ११वी च्या विद्यार्थ्यांच्या पालकांचा पालक मेळावा दि. २.३.२०१३ रोजी घेण्यात आला. त्यावेळी पुढील वर्षाचे वार्षिक नियोजन, परीक्षांचे नियोजन देण्यात आले. शिक्षक पालक संघ तयार करण्यात आला.

प्रत्येक पालक मेळाव्यामध्ये सुसंवाद साधला गेला. मा. प्राचार्यांनी पालकांना बहुमोल मार्गदर्शन केले. प्रत्येक वेळी पालकांचा चांगला प्रतिसाद होता.

२०१३

ब
ह
ड
री
य

१५५

पालक मेळावा यशस्वीरित्या पार पाडण्यासाठी मा. प्राचार्य डॉ. शेजवळ आर.व्ही. व ज्यु. सायन्सचे विभागप्रमुख प्रा. कारभारी एन.एम. यांचे बहुमोल मार्गदर्शन मिळाले.

कमिटी सदस्य प्रा. पाटील एस.एस. व प्रा. हरनोळ पी.एन. यांचे सहकार्य लाभले. तसेच सर्व वर्गशिक्षक व इतर सहकारी प्राध्यापक यांची मदत फार मोलाची आहे.

प्रा.सौ. एस.वाय. पाटणे
शिक्षक पालक संघ कमिटीप्रमुख

MHTCET कमिटी

आजचे युग हे स्पर्धेचे युग आहे. त्यामध्ये आमच्या महाविद्यालयाचे विद्यार्थी यशस्वी व्हावेत यासाठी सन २०११-१२ पासून १२वी सायन्स साठी 'सर्वासाठी CET' ही संकल्पना सुरु करण्यात आली.

यावर्षी CET परीक्षेचे स्वरूप, अभ्यासक्रम पूर्णपणे बदललेला आहे. त्या बदलाला सामोरे जाण्यासाठी सक्षम विद्यार्थी घडावा यासाठी वर्षभर नियोजनानुसार CET चे अध्यापन केले. दोन चाचणी परीक्षा घेण्यात आल्या. प्रत्येक विषयाच्या CET च्या नोट्स पुरवण्यात आल्या.

CET व्याख्यानमालेमध्ये प्रा. राजेंद्र शहा यांचे CET परीक्षेचे स्वरूप तसेच Chemistry (CET) यांवर अभ्यासपूर्ण व्याख्यान झाले.

तसेच प्रा.डी.बी. सुतार यांचे CET गणित यावर व्याख्यान आयोजित करण्यात आले होते.

CET कमिटीचे कामकाज यशस्वीरित्या पार पाडण्यासाठी मा. प्राचार्य आर.व्ही. शेजवळ व ज्यु. सायन्सचे प्रमुख प्रा. कारभारी एन.एम. यांनी बहुमोल मार्गदर्शन केले.

तसेच कमिटीतील सदस्य प्रा. मुसळे एस.ए., प्रा.सौ. पिसे आर.डी. तसेच प्रा.सौ. माने एम.आर. यांचे सहकार्य लाभले. तसेच सर्व प्राध्यापकांनी मोलाची मदत केली.

प्रा.सौ. एस.वाय. पाटणे, MHICET कमिटी प्रमुख

१२वी विज्ञान उच्चकृत

अभ्यासक्रम कार्यशाळा

१२वी विज्ञान भौतिकशास्त्र, रसायनशास्त्र, जीवशास्त्र व गणित या विषयांचे अभ्यासक्रम उच्चकृत (Upgraded) करण्यात आलेले असून त्याची अंमलबजावणी सन २०१२ पासून करण्यात आलेली आहे. महाराष्ट्र राज्य मा. व उ. मा. शिक्षण मंडळ कोल्हापूर यांनी सातारा जिल्ह्यातील जीवशास्त्र व गणित विषयांच्या प्राध्यापकांना उच्चकृत (Upgraded) अभ्यासक्रमाचे मार्गदर्शन करण्यासाठी २१ जुलै २०१२ ते २३ जुलै २०१२ अखेर या महाविद्यालयात कार्यशाळा आयोजित केली होती.

सदर कार्यशाळेसाठी जीवशास्त्र व गणित या विषयांचे ११० प्राध्यापक उपस्थित होते. १० तज्ञ प्राध्यापकांमार्फत प्रशिक्षणार्थी प्राध्यापकांनी आपल्या Feed Back Report मध्ये अभ्यासक्रमाचे उपयुक्त मार्गदर्शन झाल्याचे व कार्यशाळेचे उत्कृष्ट नियोजन झाल्याचा अभिप्राय दिला आहे.

कार्यशाळेसाठी प्रा.डॉ.महेश गायकवाड यांनी उपकेंद्र संचालक म्हणून काम केले. प्रा.सौ. पाटणे एस.वाय. व प्रा.श्रीमती माने एम.आर. व त्यांचे जीवशास्त्र व गणित विभागातील सर्व प्राध्यापकांचे मोलाचे मार्गदर्शन मिळाले. कार्यशाळा यशस्वी होण्यासाठी ज्यु. सायन्समधील सर्व प्राध्यापकांचे उत्कृष्ट सहकार्य मिळाले.

तसेच विद्या समिती द्वारा आयोजित ११वी, १२वी प्रश्नपत्रिका कार्यशाळेत जीवशास्त्र या विषयाच्या संस्था पातळीवरील सर्व परीक्षांच्या प्रश्नपत्रिका काढण्यात आल्या. प्रा.सौ. पाटणे एस.वाय., प्रा. पाटील एम.एस., प्रा.सौ. शिंदे जे.एस., प्रा.सौ. पिसे आर.डी. व प्रा. पाटील एस.एस. यांनी कार्यशाळेचे उत्कृष्ट नियोजन करून बोर्ड पॅटर्नवर आधारित प्रश्नपत्रिका काढल्या.

वरील दोन्ही कार्यशाळेसाठी प्राचार्य डॉ.आर.व्ही. शेजवळ यांचे मोलाचे सहकार्य मिळाले.

प्रा.एन.एम. कारभारी, को-ऑर्डिनेटर

परीक्षा विभाग

ज्यु. सायन्स

आजचे युग हे स्पर्धेचे युग आहे. आजच्या स्पर्धेच्या युगात ज्ञानात्मक गुणवत्तेला विशेष महत्त्व प्राप्त झालेले आहे. शिक्षणातून स्वतंत्र बुद्धीने विचार करणारा सक्षम विद्यार्थी घडला पाहिजे यासाठी महाविद्यालयातील परीक्षा विभागाने सन २०१२-१३ या शैक्षणिक वर्षामध्ये विविध परीक्षांचे आयोजन केले.

यावर्षी इ. ११ व १२ विज्ञान वर्गाच्या एकूण आठ तुकड्यांमधील ८८५ विद्यार्थ्यांच्या दोन घटक चाचण्या, सत्र परीक्षा, पूर्व परीक्षा, सराव परीक्षा, प्रात्यक्षिक परीक्षेसह सुरळीतपणे पार पाडल्या. एच.एस.सी. बोर्डांने सुचविल्याप्रमाणे १२वी पर्यावरण विषयाची परीक्षा, भाषा विषयांच्या तोंडी परीक्षा, भूगोल, सर्व विज्ञान विषय, गणित इ. विषयांची प्रात्यक्षिक परीक्षा घेऊन गुणपत्रिका विनाविलंब बोर्डाकडे पाठविण्यात आल्या.

परीक्षा विभागाचे काम पार पाडण्यासाठी सर्व प्राध्यापकांचे उत्तम सहकार्य लाभले. या परीक्षा विभागात कार्यरत असणारे प्रा.एस.यू. पाटील, प्रा.एस.एस. पाटील, प्रा.सौ. थोरात ए.ए. यांचे मोलाचे सहकार्य मिळाले. ज्युनियर सायन्स विभागाचे प्रमुख प्रा. कारभारी एन.एम. यांचे मोलाचे मार्गदर्शन मिळाले. सर्व प्रशासकीय कर्मचारी यांचे सहकार्य मिळाले.

परीक्षा विभागाचे कामकाज पार पाडण्यासाठी महाविद्यालयाचे प्राचार्य डॉ.आर.व्ही. शेजवळ यांचे कुशल मार्गदर्शन लाभले.

प्रा.श्रीमती जे.एस. शिंदे
विभागप्रमुख

शिक्षक प्रतिनिधी

कला, वाणिज्य व विज्ञान शाखा

शिक्षक प्रतिनिधी हा प्राध्यापक व प्राचार्य यांच्यामधील दुवा असतो. प्राचार्यांच्या मार्गदर्शक सूचना प्राध्यापकांकडे तर प्राध्यापकांच्या कल्पक सूचना प्राचार्यांकडे पोहोचवण्याचे काम शिक्षक

प्रतिनिधी म्हणून केले गेले. सन २०१२-२०१३ या शैक्षणिक वर्षामध्ये गरीब गरजू विद्यार्थ्यांना महाविद्यालयाकडून मदत करण्याचे तसेच सेवा निवृत्त प्राध्यापकांच्या निरोप समारंभाचे आयोजन केले. विविध उपक्रमाकरीता निधी गोळा करून तो परोपकारी वृत्तीने कारणी लावण्याचा प्रयत्न केला.

स्टाफरूममध्ये उपयुक्त भौतिक साधने उपलब्ध करून देण्याचा तसेच वातावरण खेळीमेळीचे ठेवण्याचा प्रयत्न केला.

प्रा.श्री.आर.डी. यादव प्रा.सौ.एस.के. निंबाळकर
शिक्षक प्रतिनिधी विज्ञान शाखा
कला, वाणिज्य

भित्तिपत्रिका विभाग

“आम्हा घरी धन, शब्दांचीच रत्ने
शब्दांचीच शस्त्रे यत्न करू”

संत तुकाराम

संत श्रेष्ठ तुकोबांनी लिहिलेल्या वरील उक्तीप्रमाणे शब्दरूपी पानाफुलातून यावर्षी ‘सदाफुली’ या भित्तिपत्रिकांचे उद्घाटन मा.प्राचार्य आर.व्ही. शेजवळ व शिक्षण क्रीडा अर्थ जिल्हा परिषद सभापती मा. संजय देसाई यांनी केले. विद्यार्थ्यांच्या सुप्त कला गुणांना वाव मिळावा, त्यांच्यामध्ये साहित्याची वाढ व्हावी यासाठी भित्तिपत्रिकांचे आयोजन केले. विद्यार्थ्यांनी आपल्या कला, कलेला साजेशा अशा कविता, लेख, चारोळ्या, स्वामी विवेकानंदांचे चित्र देऊन बहुमोल सहकार्य केले. गुणवान विद्यार्थ्यांचे अथक परिश्रम, चिकाटी, जिद्द, उत्साह आवड व आमच्या सहकारी प्राध्यापक बंधू भगिनी यांनी केलेले सहकार्य यामुळे हे कार्य यशस्वी झाले.

या विभागासाठी आमच्या कॉलेजचे प्राचार्य मा. शेजवळ सर सहकारी प्रा. हरनोळ मॅडम, प्रा. कुलकर्णी व प्रा.आर.ए. पाटील व इतर सहकारी प्राध्यापक यांचे सहकार्य लाभले.

प्रा.सौ.एम.ए. भोरे
विभाग प्रमुख

२०१३

ब
हा
र
ु
सी
य

१५७

सांस्कृतिक विभाग

ज्यु. सायन्स विभाग

महाविद्यालयाचा २०१२-२०१३ सालचा सांस्कृतिक विभागाचा अहवाल आपणांसमोर मांडताना विलक्षण आनंद होत आहे.

सांस्कृतिक विभागप्रमुख या नात्याने हे शिवधनुष्य पेलताना विभागातील सर्वच सहकाऱ्यांचे सहकार्य सदैव सोबत राहिले म्हणून विविध कार्यक्रमांचे आयोजन करण्यात आले.

बापूजीचे शिक्षणातील योगदान, त्याग त्यांचे आदर्श आचार विचार विद्यार्थ्यांपर्यंत पोहचवावेत, त्यांच्या विचारांचे स्मरण व्हावे या महामानवाची ओळख व्हावी म्हणून ऑगस्ट रोजी शि.म.प.पू.डॉ. बापूजी साळुंखे पुण्यतिथी साजरी करण्यात आली.

खास विद्यार्थ्यांचा आग्रहास्तव शिक्षकांप्रती आदराची भावना व्यक्त करण्यासाठी ५ सप्टेंबर राधाकृष्णन् जयंती (शिक्षक दिन) या विभागाच्या वतीने साजरा करण्यात आला.

३ जानेवारी रोजी सावित्रीबाई फुले जयंती ११ जानेवारी रोजी लाल बहादूर शास्त्री पुण्यतिथी साजरी के ली. वर्षभरात अनेक विचारवंतांचे जयंती, पुण्यतिथीचे दिन साजरे करण्यात आले.

१२ जानेवारी विवेकानंद जयंती सप्ताहानिमित्त अनेक मान्यवरांची व्याख्याने झाली. उद्याचा बलशाली भारत घडविण्यासाठी ही व्याख्याने विद्यार्थ्यांच्यासाठी खूपच प्रेरणादायी झाली.

वर्षभरातील सर्व कार्यक्रमास मा. प्राचार्य डॉ.आर.व्ही. शेजवळ यांचे बहुमुल्य मार्गदर्शन लाभले. तसेच सांस्कृतिक विभागातील प्रा. हरनोळ मॅडम व प्रशासकीय विभाग यांचे मोलाचे सहकार्य लाभले.

प्रा.सौ.एम.ए. भोरे
विभाग प्रमुख

परीक्षा विभाग कला वाणिज्य शास्त्रा

सदर शैक्षणिक वर्षामध्ये कला व वाणिज्य

शाखेच्या एकूण १० तुकड्यांमधील इ. ११वी कला व वाणिज्यच्या अनुक्रमे २८३ व २५० आणि १२वीच्या २६० व २३४ अशा १०२७ विद्यार्थ्यांच्या घटकचाचण्या सत्र परीक्षा १ व २, पूर्वपरीक्षा आणि त्या त्या वेळी आवश्यक भाषा विषयाच्या तोंडी परीक्षा, स्वाध्याय व भूगोलाची प्रात्यक्षिक परीक्षा बोर्डांने दिलेल्या कालावधीत पूर्ण करून त्यांच्या गुणपत्रिका आणि पर्यावर शिक्षण विषयाच्या वर्षभरातील परीक्षा व प्रकल्पकार्य पूर्ण करून त्याचे श्रेणी-तक्ते बोर्डांकडे विनाविलंब पाठविण्यात आले.

यावर्षी इ. १२वी पूर्वपरीक्षा व सराव परीक्षा यांच्या प्रश्नपत्रिका संस्थेच्या विद्यासमितीकडून प्राप्त झाल्या व इतर सर्व परीक्षांच्या प्रश्नपत्रिका महाविद्यालयातील विषय शिक्षकांकडून काढून घेण्यात आल्या. उत्तरपत्रिकांची तपासणी बोर्डपध्दतीने नमुना उत्तरपत्रिकेनुसार करण्यात आली व सर्व परीक्षांचा निकाल संगणकीकृत करण्यात आला. या कामी शिक्षक, शिक्षकेतर व प्रशासकीय वर्गाचे मोलाचे सहकार्य लाभले.

या परीक्षा विभागात प्रा. यादव आर.डी., प्रा.पी.डी. कोळी, सौ. साळुंखे गितांजली, प्रा. राम पाटील पर्यवेक्षक या विभागाचे काम सुरळीत पार पाडण्यासाठी सहकार्य लाभले. मा. प्राचार्य डॉ. शेजवळ आर.व्ही. यांचे मौलिक मार्गदर्शन मिळाले.

प्रा.ए.एन. कुलकर्णी
परीक्षा विभाग प्रमुख

सांस्कृतिक विभाग

मृगाच्या धुंद सरिंनी

उमलून येते माती,

हीच खरी नाती,

आपली..

हीच खरी संस्कृती

महाविद्यालयात इयत्ता ११वी कला व वाणिज्य विभागात नव्याने प्रवेश घेतलेल्या विद्यार्थ्यांचे स्वागत करण्यासाठी 'नवागतांचे स्वागत' हा कार्यक्रम आयोजित

२०१३

ब
हा
रु
सी
य

१५८

करण्यात आला. या कार्यक्रमासाठी प्रमुख पाहुणे प्रा.श्रीधर साळुंखे यांनी विद्यार्थ्यांना मार्गदर्शन केले.

बापूजींचे शिक्षण क्षेत्रातील योगदान, त्याग, त्यांचे आदर्श, आचारविचार विद्यार्थ्यांपर्यंत पोहोचवते, या महामानवाची ओळख समाजाला व्हावी यासाठी ८ ऑगस्ट रोजी शिक्षणमहर्षी डॉ. बापूजी साळुंखे यांची पुण्यतिथी साजरी करण्यात आली. या दिवशी सकाळी संपूर्ण शहरातून प्रभात फेरी काढण्यात आली. तसेच प्रा. बाळासाहेब जगताप यांनी डॉ. बापूजी साळुंखे यांचे जीवन व कार्याची माहिती विद्यार्थ्यांसमोर उलगडून दाखवली.

शिक्षक दिनाच्या कार्यक्रमात सातारा जिल्ह्याचे शिक्षण सभापती मा. संजय देसाई यांनी सर्व प्राध्यापक वर्गाचा सत्कार केला.

१२ जाने. ते १९ जानेवारी या कालावधीमध्ये 'विवेकानंद सप्ताह' साजरा करण्यात आला. या सप्ताहामध्ये विद्यार्थ्यांच्या विविध कला गुणांना व मिळावा यासाठी निबंध, वक्तृत्व, चित्रकला स्पर्धांचे आयोजन केले. तसेच विद्यार्थ्यांच्यासाठी प्रेरणादायी व्याख्यानांचे आयोजन केले.

८ मार्च हा 'जागतिक महिला दिन' महाविद्यालयामध्ये अत्यंत उत्साहाने साजरा करण्यात आला. यासाठी सौ. सुशीलादेवी साळुंखे गर्ल्स हायस्कूलच्या संगीत मंचाचा 'सुशील स्वरधारा' हा भावगीतांचा देखणा कार्यक्रम मुर्लीच्यासाठी आयोजित केला.

वर्षभरातील सर्व कार्यक्रमांना मा. प्राचार्य डॉ.आर.व्ही. शेजवळ यांचे मार्गदर्शन लाभले. तसेच सांस्कृतिक विभागातील प्रा.सी.ए. पाटील, प्रा.एल.जी. बदनने यांचे आणि ज्युनि. कला, वाणिज्य विभाग प्रमुख प्रा.आर.ए. पाटील व सर्व प्राध्यापक वृंद आणि प्रशासकीय विभाग यांचे मोलाचे सहकार्य लाभले.

प्रा. गीतांजली श. साळुंखे
ज्युनियर. सांस्कृतिक विभाग प्रमुख

गुणवत्तावाढ विभाग

गुणवत्तावाढ विभागामार्फत सन २०१२-१३ या शैक्षणिक वर्षात इ. १२वी कला-वाणिज्य या वर्गातील गुणवत्ताधारक विद्यार्थ्यांची निवड करून त्यांच्यासाठी विषयांवर जादा तासिका व बोर्ड परीक्षेच्या मागील काही वर्षातील प्रश्नपत्रिका विद्यार्थ्यांच्याकडून सोडवून घेतल्या. त्याप्रमाणे अभ्यासक्रम शिकवून पूर्ण झाल्यावर विविध विषय तज्ज्ञांची मार्गदर्शनपर व्याख्यानमाला आयोजित करून विद्यार्थ्यांना विषयातील सखोल मार्गदर्शन व ज्ञान देणेत आले. या समीतीतील व विभागातील प्रमुख प्रा.वहागांवकर व्ही.एस. व सदस्य महाडीक ए.ए., पाटील सी.ए., प्रा.सौ.साळुंखे जी.एस. यांनी याकामी परिश्रम घेतले. या विभागास मा.प्राचार्य शेजवळ आर.व्ही. व ज्युनि. विभागाचे प्रमुख प्रा. आर.ए. पाटील यांनी मोलाचे मार्गदर्शन व सहकार्य केले. तसेच विविध विषय शिक्षक व विद्यार्थ्यांची मदत झाली.

प्रा.व्ही.एस. वहागांवकर
गुणवत्तावाढ विभाग प्रमुख

विद्यार्थी संसद

कला व वाणिज्य विभाग

शैक्षणिक वर्ष २०१२-२०१३ ज्युनियर विभागात गुणवत्ता प्रमाण मानून खालील विद्यार्थ्यांची वर्ग प्रतिनिधी म्हणून निवड केली व विद्यार्थी संसद स्थापन केली गेली.

| वर्ग | तुकडी | विद्यार्थी नाव |
|--------------|-------|--------------------|
| ११वी कला | अ | गोडसे काजल लक्ष्मण |
| ११वी कला | ब | पवार दिपक महादेव |
| ११वी कला | क | पवार अर्चना प्रमोद |
| १२वी कला | अ | गौरी प्रभाकर जाधव |
| १२वी कला | ब | जाधव विलास मारुती |
| १२वी कला | क | शेळके पुजा हणमंत |
| ११वी वाणिज्य | अ | यादव अक्षय सुभाष |
| ११वी वाणिज्य | ब | बेग शहाबाज |
| १२वी वाणिज्य | अ | गोळे कांचन तुकाराम |
| १२वी वाणिज्य | ब | जगदाळे कुलदिप दिपक |

प्रा.सौ.एम.ए. भोरे, विभाग प्रमुख

२०२३
ब
ह
ड
सी
य

१५९

सहल पर्यटन

शैक्षणिक वर्ष २०१२-१३ या वर्षी ऑगस्ट महिन्यात 'वर्षा सहलीचे' आयोजन करण्यात आले होते. ही सहल निसर्गरम्य व नयनमनोहर अशा पेशवेकालीन शिवमंदिर पाटेश्वर या ठिकाणी आयोजित करण्यात आली होती. या सहलीमध्ये ११० विद्यार्थी-विद्यार्थिनी व १० प्राध्यापक सहभागी झाले होते.

त्यानंतर २०/२१ डिसेंबर रोजी १ दिवसीय मुक्कामाच्या सहलीचे आयोजन करण्यात आले होते. ही सहल कोयनानगर, चिपळूण, परशुराम, डेरवण, संगमेश्वर, गणपतीपुळे, रत्नागिरी, पावस, मार्लेश्वर या कोंकणातील निसर्गरम्य ठिकाणी आयोजित केली होती.

सहलीचे नियोजन सहलविभागप्रमुख प्रा.सौ.आय.पी. पवार यांनी केले. या सहली प्रा. पाटील सी.ए., प्रा.वी.एस.कोळी, प्रा.पोवार ए.जी., प्रा.व्ही.एम.घोडके, प्रा.आर.ए. पाटील यांच्या सहकार्याने व प्राचार्य डॉ.आर.व्ही. शेजवळ यांच्या मार्गदर्शनाखाली उत्साहाच्या वातावरणात पार पडल्या.

प्रा.सौ.आय.पी. पवार

सहल विभाग प्रमुख (कला, वाणिज्य)

वक्तृत्व निबंध व चित्रकला स्पर्धा

सांस्कृतिक विभाग व या विभागाच्यावतीने शैक्षणिक वर्ष २०१३ मध्ये स्वामी विवेकानंद जयंती सप्ताहामध्ये प्रतिवर्षाप्रमाणे विविध कार्यक्रम व वक्तृत्व, निबंध व चित्रकला स्पर्धेचे आयोजन करण्यात आले होते. या विविध स्पर्धांचे डॉ.बापूजी साळुंखे स्मृतीप्रित्यर्थ आयोजन करण्यात येते. महाविद्यालयीनस्तर, जिल्हास्तर, राज्यस्तर अशा स्तरावर स्पर्धेचे आयोजन करण्यात येते. या स्पर्धेमध्ये ४० विद्यार्थ्यांनी सहभाग घेतला होता. परीक्षक म्हणून डॉ. सगरे सर, प्रा. कस्तुरे व प्रा.सौ.आय.पी. पवार यांनी काम पाहिले.

स्पर्धेमधील यशस्वी विद्यार्थी खालीलप्रमाणे आहेत.

वक्तृत्व स्पर्धा

- १) प्रथम - माने भाग्यश्री पोपट १२वी सायन्स (महाविद्यालयीन, जिल्हास्तर प्रथम)
- २) द्वितीय - किर्ते भुपेंद्र सुनिल ११वी सायन्स
- ३) तृतीय - कुलकर्णी अभय सुधीर ११वी सायन्स

निबंध स्पर्धा

- १) प्रथम - कु.शिंदे वर्षा पांडुरंग ११वी सायन्स
- २) द्वितीय - कु.वाघमळे सुषमा सतिश ११वी कॉमर्स
- ३) तृतीय - कु.काशीद प्रियांका उद्धव ११वी सायन्स

चित्रकला स्पर्धा

- १) प्रथम - घाडगे जय सयेंद्र ११वी कला (अ) (महाविद्यालयीन, जिल्हास्तर, राज्यस्तर प्रथम)
- २) द्वितीय - मुलाणी आफ्रिद शमशुद्दीन ११वी सायन्स
- ३) तृतीय - वाघोले करण भारत १२वी सायन्स

स्पर्धा यशस्वी करण्यासाठी प्रा.गीतांजली साळुंखे, प्रा.राम पाटील, प्रा.हरनोळ पी.एन., प्रा.ए.जी. पवार, प्रा. कोळी पी.डी. यांचे सहकार्य लाभले.

प्रा. चंद्रकांत पाटील
विभाग प्रमुख

स्टाफ सेक्रेटरी

कला वाणिज्य विभाग

स्टाफ सेक्रेटरी हा प्राध्यापक व प्राचार्य तसेच शिक्षकेतर कर्मचारी यांच्यामधील दुवा असतो. प्राचार्य व प्राध्यापकांच्या सूचना तो एकमेकांच्याकडे पोहचविण्याचे काम करतो. शैक्षणिक वर्ष सन २०१२-१३ वर्षात टी क्लब, सेवानिवृत्त गौरव समारंभ, लग्न सोहळा वर्गणी, संघटना वर्गणी, गरजू विद्यार्थी व प्राध्यापकांना आर्थिक मदत केली.

वरील सर्व उपक्रम राबवत असताना निधी गोळा करणे वपरोपकारीवृत्तीने सत्कारणी लावणे तसेच स्टाफरूम भौतिक सोयीसुविधा उपलब्ध करून देणे आणि स्टाफमध्ये आनंदी व खेळीमेळीचे वातावरण ठेवण्याचा प्रयत्न केला.

प्रा.आर.डी. यादव
विभाग प्रमुख

२०१३

ब
ह
ड
स
य

१६०

वेळापत्रक व तासिका नियंत्रण विभाग

शैक्षणिक वर्ष २०१२-२०१३ मध्ये ज्युनियर कला व वाणिज्य विभागात इयत्ता ११वी व १२वी कला अनुक्रमे ३+२ आणि वाणिज्य २+२ अशा एकूण १० पूर्ण अनुदानित तुकड्या होत्या. एकूण १५ विषय २० शिक्षक वर्ग व १०२२ विद्यार्थीसंख्येचा (कला ५४४ व वाणिज्य ४७८) अंतर्भाव होता. एकावेही किमान अकरा व कमाल तेरा तासिका सकाळ सत्रात नविन इमारतीमध्ये पहिल्या, दुसऱ्या व तिसऱ्या मजल्यावर घेतल्या जात होत्या.

महाविद्यालयाच्या दैनंदिन अध्ययन-अध्यापन प्रक्रियेला एक अत्यंत संवेदनशील व अविभाज्य घटक असणाऱ्या तासिका नियंत्रण विभागाची जबाबदारी वेळापत्रकानुसार वक्तशीरपणे तासिका शृंखला अखंडीत ठेवून नियमितपणे वर्षभर सातत्याने शांततापूर्ण वातावरणात व्यवस्थित पार पाडली. त्याचप्रमाणे वेळोवेळी होण्याऱ्या परीक्षा, सहशालेशय उपक्रम व विभागीय संयुक्त कार्यक्रमाच्या आवश्यकतेनुसार विद्यार्थीहीत डोळ्यापुढे ठेवून सकारात्मक दृष्टीकोनातून तासिका व्यवस्थापन केले.

या विभागाचे काम सुरळीतपणे पार पाडण्यासाठी सदर विभागातील सदस्य प्रा. कोळी पी.डी. यांचे वेळापत्रक बनविण्यासाठी आणि सहकाऱ्यांच्या रजेच्या व बदली कालावधीत सर्व सहकारी प्राध्यापक वर्गाचे विशेषतः प्रा. कुलकर्णी ए.एन., प्रा. राम पाटील, प्रा. यादव आर.डी. यांचे त्याचप्रमाणे शिपाई श्री. दिपक लाड यांचे सहकार्य व मा. प्राचार्य डॉ. शेजवळ आर.व्ही. यांचे मोलाचे मार्गदर्शन लाभले. धन्यवाद !

प्रा. बाळासाहेब कोळी
वेळापत्रक व तासिका नियंत्रण विभाग प्रमुख

ज्युनि. जिमखाना विभाग

आपल्या महाविद्यालयाचा जिमखाना विभागाचा अहवाल म्हणजे बहादूर विद्यार्थी खेळाडूंची गौरव गाथाच. शिक्षणमहर्षी डॉ. बापूजी साळुंखे यांनी

दिलेल्या चैतन्याचा मंत्र घेवून आमचे खेळाडू आपल्या कर्तृत्वाचा ठसा विविध खेळाच्या क्षेत्रामध्ये उमटवत आहेत.

यावर्षीही आपल्या खेळाडूंनी विविध खेळामध्ये नेत्रदीपक कामगिरी केली. महाविद्यालयाच्या खेळाच्या परंपरेला साजेसा खेळ करत महाविद्यालयाचे नाव तर उंचावलेच व खेळाची परंपराही कायम राखली.

यामध्ये विशेषकरून उल्लेख करावा वाटतो तो आपल्या महाविद्यालयाच्या क्रिकेट संघाचा. सध्या आपल्या देशातील लोकप्रिय खेळ म्हणजे क्रिकेट व या खेळामध्ये आपल्या महाविद्यालयाच्या संघाने महाविद्यालयाला अभिमान वाटावा अशी कामगिरी केली व महाविद्यालयाचा नावलौकिक वाढवला. क्रिकेट संघाने केलेल्या या अतुलनीय कामगिरीबाबत संघाचे कौतुक करावे तितके थोडेच आहे. क्रिकेट संघातील खेळाडूंनी नियोजनबद्ध व योग्य डावपेचांच्या आधारे खेळ करत जिल्हास्तरावर विजेतेपद तर पटकावलेच पण रत्नागिरी येथे झालेल्या विभागीय स्पर्धेत अंतिम सामन्यापर्यंत मजल मारली व उपविजयी ठरले. या संघाने केलेल्या जोरकस कामगिरीमुळे एक वेगळाच मानाचा तुरा महाविद्यालयाच्या शिरपेचात रोवला गेला.

कबड्डी संघाने प्रयत्नांची शिकस्त करत तालुका स्तरावर अंतिम फेरी गाठली तर फुटबॉल संघातील खेळाडूंनी जिद्दीने खेळ करत जिल्हास्तरावर उपांत्य फेरीपर्यंत मजल मारली.

टग ऑफ वॉर :

या खेळामध्ये रूदल कदम याने आंतरराष्ट्रीय स्तरावरील आपली निवड सार्थ ठरवत दैदिप्यमान यशाबरोबर महाविद्यालयाचे नाव देशाच्या कानाकोपऱ्यात पोहोचवले.

हॉकी :

सुरज देडगे व इकबाल शेख या हॉकीच्या खेळाडूंनी आपल्या हॉकी स्टिकची वेगळीच झलक दाखवली व आपल्या खेळाची वेगळी चुणूक दाखवून राष्ट्रीय स्तरावरील निवड सार्थ ठरविली.

२०२३

ब
हा
द
ु
सी
य

१६१

किक-बॉक्सिंग :

अजिंक्य जांभळेने जिद्द, सराव व आत्मविश्वासाने खेळ करत किक-बॉक्सिंग खेळामध्ये लुधियाना येथे झालेल्या राष्ट्रीय स्पर्धेत जोरदार कामगिरी केली.

कबड्डी :

आपल्याजवळ असलेली कौशल्ये पणाला लावून महाराष्ट्राच्या मातीतील कबड्डी खेळामध्ये सिध्दार्थ तारळेकर, प्रमिला भोसले, सोनम आवारे यांनी राज्यस्तरीय स्पर्धेत ठसा उमटवला.

बॉक्सिंग :

शिवाजी स्वामी, इम्रान खान हे आपल्या महाविद्यालयाचे बॉक्सर दिसायला जेमतेम असले तरी त्यांनी बॉक्सिंगमध्ये खूप चपळाईने हात चालवले त्यामुळे त्यांची विभागीय स्तरावर निवड झाली. सांगली येथे विभागीय स्पर्धा झाल्या.

कुस्ती :

आपल्या महाविद्यालयास कुस्ती या खेळाची वैभवशाली परंपरा लाभलेली आहे. या वैभवशाली परंपरेला शोभेल अशी कामगिरी सोमनाथ बरकडे, हर्षद भोसले, विशाल देवकर, अविनाश लोखंडे या मल्लानी केली व कुस्तीची वैभवशाली परंपरा कायम राखली.

बुद्धिबळ :

बुद्धिबळ खेळामध्ये तेजस संकपाळने आपल्या आक्रमक चाली व जलद खेळाने मंत्रमुग्ध केले. त्याची सांगली येथील विभागीय बॉक्सिंग स्पर्धेसाठी निवड झाली.

जलतरण :

जलतरण खेळामध्ये अप्रतिम जलतरण कौशल्य असलेले अक्षय ढाणे, शुभम घाटगे, अक्षय कदम,

अक्षय शेळके या जलतरणपटूंनी इचलकरंजी येथील विभागीय स्पर्धेपर्यंत मजल मारली.

शिकई-मार्शल आर्ट :

सुमित इंदलकर, अजिंक्य जांभळे यांनी शिकई-मार्शल आर्ट खेळामध्ये चमकदार कामगिरी करत नागपूर येथील राज्यस्तरीय स्पर्धा गाजवली.

अॅथलेटिक :

समीर फाळके, निशिंगंधा भंडारे, पूजा चव्हाण, हर्षला साबळे, आरती राजे या खेळाडूंनी अॅथलेटिक्समध्ये आपला ठसा उमटविला.

बास्केटबॉल :

अभिषेक शिंदे, वृषभ गडचे यांनी बास्केटबॉल खेळामध्ये चमक दाखविली. त्याची वारणा येथील विभागीय निवड चाचणीसाठी निवड झाली.

अशाप्रकारे खेळाडूंनी जिद्द, चिकाटी, आत्मविश्वास, धैर्य व खिलाडूवृत्ती या गुणांच्या जोरावर दैदिप्यमान यश संपादित केले. हे यश संपादन करण्यासाठी मोलाचे सहकार्य लाभले ते आमच्या महाविद्यालयाचे प्राचार्य डॉ.आर.व्ही. शेजवळ सर यांचे, ते नेहमी आमच्या पाठीशी आधारस्तंभप्रमाणे उभे असतात. यशस्वी झाल्यानंतर कौतुकाची व शाबासकीची थाप आमच्या पाठीवर टाकतात. नेहमी यशस्वीतेच्या दिशेने वाटचाल करण्यासाठी प्रोत्साहन देतात. आम्ही हे जे कर्तृत्ववान खेळाडू घडवू शकलो यासाठी आम्हाला बहुमोल सहकार्य लाभले ते प्राध्यापक सहकारी व प्रशासकीय सहकाऱ्यांचे. या सर्वांच्या वेळोवेळी मिळालेल्या सहकार्यामुळे जिमखाना विभागाच्या कामाचा आलेख हा नेहमीच चढता राहिला आहे. आणि तो भविष्यातही राहील.

प्रा.व्ही.व्ही. भोई
ज्युनियर जिमखाना विभाग

कला व वाणिज्य विभाग

शैक्षणिक वर्ष २०१२-१३ च्या प्रारंभीच मा.प्राचार्य डॉ.आर.व्ही.शेजवळ यांच्या मार्गदर्शनाखाली जून महिन्यात इ. १० वी निकालाच्यावेळी 'प्रज्ञावंत शोध मोहिम' यशस्वीरित्या राबविली गेली. या मोहिमेअंतर्गत सातारा शहरातील तसेच आसपासच्या ग्रामीण भागातील एकूण ६२ शाळांना कला, वाणिज्य व विज्ञान विभागातील सर्व गुरुदेव कार्यकर्त्यांनी प्रत्यक्ष भेट देवून प्रथम आलेल्या तीन विद्यार्थ्यांना अभिनंदन पत्रे व माहितीपत्रके देवून शुभेच्छा दिल्या. संस्थेची ध्येय धोरणाची ओळख करून दिली तसेच महाविद्यालयात प्रवेश घेतलेल्या गुणवंत विद्यार्थ्यांना मोफत गणवेश, पुस्तकसंच व फी सवलत देण्यात आली. परिणामी इ. ११ वी प्रवेश प्रक्रिया शासनाच्या प्रवेश कार्यक्रमानुसार संवर्गनिहाय सुरळीत व पूर्ण क्षमतेने पार पडली. या विभागात कला व वाणिज्य शाखेत अनुक्रमे ३+२ आणि इ. १२ वी ३+२ अशा एकूण १० अनुदानित तुकड्या असून या वर्षी त्यामध्ये २८५+२४७ आणि २५९+२३१ याप्रमाणे एकूण १०२२ विद्यार्थ्यांनी प्रवेश घेतला. या विभागात एकूण २० गुरुदेव कार्यकर्ते असून वार्षिक नियोजनाप्रमाणे १५ विषयांचे अध्यापन व मूल्यमापन त्याचप्रमाणे विद्यार्थ्यांच्या सर्वांगीण विकासासाठी इतर शालेयत्तर उपक्रमांची अंमलबजावणी काटेकोरपणे केली गेली.

ज्ञानदानाचे पवित्र कार्य करणाऱ्या शैक्षणिक परीसरात शांत व निकोप वातावरण राहावे यासाठी डॉ. बापूजी साळुंखे शैक्षणिक संकुलातील विभाग-प्रमुखांची व शिक्षकांची मा.प्राचार्य डॉ.आर.व्ही. शेजवळ यांच्या अध्यक्षतेखाली एकत्रित व स्वतंत्र शिस्त कमिटी स्थापन केली गेली. गैरवर्तन करणाऱ्या विद्यार्थ्यांची स्वतंत्र यादी करून त्यांच्या पालकासमवेत चर्चा करून त्यांना समज देण्यात आली. त्याचप्रमाणे गैरवर्तनाला आळा बसावा म्हणून विविध ठिकाणी सी.सी.टि.व्ही.कॅमेरे लावण्यात आले. त्याचा अनुकूल व विधायक परिणाम दिसून आला.

शासनाच्या डी.सी.एफ, एस.आर.सी, यू.डी. आय.एस.ई, अल्पसंख्याक तसेच आमआदमी पाल्य शिष्यवृत्ती सारख्या कार्यशाळांना उपस्थित राहून त्यानुसार अंमलबजावणी करून माहिती पूर्तता केली.

संस्थेच्या कनिष्ठ महाविद्यालयीन विद्यासमितीने सोपविलेल्या इयत्ता ११ वी अर्थशास्त्र, इतिहास, राज्यशास्त्र व जीवशास्त्र या विषयांच्या बदललेल्या नवीन अभ्यासक्रमावर आधारित वार्षिक घटक नियोजन, सत्र-१ व सत्र-२ परीक्षेच्या प्रश्नपत्रिका तयार करण्यासाठीच्या कार्यशाळांची जबाबदारी संबंधित विषय प्रमुखांच्या सहकार्याने व्यवस्थित पार पाडली.

शिक्षक दिनानिमित्त प्रमुख पाहुणे मा.संजय देसाई-शिक्षण सभापती सातारा जिल्हा परिषद यांच्या शुभहस्ते व मा.प्राचार्य.डॉ.आर.व्ही.शेजवळ यांच्या अध्यक्षतेखाली विद्यार्थ्यांच्या वतीने सर्व गुरुदेव कार्यकर्त्यांचा सत्कार व गरीब होतकरू विद्यार्थ्यांना मोफत गणवेश वाटप करण्यात आले. या कार्यक्रमाचे नेटके नियोजन प्रा. चंद्रकांत पाटील यांनी केले.

इयत्ता ११ वी कलाशाखेत प्रवेश घेतलेल्या अभिजीत शिवाजी पवार, धावडशी याचे आकस्मिक अपघाती निधन झाले. त्याच्या कुटुंबियांना विद्यार्थी, प्राध्यापक व कर्मचारी वर्गाकडून निधी गोळा करून तातडीची मदत म्हणून रु ७५४३/- त्याचप्रमाणे इंग्रजी विषय शिक्षक श्री. पाटील.एस.एन. यांना अर्धाग झटका आल्याने वैद्यकीय उपचारासाठी हातभार लागावा म्हणून मानवतेच्या भावनेतून रु ९१००/- मा.प्राचार्यांच्या हस्ते देण्यात आले. तसेच राखी पौर्णिमेनिमित्त बंधुत्वाची भावना विकसित होण्यासाठी सैनिक बांधवांना राखी पाठविण्यासाठी या विभागातील विद्यार्थ्यांनी यथाशक्ती निधी संकलनात सहकार्य केले. या कामी सर्व विभागाच्या स्टाफ सेक्रेटरीनी सहकार्य केले.

इ. १२ वी निकाल व गुणवत्ता वाढ व्हावी या उद्देशाने मा.प्राचार्य.डॉ.आर.व्ही.शेजवळ यांच्या

२०२३

ब
ह
ड
सी
य

१६३

अध्यक्षतेखाली व उपप्राचार्य आर.आर.गायकवाड यांच्या उपस्थितीत 'शिक्षक-पालक मेळावा' दि. ५/१०/२०१२ रोजी संपन्न झाला.

यावर्षी या विभागाची एक दिवसीय वर्षा सहल पाटेस्वर या नैसर्गिक व धार्मिक स्थळी तसेच एक मुक्कामी दोन दिवसीय सहल चाफळ-कोयना-डेरवण-संगमेश्वर-गणपतीपुळे-हातखंबा-पावस-रत्नागिरी-मार्तेश्वर-अंबाघाट या ठिकाणी काढण्यात आली.

डॉ.बापूजी साळुंखे यांच्या पुण्यतिथीनिमित्त ऑगस्टमध्ये प्रतिमापूजन, व्याख्यान व मिरवणूक तसेच विवेकानंद जयंती सप्ताहात डॉ.बापूजी साळुंखे शैक्षणिक संकुलामार्फत काढण्यात आलेल्या भव्य मिरवणूकीत ११ वी कला व वाणिज्य विभागातील सर्व प्राध्यापकांनी व विद्यार्थ्यांनी सहभाग घेतला. त्याचप्रमाणे निबंध, वक्तृत्व, चित्रकला स्पर्धा आणि मा.मानसिंगराव जगताप यांचे 'माझ्या आठवणीतील बापूजी' या विषयावर व्याख्यान झाले. यावेळी घेण्यात आलेल्या राज्यस्तरीय चित्रकला स्पर्धेत घाडगे जय सयेंद्र ११ वी कला मधील विद्यार्थ्यांने उच्च माध्यमिक गटात प्रथम क्रमांक मिळविला.

प्रजापिता ब्रम्हाकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय अंतर्गत ट्रान्सपोर्ट ट्रॅव्हल्स विंगच्या वतीने "अध्यात्मिकाद्वारे सुरक्षा" यावर ब्रम्हाकुमारी भारती बहनजी यांचे मार्गदर्शपर व्याख्यान तसेच रामकृष्ण मठ, पुणे येथील स्वामी सुविज्ञेयानंद यांचे 'व्यक्तिमत्त्व विकास' यावर व्याख्यान आयोजित केले गेले.

१ डिसेंबर २०१२ जागतिक एडस दिनानिमित्त सर्व शाळांनी काढलेल्या जनजागृती रॅलीमध्ये आमच्या विभागातील ३५० विद्यार्थी-विद्यार्थिनींनी सहभाग घेतला.

इ. १२ वी कला विभागाचा ७२.१० % व वाणिज्य विभागाचा ६४.२८ % असा बोर्डाचा निकाल लागला. त्यामध्ये विराजदार शिवराज बसवराज

६७ % व कु.साळुंखे पूनम भाऊ ६७.६७ % मिळवून अनुक्रमे प्रथम क्रमांकाने उत्तीर्ण झाले. निकाल व गुणवत्ता वाढीसाठी जादा तास व अनुभवी तज्ञ विषय शिक्षकांची जानेवारी मध्ये तीन दिवसीय सत्रात व्याख्यानमाला आयोजित केली होती.

शैक्षणिक गुणवत्तेबरोबरच क्रिडाक्षेत्रातही या विभागातील विद्यार्थ्यांनी विविध स्तरावर यश संपादन केलेले आहे. विशेष उल्लेखनीय मध्ये अक्षय ढाणे १२ कला व शुभम घाडगे ११ वी वाणिज्य यांनी जिल्हास्तरीय जलतरण (४x१००) रिले स्पर्धेत प्रथम क्रमांक आणि शिवशंकर चोरट इ. १२ वाणिज्य याने प.बंगाल येथे झालेल्या राष्ट्रीय धनुर्विद्या स्पर्धेत सुवर्णपदक मिळविले. शारीरिक शिक्षक प्रा.भोई व्ही.व्ही. व मा. प्राचार्यांचे अनमोल मार्गदर्शन लाभले.

या विभागातील भूगोल विषयाचे प्रा. महाडीक ए.ए. व हिंदी विषयाचे प्रा. देसाई आर.एम्. यांचा सन्मानपूर्वक सेवागौरव समारंभ संपन्न झाला.

मा.प्राचार्य डॉ.जे.एस्.पाटील यांच्या नेतृत्वाखाली या विभागाची संस्थातर्गत पथक तपासणी दि. १७/१२/२०१२ रोजी करण्यात आली. आवश्यक बाबींची पूर्तता व नोंदी अद्ययावत असल्याचे आढळले.

शैक्षणिक वर्ष २०१२-१३ मधील अध्यापनाचे, अंतर्गत मूल्यमापनाचे, एच.एस्.सी बोर्ड परीक्षांचे व इतर सर्व विभागातील कामकाज वार्षिक नियोजनाप्रमाणे स्टाफ कमतरता असूनही मा.प्राचार्य डॉ.आर.व्ही.शेजवळ यांच्या मार्गदर्शनामुळे व सर्व सहकारी प्राध्यापक बंधुभागिणींच्या व शिक्षकेतर कर्मचारी वर्गाच्या सहकार्याने सुरळीत व व्यवस्थित पार पाडले. धन्यवाद !

प्रा. राम पाटील
विभागप्रमुख,
ज्युनि. कला/वाणिज्य

॥ क्षणचित्रे ॥



विद्यासमिती मार्फत संस्था कार्याध्यक्ष मा. प्राचार्य अभयकुमार साळुंखे यांचे स्वागत करताना विद्यासमितीचे अध्यक्ष मा. प्राचार्य डॉ. शैलवळ व सचिव अरुण सुळगेकर



सातारा विभागीय बैठकीमध्ये मा. अभयकुमार साळुंखे आमदार विलासराव पाटील-उंडाळकर यांचे स्वागत करताना



संस्था अंतर्गत विभागीय बैठकीमध्ये मार्गदर्शन करताना कार्याध्यक्ष मा. अभयकुमार साळुंखे



सातारा विभागीय बैठकीमध्ये मार्गदर्शन करताना मा. प्राचार्या सो. शुभांगी गावडे (सचिव, श्री स्वामी विवेकानंद शिक्षण संस्था, कोल्हापूर)

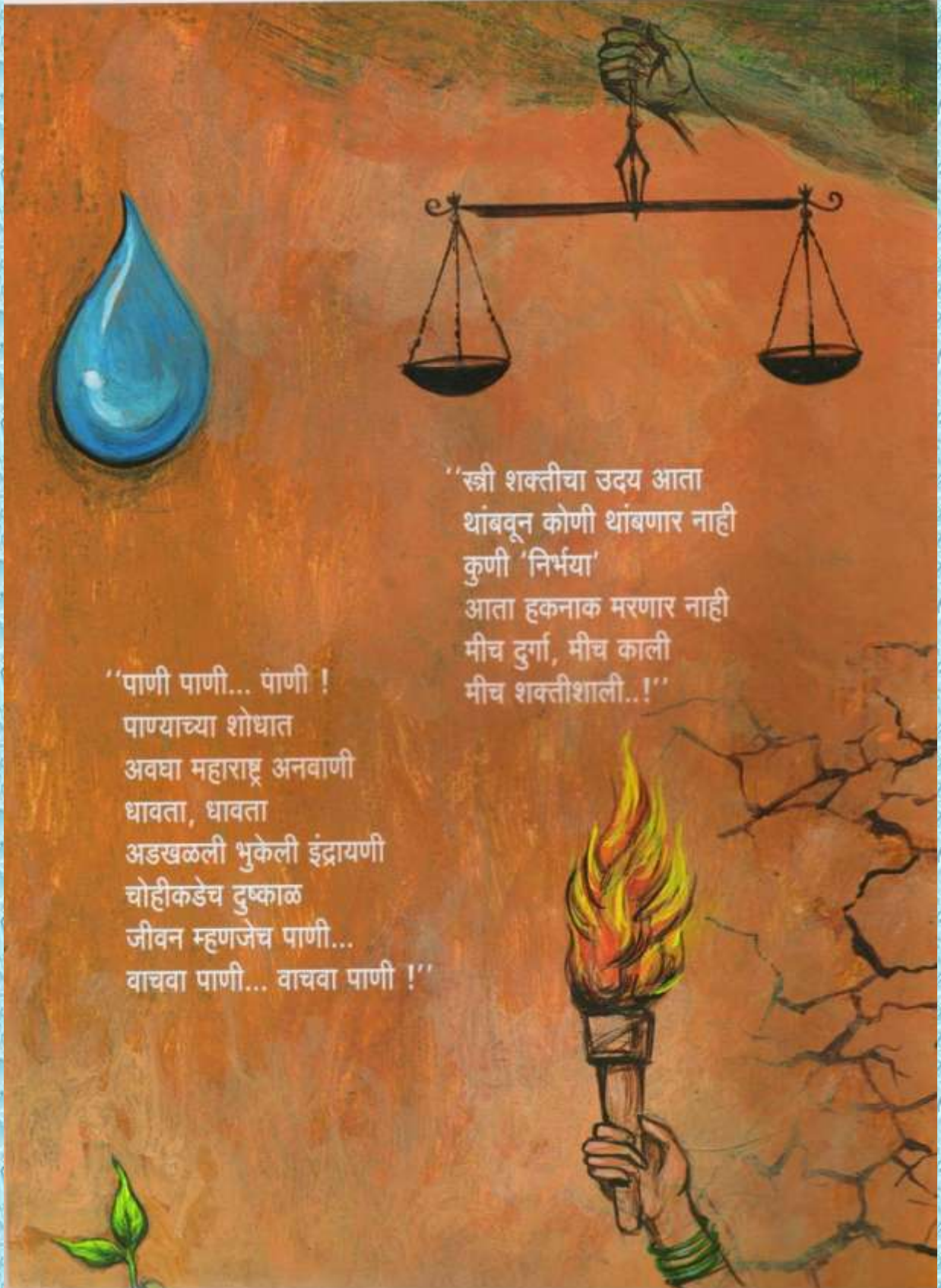


श्री. ए. ए. महाडीक यांचा सेवा गौरव सोहळा प्रा. महाडिक यांचा सपत्निक सत्कार करताना प्राचार्य भोजकर, प्राचार्य डॉ. आर. ज्ही. शैलवळ, मा. एन. जी. गांधकवाड, प्रा. आर. डी. चांदव, प्रा. गीतांजली साळुंखे



श्री. आर. एम. देसाई यांचा सेवागौरव समारंभ प्रा. रशीद देसाई सपत्निक, प्रा. जे. पी. देसाई, प्रा. डॉ. टी. आर. पाटील, प्रा. डॉ. ए. ए. करांडे, प्राचार्य डॉ. आर. व्ही. शैलवळ, प्रा. सो. गीतांजली साळुंखे

श्री स्वामी विवेकानंद शिक्षण संस्था, कोल्हापूर संघटित
लाल बहादूर शास्त्री महाविद्यालय, सातारा



“पाणी पाणी... पाणी !
पाण्याच्या शोधात
अवघा महाराष्ट्र अनवाणी
धावता, धावता
अडखळली भुकेली इंद्रायणी
चोहीकडेच दुष्काळ
जीवन म्हणजेच पाणी...
वाचवा पाणी... वाचवा पाणी !”

“स्त्री शक्तीचा उदय आता
थांबवून कोणी थांबणार नाही
कुणी 'निर्भया'
आता हकनाक मरणार नाही
मीच दुर्गा, मीच काली
मीच शक्तीशाली..!”